आसोप का इतिहास

कूंपाकिरचकिरच
तनतरवारयांतरढियों
पिंड़सोंपिरचांपिरच
मिरचांमिरचमहराजवत
मैटीनहीभवैह
मांडणाउरदूजीमहल
पीठसमरप्रसणीह
कढैनदीठीकूंपवत
दिषणोआयोसजदलां
प्रिथीभराव़णपेस
कृपातोविनकुणाकरै
म्हांरीमदतमहेश
विसाहुवांकिजपालसू
मांगीसीषमहेश
उभापगांनआणदूं
दिषणीमुरधरदेस
ठिकानाआसोप
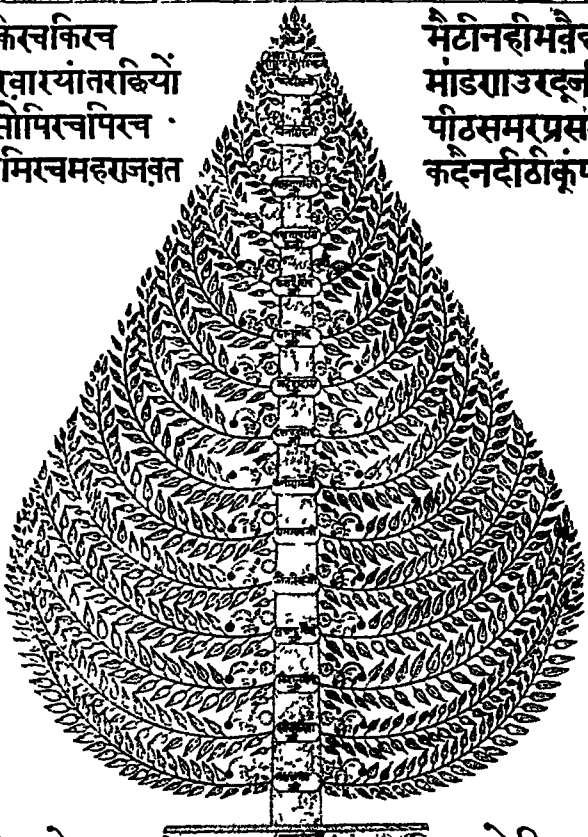
पंडित रामकरण आसोपा जोधपुर.

प्रस्तावना

आसोप का इतिहास वीर-रस का इतिहास है। इस ठिकाने की नींव जोधपुर के राव रणमल्ल के प्रपौत्र, अखेराज के पौत्र, महराज के पुत्र वीरवर कूंपा से लगी है। जिस कूंपा और जैता ने सुमेल की समर-भूमि में मातृ-भूमि की बलि वेदी पर आत्म बलि देकर अपने नामों को मारवाड़ के इतिहास में अमर कर दिया है। जैसे कूंपा महराज का पुत्र था, वैसे जैता पंचायण का पुत्र था। महराज और पंचायण दोनों अखेराज के पुत्र थे। अखेराज राव रणमल के २७ पुत्रों में से ज्येष्ठ था। ज्येष्ठ पुत्र सदा उत्तराधिकारी होता है, जिस से अखेराज को मारवाड़ का राज्य मिलना चाहिए था। किन्तु रणमल की इच्छा अपने वीर पुत्र जोधा को अपना उत्तराधिकारी बनाने की थी जिस से पितृ-भक्त पुत्र अखेराज ने स्वयं अपने हाथ से जोधा के राज्य तिलक कर उसे मण्डोवर का स्वामी बना दिया और अपने लिए बगड़ी को विजय करके नया राज्य नियंत किया। कूंपा से कूंपावत शाखा चली और जैता से जैतावत, जिस के वंशज बगड़ी ठिकाने के अधिकारी हैं।

कूंपावत शाखा के सिरायतों के अधीन मारवाड़ में ११ ठिकाने हैं जिनमें पाटवी और सब से अधिक पट्टा आसोप का है।

राव जोधा जी से पांचवीं पीढ़ी में राव मालदेव बड़े वीर और प्रतापी राजा हुए जिन के पास ८० हजार सवार और ६००० हजार गांव थे। इन के राज्य की सीमा इतनी विस्तृत हो गई थी कि वह उत्तर में जांगल, उत्तर-पूर्व में हांसी हिसार, पश्चिम में सिन्ध, दक्षिण में पालनपुर और सिरोही, और दक्षिण पूर्व में मेवाड़ और हाडोती से जा लगी थी। इनके अधिकार में ५२ परगने

तथा ८४ गढ़ थे। इस समस्त राज्य विस्तार का श्रेय कूंपा और जेता को दिया जाता है जिन्होंने मालानी, गोडवाड़, सांचोर, जालोर, अजमेर, फलोदी, चाटसू, नराणा, लालसोट, बौंली, फतहपुर, पाटण, जूंझणू, नारनोल, चोहटन, पारकर, ऊमरकोट, राधनपुर, खाबड़, बदनोर, मदारिया, कोसीथल, पुर, मांडल, केकड़ी, सलेमाबाद, मालपुरा, अमरसर, टौंक, टोडा, मालगढ, सीरोही, बीकानेर, पूंगल, भटनेर, मेड़ता, सांभर, तोसीणा, डीडवाणा, सिवाना, कोटड़ा, बाहड़मेर, राड़दड़ा, सूराचन्द, धाट, वाव, थिराद, भाद्राजण, जालोर, परबतसर, मारोठ, नागोर, दोलतपुरा, कोलिया, आदि प्रदेशों को अपने बाहु बल से जीत कर जोधपुर के राज्य के अधीन कर दिया था। और खीचीवाडा, बुन्देलखंड, डीग, भरतपुर, नारनोल, तलवाई, खेतड़ी, नरबर, आर खंडेला के अधिकारियों से दण्ड (कर) लिया और जिन के भय से भयभीत होकर जैसलमेर रावल और आमेर के कछवाहों ने अपनी कन्याएँ जोधपुर के राजा मालदेव को व्याह कर अपने राज्यों का रक्षण किया।

राव मालदेवजी ने इन्ही रण-विजयी दोनों राठौड वीरों को मेवाड के राणा उदयसिंह की सहायतार्थ भेजा था तब इन्होंने वणवीर को चितौड़ से निकाल कर उदयसिंह को राजसिंहासन पर आसीन किया, जिसके प्रत्युपकार में राणा ने ४० हजार फिरोजी और बसन्तराय नामक एक हाथी रावजी के पास भेंट स्वरूप भेजा।

इन वीर-वरों की वीरता का वर्णन कोई कहां तक लिखे, क्योंकि उसका अन्त आना असम्भव नहीं तो आसान भी नहीं है। इन्होंने अपनी आदर्श और अन्य स्वामि भक्ति के लिए पानी के स्थान में आदर्श होकर अपने रुधिर को जल की तरह बहाया। रावजी के जोधपुर और सोजत इन दो परगनों के छोटे से राज्य को एक विशाल साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया। अपने मस्तक को सदा हथेली पर रख कर समर भूमि में प्रवेश किया। इन के प्रताप और पराक्रम से ही रावजी की विजय पर विजय होती चली गई, इन्होंने किसी संग्राम में अपनी पीठ कभी नहीं दिखाई, भला ऐसे वीरता की प्रतिकृति रूप नर पुंगवों की वीर गाथाओं का कैसे अन्त आ सकता है?

इन में से राठौड़ कूंपा महा पराक्रमी, साहसी, रण-विजयी पुरुष था। इसने अपना समस्त जीवन स्वामी की सेवा में समर्पित कर रखा था और वह अन्त में रणाङ्गण में ही अपने प्राणों की आहुति देकर स्वर्ग-वासी हुआ। उसी कूंपा के वंशज आज आसोप ठिकाने के सिरायत हैं। जो ठिकाना आज मारवाड़ के कुरब कायदे में प्रथम श्रेणी का है।

ऐसी किंवदन्ती है कि पहले यहां 'शोप' नाम का स्थान था। पूर्व समय में किसी अनजान पुरुष ने आकर वहां के निवासी से मारवाड़ी भाषा में यह पूछा कि 'शोप' किसी है ? उसके उत्तर में उसने अपने हाथ का इशारा कर यह कहा कि 'आ शोप है' तब से उस स्थान का नाम 'आशोप' हो गया, जिसका अपभ्रंश 'आसोप' है। यह नहीं कहा जा सकता कि यह किंवदन्ती कहां तक सत्य है ? किन्तु इस से इतना अवश्य सिद्ध होता है कि यह स्थान अति प्राचीन है। दाहिमा ब्राह्मणों की उत्पत्ति मारवाड़ के गांव गोठ मांगलोद की श्री दधिमती माताजी से मानी जाती है जो दाहिमा ब्राह्मणों की कुलदेवी है। उनकी शाखाएं व खांपें भगवती के आसपास के गांवों के नाम से प्रसिद्ध हैं, यथा—आसोप से आसोपा, डीडवाणा से डीडवाणिया, खाटू से खटोड़ आदि। इस आसोप के नाम के पीछे आसोपा खांप की प्रसिद्धि होने के कारण भी आसोप की प्राचीनता प्रमाणित होती है।

इस के अतिरिक्त आधुनिक आसोप नगर से पश्चिम दिशा में एक पुरातन मन्दिर है उसके चारों ओर बाहिर की तर्फ भित्ति में दशावतार के चित्र खुदे हुए हैं। उस देवालय की रचना शिल्प देखने से विक्रमी अष्टम अथवा नवम शताब्दी में हुई हो ऐसा जाना जाता है। उसी देवालय के समीप एक स्तंभ खड़ा है उस पर वि० सं० १०९२ का शिलालेख खुदा हुआ है। उस से अनुमान होता है कि शायद पूर्व काल में नगर वहां बसा हुआ था। क्योंकि देवालय प्रायः नगर में होता है। और उक्त शिलालेख उसकी पुष्टि करता है। प्रायः इस प्रकार के स्तम्भ वापी कूप तड़ाग आदि पर खड़े किए जाते हैं। आधुनिक आसोप नगर का निर्माण शायद तेरहवीं अथवा चौदहवीं शताब्दी में हुआ हो। आसोप नगर के बाजार में जगदीश का मन्दिर है, उसमें

प्रतिष्ठित ठाकुर जी की चरण चौकी में वि० सं० १३८३ का शिलालेख खुदा हुआ है। उस में मूर्ति स्थापित करने वाले का नाम असपाल लिखा है, उसी के नाम से 'आसोप' नाम प्रसिद्ध हुआ हो तो सम्भव है।

इस इतिहास के निर्माण करने में महानुभाव पूर्व पुरुषों के सम्बन्ध में डिंगल भाषा की कविता संग्रह करने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया गया है जो इस इतिहास के देखने से स्वयं प्रकट होता है। इसके अतिरिक्त प्राचीन सनदों का भी उत्तम संग्रह किया गया, जिस से इतिहास की प्रामाणिकता मानी जाय।

पण्डित रामकर्ण जी, जो इतिहास के पूर्ण ज्ञाता हैं, उन्होंने शिलालेख, सनदें, ताम्रपत्र और प्राचीन ख्यातों का अवलोकन करके प्रमाण सहित सरल भाषा में इस इतिहास का निर्माण किया है।

यद्यपि यह इतिहास पूर्ण विचार और ध्यान के साथ लिखा गया है तथापि कहीं किसी प्रकार की त्रुटि हो तो सज्जन महानुभाव त्रुटि के लिए क्षमा करें।

ठाकुर फतेसिंह
आसोप.

सूची-पत्र

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

तृतीय अध्याय

चतुर्थ अध्याय

पंचम अध्याय

षष्ठ अध्याय

सप्तम अध्याय

अष्टम अध्याय

नवम अध्याय

दशम अध्याय

एकादश अध्याय

द्वादश अध्याय

त्रयोदश अध्याय

चतुर्दश अध्याय

पंचदश अध्याय

षोड़श अध्याय

परिशिष्ट

चित्र-सूची

राव बहादुर ठाकुर फतेहसिंहजी आसोप ।

॥ श्री हरिः ॥

आसोप का इतिहास।

प्रथम अध्याय।

आसोप ठिकाना मारवाड़ जोधपुर राज्य के अन्तर्गत है। यह जोधपुर नगर से उत्तर दिशा में २५ पचीस कोस की दूरी पर प्रतिष्ठित है और जे० आर० रेलवे के गोठन स्टेशन से ७ सात कोस के अन्तर पर है।

इस समय यह ठिकाना कूंपावत राठोड़ों के अधिकार में है।

राठोड़ वंश अति प्राचीन है। इसका उल्लेख महाभारत ग्रंथ में "आरट्ट" नाम से किया गया है। तदनन्तर मौर्यवंशी महाराजा अशोक की धर्माज्ञाओं में इस वंश का निर्देश "रास्टिक" शब्द से है। जिस अशोक का राज्य-काल ईशा से पूर्व २५० वर्ष के लग भग माना जाता है। तत्पश्चात् भारत वर्ष के दक्षिण भाग संबंधी दान-पत्रों व शिलालेखों में "राष्ट्रकूट" शब्द का प्रयोग देखने में आता है। दक्षिण में राष्ट्रकूटों का राज्य विक्रम की पांचवीं छठी शताब्दी में और उसके पश्चात् फिर नवम शताब्दी में दृढ होना पाया जाता है।

"राष्ट्रकूट" शब्द का अपभ्रंश "राठोड़" शब्द है। उसकी उत्पत्ति इस प्रकार हुई। प्रथम प्राकृत भाषा में "राष्ट्रकूट" का "राट्टऊड़" बन गया। तत्पश्चात् 'अ' और 'ऊ' की संधि होकर "राठोड़" ऐसा प्रचलित हुआ। जो इस समय सर्वत्र प्रचलित है। राठोड़ वंश का यजुर्वेद, अक्रूर शाखा, त्रि-प्रवर, गौतम गोत्र और कुलदेवी नागणेची है। इसी नागणेची देवी का नाम प्रथम राष्ट्रश्येना और चक्रेश्वरी भी था। चक्रेश्वरी देवी कन्नौज से लाई गई थी।

कन्नौज पर राठोड़ों का राज्य विक्रम की छठी शताब्दी में था। और फिर उसके पश्चात् विक्रम की बारहवीं शताब्दी में प्रबल राज्य हुआ। इससे पहले कन्नौज पर पड़िहारों का राज्य था। राठोड़ चन्द्रदेव ने उनको परास्त करके कन्नौज का राज्य वि० सं० ११३५ के आस पास छीन लिया। जिसके वंश में महाराजा जयचन्द्र महाप्रतापी राजा हुआ। उक्त जयचन्द्र को मार कर शहाबुद्दीन गोरी ने वि० सं० १२५० में कन्नौज पर अपना अधिकार कर लिया। तब जयचंद्र के वंशज इधर उधर भाग निकले। जिनमें से जयचन्द्र का प्रपौत्र राव सीहा वि० सं० १२६० के लगभग मारवाड़ की तरफ चला आया।

उसी राव सीहा के वंशज कूंपावत राठोड़ हैं। इसलिये कूंपावतों का इतिहास लिखने से पूर्व उनके मूल पुरुष राव सीहा और उनकी संतान का भी परिचय कराना आवश्यक होने से उनका भी कुछ संक्षिप्त वृत्तान्त लिखा जाता है—

१ राव सीहा।

कन्नौज प्रान्त से मारवाड़ की तरफ आते राव सीहा ने पुष्कर तीर्थ पर मुकाम किया और तीर्थ स्नान करके दान पुण्य किया। इस के साथ पांच सौ अच्छे सवार थे। भीनमाल (जोधपुर राज्यान्तर्गत)

राव सिहांजी ।

के ब्राह्मण वहां पर तीर्थ यात्रा के निमित्त आए थे, जिन्हें पहाड़ी कौमें मेर, भील आदि सताते थे। उन्होंने राव सीहा को प्रबल पुरुष देख कर कहा कि "हम ब्राह्मण हैं, और आप क्षत्रिय वीर हैं, गौ ब्राह्मण की रक्षा करना आपका धर्म है, हमारी रक्षा करें। तब राव सीहा उनके साथ भीनमाल गया और मेर आदि लुटेरों को मार कर ब्राह्मणों की रक्षा की। उस विषय का यह प्राचीन दोहा है—

दोहा

"भीनमाल लीधी भड़े, सीहै सेल बजाय।
दत दीधौ सत संग्रह्यो, ओ जस कदे न जाय ॥१॥

वहां से द्वारका गया, द्वारका से वापिस आता पाटण में ठहरा। वहां चावड़ी और सोलंकणी को ब्याह कर पाली आया। यहां पल्लीवाल ब्राह्मणों ने, जिनको ग्रासिये, मीने, मेर आदि पीड़ित करते थे, सीहा से अपनी रक्षा के लिये प्रार्थना की, और उसको निर्वाहार्थ कुछ लाग भाग देना नियत करके पाली में ठहरा लिया।

वहां पर मुसलमानी सेना गुजरात की तरफ जाती हुई आई और उसने पाली को लूटा। राव सीहा उस समय खेड़ (मारवाड़ के पश्चिमी प्रान्त में एक पुरातन नगर) की तरफ गया हुआ था। पाली लुट जाने की खबर पाते ही पाली के पास आया, मुसलमानी सेना से मुठभेड़ हुई, बहुतसे मुसलमान सीहा के हाथ मारे गए, परन्तु अन्त में वह भी इस युद्ध में देवलोक को सिधारा। यह घटना वि० सं० १३३० में हुई थी।

२ राव आसथान।

राव सीहा के अनन्तर उसका ज्येष्ठ पुत्र आसथान पदाधिकारी हुआ। यह भी पिता की भांति पाली में निवास करता ब्राह्मणों की

रक्षा करना रहा। वीर पुरुष परतंत्र रहना बिलकुल पसंद नहीं करते
ए इस प्रकार निवास करना अनुचित समझ कर इसके मनमें
खेड़ का राज्य लेने की अभिलाषा उत्पन्न हुई, जिस राज्य को लेने
के लिए राव सीहा ने प्रथम प्रयत्न भी किया था।

उस समय खेड़ पर गोहिल राजपूत शासन करते थे। कल्याण-
सिंह का पुत्र प्रतापसिंह शासक था। डाभी राजपूत मंत्री का कार्य
करते थे। जब मंत्रिवर्ग बल पकड़ जाता है तब राजा और मंत्रिवग
में वैमनस्य हो ही जाता है। क्योंकि राजा की मनमानी नहीं चल
सकती, और मंत्रिवर्ग अपनी इच्छानुसार करता है। डाभी मत्री ने
विचार किया कि यह राजा अब अपने काबू से बाहर निकला जाता
है इसलिये इसके स्थान में किसी दूसरे को लाकर स्थापित करदें।
वह अपना लाया हुआ होने से अपने वश में रहेगा। इस विचार
से उसने आसथान से बात चीत की।

वह जानता था कि "राव सीहा इस राज्य पर दांत लगाये था।
वह तो काल का कवल हो गया। अब उसका पुत्र राव आसथान
वैसाही महाबली, वीर और साहसी पुरुष है, वह अपने पिता के
मनोरथ को पूर्ण कर सकता है, ऐसा अनुसंधान करके डाभी मंत्री
राव आसथान से मिला और गोहिल राजा को मार कर खेड़ का राज्य
दिलाने की सलाह दी। राव आसथान मनमें अत्यन्त आह्लादित
हुआ। क्योंकि वह तो यह चाहता ही था। राव ने डाभी से कहा
कि "इस कार्य को किस प्रकार संपादित कर सकते हैं"? तब डाभी
ने कहा कि 'आपको हम विवाह के बहाने बुलावेंगे। आप बरात
बनाकर आजाना। वहां उत्सव के समय एसी तजबीज की जायगी
कि हम अलग बैठ जायंगे और गोहिल अलग पंक्ति में रहेंगे। हम
(डाभी) लोग बांई तरफ और गोहिल दाहिनी तरफ रहेंगे। इस
विषय की प्राचीन किंवदन्ति है "डाभी डावा नै गोयल जींवणा"

हम आपको संकेत कर देंगे आप उन्हें मार कर अपना अधिकार करलें। फिर वैसाही किया गया। गोहिल मारे गए और राठोड़ों का अधिकार होगया। तब राठोड़ों ने डाभियों को भी मार डाला। क्यों कि ऐसे स्वामिद्रोहियोंको मारना ही उचित था। जब खेड़ पर राठोड़ों का पूर्ण अधिकार होगया तब जो गोहिल बच गए थे वे मारवाड़ छोड़ कर भावनगर, पालीतांणा आदि की तरफ चले गए।

खेड़ पर राव आसथान का अधिकार हो गया, तथापि वह अधिकतर पाली में ही रहा करता था। किसी समय रास्ता चलती बादशाह फिरोज़शाह द्वितीय की मुसलमानी सेना पाली में आई और उसने लूट पाट की, तब उसके मुकाबला में राव आसथान गया और दोनों में घमासान युद्ध हुआ, जिसमें बहुत से तुर्क आसथान के हाथ मारे गए। यद्यपि शाही सेना बहुत अधिक थी, तथापि राव ने अपने बाहुबल से उसे नाकों दम कर दिया, परन्तु राव वहीं रण शय्याशायी हुआ। यह घटना वि० सं० १३४६ में हुई थी। उक्त राव के दाह-स्थान पर का चबूतरा पाली में रोदावाव के निकट में है।

३ राव धूहड़।

राव आसथान के अनन्तर उसका ज्येष्ठ पुत्र धूहड़ खेड़ का शासन करने लगा। इसने अपने बाहुबल से खेड़ के समीपवर्ती १४० गांवों पर अपना अधिकार करके खेड़ के राज्य को विस्तृत किया।

लिख आए हैं कि राठोड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी कन्नौज से लाई गई थी। उसका व्यौरा इस प्रकार है—कन्नौज का निवासी सारस्वत ब्राह्मण लुंब ऋषि ओझा ल्होड़, मारवाड़ में राव सीहा के वंशजों का राज्य सुन कर राठोड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी की मूर्त्ति लेकर राव धूहड़ के पास आया और राव से निवेदन किया कि "महाराज! मैं आपकी कुलदेवी की मूर्त्ति कन्नौज से लाया हूँ।" राव ने उसका

स्वागत करके मूर्ति को रख लिया। देवी ने राव को स्वप्न में नागके रूप में दर्शन दिया और कहा कि "मुझे तू यहां स्थापित कर" राव ने देवी की आज्ञानुसार वहीं मंदिर बनवा कर देवी की मूर्ति स्थापित की और उसका नाम नागणेची रक्खा। क्योंकि राव को स्वप्न में नाग क रूप से दर्शन दिया था। वह मंदिर इस समय पचपदरा नगर के नागाणा ग्राम में विद्यमान है। उसके पुजारी नागणेचिया राठोड़ ह। जिस समय लुम्ब ऋषि मूर्ति लेकर आया था उस समय राव धूहड़ का निवास गांव नागाणा में था, इसलिये वह मूर्ति वहीं स्थापित की गई।

लिख आए हैं कि राव धूहड़ ने १४० गांव दबाकर खेड़ के राज्य में मिला लिए थे, जिनमें अधिकतर पड़िहारों के थे इसलिये धूहड़ पर पड़िहारों ने आक्रमण किया, धूहड़ भी इनके मुकाबला में गया। गांव तींगड़ी म दोनों की मुठभेड़ हुई, घोर युद्ध हुआ। जिसमें राव धूहड़ पड़िहारों के हाथ मारा गया।

गांव तींगड़ी गांव नागाणा से ४ कोस के अंतर पर पचपदरा परगना में है। वहां राव धूहड़ का शिलालेख वि० सं० १३६६ का मिला है।

४ राव रायपाल।

राव धूहड़ के अनन्तर रायपाल ज्येष्ठ पुत्र होने से पदाधिकारी हुआ। इसने अपने पिताके वैर का बदला लेने के लिये मंडोवर पर आक्रमण करके पडिहारों से मंडोवर छीन लिया, परन्तु कुछ ही अर्से में पड़िहारों ने मंडोवर पर वापिस अपना अधिकार कर लिया।

---

(१) इं० एं जि० ४० पृ० ३०१

तत्पश्चात् इसने बाहड़मेर के पंवारों को परास्त करके ५६० गांवों के साथ बाहड़मेर का प्रान्त ले लिया। अब तो इसका राज्य समस्त महेवे देश पर हो जाने से राज्य की सीमा जेसलमेर की सीमा से जा मिली। उक्त महेवे प्रदेश को इस समय मालाणी का प्रान्त कहते हैं।

एकवार इसके राज्य में अकाल पड़ा उस समय इसने राजकीय भंडार से प्रजा की पालना की, जिससे इसका विरुद "महीरेलण" प्रसिद्ध हुआ। इस विरुद का तात्पर्य यह है कि जैसे इन्द्र जल से भूमि को प्लावित करके जगत् की रक्षा करता है वैसे इसने अपनी प्रजा का अन्न की प्रचुरता से भरण पोषण किया था।

रोहड़िया शाखा के चारणों की उत्पत्ति इसीके समय में हुई थी और ओसवालों में मोहणोत शाखा भी इसीके पुत्र मोहण से प्रकट हुई।

५ राव कनपाल।

यह ज्येष्ठ पुत्र होने से महेवे का मालिक हुआ। इसके एक पुत्र का नाम भीम था, जो बल में भीम के सदृश था। महेवा और जेसलमेर की सीमा सटी हुई होने से काक नदी पर राठोड़ों और भाटियों के घमासान युद्ध हुआ, जिसमें यह वीर मारा गया। परन्तु इसके पराक्रम से महेवा और माड देश की सीमा काक नदी हो गई। काक नदी से पश्चिम भाग रावल का, और पूर्वी भाग राठोड़ों का।

कनपाल महेवे का राज्य शासन करता है, वहां मुसलमानों की सेना आई और लूट पाट की, तब राव उसके मुकावला में गया, घोर युद्ध हुआ, जहां बहुत से वैरियों को मार कर राव स्वर्ग को सिधारा।
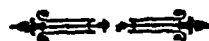
६ राव जालणसी।

राव कनपाल के पश्चात् जालणसी पट्टाधिकारी हुआ। इसने गांव चांदणी में एक वृक्ष को अमर किया था कि इसका पत्र, पुष्प, फल कोई न तोड़े। सोढ़ों ने उसका फल तोड़ लिया। उस अपराध से राव ने उस पर आक्रमण कर सोढों को परास्त किया और उन पर दण्ड नियत करके विजय का पोतिया (साफा) लिया।

सराई जाती के हाजी मलिक ने इसके चाचे का वध किया था, उसका बदला लेने के लिये यह पाल्हणपुर गया और उस मलिक को मार कर अपने चित्त को शान्त किया।

इसने थटा प्रान्त में जाकर मुलतान के कर का चतुर्थांश लिया था जिससे मुलतान से मुसलमानी सेना इस पर चढ़ आई, उससे युद्ध हुआ, जिसमें यह अनेक शत्रुओं को मारता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। इसने अंतिम समय में अपने पुत्र छाडा से कहा था कि सोढों ने जो दंड देना स्वीकृत किया था वह उनमें बाकी है वह ले लेना।

७ राव छाडो।

पिता के स्वर्गवास करने पर छाडा गद्दीनशीन हुआ। इसने पिता के वचन का स्मरण करके सोढों को दंड देने के लिये कहलाया, परन्तु सोढों ने आनाकानी की, तिस पर राव उन पर चढ़ कर गया। उधर से सोढा दुर्जनशाल मुकाबला में आया। दोनों दलों में युद्ध हुआ, राव की विजय हुई। तब राव ने दण्ड देने से अस्वीकार करने के अपराध में चतुर्गुण दण्ड लिया।

जेसलमेर के भाटियों ने सीमा पर के किले के बाहिर नगर

बसाना चाहा और आरम्भ भी कर दिया तब इसने उनसे कह-लाया कि यदि तुम यहां किला बनाते हो तो तुम्हें नालबंधी और बेटी देना होगा। उन्होंने अस्वीकार किया तब राव ने उन पर आक्रमण किया और जेसलमेर को घेरकर कहलाया कि अब भी समय है नहीं तो हम जेसलमेर को लूट लेंगे। रावल घबराया औ अपनी पुत्री प्रदान करके पिंड छुडाया।

इसके पश्चात् इसने पाली, सोझत, भीनमाल और जालोर के प्रान्त में लूटपाट की, तब जालोर के सोनगरा राजपूत सेना सझकर इस पर चढ़ आए। उस समय यह जालोर परगना के रमणिया ग्राम में था। सोनगरों के शामिल सिरोही के देवड़ों की भी सेना थी। उस प्रबल सेना के सामने यह वीर शेर की भांति चला और महा विकट संग्राम किया, उस युद्ध में यह शत्रु संहार करता हुआ देवराज का पाहुना बना। इसके दाहस्थान पर उस ग्राम में चबू-तरा बना हुआ है। यह घटना वि० सं० १४०१ में हुई थी।

८ राव तीडो।

वि० सं० १४०१ में राव तीडा महेवे का मालिक हुआ। इसने भीनमाल में जाकर लूट पाट की। उस समय भीनमाल का मालिक सोनगरा सामन्तसिंह था। वह मुकाबला में आया, दोनों में प्रबल युद्ध हुआ, जिसमें तीडा की विजय हुई।

इस रणविजयी वीर ने भीनमाल को विजय करके भाटी और सोनगरों से दण्ड लिया। उसी अवसर में सिवाना नगर के स्वामी चौहान सातल और सोम ने सहायतार्थ तीडा को बुलावा भेजा कि "हमारे ऊपर मुसलमानी सेना चढ़ आई है, हम महा संकट में हैं जितना जल्दी हो आप शीघ्र आवें, हम किले के अन्दर घिरे बैठे

हैं।" यह राव तीडा के भानजे थे, राव तुरंत अपने चुनिंदे सुभट लेकर सिवाने पहुँचा और मुसलमानी सेना को मार हटाया। परन्तु शत्रुसेना कुछ पीछे हटकर विश्राम ले वापिस आई और बड़े वेग से लड़ने लगी, इधरसे तीडा उन पर बाजसा झपटा और शत्रुओं का संहार किया परन्तु उसी युद्ध में इसका देहान्त होगया। इस घटना का समय वि० सं० १४१४ लिखा मिलता है। इस वीर के वर्णन में किसीने यह छप्पय छंद कहा था—

छप्पय

"प्रथम खेत भीनभाल भिड़े सोनगरा भागा,
दल़ देखी देवड़ा माल तज भागण लागा।
बाल़ीसा बल़ तजे कोट पाधरै चलाया,
बीस तुरी दस दरक भेट ले भाटी आया।
छाडियो बाद सोल़ंकियां सिंध जु कुंजर टोल़िया,
तीडैज राव छाडा तणै पांच राव पाधोरिया ॥१॥

९ राव सलखो।

राव सलखा तीडा का तृतीय पुत्र था। ज्येष्ठ पुत्र कान्हड़ और छोटा त्रिभुवनसी था। कान्हड़ पितृ राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। उसने सलखा को भाई बंटे में एक गांव दिया। जिसका नाम सलखा ने अपने नाम से "सलखावासणी" नियत किया।

इसने राव कान्हड़देव के समय में महेवा का कुछ हिस्सा दबाकर भिरड़कोट को अपनी राजधानी कायम की थी। इसने घोड़ों व राजपूतों का बल बढ़ाया और भीनमाल जाकर उसे लूटा।

उस समय भीनमाल सोनगरा चौहानों के अधिकार में था। परन्तु वे निर्बल से थे, जिससे राठोड़ों को भीनमाल लूटने का मौका मिल जाता था।

राव सलखा भिरड़कोट में शासन करता था उस अवसर में मुसलमानों की सेना महेवा में आई। क्योंकि राव कान्हड़देव के राज्य काल म महेवे पर मुसलमानों का अधिकार होगया था। परन्तु कान्हड़देव ने मौका पाकर मुसलमानों को महेवा से फिर निकाल दिया, तब वे फिर अपना अधिकार करने को महेवा में आए और भिरड़कोट को घेर लिया। सलखा उनके मुकाबले में गया और बड़ी बहादुरी से लड़ा और वहीं मुसलमानों के हाथ मारा गया। इस घटना का समय वि० सं० १४२२ लिखा मिलता है।

१० राव वीरम।

यह राव सलखा का तृतीय पुत्र था। रावल मल्लिनाथ ज्येष्ठ पुत्र होने से खेड़ का मालिक हुआ। राव वीरम भिरड़कोट में शासन करता है, और रावल मल्लिनाथ खेड़ में।

उस समय दला नामक जोइया (योद्धेय) वंश का क्षत्रिय बादशाही द्रव्य लेकर महेवा में आया और उसने मल्लिनाथ के शरण में रह कर वहां निवास करना चाहा। उसके पास एक 'समाधि' नामक घोड़ी बहुमूल्य थी। रावल मल्लिनाथ के पुत्र जगमाल ने शरण देने के उपलक्ष्य में उस अमूल्य घोड़ी को दला से लेना चाहा, परन्तु उसने वह नहीं दी, जिससे जगमाल उससे नाराज होगया और निवास करने से इन्कार कर दिया तब दला जगमाल के भय से राव वीरम के पास भिरड़कोट चला गया।

वीरम ने उसे आश्रय दिया और कहा कि "आप यहां आनन्द से रह सकते हैं।" दला ने वीरम के पास निवास कर दिया और आश्रय देने के उपकार में वह समाधि घोड़ी वीरम को दे दी। यही वीरम और राव मल्लिनाथ के परस्पर मनोमालिन्य का कारण हुआ। और मल्लिनाथ ने वीरम को भिरड़कोट से निकाल दिया तब वीरम ने वहां से ३ कोस के अन्तर पर वरिया नामक पर्वत का आश्रय लेकर वीरमपुर¹ बसाया और वहां निवास किया। परन्तु जगमाल ने उसे वहां भी ठहरने नहीं दिया। तब वीरम अपने परिजन को लेकर रेतीले मैदान में चला गया और वहां निवास किया, जहां इस समय सेतरावा गांव है।

वीरम वहां भी न ठहरा, अपने पुत्र देवराज को वहां रखकर स्वयं जोइयावाटी में दला के पास चला गया। दला ने उसका बड़ा आदर किया और बड़े प्रेम से रक्खा। परन्तु वीरम उद्दंड बहुत था, इसने ढोल बनाने के लिये जोइयों के पूज्य वृक्ष पलास (फरास) को कटवा दिया। इस बात से जोइया अप्रसन्न हुए और उन्होंने इसको मारने का इरादा किया। परन्तु बहाना भी तो होना चाहिये, उन्होंने वीरम की गायें घेरलीं। वीरम उन्हें छुड़ाने गया, वहां लड़ाई हो पड़ी, उसी लड़ाई में वीरम मारा गया। इस घटना का समय वि० सं० १४४० लिखा मिलता है।

११ राव चूंडा।

राव चूंडा राव वीरम का सबसे छोटा पुत्र था। इसके पिता की मृत्यु के समय इसकी अवस्था ६–७ वर्ष की थी। वीरम जोइयों के

---

(१) इस समय वह नगर नाम से प्रसिद्ध है और जैनियों का तीर्थ स्थान है।

हाथ मारा गया तब इसकी माता मांगलियांणी इसे लेकर जोइया-वाटी से मारवाड़ में चली आई और कालाऊ गांव के निवासी चारण आल्हा के पास आ रही। और "राजपूत हूँ" ऐसा कहकर अपने स्वरूप को छिपा रक्खा।

चूंडा बड़ा भाग्यशाली और होनहार बालक था। चारण के बछड़े चराता था। वहीं उनके अगाड़ी पछाड़ी लगाकर घोड़ों का रूपक किया करता था। उसे देखकर चारण को भ्रम हुआ कि यह तो कोई बड़े खानदान का राजपूत होना चाहिये। उसने उसकी मां को शपथ दिलाकर पूछा तो उसने कह दिया कि 'मैं राव वीरम की स्त्री हूँ' और पिछला समस्त वृत्तान्त कहा।

तब चारण इन्हें मल्लिनाथ के पास ले गया। उसने इसको होन-हार देखकर बड़े प्यार से रक्खा और सालोड़ी ग्राम के थाने पर भेज दिया। इसने वहां घोड़े और राजपूतों का वैभव बढ़ाना शुरू किया।

दैव अनुकूल होता है तब सब सामान वैसा ही मिल जाता है। एक नमक की पोठ आई उसे चूंडा ने लूटा तो उसमें सोने के पासे निकल पड़े। इस द्रव्य के हाथ लग जाने से चूंडा ने फिर घोड़ों और राजपूतों का संग्रह किया।

वि० सं० १४५१ में ईदा राजपूतों ने मुसलमानों से पीछा मंडोवर का किला लेने का विचार किया, इधर मंडोवर से ७ कोस पर सालोड़ी गांव के थाने पर चूंडा था, उसकी सहायता लेकर ईदों ने मंडोवर का किला मुसलमानों को मारकर ले लिया, परन्तु आगे के भय से वह किला राव चूंडा को बेटी ब्याह कर दहेज में दे दिया। इस विषय का यह प्राचीन दोहा है—

दोहा

"ईदांरो उपकार, कमधज कदं न वीसरै।
चूंडो चँवरी चाड, दियो मँडोवर दायजे॥"

मंडोवर का राज्य पाकर चूंडा ने नागोर का राज्य भी खानजादों से छीन लिया और वहीं भाटियों से युद्ध हुआ, जिसमें मुलतान के मुसलमान भी शामिल थे, इस युद्ध में चूंडा का स्वर्गवास होगया। यह घटना वि० सं० १४८० में हुई थी। राव चूंडा के १४ पुत्र हुए, चौदह ही 'राव' कहलाए।

११ राव रणमल।

राव चूंडा का ज्येष्ठ पुत्र रणमल था, परन्तु छोटे पुत्र कान्हा पर अधिक प्रेम होने से राव चूंडा ने नागोर का राज्य कान्हा को दिया, जिससे रणमल पिता से आज्ञा लेकर चित्तौड़ के राणा लाखा के पास चला गया। इसने राणा लाखा की तन मन से सेवा की, यहां-तक कि अजमेर विजय करके राणा के आधीन कर दिया।

राणा लाखा के अनन्तर राणा मोकल चित्तौड़ का मालिक हुआ। इधर कान्हा के मर जाने पर राव रणमल ने मारवाड़ में आकर अपने पितृराज्य पर अपना अधिकार कर लिया। परन्तु राणा मोकल बालक था इसलिये चित्तौड़ के राज्य का प्रबन्ध भी राव रणमल को करना पड़ा था। यह बात सीसोदियों को सहन न हुई परन्तु राव रणमल के आगे वे क्या कर सकते थे? तब उन्होंने यह षड्यन्त्र रचा कि राणा खेता के खवासिये पुत्र चाचा मेरा के हाथ राणा मोकल को वि० सं० १४९० में मरवा दिया, जिस समय राव रणमल मारवाड़ में था।

चाचा मेरा चित्तौड़ के मालिक हो बैठे और मोकल के पुत्र राणा कुंभा को मारने का प्रयत्न करने लगे। तब राणा कुम्भा ने राव रणमल को लिखा कि "आपका भानजा मोकल तो मारा गया है और अब मेरी बारी है, आप शीघ्र आकर मेरे प्राणों की रक्षा करें" इस पत्र को

पढ़ते ही राव रणमल चित्तौड़ पहुंचा, तब चाचा मेरा भागकर पई के पहाड़ों में जा घुसे। रणमल ने वहां जा, उनको मार कर राणा कुंभा को निष्कंटक किया।

चित्तौड़ के राज्य का प्रबन्ध राव रणमल के हाथ में देखकर सीसोदिये जलभुन गये। उन्होंने राणा कुंभा को बहकाया कि "राव रणमल चित्तौड़ का प्रबंध अपने हाथ लिये बैठा है, मेवाड़ का राज्य राठोड़ों के हाथ में चला जायगा, आप इस पर ध्यान दें।" कुंभा उनके बहकाने में आ गया और वि० सं० १४९५ में घातकों द्वारा राव रणमल को मरवा दिया।

रणमल के मारे जाने पर राव जोधा, जो चित्तौड़ में था, अपने राजपूतों को लेकर मारवाड़ की तरफ चला। उसके पीछे मेवाड़ की बड़ी सेना आई, जिसका नेता मोकल का बड़ा भाई सीसोदिया चूंडा था। जोधा ने उस समय मंडोर में टिकना दुष्कर समझ कर पूंगल की तरफ प्रयाण करदिया और गांव काहूनी में निवास किया। मंडोवर पर राणा कुंभा का आधिपत्य होगया। वह वि० सं० १५१० तक पंद्रह वर्ष रहा। वि० सं० १५१० में राव जोधा ने अपने बंधुवर्ग और खड्ग के बल से मंडोवर का किला सीसोदियों को मारकर वापिस लेलिया।

द्वितीय अध्याय।

राव रणमल के २७ पुत्र थे। जिनमें अखैराज सबसे बड़ा था। राज्य का अधिकारी ज्येष्ठ पुत्र होने से वही होना चाहिये था, परन्तु पिता की इच्छा राव जोधा को उत्तराधिकारी करने की थी, जिससे इस पितृभक्त पुत्र ने पिता की इच्छानुसार छोटे भाई जोधा को राज्य का स्वामी स्वीकृत किया और अपने हाथ से राज्यतिलक करके मंडोवर का मालिक बना दिया।

अखैराज का पुत्र महराज और उसका पुत्र कूंपा, जिससे कूंपावत शाखा चली।

13 महराज।

महराज महापराक्रमी पुरुष था। इसकी जागीर में सोझत परगने का गांव रढावस बारह गांवों से था। इसके पिता अखैराज ने सींधल चरड़ा को मारकर बगड़ी का राज्य कायम किया था। सींधल चरड़ा से युद्ध हुआ, उसमें महराज भी पिता के साथ था। अखैराज को इस युद्ध में महराज से बड़ी सहायता मिली। बल्कि चरड़ा महराज की मदद से ही मारा गया था।

यद्यपि सींधल चरड़ा मार लिया गया, तथापि उसके मारने से वहां का राज्य निष्कंटक नहीं हुआ। क्योंकि उसके आस पास में मेर लोगों की वस्ती थी। वे लोग स्वतन्त्रता से निवास करते थे। सोझत के सींधल चित्तौड़ के स्वामी महाराणा की सेवा करते थे और मेर लोग भी महाराणा को अपना मालिक समझते थे। अखैराज ने

सींधलों को मारकर सोभत पर भी अपना अधिकार कर लिया और अपने पुत्र महराज को सोभत में रख दिया।

सोभत में इस महाबली वीर पुरुष का आधिपत्य होजाने से उस प्रान्त के मेर लोग तंग आगये। उन्होंने महराज को हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया। जब परस्पर द्वेष उत्पन्न हो जाता है तो एक दूसरे को हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया ही जाता है। मेरों के मुखिया भारमल ने महराज की गायों का हरण किया, ग्वालों ने आकर पुकार की कि, मेर भारमल अपनी गायें ले जाता है, हमने आपसे निवेदन कर दिया है, जो हमारा कर्तव्य था। महराज यह समाचार सुनते ही चुनिंदे सुभटों को लेकर उनके पीछे दौड़ा। गांव सिरियारी के पास जाते काले भाटे नामक स्थान पर उन्हें जा पहुँचा। मेर भी भागने का मौका न देखकर सामने हो गये। परस्पर घोर युद्ध हुआ उसमें महराज बहुत से मेरों को मारकर कार्तिक बदि ३० अमावास्या को वि० सं० १५६० में काम आया। इस वीर ने अपना सिर पड़ जाने के पश्चात् वैरिवर्ग में तलवार चलाई। धन्य हैं ऐसे शूरवीर पुरुषों को जिन्होंने अपने कृत्य से नाम को अमर किया। विषय का गीत सांदू माला ने कहा था।

गीत

गो-ग्रह छळ गोम भोम छळ भारत,
सुजड़ां हथ सो बात सकाज ।
अरि मारे दीठो आफळतो,
माथो धर पड़ियां महराज ॥ १ ॥
अखैराजोत मचे अरेहण,
भाजे नहीं अरेह भड़ ।
कमळ खँवा सूं होवत कांनै,

धसै अरी घड़ा दिस धड़ ॥२॥
स्यांम साथ हुलयण धकै सत,
हुव बैठी जपै हर ।
वैरियां माथै मोहर बाहिया,
कमल धरण गाय रच्छकर ॥३॥

दोहा

गायां बाहरू बीरगत, सक्ती कमधज साज ।
लड़े कमध पद गत लियो, माथा विन महराज ॥१॥
अड़ियो मेरां सूं अभय, भिड़ियो जुध महावीर ।
पड़ियो सिर रिण भोम पर, धड़ लड़ियो रिणधीर ॥२॥
सिर विन चढियो वीररस, धड़ लड़ियो जुध धाव ।
दिव्य शक्ति लोयण दिया, भक्ती सुरभ्यां भाव ॥३॥
सिर विन जूंझै धड़ समर, जो वाजै जूंझार ।
कहै कमध कह सूरमा, सुजस अमर संसार ॥४॥

उक्त ठाकुर की हुल वंश की ठकुरानी ने अपने पति के साथ जाने के लिये अग्नि स्नान कर इस मलीन शरीर को त्याग, दिव्य देह को धारण किया। जिसका उल्लेख ऊपर की कविता में किया जा चुका है।

वीरवर महराज के मारे जाने का समाचार सुनकर राठौड़ वैरसल परवतोत ने अपने बंधु के वैर का बदला लेने के लिये मेरों पर चढ़ाई की। मेर भी महराज के मारे जाने से अति उद्धत हो रहे थे, सझकर सामने आ खड़े हुए। परस्पर महा घोर संग्राम हुआ जिसमें वैरसल के हाथ बहुत से मेर मारे गए और शेष रहे वे प्राण बचाकर भाग गए।

तृतीय अध्याय।

१४। १ राव कूंपा।

इसका जन्म वि० सं० १५५६ की माघ वदी १२ द्वादशी को सोजन परगना के गांव रढावस में हुआ था।[1] पिता की मृत्यु के समय इसकी उम्र एक वर्ष की थी। स्त्रियों के परस्पर ईर्ष्या होती ही है इसी कारण से इसकी माता भटियानी, कूंपा कुछ बड़ा होने पर, इसे ले राव दूदा के पुत्र राव वीरमदेव के पास मेड़ते चली गई। वीरमदेव ने इसके निर्वाह के लिये मेड़ता परगने का गांव सुंगदड़ा जागीर में दिया।

राव वीरमदे बड़ा वीर पुरुष था, इसके और जोधपुर के राव मालदेव के परस्पर दरियाजोश हाथी के कारण मनो मालिन्य हो-गया था।[2] राव मालदेव वीरमदेव को हर तरह से कष्ट पहुँचाता था। परन्तु वीरमदेव भी उसका बदला लेता रहता।

---

(१) कहीं इसका जन्म समय वि० सं० १५५८ मार्गशीर्ष सुदि १२ लिखा है।

(२) राव गांगा और उसके चाचा शेखा के बनती नहीं थी। वह अपनी मदद में नागौर के खानजादा को लाया था। उसके पास दरियाजोश नामक हाथी था, जिसकी सूंड के तलवारें बंधी रहती थीं, और उसे ऐसी शिक्षा दी गई थी कि वह शत्रु सेना को मारता हुआ निःशंक आगे बढ़ता जाय और उसके पीछे सेना आगे बढ़े। राव गांगा ने उसके तीर मारकर उसे भगादिया, वह भागता हुआ मेड़ते में चला गया। मेड़तिया वीरमदेव ने उसे अपने यहां रख लिया। राव गांगा के कुंवर मालदेव ने वीरमदेव को कहलाया कि यह हाथी हमारी विजय का है हमारे यहां भेज-दो। उसने इन्कार किया, तिस पर राव मालदेव उससे नाराज होगया।

पाली का स्वामी सोनगरा अखैराज रणधीरोत राव मालदेव के सेनापतियों में से था। राव मालदेव ने इसे मेड़ता पर भेजकर मेड़ता प्रांत में लूटपाट करवाई और उपद्रव करवाया। वीरमदेव बड़ा वीर पुरुष था, उसके राज्य में कोई बिगाड़ करै, उससे सहन कब होसकता था। वीरमदेव ने उक्त सोनगरा पर चढ़ाई की। सोनगरा अखैराज भी अपने नाम से पहचाना जाता था। उस पर शत्रु चढ़ आवे, उसे बरदास्त कहां थी, सजकर सामने आया, दोनों दलों में घमासान युद्ध हुआ, इस युद्ध में अल्प अवस्था होने पर भी कूंपा ने अच्छा पराक्रम कर दिखाया, जिससे जगत् में इसकी प्रसिद्धि होने लगी। पराक्रमी पुरुष सदा स्वतंत्र प्रकृति के और उद्दण्ड होते ही हैं, किसी बात पर मेड़ते के राव वीरमदेव और कूंपा के परस्पर विवाद हो पड़ा। कूंपा ने उस दशा में अपना वहां रहना अनुचित समझा और मेड़ता छोड़ कर सोजत के राव वीरमदेव[1] के, जो कुंवर वाघा का ज्येष्ठ पुत्र और राव गांगा का बड़ा भाई था, पास चला गया। वीरमदेव ने इसको बड़े आदर के साथ रख लिया।

---

(१) यह वीरमदेव राव सूजा के पुत्र कुंवर वाघा का ज्येष्ठ पुत्र था। राव सूजा के अनन्तर यह राज्य का अधिकारी होना चाहिये था। इसीको जोधपुर देने के लिये अखैराज का पुत्र पंचायण आदि सरदार किले पर गये थे परन्तु दैव की गति बड़ी विचित्र है, वह तो राज्य से वञ्चित रह गया और राव गांगा राज्य का मालिक बना दिया गया। घटना यह हुई कि सरदार वीरम को राज्य तिलक करने के लिये हवेलियों से रवाना हुए, उस समय पानी बरसने का कोई आसार नहीं था, इसलिये छत्री आदि वर्षा वारक पदार्थ नहीं लिया गया, और अचानक मार्ग में वर्षा आ जाने से उनके वस्त्र भीग गये सरदारों के साथ उनके बालक भी थे। बालक दिन में दस वख्त खाते हैं। बालकों ने सरदारों से कहा कि हमें भूख लगी है। तब सरदारों ने वीरमकी माता को, जिसे सरदार राजमाता बनाने के विचार में थे, कहलाया कि "बालकों को भूख लग आई है, इनके लिये भोजन का प्रबन्ध करें।" वीरम की माता ने यह नहीं सोचा कि इस समय राज्य का अधिकार देना इन्हींके हाथ में है, इनको प्रसन्न रखना चाहिये। परन्तु उसने तुरंत राजमाता होने का अधिकार मन में लाकर कहला दिया कि "मैं भटियारी नहीं हूं कि आपके बालकों के वास्ते भोजन की तैयारी करूं।"

राव गांगा और वीरमदेव के परस्पर विवाद चलता था। राव कूंपा वीरमदेव के पास था। इसने राव गांगा की भूमि में लूटपाट करना शुरू किया। जोधपुर राज्य के कई थाने लूट लिये। कूंपा ने राव गांगा के राज्य में ऐसा उपद्रव मचाया कि प्रजा हैरान होगई और राव गांगा के नाकों दम कर दिया। तब राव गांगा ने अपने सेनापति जैता से कहा कि "आप वीरम को सोजत से क्यों नहीं निकाल देते हैं।" तब जैता ने कहा कि "आप नहीं जानते कि कूंपा महा साहसी रणकुशल अद्वितीय वीर पुरुष है उसके आगे किसकी चल सकती है। वह कूंपा जब तक वीरम के पास है, तब तक वह सोजत से निकाला नहीं जा सकता।"

तब रावजी ने जैता को कहा कि "उसे बुला लेना चाहिये।" तब जैता ने कहा कि आप मुझे पूरा भरोसा दें कि मैं उसे अप्रसन्न नहीं करूंगा। वह स्वतंत्र प्रकृति का वीर पुरुष है, उसकी इच्छानुसार चलने से शायद वह आ सकता है और वह ठहर भी सकता है" रावजी ने इस बात का स्वीकार किया, तब जैता ने कूंपा को कहला भेजा कि "वीरम चलचित्त है आप यहां आजावें। आपको मनवाञ्छित जागीर मिल जायगी।" इसी अर्से में वीरम का बर्ताव कूंपा

' इस बात की खबर राव गांगा की माता को मिली तो उन्होंने तुरंत उनके लिये भोजन तैयार करके थाल भेज दिये और बिछौने भी भेजे। सरदार किले पर गये थे उस समय पानी बरसने से उनके वस्त्र भी भीगे हुए थे, गांगा की माता ने उनके लिये नये सूखे वस्त्र भेजे। वीरम की माता के अनादर करने से सरदार आग बबूला हो रहे थे, उनको गांगा की माता ने आदर सत्कार तथा मीठे वचन रूप अमृत से सिंचन करके शान्त किया जिससे उनका मन वीरम की ओर से खिचकर गांगा की तरफ झुक गया। तब वे वीरम के राजतिलक के विषय में टालाटूली करने लगे। वीरम की माता को कहला दिया कि आज का दिन अच्छा नहीं है फिर शुभ दिन देख कर वीरमजी गद्दी बिठाये जायंगे। इस प्रकार वीरम को राज्य से वञ्चित रख कर राव गांगा को राव सूजा का उत्तराधिकारी बनाकर जोधपुर के राज्यसिंहासन पर बिठा दिया और वीरम को सोजत भेज दिया।

के साथ ठीक नहीं रहा, तब कूंपा वीरम को छोड़ कर राव गांगा के पास चला आया। कूंपा के इधर आजाने से वीरम का बल टूट गया और वह वि० सं० १५८६ में सोजत से निकाल दिया गया।

कूंपा के ३ कन्या थीं। उनका विवाह दिन नियत हुआ, जयपुर और उदयपुर राज्य से बरातें आईं। उनमें बराती बहुत थे जिससे बरातों के डेरे अरण्य में कराये गये और मांडो (विवाह मंडप) वहीं बनाया गया। फिर वही स्थान आबाद होजाने से गांव का नाम "मांडो" प्रसिद्ध हुआ। वह गांव इस समय सोजत परगना में विद्यमान है, उसका ठाकुर कूंपावत राठोड़ है। इस विषय का यह प्राचीन दोहा है—

दोहा

"कन्या व्याह कूंपे कियो, प्रगट लियौ जस पूर।
जिण दिन सूं जग म हुवौ, मांडो गांव मसूर॥"

वि० सं० १५९२ (ई० सं० १५३५) में राव मालदेव कूंपा को सेनाध्यक्ष नियत कर ना ोर पर गया। वहां खानजादा दौलतखां के साथ कूंपा के सेनापतित्व में महाघोर युद्ध हुआ, जिसमें कूंपा के बाहुबल से राव मालदेव की विजय हुई। इस विजय के अनन्तर राव मालदेव ने उस प्रान्त में अपने थाने बिठाए। हीरावाड़ी के थाने पर जैता और कूंपा ये दोनों वीर रक्खे गये।

वि० सं० १५९३ में जेसलमेर के रावल लूणकर्ण की पुत्री का संबंध राव मालदेव के साथ हुआ और बड़ी धूम धाम के साथ जोधपुर से बरात बनाकर राव मालदेव जेसलमेर गया। रावल ने यह संबंध रावजी को धोका देकर मारने के विचार से किया था। उसने यह सोच रक्खा था कि राव मालदेव चौंरी में आकर बैठेगा उस समय वह असहाय इकला होने से सहज में मार लिया जायगा,

परंतु विवाही-जाने वाली बाई ऊमादे को इस बात की खबर होगई कि रावलजी चौंरी में बैठे हुए उसके पति को मारदेना चाहते हैं। उसने अपने विश्वासपात्र पुरोहित राघो के द्वारा राव मालदेव को सूचना करवा दी, जिससे राव मालदेव और उसके सेना नायक जैता और कूंपा सावधान हो गये और कोई अनिष्ट न होसका। जैता और कूंपाने रावजी की रक्षार्थ यह उपाय किया कि जब तक रावजी चौंरी में रहें तब तक रावलजी को अपने पास बिठा रक्खा। कारण यह था कि यदि रावजी के साथ किसी प्रकार का अनर्थ हो तो हम रावलजी को जीवित नहीं जाने देंगे। विवाह निर्विघ्न समाप्त हुआ। राव मालदेव अपनी दुलहन को लेकर जैता, कूंपा को साथ लिए आनन्द पूर्वक जोधपुर आया। आते समय पुरोहित राघो को अपने साथ ले आया। यही बाई रूठी रानी कहलाई।

वि० सं० १५९४ (ई० सं० १५३७) में अजमेर का गुजराती मुसलमान सूबहदार किसी कारण अजमेर से चला गया, उस अवसर पर राव दूदा के पुत्र राव वीरमदेव ने, जो मेड़ते का स्वामी था, अजमेर जाकर अपना कब्जा कर लिया। अजमेर पर वीरम का आधिपत्य होजाने से वीरम का बल बढ़ गया, यह राव मालदेव को सहन नहीं हुआ। वीरम का वैभव बढ़ा देखकर मालदेव जलने लगा और वीरम को बलहीन करने के लिये अपने सेना नायक जैता और कूंपा को सेना देकर मेड़ते पर भेजा।

जैता और कूंपा ने मेड़ते जाकर वीमर को समझाया कि "आपन आपस में भाई भाईलड़ेंगे जिससे दोनों दुर्बल हो जायंगे। शत्रुओं को अपने ऊपर विजय करने का उत्तम अवसर मिल जायगा इस लिये हमारी राय में ऐसा करना उत्तम प्रतीत होता है कि आप मेड़ता में रहें और अजमेर रावजी के आधीन कर दें।" इसके उत्तर में वीरम ने कहा कि "मैं अजमेर नहीं छोडूंगा" अन्त में वीरम मेड़ता छोड़ कर अजमेर चला गया।

इसी वर्ष[1] में राव मालदेव ने रीयां की जागीर वरसिंह के पौत्र सहसा को दे दी। राव वीरम और सहसा के पहले से खट पट चलती थी, जिस विरोध के कारण वीरम ने अजमेर से आकर रीयां पर आक्रमण किया। इधर राव मालदेव ने सहसा की सहायतार्थ अपनी सेना भेजी, जिसके सेनाध्यक्ष जैता[2] और कूंपा थे। इन्होंने जाकर वीरम को ललकारा तो वीरम सामने आया और दोनों में महा भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में वीरम बहुत घायल हो गया था।

उस समय राठोड़ पंचायण[3] शेखी मारता हुआ वीरम पर दौड़ कर गया, परन्तु वीर वीरम के आगे वह कौनसी वस्तु था? वीरम ने उसे आता देखकर कहा कि "मारवाड़ में तेरे जैसे लड़के बहुत हैं, क्या तू वीरम की पीठ दबा सकता है? वीरम के ऐसे जोशीले वचन सुन पंचायण वहीं खड़ा रह गया। तब कूंपा ने कहा कि "राव वीरम यों सहज में ही नहीं मरता।" कूंपा के इस कथन को सुनकर वीरम अपने घायल वीरों को लेकर अजमेर चला गया। इस युद्ध में वीरम और मालदेव के बहुत से वीर मारे गये उस विषय की यह किंवदन्ती प्रसिद्ध है—

"रीयांवाळी राड़, वीरम बीसरसी नही।"

अर्थात् रीयां के युद्ध को वीरम भूलेंगे नहीं। जो महा विकट कार्य

---

(१) यह राव जोधा का पुत्र था। राव जोधा ने इसको और दूदा को मेड़ता नगर दिया था।

(२) अखैराज का पुत्र पंचायण (पंचानन = सिंह), उसका पुत्र जैना जिससे जैनावत शाखा चली।

(३) यह पंचायण अखैराज के पुत्र पंचायण से अलग है।

होता है उसकी विस्मृति नहीं होसकती। उसका स्मरण बना ही रहता है।

नागौर का खानजादा रावजी से विरुद्ध चलता था जिससे राव मालदेव ने वि० सं० १५९२ में कूंपा को फौज देकर नागौर पर विदा किया उसने खानजादा से युद्ध कर विजय प्राप्त की। खानजादा भाग गया और रावजी का नागौर में कब्जा हो गया।

तत्पश्चात् राव मालदेव ने वीरम को अजमेर से निकाल देने के लिये जैता और कूंपा को अजमेर भेजा और रवाना करते समय उन्हें बड़े आग्रह और ताना मार कर कह दिया था कि "वीरम को अजमेर से निकाल कर मेरे पास आना" रावजी की आज्ञानुसार ये दोनों वीर बड़ी सेना लेकर अजमेर गये। वीरम को ज्ञान हुआ कि राव मालदेव की सेना यहां आरही है, युद्ध की सामग्री तैयार करके युद्धार्थ तैयार हो गया। रावजी की सेना ने अजमेर को जा घेरा, वीरवर वीरम मुकाबला में आया, बड़ा घमासान युद्ध हुआ। जिसमें दोनों ओरके कई सुभट मारे गये। अन्त में जैता कूंपा ने दबाकर वीरम को अजमेर से निकाल दिया तब वीरम अजमेर से निकल कर डीडवाणे की तरफ चला गया।

वि० सं० १५९५ में जैता कूंपा ने वीरम को वहां से भी निकालने के लिये अनुधावन किया। डीडवाणे को जा घेरा। वीरम सहज में निकल भागनेवाला थोड़े ही था, सजकर युद्धार्थ सामने आया। तलवारों की रीठ बजी, वीरम ने अच्छी तलवार बजाई, कि जैता कूंपा ने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि आपके पराक्रम से राव मालदेव सारा हिन्दुस्तान विजय कर सकता है परन्तु ईश्वर की इच्छा ऐसी ही है कि आप दोनों का मेल नहीं होता। जब दैव प्रतिकूल होता है तो ऐसा ही होता है। जैता कूंपा के पास सेना अधिक थी, तथापि वीरम ने उनको लड़ाई में छका दिया। परन्तु अन्तमें

वीरम को डीडवाणा छोड़ देना पड़ा। वीरम डीडवाणे से निकल कर सेखावाटी की तरफ चला गया और जैता कूंपा ने डीडवाणा पर रावजी का झंडा खड़ा कर दिया। रावजी ने इस सेवा से प्रसन्न होकर डीडवाणा कूंपा को जागीर में दे दिया।

ठिकाने की तवारीख में वि० सं० १५६६ में डीडवाणा राव कूंपा के पट्टे हुआ लिखा है।

वि० सं० १५६६ में जैता और कूंपा सेना लेकर वीरम के पीछे गांव बोयल तक गये और वहींसे टोंक टोडे की तरफ गये, जहां सोलंकी राजपूत शासन करते थे। उनसे पेशकशी लेकर आगे बढ़े और जौनपुर गये, वहां रावजी का थाना बिठाया। वहां से पूर्व दिशा की ओर प्रयाण किया और उधर के प्रान्तों में रावजी की आज्ञा प्रवृत्त की।

प्रथम सांभर जाकर उस पर रावजी का अधिकार जमाकर फिर कासली और उसके अनन्तर फतैपुर, जूंझणूं, रेवासा, छोटा उदयपुर, चाटसू, लवाण, लालसोट और मलारण आदि परगनों को विजय करके वहां किले बनवाये और उनमें अपने थाने बिठाये।

उधर के देश में रावजी का अधिकार दृढ होगया तब वहां से सांचोर की ओर प्रयाण किया। सांचोर के स्वामी सांचोरा चौहानों को आधीन करके सांचोर में रावजी का राज्य स्थापित किया। तदनन्तर गुजरात की तरफ राधनपुर व खावड़ पर्यन्त की भूमि पर अधिकार कर नावरा गांव लूटा गया।

जैता और कूंपा ने राव मालदेव का राज्य इतना विस्तृत कर दिया था कि उसके राज्य की सीमा पूर्व में हांसी हिसार से जा लगी। दक्षिण में मेवाड़ और सिरोही के राज्य तक पहुंच कर आबू की तलहटी तक जालगी। उत्तर में बीकानेर का राज्य रहा और

पश्चिम में उनके राज्य की सीमा सिंध व जेसलमेर की सीमा से जामिली।

जैता और कूंपा दोनों के वर्णन की यह प्राचीन कविता मिली है—

गीत

जैतो नै राव मालदे जोड़ै,
जोड़ै भड़ बेहूं जग जेठ।
सोह भर भार छजै बगड़ी सिर,
पोह सोह भरौ नचीता पेट ॥१॥
जोधांणो बगड़ी बिहुं जोड़ै,
जोध अखा बेहूं भड़ जोड़।
दीना पटा भोगवे दूजा,
रावांरा सारा राठोड़ ॥ २ ॥
पत जोधांण जैतैं नैं पूछै,
मोपर घणी आपरी म्हेर।
मेड़तो ले दीजै माल नैं,
वीरम हूंत संभालो वैर ॥३॥

अर्थ—जैता और राव मालदेव ये दोनों समान हैं, ये दोनों वीर में जेठी मल्ल के जैसे जगत् में सबसे बड़े हैं (जैता बगड़ी का स्वामी था इस लिये उसके स्थान का निर्देश करके कवि कहता है) राज्य का सर्व भार बगड़ी के शिर पर शोभा देता है। अन्य सब सरदार निश्चिंत अपना पेट भरें ॥१॥ जोधपुर और बगड़ी का स्वामी अखैराज का वंशज ये दोनों सुभट समान हैं। अन्य सब राठोड़ इन रावों के दिये पट्टे भोगते हैं ॥ २ ॥ जोधपुर का स्वामी जैता को पूछता है, मुझ पर आपकी बड़ी कृपा है। आप वीरमदेव से लेकर मेड़ता मुझे देदीजिये। आप पुराने वैर का स्मरण

जैल कहै वेहूं कर जोड़े,
खत्रियां नैं आ मोटी खोड़ ।
भला न कहै तोड़ियां भायां,
तुरकांणी कहो तो दूं तोड़ ॥४॥
पोह सुण जाब कहे इम पाछो,
बड़ा हूंत नह कीजै बाद ।
आपांरो रहवे जो आंटो,
दोनूं राह न देवैं दाद ॥५॥
मंत्रियां कह्यौ अरज मांनीजै,
भुज मुरधर थांरे भर भार ।
मेलो कँवर आप व्है मांहे,
इण घर में थांरो इधकार ॥६॥
कूंपो विदा जैतसी कीधौ,
लहसकर कमँध दीध सह लार ।
धर सिवियांण लीवी धूहड़ियां,
सत्रवां सीस बजाड़े सार ॥७॥

करें ॥ ३ ॥ जैता दोनों हाथ जोड़ कर कहता है कि क्षत्रियों में यह बड़ा दोष है, भाइयों को तोड़ने से कोई भला नहीं कहेगा, कहो तो मुसलमानों को मैं तोड़ दूं ॥४॥ प्रभु (राव मालदेव) सुन कर प्रत्युत्तर देता है कि बड़ों से विवाद नहीं करना चाहिये । यदि अपना वैर लेलिया जाय तो हिन्दु मुसलमान दोनों को दाद न देवें ॥५॥ (इस समय) मंत्रियों ने (जैता से) कहा कि हमारी प्रार्थना माननी चाहिये । मारवाड़ का भार आपके भुजों पर है । आप शामिल होकर अपने कुंवर को भेजें, इस घरमें आपही का अधिकार है ॥६॥ तब जैता ने कूंपा को रवाना किया, राव ने उसके साथ अपनी सेना दी, धूहड़ के वंशज (राठौड़ कूंपा) ने शत्रुओं के सिर पर तलवार चलाकर सिवाने की भूमि विजय की ॥ ७ ॥

बाहड़मेर कोटड़ो बेहूं,
राड़दड़ो खावड़ रौ राव।
ऊमरकोट पारकर आंटो,
तावे हुआ पड़ंतां ताव ॥८॥
सूरांचंद धाट ले सिगळी,
वस थिरियाद करी सहवाय।
भाद्राजण जाळोर भेळिया,
पालणपुरो लगायो पाय ॥९॥
सीरोही कीधौ डंड सगळै,
खेड़–सुपह मोटा व्रद खाट।
मेड़तो ले दियो मालनैं,
वीरमनैं कीधो द्रहवाट ॥१०॥
ले वधनौर अजैगढ लीधौ,
गढ बावन भांगो गुमर।
तिण दिन आंण मिले चित्तौड़ा,
पाये लागो जोधपुर ॥११॥

बाहड़मेर, कोटड़ा, राड़दड़ा, खावड़, ऊमरकोट और पारकर ये सब तलवार के ताप से आधीन होगए ॥ ८ ॥ सूराचंद और समस्त धाट को लेकर वाव परगने के साथ थिराद प्रांत को आधीन किया। भाद्राजण और जालोर को विजय करके पालणपुर को पैरों तले दवाया ॥ ९ ॥ सीरोही पर दंड करके खेड़ के राजा (मालदेव) ने बड़ा विरुद हासिल किया। मेड़ता लेकर मालदेव को दिया और वीरमदेव को देश से निकाल दिया ॥ १० ॥ वधनोर और अजमेर लेकर बावन ५२ गढ़ो का गर्व गंजन किया। उस अवसर पर चित्तोड़ का स्वामी भी जोधपुर के पादनत हुआ ॥ ११ ॥

तोडो टूंक मालगढ तोड़े ।
खीची डंड बूंदेलखंड ।
थांणो जाय चाटसू थापै,
डीग भरथपुर कीधौ डंड ॥१२॥
पाटणकोट जूंझणू पालट,
क्यांमखांनियां दीधा काड ।
नारनोल़ लीधी निजरांणै,
चावल़ कमँध महेवै चाड ॥१३॥
तलवाई खेतड़ी तांई,
नरवर लियो खँडेलो ताड़ ।
कछवाहां आय सगपण कीनौ,
धी वदल़े राखी ढूंढाड़ ॥१४॥
सांभर ले लीधी धर सारी,
अमल सेर रो दियो उठाय ।
लूट माल तोसीणो लीधो,
मांझी अखा मँडोवर मांय ॥१५॥

तोडा, टोंक और मालगढ़ को नष्ट करके खीचीवाड़ा और बुंदेलखंड से दंड लिया। चाटसू में थाना विठाकर डीग और भरतपुर को दंडित किया ॥ १२ ॥ पाटण और जूंझणू को पलट कर कयामखानियों को निकाल दिया। नारनोल से नज़र लेकर महेवा (मालाणी) को विजय किया ॥ १३ ॥ तलवाई, खेतड़ी, नरवर और खंडेला से दंड लिया और कछवाहों ने आकर संवंध करके कन्या दान के परिवर्तन में ढूंढाड़ को वचालिया ॥ १४ ॥ सांभर की झील लेकर सव भूमि दवा ली और शेरशाह बादशाह का आधिपत्य उठा दिया। वहां का माल लूट कर तोसीणा लेकर मंडोवर के राज्य में

परबतसर मारोठ पालटे,
अहिपुर ले लीधौ डीडवांण ।
दौलतपुरो कोलियो दोऊं,
कूंपे राज कियो बीकाण ॥१६॥

जेसलमेरा रावळ जादम,
पेसकसी देवै पहुँचाय ।
सिंध लग राज हुवौ सलखां रो,
पिरथी लगै कमँधरे पाय ॥१७॥

पूंगल भाड़ंगनेर पसरियो,
हांसी हिसाहर लायौ हेड़ ।
थरकै दिली मूंग ज्यूं थाली,
खेड़ेचे उजवाळी खेड़ ॥१८॥

अलवर रणथंभोर आगरो,
बीहसूं पड़ै अधूरा बाळ ।
असपतनैं सांसो ऊपजियो,
दीसै नह आडी देवाळ ॥१९॥

मिला लिया ॥ १५ ॥ परवतसर, मारोठ, नागोर और डीडवाणा, दौलतपुरा और कोलिया लेकर कूंपा ने बीकानेर का राज्य किया ॥ १६ ॥ यदुवंशी जेसलमेर के रावल ने पेशकसी पहुंचाई । सिंध तक राठोड़ों का राज्य हुआ और पृथ्वी पैरों तले आई ॥ १७ ॥ पूंगल और भाड़ंगनेर (भटनेर) लेकर हांसी हिसार को ढूंढ लाया । उस समय दिल्ली इस प्रकार हिलने लगी जैसे थाली में मूंग हिलते हैं । इस प्रकार राठोड़ ने खेड़ के राज्य को उज्ज्वल किया ॥ १८ ॥ अलवर, रणथंभोर और आगरा में भय से (गर्भवती स्त्रियों के) बालक गिरने लगे । बादशाह को संदेह उत्पन्न हुआ और से बचाने वाली दीवार नज़र नहीं आई ॥ १९ ॥ महराज का पुत्र (कूंपा) सेना-

महराजोत हुवा दळ मांझी,
पंचाणोत जिकणरी पूठ ।
खागां पांण अनी धर खाटी,
केंवीहरां काढिया कूट ॥२०॥
दुथणी जणै न कोई दूजौ,
अखवीहरा बराबर आज ।
जैतो नै कूंपो जग जाहर,
रावां तणै बांधियो राज ॥२१॥

जैता और कूंपा ने मेवाड़ के राज्य का भी कुछ हिस्सा विजित कर लिया जिससे मदारिया गांव में राव मालदेव का थाना था। राठौड़ कूंपा उस थाने में रहा करता था। उसके पास २५०० सवार थे। वि० सं० १५९३ में दासी पुत्र वनवीर चित्तौड़ के महाराणा विक्रमादित्य को मारकर सीसोदिया सरदारों की मदद से चित्तौड़ का मालिक बन बैठा। उस समय विक्रमादित्य के छोटे भाई उदयसिंह को उसकी धात्री ने गुप्त रीति से निकाल कर बचा लिया।

वि० सं० १५९७ में मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह ने राव मालदेव से सहायता मांगी उसकी सहायतार्थ राव मालदेव ने अपने सेना नायक जैता, कूंपा, ऊदावत खींवा और सोनगरा अखैराज आदि की अध्यक्षता में बड़ी सेना भेजी। इस रणविजयी सेना की सहायता से महाराणा उदयसिंह चित्तौड़ से वनवीर को निकाल

नायक और उसका सहायक पंचायण का पुत्र (जैता) था। इन्होंने तलवार के बल इतनी पृथ्वी हासिल की और दुश्मनों को मार हटाया ॥ २० ॥ आज स्त्री जाति ने अखैराज के पुत्र (जैता) के सदृश दूसरा पैदा नहीं किया है। जगत्प्रसिद्ध जैता और कूंपा ने राव मालदेव का राज्य दृढ किया ॥ २१ ॥

कर मेवाड़ की भूमि का शासक हुआ। महाराणा ने इस उपकार के बदले में रावजी के लिये ४०००० चालीस हजार फ़िरोजियां और वसंतराय हाथी भेजा। और कूंपा आदि की प्रशंसा करते हुए कहा कि "चित्तौड़ का राज्य मुझे आपकी सहायता और कूपा से मिला है। मैं आपका अहसान यावज्जीवन नहीं भूलूंगा।"

जिस समय जैता और कूंपा ने नागौर को विजय करके नागौर को लूटा था उस समय रावजी का थाना हीरावाड़ी गांव में था, इसीसे वह गांव लूट से बच गया। अतः हीरावाड़ी की प्रजा १५००० पन्द्रह हजार रुपये दोनों सेना नायकों के नज़र करने को लेकर उपस्थित हुई। उन्होंने लूट का द्रव्य लेना अनुचित जानकर लेने सें इन्कार कर दिया। तब प्रजावर्ग ने भेंट स्वरूप देने का निवेदन किया तथापि इन्होंने अस्वीकार कर दिया। अन्तमें प्रजा का अत्यन्त अधिक आग्रह देखकर लेना स्वीकार तो कर लिया परन्तु उससे जगत् का उपकारी कार्य करने और अपना नाम चिर-स्थायी रहने के काम में लगाने का कहा। प्रजावर्ग ने उस बात को स्वीकृत कर लिया और उसी गांव में एक उत्तम सुदृढ बावड़ी बना दी। जिस बावड़ी के एक गोख में वि० सं० १५६७ का शिलालेख खुदा हुआ है। इस बावड़ी को इस समय "भूतोंकी बावड़ी" कहते हैं। इस समय वह बावड़ी "रजलाणी"[1] गांव की सीमा में है।

वि० सं० १५९८ (ई० स० १५४१) में राव मालदेव ने कूंपा महराजोत और पंचायण करमसीहोत आदि सरदारों के साथ २०००० बीस हजार सेना लेकर बीकानेर पर आक्रमण किया। उधर बीकानेर का राव जैतसी अपनी सेना लेकर मुकाबले में आया। उसने गांव सूवाप में डेरा किया और राव मालदेव का डेरा गांव पही में हुआ।

---

(१) यही गांव रजलाणी पहले हीरावाड़ी कहलाया जाता था।

जब बुरे दिन आते हैं और दैव प्रतिकूल होजाता है तब मनुष्य उलटा काम कर बैठता है। उसी अर्से में एक सौदागर घोड़ों की कारवान लेकर बीकानेर में आया, उसे देखने और रुपये चुकाने के लिये राव जैतसी चुपके से सूवाप के मुकाम से बीकानेर गया। इस बात की खबर पड़ने पर कि, राव जैतसी रात्रि में चला गया है, एक एक करके उसके बहुत से सरदार चले गये। पीछे सिर्फ १०० सुभट रह गये।

जैतसी वापिस बीकानेर से सूवाप के मुकाम पर पहुँचा तो पता लगा कि अपनी सब सेना चली गई है। इस बात से व्याकुल हो कर राव जैतसी अंधकार में राव मालदेव की सेना को अपनी सेना समझ कर राव मालदेव के खेमे के समीप आगया। जोधपुर की सेना को यह अच्छा अवसर मिल गया कि शत्रु अपने आप पंजे में आपड़ा। रावजी की सेना ने उसको घेर लिया। राव जैतसी ने राव मालदेव के ऊपर पहले प्रहार किया परन्तु उसने उस वार को बचा लिया और जैतसी को मालदेव ने फिर एक ही प्रहार से मार लिया। राव मालदेव की विजय हुई।

तब वह उसी सेना के साथ बीकानेर पर चढ़ गया। जहां रूपावत भोजराज और सांखला महेशदास के साथ महाभयंकर युद्ध हुआ, जिसमें भोजराज के १५०० सवार मारे गये और राव मालदेव की विजय हुई। बीकानेर पर राव मालदेव का आधिपत्य हो गया।

बीकानेर को विजय करने में कूंपा अग्रणी था जिससे राव मालदेव ने बीकानेर का पट्टा कूंपा को लिख दिया और फतेपुर, जूंझणूं भी जागीर में दे दिये। कूंपा ने बीकानेर का राज्य किया था, उस विषय का प्राचीन गीत है—

गीत
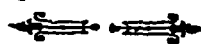
जोधांणै माल[1] अजैगढ[2] जैतो, कूंप बीकपुर[3] राज करै ।
लाखां लोग चढै ज्यां लारै, दिली आगरो दौहूं[4] डरै ॥ १ ॥
माल धणी[5] और जैत मुसाहब कूंपकरण दीवान कहै ।
बेगड़[6] अखो[7] सदा धुरवामी[8], बडरा[9] जीमणियाल[10] बहै ॥ २ ॥
गांगावत[11] मंडोर गरजियो[12], पंचाणोत[13] बावन गढ पाट ।
सुत महराज[14] जंगलधर[15] साहै, घड़ै न[16] कोई हूवा घाट ॥ ३ ॥
अनमां[17] नांम उनत्थां नाथै[18], बलवंत भरै गयण[19] सूं बाथ ।
असमर[20] त्याग[21] कमँधजां[22] आगै, हिन्दू यमन न काढै हाथ[23] ॥४॥

बीकानेर पर कूंपा का अधिकार होगया तो बीकानेर के भोजराज ने राव जैतसी के पुत्र कल्याणमल को सिरसा की ओर भेज

---

१ माल = राव मालदेव । २ अजैगढ = अजमेर ३ बीकपुर = बीकानेर ४ दौहूं = दोनों ५ धणी = मालिक ६ बेगड़ = संतान, पुत्र ७ अखा = अखैराज ८ धुरवामी = बांई तरफ चलने वाला बैल। मजबूत बलवान् बैल रथमें बांई ओर जोता जाता है ९ बडरा = बड़के १० जीमणियाल = दाहिनी तरफ का बैल, उस पर भार नहीं पड़ता ११ गांगावत राव गांगा का पुत्र राव मालदेव १२ गरजियौ = गर्जना करता है १३ पंचाणोत = राव पंचायण का पुत्र जैता १४ सुत महराज = कूंपा १५ जंगलधर = जांगलदेश, बीकानेर की भूमि १६ घड़ै न = कोई कुछ प्रपंच नहीं करता है और न प्रपंच चलता है । १७ अनमां = नहीं नमनेवालों को नमानेवाला १८ उनत्थां नाथै = जो वशमें नहीं हैं उन्हें आधीन करता है, बैल के नाक में नाथ डालने से बैल वशमें आता है वैसे वश करने वाला । १९ गयण = आकाश से २० असमर = तलवार । २१ त्याग = दानमें २२ कमधजां = राठोड़ों के २३ हाथ = हिन्दू और मुसलमानों में तलवार बजाने और दान देने में राठोड़ों से आगे हाथ बढ़ाने वाला कोई नहीं है ।

दिया। कल्याणमल अपना दुःख निवेदन करने के लिये शेरशाह बादशाह के पास दिल्ली गया और इधर से दूदाजी का पुत्र राव वीरमदेव भी दिल्ली पहुँच गया। दिल्ली में दोनों शामिल होगये। दोनोंने अपना २ दुःख परस्पर कहा, और दोनों में पूर्ण मित्रता होगई।

अब दोनोंने इधर उधर मिल मिलाकर बादशाह के पास जाने का यत्न किया, आखिर बादशाह के पास पहुँचे उन्होंने अपनी २ कथा कही। जिसे सुनकर बादशाह चुप होगया। उसने वृथा राठोड़ों से वैर करना उचित न समझा। वीरम और कल्याणमल को कहदिया कि मैं ऐसे घरेलू झगड़ों में पड़ना नहीं चाहता। इससे वीरम और कल्याणमल दोनों असंतुष्ठ हुए, परन्तु निरुत्साह नहीं हुए। वीरम ने फिर बादशाह से निवेदन किया कि "राव मालदेव ने जिन २ जागीरदारों की जागीरें जब्त करली हैं वे सब उनसे अप्रसन्न हैं, वे सब आपको मदद देंगे। आप किसी प्रकार का विचार न करें। आपकी विजय होवेगी। यदि आपको मेरा विश्वास न हो तो मेरे पुत्र जैमल को अपने पास रक्खें। मैं ऐसा षड्यंत्र रचूंगा कि, आपको लड़ना ही नहीं पड़ेगा और आपकी विजय होजायगी। इस विषय का यह छंद है—

छंद मोतीदाम

दूदावत वीरमदे जिण वार, गयो तब साह तणों दरबार।
कही सुलतान नैं येह जु बत्त, प्रथीपतनाथ जु मोय विपत्त।
दया कर आज दिलसर आप, देवो मोय मदत करो धणियाप।
सही मन सेर बड़प्पण धार, हुवो जद वीरम साथ तयार।
सजे भड़ संग बडा रिजवार, भवे मन पोरस आछो ए धार।
चमू जद वेग चली अणपार, धरा थररावत वारमवार।

बादशाह वीरम की बातों पर रीझ गया और प्रलोभन में आकर वह मारवाड़ पर आक्रमण करने के लिये ६०-७० हजार सेना लेकर दिल्ली से रवाना हुआ इस बात की खबर कूंपा को डीडवाणा में मिली तो उसने अपने मनुष्य रावजी के पास सूचना देने के लिये भेजे।

राव मालदेव ने खबर पाते ही सबको युद्ध की तैयारी करने की आज्ञा दी। और सरदारों को आज्ञापत्र लिखे कि शेरशाह सूर मारवाड़ पर आता है, आप अपनी २ पूर्ण युद्ध सामग्री के साथ जोधपुर जल्दी आओ। सरदार तो पहले ही से युद्धार्थ उत्सुक हो रहे थे, जिस पर फिर स्वामी का निमंत्रण, जिससे उनका उत्साह द्विगुणित होगया। सब सरदार सज धज सन्नद्ध होकर स्वामी के चरणों में उपस्थित हुए। राव मालदेव अपनी बड़ी भारी सेना लेकर, जिसके सेनाध्यक्ष जैता और कूंपा थे, अजमेर की ओर प्रयाण किया और अपने अंतःपुरको सिरोही भेज दिया, जहां आप का ननिहाल था।

दोहा

सही फौज सुलतांन री, आय रही अजमेर।
अठी माल चढियौ अँभग, फैल रोस चहुँ फेर॥

राव मालदेव का डेरा अजमेर के समीप में हुआ। बादशाह को इस बात की खबर मिली कि राव मालदेव वीर राठोड़ राजपूतों की ८०००० अस्सी हजार सेना लेकर अजमेर के निकट आगया है। बादशाह मन में घबराया और पीछे लौट जाने का विचार करने लगा। उस समय वीरम ने उसे ढाढस बंधाया और कहा कि "आप मन में विचार क्यों लाते हैं? इनकी कुंजी मेरे हाथ में है, मैं सब कर लूंगा।" तब बादशाह आगे बढ़ा। बादशाह की सेना का डेरा सुमेल गांव में हुआ और रावजी की सेना का डेरा गिररी गांव में था।

रावजी गिररी से पीछे हटना चाहते थे कि बादशाही सेना को

जांगल (रेतीला प्रदेश) में लेजाकर छोड़ें जहां जलकष्ठ से व्यथित हुई सेना को आसानी से मार लिया जाय। परन्तु जैता व कूंपा ने गिररी से पीछे हटने से इन्कार कर दिया और कहा कि "इतनी भूमि तौ आपकी उपार्जित की हुई थी सो आपने छोड़ दी। अब यह भूमि हमारे पूर्वजों की है, इस भूमि को हम छोड़ नहीं सकते।" इससे रावजी को गिररी में मुकाम रखना पड़ा।

बादशाही सेना और राठोड़ों की सेना के बीच केवल ४ कोस का अन्तर है, बादशाह के मन में राठौड़ों की सेना की सजावट देखकर अत्यन्त क्षोभ हुआ। उसने मन में घबरा कर यह विचार किया कि द्वन्द्व युद्ध करके जय पराजय का निर्णय कर लिया जाय। ऐसा विचार ठान कर बादशाह ने अपना प्रतिष्ठित पुरुष राव मालदेव के पास भेजा और कहलाया कि, यदि आपको मंजूर हो तो धर्म युद्ध किया जाय। जिसमें एक योधा आपकी ओर का और एक योधा हमारी तरफ का दोनों द्वन्द्व युद्ध करें, उनमें से जिस पक्ष का योधा विजयी होवै उस पक्ष की विजय समझी जाय। राव मालदेव ने इस बात को स्वीकृत कर लिया।

राव मालदेव ने अपनी ओर से राठौड़ भारमल के पुत्र बीदा को नियत किया और बादशाह को कहलाया कि हमने अपना योधा तैयार कर लिया है आप अपनी ओर का योधा नियत करें। बादशाह ने भी अपनी ओर का योधा तैयार किया। दोनों ओर के योधा द्वन्द्व युद्धार्थ रणांगण में उपस्थित हुए, उस समय वीरम ने बादशाह से निवेदन किया कि आपने यह क्या किया? मैं रावजी के योधा के बल और पराक्रम से पूर्ण परिचित हूँ। आपकी सेना में रावजी के योधा से तुलना करने वाला एक भी नहीं है, आप इस बात को छोड़ दीजिये। वीरम के समझाने और दबाव से बादशाह को विवश होकर अपनी बात छोड़नी पड़ी। वह अपने मन में बहुत पश्चात्ताप करने लगा। तब वीरमदेव ने बादशाह से कहा

कि आप न घबराइये, मैं अभी इस शत्रु सेना को विमुख कर दूंगा, आप धैर्य रक्खें।

अब वीरमदेव ने ऐसा षड्यंत्र रचा कि जिससे राव मालदेव रणांगण से विमुख होकर चला गया। वीरमदेव ने बादशाह से अर्ज करके २०-२५ हजार फिरोजशाही मोहरें और फारसी भाषा लिखने वाले एक मुन्शी को मांग कर ले लिया। वीरमदेव ने मोहरें व्यापारियों के हाथ रावजी की सेना में सस्ते भाव से बिकवा दीं और मुंशी से जाली फरमान लिखवाए और उनको नई ढालों की गद्दियों में सिलवाकर व्यापारियों के हाथ रावजी की सेना में सस्ते मूल्य पर बिकवादीं। इस बात का अंदेशा न तो राव मालदेव को हुआ और न उसके सरदारों को कि यह जाल है।

अब संध्या के समय वीरम राव मालदेव से मिलने आया और रावजी से अर्ज किया कि "मेरे वास्ते आपको महान् कष्ट हुआ, जिसका मुझे पश्चात्ताप है, मैं उस समय क्या कर सकता था कि जिस समय आपने मुझसे मेड़ता छीन लिया और अजमेर से भी निकाल दिया और उसके पश्चात् मुझे किसी स्थान पर टिकने नहीं दिया जिससे लाचार होकर बादशाह की शरण लेनी पड़ी। किन्तु जिन सरदारों को आपने दान मान आदि से पूर्ण सत्कार करके प्रसन्न रक्खा है, वे भी सब आपसे विमुख हैं और बादशाह से मिल गये हैं। और उन्होंने बादशाह के साथ इकरार कर लिया है कि हम रावजी को आपके आधीन कर देंगे। इसी हेतु उनके पास फिरोजशाही अशरफियें भेजी हैं और उनके साथ फरमान भी लिख भेजे हैं जो सरदारों की ढालों की गद्दियों में विद्यमान हैं, आप उनकी ढालें मंगवा कर दृष्टि गोचर कर सकते हैं। उन्हें देखने से आपको अपने आप तसल्ली हो जायगी।" ऐसा कहकर वीरम वापिस बादशाही सेना में चला गया।

राव मालदेव के मन में तुरंत भ्रम उत्पन्न होगया। उसने बाजार

में मनुष्य भेजकर अन्वेषण कराया तो फिरोजशाही आने की बात सत्य निकली । अब तो रावजी के मन में उस भ्रम का मूल दृढ हो गया। तदनन्तर सरदारों की नई ढालें मंगवाकर देखीं तो उनमें उसी प्रकार के बादशाही फरमान निकले कि "रावजी को पकड़वा देंगे।" अब तो रावजी के मन में पूरी तसल्ली हो गई कि सरदार बादशाह से मिल गये हैं और मुझको पकड़वाने के लिये अशरफियां ले चुके हैं। अतः उन्होंने मनमें दृढ निश्चय कर लिया कि इस समय रणांगण से निकल जाना ही भला है और निकल जाने की तैयारी करने लगे।

सरदारों को इस बात की खबर मिली तो वे सब एकत्र हो रावजी के पास आए और निकल जाने का कारण पूछा तो रावजी ने कहा कि "मुझे किसीका विश्वास नहीं है, इस समय मेरे लिये रणांगण से निकल जाना ही श्रेयस्कर है। सरदारों ने उनको बहुत समझाया और शपथ खाकर तसल्ली दी परन्तु सरदारों के इतना करने पर भी विश्वास नहीं हुआ और अपने चुनिन्दा सरदार साथ में लेकर रण-भूमि से निकल गये। सत्य है, जिसका भाग्य पलटा खाजाता है और बुरे दिन आजाते हैं तब वह किसीका कहना नहीं मानता। खेद की बात है कि जिन सरदारों ने अपने लोहू को पानी बना दिया था, जिन्होंने इनके राज्य को एक बादशाहत बना दी थी, जिन्होंने अपने मस्तक को हथेली पर रखकर खेल खेला था, जिनके प्रताप से रावजी की विजय पर विजय हुई थी, उन सरदारों को आज रावजी कहते हैं कि मुझे तुम्हारा विश्वास नहीं है, तुम बादशाह से मिल गये हो। रावजी की अकल पर ऐसे पत्थर पड़े कि उन्होंने एक का कहना नहीं माना।

रावजी के चले जाने के पश्चात् रणांगण में अनुमान २०००० बीस हजार वीर रणभूमि में डटे रहे। वे अपने पुरखों की उपार्जित भूमि को छोड़ कर कैसे जा सकते थे। इस वीर राठोड़ सेना में

वे ही जैता और कूंपा, जिन्होंने जन्म भर लड़ाइयां लड़कर जोधपुर के राज्य को विस्तृत किया था, रणांगण में डटकर बादशाह से लड़ने के लिये अग्रणी हुए। इन्होंने अपनी सेना के ४ विभाग करके बादशाही सेना पर आक्रमण किया और शेर की तरह टूट पड़े। इस विषय का यह प्राचीन छंद है—

छन्द मोतीदाम

रवी कुळ मुख्य राठोड़ राजेस,
बाजा तिण वार छतीस बजेस।
हले दळ जांण सु समंद हिलोळ,
करे भड़ कोड़ सुजंग किलोळ ॥
छछोहा वीर खड़े तोखार,
अरी रण मारणरी मन धार।
कियो तद कमँध सामेल मुकाम,
डेरा जद दीध ज ठामोहठाम ॥
कऱ्यो एक वीरम जाळ अपार,
मालो तब भाग गयो भय धार।
सुणी महराज तणो सुत वत्त,
मनो मिल आग ज सोराए सत्त ॥
मिले दळ दोहुँज एकण साथ,
अठी मिल हूर अपच्छर आत।
कमंधज मेछ भिड़े कर क्रुद्ध,
लड़े भड़ भींव जिसो कर जुद्ध ॥

धधकत सोर भभकत घाव,
द्वै द्वै मिल वीर करैं अप डाव ।
कूंपो मेहराज तणो उण वार,
खांनांनैं खाय गयो अणपार ॥
रिमां पर काल़ रे रूप राठोड़,
मारू सिर बांदलियो जस मोड़ ।
अरी धड़ कमध करी वह हाल,
कूंपो जँग बीच वियो रिड़माल ॥
अखेहर दीधो ज आछो ए काम,
खल़ांनैं खाय गयो हरि धाम ।
एल़ा पर कीत सु अंमर राख,
सिरे रिड़माल हरो सब साख ॥

यद्यपि बादशाह की सेना बहुत अधिक थी, आटा नौंन का सा मेल था। तथापि राठोड़ों ने उसके अन्दर घुसकर ऐसी तलवार बजाई कि बादशाह घबराकर कहने लगा कि मैंने बिना विचारे बहुत बुरा किया कि सेर भर बाजरे के लिये जान को जोखे में डाला।

इस युद्ध में जैता और कूंपा ने बादशाही सेना का इतना संहार किया कि जिसकी संख्या नहीं कर सकते। परन्तु बादशाही सेना टिड्डीदल थी, मारते मारते भी शेष रहगई और राठौड़ सब मारे गये। बादशाह की विजय हुई। बादशाह ने जैता व कूंपा के हाथ देखे थे, उसने उनको भली भांति देखने के लिये उनकी लाशें मंगवाई और खड़ा कर दखने के लिये हाथियों के सहारे वे लाशें खड़ी करवाई गई। बादशाह उनके मरे शरीर को भी देखकर चकित हो गया और कहने लगा कि इन मरे हुए वीरों के चहरे पर इतना जोश

है तो इनके जीतेजी तो कौन जाने कितनी क्रांति होगी। इस प्रकार उनकी वीरता की प्रशंसा करके कहा ईश्वर ने अनुग्रह किया कि राव मालदेव चला गया। नहीं तो हमारी विजय सर्वथा नहीं होती। इस युद्ध में राठौड़ २०००० बीस हजार और बादशाही सेना ४०००० चालीस हजार हताहत हुई। यह घटना वि० सं० १६०० की चैत्र सुदि ५ पंचमी को हुई थी।

सोरठा

[1]कूंपा किरच किरच्च, तन तरवार्‍यां तरछियो।
पिंड सो पिरच पिरच्च, मिरच मिरच महराजवत ॥ १ ॥
[2]कूंपा सूं कसियाह, सो हुरमां हँसिया नहीं।
बिच कबरां बसियाह, मुगल बचा महराजवत ॥ २ ॥

कूंपा महापराक्रमी और रणविजयी पुरुष था। इसने किसी जगह पीठ नहीं दिखाई। जहां गया वहां विजय ही पाई। इस स्वामि-भक्त वीर ने अपना समस्त जीवन स्वामी की सेवा में व्यतीत किया। राठोड़ कूंपा के ग्यारह पुत्र हुए।

दोहा

पीथल १ राम २ प्रतापसी ३ मांडण ४ तिलौ ५ महेश ६।
ईसर ७ ऊदो ८ तेजसी ९ नव सुत कूंप नरेस ॥

---

(१) अर्थ—महराज का पुत्र कूंपा रणांगण में तलवारों से कटा हुआ टुकड़ा टुकड़ा हुआ। रणखेत में उसके शरीर के टुकड़े ऐसे दिखाई देते थे कि मानों खेत में लाल मिरचें पड़ी हैं। तात्पर्य यह कि शरीर का टुकड़ा लोहू से रंगा हुआ था। इसीसे लाल मिरच की उपमा दी गई है ॥ १ ॥

(२) महराज के पुत्र कूंपा से जो मुगल लड़े वे हुरमों (स्त्रियों) के साथ हंसने न पाये, किन्तु कब्रों में जाकर बसे, अर्थात् मारे गये।

१ मांडण-इसके वंशज वर्णनीय आसोप ठिकाने के स्वामी हैं। म
णोतों के ३२ ठिकाने हैं।
२ पृथ्वीराज-यह अपने पिताके साथ सुमेल के संग्राम में काम आ
३ महासिंह-इसके वंशज कंटालिया आदि ठिकानों के अधिपति
४ सादूलसिंह-इसकी संतती नहीं चली।
५ उदयसिंह-इसके वंशज निम्न लिखित ठिकानों के मालिक हैं
१ चेलावास २ मलसा बावड़ी ३ हापत ४ सीहा
रढावास ६ मोड़ी और ७ बूसी।
६ ईसरदास-इसके वंशज १ चंडावल २ राजोलो खुई ३ मांडे
भूंपेलाव ठिकानों के अधीश हैं।
७ रामसिंह-इसके वंशज बुचकला के ठाकुर हैं। यह अपने पित
साथ सुमेल के युद्ध में स्वर्ग को सिधारा।
८ तिलोकसिंह-इसके वंशज धणला के अध्यक्ष हैं।
९ तेजसिंह-इसकी संतति नहीं चली।
१० प्रतापसिंह-यह अपने पिता के साथ परलोक को गया।
११ करमसिंह-इसकी संतति नहीं चली।

करमसिंह और सादूलसिंह इनका स्वर्गवास बचपन में ही
जाने से उपरोक्त दोहे में इनका नाम नहीं है।

सोरठा

मांण पांण महराण, आंण महाबल ऊजलो।
वैरी किया बखांण, समर भयंकर कूंपसी ॥ १ ॥
खग लागी खल खांण, हांण भड़ां घोड़ां हुवे।
जावे पुर जमरांण, समर भयंकर कूंपसी ॥ २ ॥
जुड़ै भयंकर जैन, मुड़े न पाछा मारका।

खळां खयंकर खेत, समय भयंकर कूंपसी ॥ ३ ॥
पड़ियो सुत पाराथ, अड़ियो ज्यूं भीमज अभय ।
भिड़ियो जुध भाराथ, कदे न मुड़ियो कूंपसी ॥ ४ ॥
सोयो भड़ां समेत, लोहां पूर घावां लड़ै ।
खाय खळां रिणखेत, कटक सँभायो कूंपसी ॥ ५ ॥
मुरधर रा सिरमोड़, तोड़ घणा तुरकां तणा ।
जैत जुझारां मोड़, कट पड़ियो रण कूंपसी ॥ ६ ॥
आयो वीरम आज, कपट भेद नीती करण ।
मालदेव महाराज, नीत घात समझी नहीं ॥ ७ ॥
वीरम कपट विचार, मिलबा आयो मालसूं ।
धेस रोस मन धार, कहणो यूं आरँभ कियो ॥ ८ ॥
मोहरां ढालां मोल, ससती बेची सेन में ।
तिणरो पड्यो न तोल, कपट चाल वीरम करी ॥ ६ ॥
ढालो झीवर ढाळ, बांधे मछल्यां बंध में ।
झूठो लेखक जाळ, पटक्यो मुरधर फौजमें ॥ १० ॥
जिकां जमायो राज, माथा दे जुध में मुआ ।
अे किम विरचे आज, मन नह सोची मालदे ॥ ११ ॥
मोहरां ढालां मोल, ली वे देखी मालदे ।
खेटक गादयां खोल, काढ्या कागद कपट रा ॥१२॥

दोहा

अमर लोक बसियो अडर, रण चढ़ कूंपो राव ।
सोलेसे बद पक्षमें, चेत पंचमी चाव ॥ २३ ॥

सोरठा

छक वीरा रस छोह, लोह घणा तन लागिया ।
वीरां गती विछोह, सुरग सिधायो कूंपसी ॥ १४ ॥
हद देखाया हाथ, तंडळ कर अरियां तणा ।
तीनूं कंवरां साथ, कांमआयो भड़ कूंपसी ॥ १५ ॥
लोथां हाथ्यां लार, ऊभी कर सारे उठे ।
दीठा जुध जोधार, कमधज जैता कूंपरा ॥ १६ ॥
मूंछ भंवारां मांय, चहरा दिपे बळ चाडिया ।
संग तिलो सरसाय, सहिया लेता कूंपसी ॥ १७ ॥
कूंप आयो लड़ काम, तीनूं कंवरां साथ में ।
रंग पृथ्वीसिंह राम, पड़ियो खेत प्रतापसी ॥ १८ ॥
सूरां विश्व सराय, अंजस कमधज कुळ अखै ।
स्याम धरम सरसाय, सोया जैता कूंपसी ॥ १६ ॥
भड़ मुरधर रो भार, स्यामध्रमी भुज सांभियो ।
समर तुल्यो संसार, कीरत सतोलो कूंपसी ॥ २० ॥
व्हैतां मुरधर हार, स्यामध्रमी किण विध सहै ।
धूना विरधां धार, सँभियो लड़वा कूंपसी ॥ २१ ॥
सूरां भरणो सार, भलो न सूरां भाजणो ।
तैं सांभी तरवार, साह सूर पर कूंपसी ॥ २३ ॥
चितमें मारण चाह, ससतर बल हातल सजे ।
मातँग मलेछां मांय, सीह प्रकोप्यो कूंपसी ॥२४॥
वरती जुधरी वार, रिणधीरे पग रोपिया ।

तैं तोली तरवार, साह सूर पर कूंपसी ॥ २५ ॥
झूँफण घोड़ा झेल, मारण मरणो मांडियो ।
सगती साहँस मेल, साह सराई कूंपसी ॥ २६ ॥
खिवीं तेग मन खार, सगती गत संहाररी ।
तुरकां सिर तरवार, बँधी लेण महराजवत ॥ २७ ॥
सगती बीजळ सार, धाराळी खळ धापणी ।
तुरकां सिर तरवार, वाढाळी लेवण वधी ॥ २८ ॥
वार वार वाकार, मार मार चँहु दिस मची ।
तुरकां सिर तरवार, वाढाळी लेवण वधी ॥२६॥
पड़ी बीज खग पांण, कटक ध्वनी कंपावणी ।
अड़ी खंभ आरांण, काळ घड़ी रण कूंपसी ॥ ३० ॥
घण घोड़ां घमसांण, पोड़ां बळ धूजी प्रथी ।
राठोड़ां तुरकांण, रण दोड़ां रँग कूंपरी ॥ ३१ ॥
घण घातां घमसांण, बाणांसां खाती बहै ।
पोड़ां भोम पठांण, समर भयंकर कूंपसी ॥ ३२ ॥
अजरायळ भड़ एक, स्यामध्रमी दुनियां सिरैं ।
टणकापणरी टेक, कदे न छोडी कूंपसी ॥ ३३ ॥
जुड़ियो थँड जाडोह, स्यामध्रमी बड सूरमो ।
अरि फोजां आडोह, कीरत लाडो कूंपसी ॥ ३४ ॥
दाटे अरियां दाट, खाटे कीरत खागसूं ।
निरभय होय निराट, काटे मुगलां कूंपसी ॥३५॥
हुरमां हाहाकार, हूरां सह हरषित हुई ।

मुगलां मारण हार, कलह संभाई कूंपसी ॥३६॥
पीथल राम पताह, कँवरां सह खुद कूंपसी ।
काव्या मुगल किताह, सझ रणमें महराजवत ॥३७॥
स्यामध्रमी सब जांण, कँवर तीन कूंपो कमध ।
पूगा सरग पयांण, मुगल मार महराजवत ॥३८॥

दोहा

कूंपो नैं जैतो कमँध, भ्रवे गया सुर धांम ।
अपछर वर लेगी अतुर, जबर दियो जुध कांम ॥३६॥

चतुर्थ अध्याय ।

१५ । ? राव मांडण

यह महाप्रतापी पुरुष था । वि० सं० १६०० में दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूरसे लड़कर इसके पिता कूंपा का स्वर्गवास होगया । उस समय यह मारवाड़ में था । पिताके मरने पर यह पिता का उत्तराधिकारी हुआ । यह चतुर्थ पुत्र था । इससे बड़े तीन भाई (पृथ्वीसिंह रामसिंह और प्रतापसिंह) पिता के साथ सुमेल गिररी की लड़ाई में मारे गये थे ।

बादशाह शेरशाह राठोड़ों से विजय पाकर जोधपुर आया, कुछ दिन जोधपुर में ठहरा । उसने मारवाड़ में ठौर ठौर थाने बिठाए । मारवाड़ में सर्वत्र उसकी आज्ञा प्रचलित हुई । जाते समय उसने

आसोप का इतिहास

जोधपुर में प्रबल थाना रक्खा। इस प्रकार मारवाड़ में सर्वत्र बादशाही अधिकार हो जाने से राठोड़ों के ठिकाने छूट गये। वे इधर उधर लूट पाट करते अपना निर्वाह करने लगे।

मांडण का भी पितृराज्य छूट गया था। जिससे यह भी लूट पाट करता इधर उधर भ्रमण करता रहा। वि० सं० १६०२ में सूर बादशाह का आतशबाजी से जलकर अंतकाल हो गया, तब राव मालदेव ने मौका पाकर जोधपुर पर अधिकार कर लिया। परन्तु अन्य परगनों में मुसलमानों का अधिकार बना रहा। मांडण राव मालदेव के साथ था, यहां भी वह उसकी सेवा करता रहा। मालदेव का अधिकार केवल जोधपुर पर ही हुआ था। उसके अधिकार में भूमि बहुत अल्प थी, जिससे अपने सामंत वर्ग का भरण पोषण करना उसके लिये दुर्भर था इसी से कई राठोड़ सामंत दिल्ली जाकर बादशाही नौकर होने लगे।

वि० सं० १६११ में दिल्ली पर बादशाह अकबर का अधिकार हुआ और बादशाहत का ढंग ठीक जम गया। तब अपने राजपूत लेकर मांडण दिल्ली गया और बादशाह से मिला। उसने इस राजपूत की तरह तजबीज देखकर नौकर रख लिया। इसने उसकी तन मन से सेवा की जिससे प्रसन्न होकर बादशाह ने वि० सं० १६१४ में इसको तेरह १३ गांवों से आसोप की जागीर दी। यह बादशाही नौकरी करता रहा।

वि० सं० १६१९ में राव मालदेव का स्वर्गवास होगया और उसका प्रिय पुत्र राव चंद्रसेण जोधपुर राज्य के सिंहासन पर विराजमान हुआ। इसने बादशाह की मातहती स्वीकृत नहीं की, जिससे बादशाह ने जोधपुर पर सेना भेजी। हुसनकुली खां उसका सेनापति था। राव चंद्रसेण बादशाही सेना से लड़ता रहा। आखिर वि० सं० १६२२ में राव चंद्रसेण को किला छोड़ कर निकलना पड़ा। वह

जोधपुर के किले से निकल कर भाद्राजण होता हुआ सिवाने की तरफ चला गया। राव की उस विपत्ति के समय में स्वामिभक्त मांडण ने सोचा कि राठोड़ों का मुकुटमणि राव चन्द्रसेण, जो मारवाड़ का पट्टाधिकारी होने से हमारे माननीय हैं, आज महान् विपत्ति में हैं, घर वार छूट गया है, इस समय मालिक की सेवा करना मेरा कर्तव्य है। मुझसे इस समय जो सहायता बन सकै वह मुझे करनी चाहिये। इस प्रकार स्वामि भक्ति के वश होकर मांडण बादशाही नौकरी छोड़कर मारवाड़ में चला आया और अपनी जीविका यानी आसोप को मय १३ तेरह गांवों के स्वामि भक्ति के वशीभूत होकर तिलांजलि देदी और राव चन्द्रसेण के चरणों में उपस्थित हुआ।

बादशाही सेना राव चन्द्रसेण का हमेशा पीछा करती रही और उसके साथ लड़ाइयां होती रहीं। उनमें मांडण सदा अग्रणी होकर लड़ता रहा। राव चन्द्रसेण अधिकतर सिवाना के किले और पहाड़ों में रहा करता था इसलिये बादशाह ने सेना का पड़ाव डाल कर उस प्रान्त को विध्वस्त कर दिया और राव चंद्रसेण को अत्यंत ही तंग किया, तवँ राव चंद्रसेण मेवाड़ की तरफ चला गया। मांडण भी उसके साथ गया। वहां राव चन्द्रसेण को मांडण की बड़ी मदद मिलती रही।

राव चन्द्रसेण मेवाड़ के पहाड़ों में भ्रमण करता हुआ बांसवाड़े में जाकर बैठ गया, तब मांडण महाराणा उदयसिंह के पास उदयपुर गया। महाराणा उदयसिंह ने इसे खोड़ का पट्टा दिया। वह उदयपुर से बांसवाड़ा और वहां से फिर उदयपुर गया। परन्तु किसी बात पर चटपट हो जाने से यह उदयपुर से मारवाड़ में आया। उस समय मारवाड़ में जैतारण की तरफ सीहा सींधल महाप्रबल राठौड़ शासन करता था। दो हजार सुभट उसके पास अनी बनी के थे। मांडण ने उसके प्रान्त में लूट पाट की। उस समय इसके निर्वाह का यही द्वार था। सींधल सीहा ने इस पर आक्रमण किया और इसे

घेर लिया, लड़ाई हुई जिसमें सीहा मारा गया। परंतु सींधलों ने पीछा नहीं छोड़ा। उन्होंने अपने स्वामी के वैर का वदला लेने के लिये इसका पीछा किया।

राव चन्द्रसेण को ज्ञात था कि मांडण ने सींधल सीहा की भूमि में लूटपाट की है, अवश्य सीहा उस पर आवेगा, इस विचार से राव चन्द्रसेण ने मांडण की सहायता के लिये भाद्राजण से सेना भेजी, तब तो इसका बल द्विगुण बढ़गया। सींधलों के और मांडण के परस्पर महा विकट संग्राम हुआ उसमें इसने ऐसी तलवार वजाई कि सींधल रणांगण छोड़ कर भाग गये। इस लड़ाई में इसके छोटे भाई तेजसी ने वड़ा पराक्रम कर दिखाया। उसकी सहायता से मांडण की विजय हुई। इस विषय की यह प्राचीन कविता मिलती है—

गीत

भिड़तां मंडळीक अभँग भालां हथ,
लोह झड़ां बंध प्रसण लिया।
समहर वास मांडिया सबळै,
कमलै कुरंगै वास किया॥ १॥
तेरे साखां मांय कूंपावत,
जुड़ कीधा दुय थोक जुवा।
पिंजर सोहता हुवा पलचरां,
हिरणां सोहता नेस हुवा॥ २॥
कोपे काळ करण सुत कीधा,
भड़ धड़ बेहड़ जुड़े भाराथ।
प्रसणां नेस सीस धर पांमे,

पलचर वनचर बल पाराथ ॥ ३ ॥
अखाहरौ तेजसी उग्राहै,
अर गोड़ियां मयंक असहास ।
सींधलां तणै धरे तै समहर,
विहँगै कुरंगै कीधा वास ॥ ४ ॥

यद्यपि इस संग्राम में मांडण की विजय हुई परंतु यह भी वहां पूरा घायल हुआ। यह घटना वि० सं० १६२८ में हुई थी । इस युद्ध के पश्चात् फ़िर यह राव चन्द्रसेण के शामिल होगया ।

मारवाड़में जहां तहां बादशाही थाने बैठे हुए हैं, राजपूतों के लिए महाकष्ट का समय है, उनका घोड़ों पर घर है, टिकने के लिये कोई स्थान नहीं है, राव चन्द्रसेण पहाड़ों के पत्थर गिनता भ्रमण करता है, आज इधर तो कल उधर। उसके पीछे उसके सामंतों की भी वही दशा है। मांडण भी राव चन्द्रसेण के साथ पहाड़ों में दिन बिता रहा है। सेवक का यही धर्म है कि विपत्ति के समय अपने स्वामी की सेवा करै और उसे सहायता देवै और सुख दुःख का साथी बनै। मांडण अपने धर्म को निभाता रहा। अपने स्वामी को छोड़ कर अलग नहीं हुआ। राव चन्द्रसेण जहां विकट पहाड़ों और जंगलों में गया वहीं यह भी कष्ट उठाता हुआ उसके चरणों में उपस्थित रहा।

वि० सं० १६३७ में राव चन्द्रसेण को विष हो जाने से उसका सिचियाय की नालमें देहान्त हो गया, तब मांडण फिर उदयपुर चला गया। महाराणा प्रतापसिंह ने इसको बड़े आदर सत्कार के साथ अपने पास रख लिया। उस समय प्रतापसिंह को ऐसे वीर पुरुषों की अत्यंत आवश्यकता थी। इसने महाराणा प्रतापसिंह के पास कुछ समय निवास किया, परन्तु अपनी जन्मभूमि का स्मरण होजाने के कारण

महाराणा से विदा होकर मारवाड़ में आया। उस समय मारवाड़ में बादशाही कब्जा था। मारवाड़ राज्य का हक़दार राव उदैसिंह समावली प्रान्त में था, क्योंकि वहां के गूजर सरकस हो रहे थे, उनको दबाने के लिये बादशाह अकबर ने राव उदयसिंह को, जिसे जोधपुर का राज्य मिलने पर "मोटा राजा" कहते थे, समावली प्रान्त में भेजा था। मांडण राव चंद्रसेण के पश्चात् उसे (उदयसिंह को) अपना मालिक समझ कर उसके पास गया। वहां गूजरों के साथ अनेक लड़ाइयां हुईं, जिनमें मांडण ने अपने भुजबल से कई गूजरों को मारा, जिससे मोटा राजा उदयसिंह अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

समावली का प्रान्त शांतिमय होजाने से बादशाह मोटा राजा उदयसिंह पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। इसकी सेवा से प्रसन्न होकर वि० सं० १६४० (जलूसी सन् २६) में बादशाह अकबर ने मोटा राजा उदयसिंह को समावली से बुलाकर १२ बारह तफों से जोधपुर का राज्य दिया और उन्हीं तफों में से आसोप का तफा राव मांडण को दिया गया। बादशाह को मालूम हो गया था कि समावली का प्रान्त सर करने में मांडण ने बड़ा काम किया था।

एक प्राचीन ख्याति पुस्तक में जोधपुर का राज्य देने का विवरण इस प्रकार लिखा है "राजा उदयसिंहजी नुं पातशाह श्री अकबर जोधपुर देनैं टीको दीयो संवत १६३६ जेठ मास मांहे जोधपुर दीयो। सैद हासम कासम री तागीर। सिरपाव, घोड़ा, मुनसफ दोढ हजारी जात, सात सै असवार में जोधपुर आयो। तफा १२ जु० २६ में। तिण मांहे बिलाड़ो राव बाघ पृथीराजोत नुं दियो। आसोप मांडणजी नुं दीधी।"

---

(१) जोधपुर के राज्य में संवत् का आरम्भ श्रावण वदि १ प्रतिपदा से माना जाता है और पंचाङ्ग में विक्रम संवत् का आरंभ चैत्र सुदी १ प्रतिपदा से होता है, इस हिसाब से मारवाड़ के संवत् १६३९ के ज्येष्ठ मास में पंचाङ्ग का संवत् १६४० होता है।

१ जोधपुर हवेली २ पीपाड़ ३ गुंदोच ४ खैरवो ५ भाद्राजण
६ कोढणो ७ महेवो ८ बहलेरो ९ बलूंदो १० दुनाड़ो । (१२)॥

बादशाह अकबर ने मोटा राजा उदयसिंह को जोधपुर का राज्य दिया, उसके १२ तफों में महेवा भी शामिल था। महेवा में रावल मल्लिनाथ के वंशज शासक थे। मल्लिनाथ के वंशज रावल वीरम ने अपनी अधिकृत भूमि में से मोटा राजा के मनुष्यों को निकाल दिया, तब मोटा राजा ने मांडण की अध्यक्षता में वि० सं० १६५० में रावल वीरम पर सेना भेजी। रावल वीरम बड़ा वीर पुरुष था, वह अपने चुनिन्दा राजपूत लेकर सामने आया। दोनों दलों में महा घमासान युद्ध हुआ, मांडण ने अपने भुजबल से रावल को पराजित किया और जसोल से निकाल दिया। जसोल पर मोटा राजा का अधिकार होगया परन्तु मांडण ने इसी युद्ध में अत्यन्त घायल होजाने से परलोक को प्रयाण किया और इसी युद्ध में इसके ३८४ मनुष्य मारे गये। इसके एक पत्नीव्रत और वीरता के विषय में किसी कवि ने यह सोरठा कहा था—

सोरठा

भेटी नहीं भवेह, मांडण उर दूजी महल़ ।
पीठ समर प्रसणेह, कदे न दीठी कूंपवत ॥

इस विषय का गीत भी उपलब्ध हुआ है—

गीत

पर दल़ पर नार पेख पारासूं,

(१) बारह तफों में से दो तफे सरदारों को देदिये गये जिससे मोटा राजा के १० तफे रहे। दो सरदारों के तफों के नाम ऊपर लिखे जा चुके हैं। विलाड़ा राव बाघ को और आसोप मांडण को।

द्रिढ संजम जाणे विदन ॥
सुजस खुसील़ साहंस सांकलि़यो,
मयंक न डोले तूझ मन ॥ १ ॥
अरि अन तरुणी सरण आसाडा,
निबड़ निकुंप अखूत नित ।
कूड़ कपट तेथी कूंपावत,
चलै न खत्र बींटियो चित्त ॥ २ ॥
दीखी दहण विमुख त्रिय दूजी,
साहंस तणो सुज भार सहै ।
अखा कुल़ोधर उगै न आतम,
रज महमाथी बींटियो रहै ॥ ३ ॥
मुण सत सील़ कूंप सुत मांडण,
आवरिया चित आचरण ।
चित्त न डुल़े लाज चत्रियो,
धारण महर कुल़ ऊधरण ॥ ४ ॥

छन्द पद्धरी (सांदू नींवा कृत)

कूंपेस तनय मांडण मुदीव,
तिण इधक बधाई आप सीव ।
जहांगीर साथ अत कियो जुद्ध,
लड़रह्या सुभट कर रह्या क्रुद्ध ॥ १ ॥
महराज हरे जद दियो जोर,
साहरी फौज में भयो सोर ।

नहचे नबाब हुयगा अधीर,
पतसाह सेन रा भगा वीर ॥ २ ॥
ईका अनेक फिर जुध्या आय,
जग प्रलै रुद्र मांडण लखाय ।
जंगनैं जीत गो सिंभु धाम,
गंध्रव जस गावत सुबह स्याम ॥ ३ ॥

इस ठाकुर के ७ पुत्र हुए—१ खींवकरण २ दलपत्त ३ पूरणमल ४ सूजा ५ कोका ६ बीका और ७ प्रयागदास ।

इस ठाकुर ने आसोप में जो मौजूदा ठाकुर नाहरसिंहजी का बनाया हुआ महल है उसके नीचे एक साल बनवाई थी जो अभी तक "मांडण शाल" के नाम से पुकारी जाती है ।

पंचम अध्याय ।

१३ । ३ राव खींवकरण ।

वि० सं० १६५० में इसके पिता का स्वर्गवास होजाने पर ज्येष्ठ पुत्र होने से यह पिता का उत्तराधिकारी हुआ । यह भी बादशाही मनसबदार होगया था । आसोप की जागीर, जो इसके पिता मांडण के थी, वह बहाल रही । महाराजा सूरसिंह की इस पर पूर्ण कृपा थी इसलिये यह अधिकतर उन्हीं के पास रहता था । महाराजा सूरसिंह को बादशाही आज्ञा से दक्षिण में रहना पड़ता था । प्रायः उनका जीवनकाल दक्षिण के डाकुओं को दमन करने में ही व्यतीत हुआ था ।

हबसी अमरचंपू ने, जो महमद नगर के बादशाह का सेनापति था, दक्षिण में दिल्ली के बादशाह के अधिकृत प्रदेश में उपद्रव मचाया, तब बादशाह अकबर ने अपने शाहजादा दानियाल और खानखाना अबदुर्रहीम को दक्षिण में भेजा। उनके साथ रहने की आज्ञा महाराजा सूरसिंह को दी गई। बादशाह की आज्ञानुसार महाराजा सूरसिंह उनके शामिल हुए। उक्त खींवकरण महाराजा के साथ था। अमरचंपू बड़ा वीर पुरुष था, उसके उपद्रव के आगे बादशाही सेना हैरान थी। वि० सं० १६५८ में अमरचंपू के साथ बड़ा घमासान युद्ध हुआ, इस युद्ध में महाराजा सूरसिंह अग्रणी थे और इनके राठौड़ खींवकरण आदि सरदारों ने महाराजा के अगाड़ी रहकर महा घोर संग्राम किया, जिससे अमरचंपू के पैर उखड़ गये, वह पड़ भागा। भागते हुए का लाल झंडा राठौड़ वीरों ने छीन लिया। वह झंडा बादशाह के सामने पेश किया गया तो बादशाह ने पूछा कि यह झंडा किसने छीना? तो महाराजा सूरसिंह का नाम बतलाया गया। बादशाह ने प्रसन्न होकर वह झंडा महाराजा सूरसिंह को ही दे दिया। तब से जोधपुर के झंडे में बादशाही झंडे का लाल रंग शामिल किया गया है। इस युद्ध में खींवकरण ने अच्छा पराक्रम किया था, जिससे प्रसन्न होकर महाराजा ने इसको बादशाही मनसब के सिवाय गांव ईड़वा इनायत किया।

एक प्राचीन ख्याति पुस्तक में लिखा है कि इसने १८ अठारह लड़ाइयों में विजय पाई थी। ४० चालीस वार घायल हुआ। महाराजा सूरसिंह जानते थे कि यह बड़ा वीर पुरुष है, बड़े काम का है, इसलिये इसको आदर के साथ रखते थे। वि० सं० १६६५ में यह वीर स्वर्ग को सिधारा।

ठिकाने की तवारीख में लिखा है कि अंत में खींवकरण बूंदी के हाडा छत्रसाल से युद्ध करके गांव मंडाल में ३४५ मनुष्यों के साथ काम आया। इस विषय का यह प्राचीन छंद है—

छंद

खींव रे भुजां पर छत्र भार,
नित रखे भ्रम्म वह वंसवार ।
इक समय जंग भौ अप्रमांण,
हाडा राठौड़ दोऊ भिड़े आंण ॥१॥
कूंपेस हरो जुड़ छत्रसाल,
बूंदीपत हाडो भौ विहाल ।
नरवीर अखे हर अर निठाय,
खींवेस सुर्ग गो फते पाय ॥ २ ॥

इनके छः ६ पुत्र थे ।[1]

१७ । ४ कान्हसिंह उर्फ किसनसिंह ।

इसके पिता खींवकरण का स्वर्गवास होने पर यह ज्येष्ठ पुत्र होने से आसोप की गद्दी बैठा । इसको किसनसिंह भी कहते थे। इसने महाराजा गजसिंह के साथ में रह कर बड़ी तन्दिही से सेवा की। महाराजा गजसिंह को भी दक्षिण में रहकर कई लड़ाइयां लड़नी पड़ी थीं। उनमें यह महाराजा गजसिंह की सेवा में उपस्थित रहा और हर लड़ाई में महाराजा को मदद देता रहा, इससे प्रसन्न होकर महाराजा गजसिंह ने इसको गांव इनायत किये ।

१ बड़लू २ नाडसर ३ रातकूड़ियो और ४ खारियो ।

महाराजा गजसिंह ने नाडोल में बादशाही थाना डाल दिया था, उस वैर का स्मरण करके महाराणा करणसिंह ने मारवाड़ पर

---

१ छः ६ में से दो नाम मिले है १ कान्हसिंह २ राजसिंह । ४ नाम नहीं मिले ।

सेना भेजी। उसने मारवाड़ राज्य में आकर बड़ा उपद्रव मचाया। कई गांव लूट लिए, कई बंध पकड़ लिए गये। तब महाराजा गजसिंह ने कूंपावत कान्हसिंह की अध्यक्षता में मेवाड़ की सेना के मुकाबले में अपनी सेना भेजी। उसने बड़ी बहादुरी से संग्राम किया। इस लड़ाई में कान्हसिंह ने शत्रु सेना को ऐसा परास्त किया कि वह मारवाड़ की सीमा को छोड़ कर मेवाड़ में जा घुसी। इसने उसका पीछा किया। आगे जाते शत्रुसेना को पहाड़ का उत्तम आश्रय मिल जाने पर वह वहां डट गई। कान्हसिंह ने उस पर आक्रमण किया। महा घोर संग्राम हुआ जिसमें कान्हसिंह ने अनेक शत्रुओं को मार कर विजय प्राप्त की। इस विजय से इसको अत्यंत गर्व आगया और महाराजा की सेवा में जाना बंद कर दिया, जिससे महाराजा ने आसोप की जागीर इससे जब्त करके इसके छोटे भाई राजसिंह को देदी।

ठिकाने की तवारीख में लिखा है कि उदयपुर की फौज से मुकाबला किसनसिंह ने किया और उसी झगड़े में काम आया। इस विषय का यह प्राचीन छंद है—

छन्द मोतीदाम

रजे किसनेस सदा बंस रूप,
सारां सिरताज भड़ां रो भूप।
उदैपुरनाथ तणी अत सेन,
दिल्लीपत सूं नित राखत एन ॥१॥
जिको महाराज चढ्यो इकवार,
मरूधर दावण री मनवार।
सजे कमधेस सदा रणबंक,
जकां मन जुद्ध तणी नह संक ॥२॥

मिली दोउ सेनय जुद्ध प्रमांण,
दगे अत तोप धुवां ढक भांण ।
दोऊ दल आंण भिड्या इण भांत,
वहे खग झाट कटे अरि माथ ॥३॥
हुई जद जोगण खूब हुलास,
जड़े रणवीर पिये रत तास ।
पड़े सिर भूम लड़े धड़ केक,
हसे त्रिपुरारि जु कोतुक देक (ख) ॥४॥
सराहत जुद्ध समे सुर सेस,
कहे धिन धिन्न सही किसनेस ।
अखी सज राख इला अणपार,
कूंपावत गो सुरलोक पधार ॥ ५ ॥

षष्ठ अध्याय ।

१७ । ४ राजसिंह

यह कान्हसिंह का छोटा भाई था । लिख आए हैं कि इसके बड़े भाई कान्हसिंह की बेपरवाही से महाराजा ने कान्हसिंह से जागीर जब्त करके राजसिंह को दी थी । यह बादशाही मनसबदार होगया था । बादशाह जहांगीर और शाहजहां की इस पर पूर्ण कृपा थी ।

वि० सं० १६९५ में महाराजा जसवंतसिंहजी जोधपुर की गद्दी
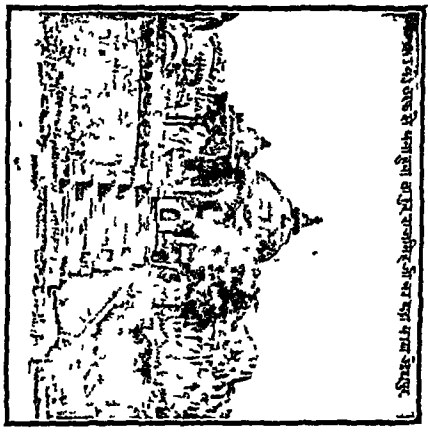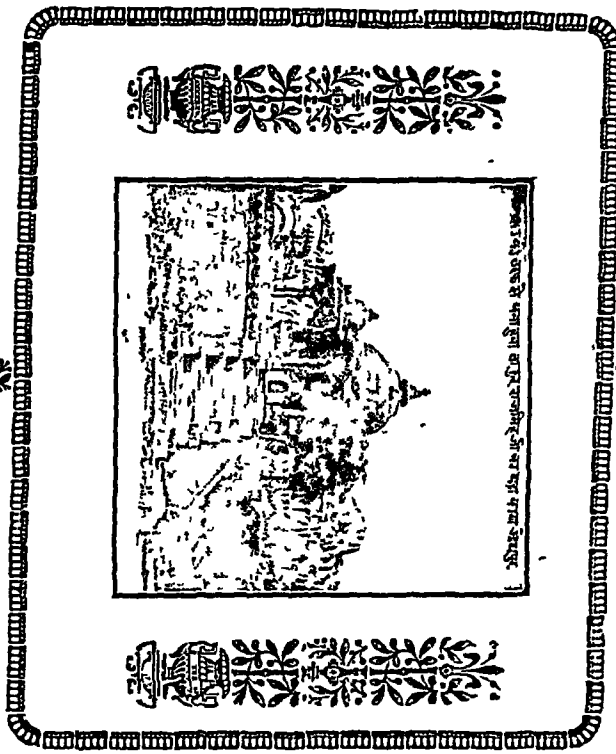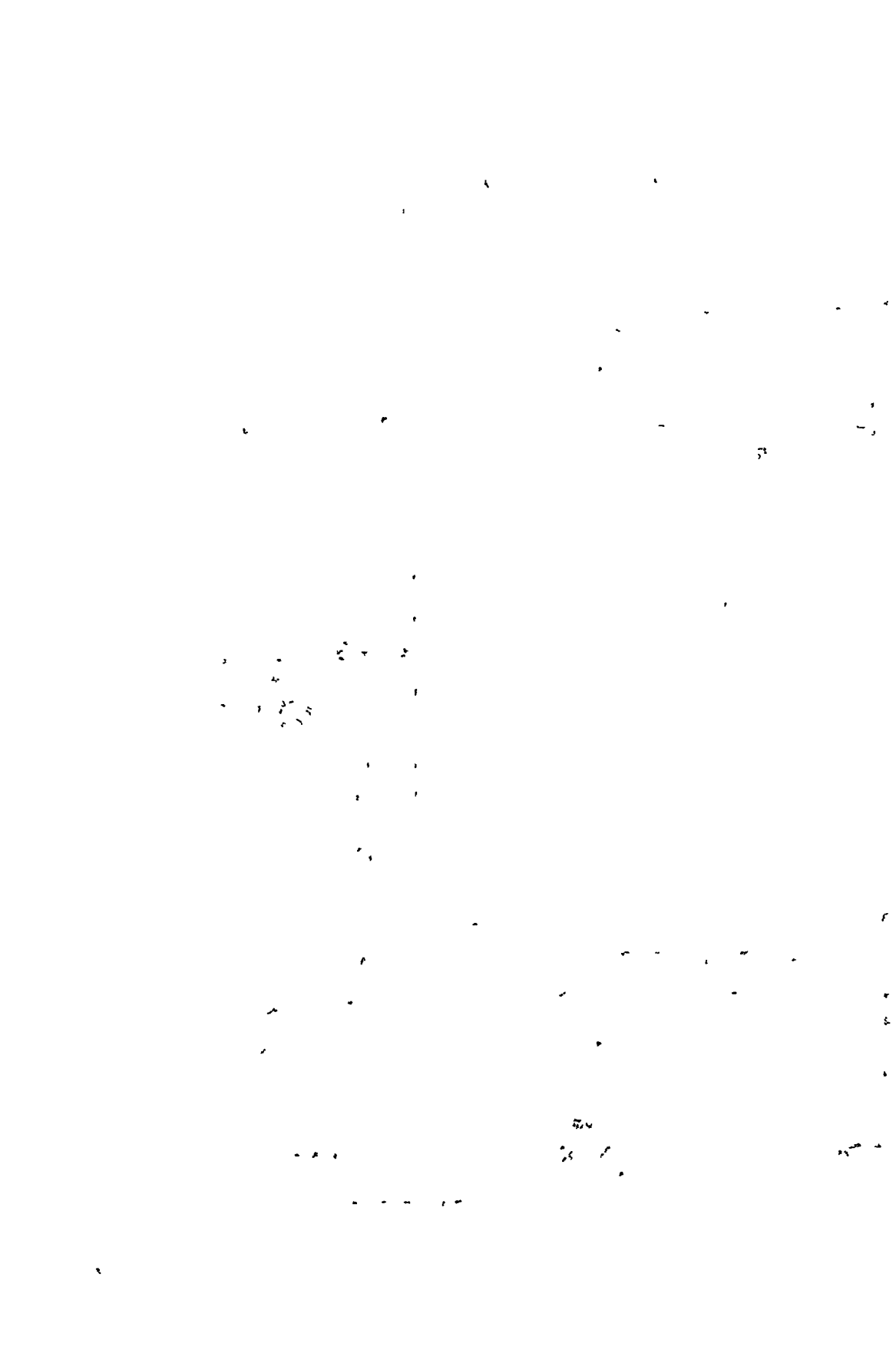
बैठे उस समय उनकी अवस्था केवल बारह वर्ष की थी। महाराजा की बाल्य अवस्था के कारण बादशाह शाहजहां ने उनके राज्य प्रबंध के लिये राजसिंह को प्रधान नियत किया। उस समय इसका मनसब हजारी जात और ४०० सवार थे।

इसने राज्य का प्रबंध ऐसा उत्तम किया कि चोरी धाड़े सब बंद होगये। प्रजा परम आनन्द में है। कोई प्रबल मनुष्य किसी निर्बल को सता नहीं सकता है, बकरी शेर एक घाट पानी पीने की कहावत चरितार्थ हुई है। राज्य के कोश में व्यय की अपेक्षा आय अधिक है।

सरदार सब प्रसन्न हैं। स्वामी की सेवा तन मन से करते हैं। कोई सरदार ऐसा नहीं है कि जिसके पास राजपूत और घोड़ों का संग्रह न हो। वे सब आपस में मिलजुल कर रहते हैं। परस्पर पूर्ण प्रीति का बरताव है।

इधर महाराज को वह (राजसिंह) सदा ऐसी शिक्षा करता है कि महाराज! आपके भुजों का बल भाई बेटे हैं। इनको सदा प्रसन्न रखना चाहिये। आप इनको दान मानादि से प्रसन्न रखेंगे तो ये आपके लिये हरदम सिर देने को तैयार रहेंगे। बंधुवर्ग आपकी भुजा है। जब तक बाहुबल पूर्ण है तब तक कोई भी शत्रु आप पर आक्रमण नहीं कर सकता। आक्रमण करना तो दूर रहा, आपकी ओर निहार भी नहीं सकता और अप्रसन्न भये हुए येही सरदार कंटक बन जाते हैं।

दूसरा आपका मुख्य कर्तव्य यह है कि, प्रजा की पालना करना। प्रजा आपके बेटा बेटी हैं। इनकी पालना करना आपका परम धर्म है। माता पिता अपने बच्चों का जिस प्रकार पालन करते हैं उसी प्रकार प्रजाकी रक्षा और पालना करना आपका फर्ज है।

तीसरा मंत्रिवर्ग और नौकरों का दान मानादि से सत्कार करना यह स्वामी के लिये अवश्य कर्तव्य है। परंतु यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि यह हमारा हितैषी है और यह केवल स्वार्थी है। स्वार्थी मंत्री वा सेवक कभी हितेच्छु नहीं होगा। वह तो अपने ही स्वार्थ साधन करने में तत्पर रहेगा। सेवकों को वश में रखने का यही मुख्य उपाय है कि जो हित और फायदे का काम करे उसको रीझ दीजाय और जो अनर्थ करे उसको दण्ड दिया जाय। सारी दुनिया दंड के वशही अपने मार्ग में चलती है। नीति में कहा है—

"दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥"

इस प्रकार की अनेक शिक्षाएं देता रहता जिससे महाराज के चित्त पर उस बात की सदा भावना बनी रहती।

महाराज प्रजा का सुख दुःख देखने और उसके मन का भाव जानने के लिये शहर में फिर कर रात्रि में गस्त दिया करते।

वि० सं० १६९७ (ई० स० १६४०) में एक अद्भुत घटना हुई। महाराजा की पन्द्रह १५ वर्ष की अवस्था थी, परन्तु आपका ध्यान प्रजा की ओर बहुत ही अधिक था कि मेरी प्रजा सुखी है, कोई दुःखी तो नहीं है।

एक दिन महाराजा रात्रि में गुप्त रीति से नगर में गए। उधर से कोतवाल भी गस्त करता आया। महाराजा ने सोचा कि इसकी भेंट होने से हमारा भेद खुल जायगा। निकट ही तापी बावड़ी आगई, आप उसके अन्दर उतर गए। कोतवाल गश्त करता चला गया। कहा जाता है कि उस बावड़ी में भूत का निवास था। अर्धरात्रि का समय था। भूत महाराज के शरीर में प्रविष्ट होगया। पिछली रात्रि में लोग वहां स्नान करने गये। महाराजा की वह दशा देखी। तुरंत कोत-

ठाकुर राज सिंह जी की मूर्ती, मुकाम कागा जोधपुर

वाल को खबर दी गई। सुनते ही कोतवाल, प्रधानामात्य, दीवान, बक्सी आदि आये और महाराजा को उठा ले गये। मंत्रवादियों को बुलाकर उपचार किया गया तो प्रेत क्या कहता है कि "मेरे क्रीड़ा करने के समय में यह राजा आया इसलिये इसे मैं नहीं छोडूंगा। परंतु मंत्रवादियों के दबाव से उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि "यदि इसके समान का कोई दिया जाय तो मैं इस राजा को छोड़ दूं, यातो पाटरानी या प्रधान, इन दोनों में से कोई प्राण राजा की एवज में देवे तो राजा को मुक्त कर सकता हूँ।" तब प्रधानामात्य कूंपावत राजसिंह ने कहा कि "महाराजा के एवज में मेरे प्राण बलिदान होजायं तो अहो भाग्य है।" फिर मंत्रित जल महाराजा पर भ्रमण करा कर राजसिंह ने पिया। उसीसे राजसिंह की मृत्यु हुई। इस विषय का यह प्राचीन दोहा प्रसिद्ध है—

राजड़ जस थारो रिधू, भलौ भलौ कुळ भान।
पी प्यालौ जसवंत पह, दीधौ जीवत दान॥

राजसिंह ने मरते समय अपने वंशजों के लिये यह कह दिया था कि अपने मालिक के स्वामिधर्मी रहना।

इसका देहत्याग वि० सं० १६६७ की पौष वदी पंचमी को नौ ९ घड़ी रात्रि व्यतीत हुए हुआ था। इस स्वामिभक्त सामंत का दाह कागा बाग में हुआ और उसी स्थान पर राज्य की ओर से बड़ी शानदार एक पत्थर की महान् छत्री (मंडप) बनवाई गई। राजसिंह के पीछे ४ स्त्रियां सती हुई। एक ठकुरानी और तीन खवास। ठकुरानी जेसलमेर के भाटी वरदेसजी की कन्या थी। इस भटियानी का नाम राजकुंवरी था। तीन उपपत्नियां, एकका नाम कुंजदासी, दूसरी का नाम कमला और तीसरी का नाम गुणरेखा था। जिनके साथ राजसिंह की पत्थर में खुदी मूर्ति छत्री के मध्य में स्थापित की गई। जिसकी प्रतिष्ठा वि० सं० १७०१ (ई० स० १६४४) की आषाढ सुदी

१ प्रतिपदा मंगलवार को हुई थी। यह छत्री अब तक जोधपुर के कागा बाग में विद्यमान है। इस मूर्ति के नीचे शिलालेख खुदा हुआ है। शिलालेख में लिखा हुआ है कि "विक्रम संवत् १६६७ शाके १५६२ की पौष वदी ५ को रात्रि में राठोड़ खीमा के पुत्र राजसिंह का स्वर्गवास हुआ। उसके पीछे भाटी वरदेम की कन्या भटियाणी राजकुंवर सती हुई। इस छत्री की प्रतिष्ठा महाराजा की तरफ से वि० सं० १७०१ शक संवत् १५६६ आषाढ सुदि १ भौमवार को हुई। इसी विषय का दूसरा शिलालेख आसोप में है, उस में स्वर्गवास का समय षष्ठी लिखा है।

उक्त ठाकुर राजसिंह देवों में पूजा जाता है। जोधपुर में आसोप की हवेली में दूसरी मंजिल में उसका स्थान है। ऊपर के चौबारे के एक आले (गोख) में उसकी मूर्ति स्थापित है। लोक दर्शनार्थ जाते हैं, बोलवा बोलते हैं और उनका कार्य सिद्ध होता है।

ऐसी किंवदन्ती है कि "आसोप की हवेली के सामने किसी

---

(१) जोधपुर के कागा नामक बाग में छत्री के शिलालेख की प्रतिलिपिः—

जिस पुतली में शिलालेख खुदा हुआ है उस पुतली में शिलालेख के ऊपर निम्न लिखित चित्र खुदे हुए हैं-बांई तरफ सूर्य, दाहिनी ओर चांद, इनके नीचे घोड़े पर सवार जिसके दाहिने हाथ में तलवार, पार्श्व में धनुष बांण, हाथ में लगाम, सवार के आगे एक स्त्री हाथ जोड़े खड़ी है। घोड़े के नीचे तीन ३ स्त्रियां, एक के हात में सतार, दूसरी के हाथ में वीणा और तीसरी के हाथ में ताल।

"श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत १७०१ वर्षे शाके १५६६ प्रवर्त्तमाने उत्तरायन (ण) गते सूर्ये ग्रीष्मऋतौ महामांगल्यप्रद आषाढमासे शुल (क्ल) पषे (क्षे) तिथौ १ भो (भौ) म वासरे राठौड़ श्र (श्री) ष (खीं) माजी सुत राजश्र (श्री) राजस (सिं) ह ज (जी) महासती श्री राजकुवर भटियाणी जेसलम (मे) री वरदेसज (जी) री वेटी पच (खवा)स कुंजदासी, कवला, गुणरेखा यस्मीन (अस्मिन्) दिने समय (ये) इदमत्र सा (स्था) पिता प्रत [ति] ष्ठिता च। संवत १६९७ वष [र्षे] शाके १५६२ पो [पौ] ष वद [दि] ५ दन [दिने] समय [ये] भुक्त रात्रि गत घटी ९ समये द [दे] वगत स [स्व] र्ग लोक ॥

बनिये की दुकान थी श्रावण सुदि १५-पूर्णिमा के दिन ब्राह्मण उस बनिये की दुकान पर रक्षा बंधनार्थ गया और रक्षा बंधन के लिये कहा तो उसने दिल्लगी करते हुए ब्राह्मण से कहा कि मेरे रक्षा बंधन करने से क्या मिलेगा, केवल एक पैसा मिलेगा। यदि तू रक्षा बंधन की दक्षिणा में रुपया चाहता है तो सामने की हवेली के ऊपर के दहलान में आसोप ठाकुर राजसिंहजी विराजे हैं, जाकर रक्षा बांध। ब्राह्मण भोला भाला था। उसको मालूम नहीं था कि ठाकुर राजसिंहजी को मरे अर्सा हो गया है। बनिये ने तो हंसी की थी और उस ब्राह्मण ने सत्य समझा। वह उसी दहलान में गया, जो बनिये ने बतलाया था। आगे जाकर ब्राह्मण देखता है तो ढोलिया बिछायत पर ढला हुआ है, उस पर ठाकुर बैठा हुक्का पीरहा है। ब्राह्मण ने जाकर आशीर्वाद दिया और रक्षा बंधन किया। अब ब्राह्मण दक्षिणा के लिये खड़ा है, परंतु उनके रौबके मारे कुछ कह नहीं सकता है। ठाकुर ने उसे थोड़ी देर खड़ा हुआ देखकर कहा कि ब्राह्मण देवता! आप उसी बनिये के पास जाओ और उससे कहो कि मैंने ठाकुर के राखी बांधी तब ठाकुर ने फरमाया कि तू उसी के पास जा और उसको कह दे कि ठाकुर ने कहा है कि तू इस ब्राह्मण को एक सुवर्ण मुद्रा दक्षिणा दे दे यह हमारी आज्ञा है, यदि तू इसको नहीं मानेगा तो हम तुझे मार डालेंगे। ब्राह्मण ने बनिये के पास जाकर ज्यों का त्यों कह दिया। बनिया घबराया और मरण के भय से ब्राह्मण को १ अशरफी देदी। ब्राह्मण लेकर अपने घर गया।

इस प्रकार के अनेक चमत्कार दिखाए। अब भी लोग उनको पूजते हैं और दर्शन को जाते हैं।

लिख आये हैं कि बादशाह शाहजहां की इस पर पूर्ण कृपा थी। उसने इसको सन्मान सूचक माही मुरातिब में अपने महलों पर सुवर्ण के कलश चढाने की आज्ञा दी थी। तदनुसार आसोप के महलों और जोधपुर की हवेली के महल पर सुवर्ण के कलश चढाए

गये। वे इस समय तक दोनों स्थानों में विद्यमान हैं।

इसका यश कवियों ने इस प्रकार वर्णन किया है—

गीत

सिसु भूपति जसूंत जातां खेल देखवारे सारू,
भावी जोग मारू लागो बावड़ी में भूत।
मुरच्छा देसरो भारू पोढियो सयारे मांय,
किया दवादारू सैंणा वेदां करतूत ॥ १ ॥
पारखू पिछाण करी प्रेत भाव अंग पायो,
आपदा प्रभाव दुख आयो आच बोल।
मौतरी घात सूं मारूपति पिंड मुरझायो अंग,
सारे नग्र राजमेलां छायो घणो सोच ॥ २ ॥
आया मंत्रवादी क्रियागति सूं बोलायो अंग,
सबथा न छोडूं पायो राजारो सरीर।
लाडलो कंवार तथा महाराणी प्राण लेहूं,
धारी मना रवां हुआो प्रधान मंत्री धीर ॥ ३ ॥
बोलियो प्रधान वीर राजसी आजानबाहु,
स्यामध्रम भुजां माथे तोलियो सरीर ॥
जीवणो अल्प है जहांन सारी मरीजावे,
स्यांम काज आवे आज धिन ओ सरीर ॥ ४ ॥
जीव गाढो मारे जिसो रैवे तो राखजो वीरां,
आछा काम कीजो धीरां उजाळां आसांण।
स्यांमध्रमता ही गुणां गंभीरां धारजो सदा,

कीरती फैलाजो पोतां कंठीरां कूंपांण ॥ ५ ॥
कही राजसिंह ए नसीतां सदा रहे क्रीतां,
हिये गाढी प्रीतां हांणी झेली हमगीर ।
रंग है राठौड़ां घणां धीर वीर राज रीतां,
स्यामध्रमी पाणी पीतां ऊसरचो सरीर ॥ ६ ॥
उबारू जसवंत रा उतारू पियाला पीणा अबे,
दिया पैला माथा थांरा बडेरा देसोत ।
सांवतां सिरांरा मांझी बखाणियो संसार सारा,
जगी विरदांरा भारा थारी मरण जोत ॥ ७ ॥
बणी दोनूं बातां ए भूपति मनां में भाई,
अबे गाढां मारू गढां छाई घणी आप ।
मणीधारी पाई ज्युं दीपाई मुरतबां मांही,
आठूं ही मिसलां घणी सराही आसोप ॥ ८ ॥
मणां नहीं थारी स्यांमध्रमता सपूती माथे,
प्रांण देणा रै ही घणा प्रेम रा प्रकास ।
मारवा गढांरा छोगा मोहणा न मांने मोह,
सोनेरी कळसां दीपे सोहणा उजास ॥ ९ ॥
बणाई ईजतां भूप मारवा मनां में भाई,
धराई पताळ नींवां कागे छत्रधार ।
सराही संसार स्यांमध्रमी माथे सरसाई,
देवळां सवाई आ दीपाई यादगार ॥ १० ॥
मेल्यो बादशाह मारवाड़ रा प्रबंध माथे,

गाढी किरपा रे साथे दे प्रधानगी गंभीर ।
विजेता अँणीरा छोगा धणी नैं उबार्यो बंका,
वणी रही अबे बातां सोभा महावीर ।। ११ ।।
भारी स्यामध्रमी कूंपा देस रा प्रधान वारी,
रहै जसधारी ज्यूं दधीची अखै रंग ।
प्यारी प्रजा थारी मारवाड़ री देव ज्यूं पूजै,
सारी राजरीतां तैं उजाळी राजसिंघ ।। १२ ।।
धारी ज्यूं ही करी तैं सदाही तप तेजधारी,
चीत स्यामध्रमी अग्रकारी घणी चाह ।
थायो राजथान में आसोप री ईजतां थारी,
द्वै हजारी मुनसबां बधारी बादसाह ।। १३ ।।

२ गीत

प्रगट स्यांमध्रम पुरस हद पूर मांटीपणो,
पुन बढ भाग में धणी पायो ।
स्यांम रे काज जिण लूणरी सरीगत,
आज ब्रद उजाळण समो आयो ।। १ ।।
जोग सूं बात बण भूप जसवंत पर,
प्रेतरो आय बड चक्र पड़ियो ।
पुत्र - परधान बिन प्राण जावै परो,
अचानक भयंकर स्वाल अड़ियो ।। २ ।।
कहै कर जोड़ तिण समय राजड़ कमंध,
पती कज पियालो मनैं पावो ।

आज मो मरत जसवंत न्रप ऊबरे,
जाय छै जीव तो परो जावो ॥ ३ ॥
आपरो प्राण दे धणी नैं उबारियो,
राजसी अबेढी बात राखी ।
स्यांमध्रम पणा में कूंपहर सिगाळा,
सदा इण बातरो जगत साखी ॥ ४ ॥

३ गीत

इसी करीजे चाकरी भूप इळ ऊपरा,
बापरे नाम पर सुजळ बाढे ।
इळा पर नांम उण अमर आदू कियो,
कोई नह चूक फिर मुवां काढे ॥ १ ॥
करीजे चाकरी जेड़ी राजड़ करी,
गीत जिण कीतरा दुनी गाया ।
आवतां आपदा भूपरै ऊपरा,
कूंपरै छोकरे तजी काया ॥ २ ॥
प्रेत जद पेसियो जसारा पिंड में,
कोई नह जीवरो जतन कीधो ।
खींव सुत आपरे पिंड खेद ले,
पियालो मंत्ररो आप पीधो ॥ ३ ॥
जीवतो वचाड़े भूप जोधांण नैं,
कमध सुरगां विचे वास कीधो ।
अमर जस आपरो राखनैं इळा में,

लाख मुख हूंत साबास लीधों ॥ ४ ॥

दोहा

भल जसवंत बचावियौ, भड़ निज तन कर भंग।
दुनियां सारी दाखवे, राजड़ तोनें रंग ॥ १ ॥

इनके आठ ८ पुत्र थे।

अष्टम अध्याय।

१८। ५ नाहरखान

यह राजसिंह का ज्येष्ठ पुत्र होने से राजसिंह का उत्तराधिकारी हुआ। इसका नाम पिता नें पृथ्वीसिंह रखा था। यह भी बादशाही नौकर था और हमेशा महाराजा जसवंतसिंह के चरणों में उपस्थित रहता था। महाराजा दिल्ली गये तब यह भी उनके संग था।

एक दिन बादशाह के दरबार में किसी प्रसंग पर यह वार्ता चल पड़ी कि महाराजा जसवंतसिंह के साथ एक सरदार महा पराक्रमी पुरुष है। आमोप का मालिक हैं। बादशाह शाहजहां ने यह सुन कर कहा कि "यह पृथ्वी का सिंह है तो हमारा जंगल का सिंह है उससे लड़ै और महाराजा जसवंतसिंह को बुलाकर कहा कि "तुम्हारे साथ एक राठौड़ महा पराक्रमी पुरुष है, उसका नाम पृथ्वीसिंह है, उसका मायना यह होता है कि पृथ्वी का सिंह। जब वह पृथ्वी का सिंह है तो हमारे जंगल के सिंह से लड़ै। महाराजा ने अपने मन में दिल्लगी समझी। परन्तु बादशाह ने दुबारा कहा तो महाराजा

चौकन्ना होगये और बादशाह का हुक्म, महाराजा क्या कर सकते थे ? उनको स्वीकार करना पड़ा।

पृथ्वीसिंह को शेर से लड़ाने का वास्तविक कारण यह था कि पृथ्वीसिंह (नाहरखान) एक बहुत ही वीर पुरुष था जिसके कारण बादशाह महाराजा जसवंतसिंह से डरा करता था। अतएव उसने महाराजा के बल को कम करने के लिये यह युक्ति निकाली। यदि नाहरखान शेर के साथ लड़ाई में मारा जावे तो महाराजा का बल कम हो जावेगा।

डेरे पर आकर महाराजा ने उस बात की चर्चा की तो पृथ्वीसिंह ने कहा कि आप अपने मन में भय क्यों लाते हैं ? मैं उस जंगली नाहर से लडूंगा। आप किसी प्रकार की चिंता नहीं करें। वह जंगल का गंडक मेरे सामने क्या कर सकता है ? आप निश्चिंत रहें।

दूसरे दिन महाराजा, पृथ्वीसिंह को लेकर बादशाह के दरबार में गये और बादशाह के समक्ष में पृथ्वीसिंह को खड़ा करके अर्ज किया कि यह पृथ्वीसिंह हाजिर है। बादशाह ने उसे देखकर कहा कि "क्या तुम हमारे शेर से लड़ाई करने को तैयार हो ?" पृथ्वीसिंह ने प्रत्युत्तर में कहा कि "जहांपना की आज्ञा शिरोधार्य है, मैं तैयार हूँ।"

फिर एक महाभयंकर बबरी शेर मंगाया गया, जो पिंजरे में बंद था। उस सिंह को देख कर पृथ्वीसिंह ने कहा कि "इसके पास शस्त्र नहीं है इसलिये मैं भी शस्त्र नहीं रखूंगा, इसे छोड़िये" ऐसा कह कर पृथ्वीसिंह निःशस्त्र नाहर के पिंजरे के पास गया और पिंजरा खोल कर सिंह को ललकार कर कहा कि "अरे जंगल के नाहर ! बाहिर आ, पृथ्वी का सिंह खड़ा है।" यह सुनते ही वह बाहिर आया और बाहु युद्ध हुआ, जिसमें पृथ्वीसिंह ने नाहर को मार

लिया। इस बात से बादशाह ने इसका नाम "नाहरखान" कहा। तदनंतर जगत् में यह उसी नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसने ऐसे प्राणहर विकट कार्य में भी महाराजा की आज्ञा को शिरोधार्य किया। ऐसे स्वामिभक्त सेवक संसार में कम होंगे।

वि० सं० १७०३ में तापी बावड़ी के पास ही फिर महाराजा जसवंतसिंह पर प्रेत ने आक्रमण किया और महाराजा बेहोश हो गये। तब फिर मंत्रवादियों द्वारा उपचार किया गया तो प्रेत ने वही वार्ता कही। तब नाहरखान ने कहा कि "पूर्व आक्रमण में मेरे पिता ने मंत्रित जल पान कर प्राण दिये थे तो मैं भी उसीका पुत्र हूँ महाराजा के वास्ते मेरे प्राण तैयार हैं।" इस स्वामिभक्त वीर के इस साहस पर सब मुग्ध हो गये और मंत्रित जल नाहरखान ने पी लिया जिससे महाराजा प्रेत के आवेश से मुक्त हुए और नाहरखान मरणाभिमुख होगया। इस दशा से पूर्व नाहरखान ने कह दिया था कि मेरे शव को दग्ध मत करना। गांव रजलाणी के पास शिवनाथ नामक एक योगी का निवास है, मेरा शरीर उसके पास लेजाना।

तदनुसार उसका तादृश दशावाला शरीर उसके पास पहुंचाया गया और योगी से समस्त वृत्तान्त कहा गया और योगिराज से प्रार्थना की गई "महाराज! इस वीर ने प्रेतावेश से पूर्व यह कहा था कि मेरे शरीर को जलाना मत, गांव रजलाणी के समीप में योगिराज शिवनाथ का आश्रम है, उनके पास मेरे शरीर को पहुंचा देना।" उसके कथनानुसार हम इस वीर का शरीर आपके चरणों में ले आए हैं। यह आपका भक्त है, इसकी लज्जा आपको है। हमारा कर्तव्य था वह हमने कर दिया है, अब आगे करना कराना आपकी इच्छा पर निर्भर है। यह सुन कर योगी ने उसे कहा कि "यह मर गया है तो हम क्या करें?"

उस समय उसी योगी के समीप में एक दूसरा योगी, जिसका

नाम सुजाणनाथ था, आया हुआ था। उसने योगिराज शिवनाथ से कहा कि "यह आपका परम भक्त है इसने आपका भरोसा जान कर पहिले कह दिया था कि मेरे शरीर को दग्ध मत करना, मेरे गुरु शिवनाथ के पास लेजाना। इसी भरोसे पर ये लोग उसका शरीर लेकर आपके पास आए हैं, इनको कुछ करामात (सिद्धि) दिखलाना चाहिये। योगी के इस प्रकार कहने पर योगिराज शिवनाथ ने ध्यान दिया और समाधिस्थ होकर देखा तो ज्ञात हुआ कि "इसकी आयु तो समाप्त हो चुकी है, अब यह कैसे जीवित हो सकता है? अब तो इसको जिलाने का यही उपाय है कि अपनी आयु में से इसको आयु के वर्ष दिये जायं, जिससे यह उतने वर्ष जीवित रह सकता है।" फिर आंख खोल कर पास में बैठे हुए योगी से सलाह की। उसने योगिराज से कहा कि "यह आपका भक्त है, इसने आपकी तन मन से सेवा की है, अवश्य चमत्कार दिखलाना चाहिये।" इस प्रकार परस्पर सलाह करके योगिराज शिवनाथ ने अपनी आयु के ८ आठ वर्ष नाहरखान को देने का निश्चय किया और दूसरे योगी को कहा कि आप भी इसमें सहायता दें, तब उसने अपनी आयु के ४ चार वर्ष देने का स्वीकार किया। इस प्रकार दोनों योगिराजों ने मिल कर १२ बारह वर्ष नाहरखान की आयु बढ़ाने का संकल्प कर तुंबे में से जल ले मंत्र पढ़ कर छींटे दिये जिससे नाहरखान उठ खड़ा हुआ और उनके चरणों में गिरा। योगियों ने उस के शिर पर हाथ रख कर कहा कि "बच्चा! अब तू बारह वर्ष और जीवित रहेगा। जाओ अपना काम करो और सदा अपने स्वामी के कार्य के लिये इसी प्रकार तत्पर रहो।" योगियों की कृपा से नाहरखान पुनर्जीवित हुआ और उनकी आज्ञानुसार स्वामी की सेवा करता हुआ अपना कर्तव्य पालन करने लगा।

इस विषय के निम्न लिखित दोहे उपलब्ध हुए हैं।

दोहा

जसवँत भावी जोग सूं, भूपति लागो भूत।

ह्वाण मरण जीवण हुवो, दुख--दायक जमदूत ॥१॥
पिंड निछरावळ प्राण सूं, मंत्रित जळ जिण वार ।
पियो पिता राजड़ ज्युँ ही, भूत उतार्यो भार ॥२॥
जसवँत न्रप जीवाड़ियो, स्यांमध्रम्म सरसाय ।
प्राण हरण जळ पीगयो, चित सूं मरणो चाय ॥३॥
नाहरखान कूंपा नमो, स्यांमध्रमी संसार ।
पिता पंथ परलोक में, प्रगट निभायो पार ॥४॥
धरमवीर कूंपा धिनो, दानवीर देसोत ।
स्यांमधरम पथ पर सदा, माने मंगळ मोत ॥५॥
प्यालो मन सुध पीवियो, घट पर झेली घात ।
प्रथीसिंह राखी प्रथी, अमर बात अख्यात ॥६॥
सिस्य धिनो सिवनाथ रा, तूं कूंपा सिरताज ।
मृत्युंजय जग मानियो, जीत्यो जुध जमराज ॥७॥
रजलाणी बाबो रहै, वीर कही आ बात ।
जठे सीघ्र ले जावजो, सव चरणां सिवनाथ ॥८॥
आया चरणां आपरे, हित इमरत लो हाथ ।
जोग्यां थांरा अखँड जस, सिध सुजांण सिवनाथ ॥९॥
धिन्न प्रथीसिंह स्यांमध्रम, जसवँत लियो जिवाय ।
सो यो दीठो महापुरुष, मरण सयारे मांय ॥१०॥
ऊमर दीधी आपरी, आयुस रीझ अख्यात ।
जोगी सिस्य जिवाड़ियो, सिध सुजांण सिवनाथ ॥११॥
वंदां मृतक जीवावणा, वहे घणा जुग बात ।

बार बरस ऊमर बगस, सिध सुजांण सिवनाथ ॥१२॥
सोय अखै रँग सेजमें, बड कीरतरो बींद ।
जद लक्ष्मण जिम जागियो, नारखान तज नींद ॥१३॥

वि० सं० १७०६ की कार्तिक सुदि १५ पूर्णिमा को जेसलमेर के रावल मनोहरदास का अंतकाल हो गया और वहां गद्दी बैठने के लिये परस्पर बखेड़ा खड़ा हो गया। इसके समाचार बादशाह के कर्णगोचर हुए, तब बादशाह ने महाराजा जसवंतसिंह को कहा कि "जेसलमेर का रावल मनोहरदास मर गया है। जेसलमेर में गद्दी के लिये बखेड़ा चल रहा है, पोहकरण पर उनका अधिकार है, हमने पोहकरण तुमको इनायत किया, तुम जाकर पोहकरण ले लो। बादशाह की यह आज्ञा वि० सं० १७०६ की फाल्गुन सुदि २ को हुई थी।

बादशाह की आज्ञा शिरोधार्य करके महाराजा वि० सं० १७०७ की आषाढ बदि ३ तृतीया को जोधपुर आये। चातुर्मास्य का समय था इसलिये महाराजा ने उस समय सेना भेजना ठीक न समझा जब पानी बरसना और नदी नाले चलने बंद हो गए तब आसोज सुदि ३ तृतीया को जोधपुर से पोहकरण पर सेना रवाने की।

इस सेना में तीन सरदार अग्रणी थे। कूंपावत नाहरखान राजसिंहोत, चांपावत बीठलदास गोपालदासोत, मेड़तिया गोपालदास सुन्दरदासोत। इनके साथ पन्द्रह सौ १५०० सवार और पचीस सौ २५०० पयादे योधा थे। हुजदारों में सिंघवी प्रतापमल, पंचोली मदनसिंह, भंडारी जगन्नाथ और मूहणोत नैणसी, ये थे। आश्विन सुदि १३ त्रयोदशी को यह सेना पोहकरण पहुंची। पोहकरण के तालाब डूंगरसर पर डेरे डाले गए और आसोज सुदि १५ पूर्णिमा को पोहकरण के घेरा लगाया। गढ़ के भीतर जेसलमेर के मनुष्य थे। उधर महाराजा की सेना में जेसलमेर का हक़दार सबलसिंह था। जो

वहां से, नाराज होकर महाराजा जसवंतसिंह के पास चला आया था। जिसको खर्च के लिये माहवार खजाने से रुपये ५०) पचास रोजाना मिलते थे। इसने सेना नायक नाहरखान आदि से सलाह कर भीतरवालों का आना जाना बंद कर दिया और रसद रोकदी, जिससे भीतरवाले तंग होगये।

तब उन्होंने संधि करने के लिये सबलसिंह के पास अपने दूत भेजे। दूतों ने आकर सबलसिंह से संधि का प्रस्ताव किया। सबलसिंह ने कहा कि यदि तुम जीवित रहना चाहते हो और बाल-बच्चों से मिलना चाहते हो और अपनी स्त्रियों को लयी पहनाना नहीं है तो गढ़ छोड़ कर निकल जाओ। बादशाह ने पोहकरण की जागीर महाराजा जसवंतसिंह को इनायत कर दी है और बादशाह का हुक्म पाकर महाराजा ने अपनी सेना भेज दी है। तुम लड़ोगे तो मारे जाओगे। इसलिये हमारी समझ में तो इस समय यहां से तुम्हारा निकल जाना ही भला है। मैं तुमको सकुशल निकाल दूंगा।"

दूतों ने वापिस जाकर भाटियों के मुखियों से सबलसिंह के कहे सब समाचार कहे। भाटी पहले ही राठोड़ों की सेना देख कर घबरागए थे। उन्होंने सबलसिंह के कथन को स्वीकृत किया और कहलाया कि "आप हमारे मुरब्बी हैं, आपका कहना हमें मंजूर है, परन्तु ऐसा न हो कि हम निकलते हुए मारे जायं। तब सबलसिंह ने दूतों द्वारा तसल्ली करवा दी कि जो निकलने को तैयार हैं उनको किसी प्रकार का कष्ट न होगा। तुम मेरे भाई हो, तुम्हारे साथ धोका न होगा और जो नहीं निकलेंगे वे मारे जायंगे।

सबलसिंह के तसल्ली दिलाने पर बहुत से भाटी तो कार्तिक बदि ८ अष्टमी को गढ़ छोड़कर निकल गए। इनकी संख्या २५० के अनुमान थी। उनके निकल जाने पर महाराजा की सेना के नायक नाहरखान आदि ने गढ पर अधिकार करने के लिये शनिवार के दिन गढ़

में प्रवेश करने को पैर रक्खा तो भीतर के भाटियों ने, जिनमें पन्द्रह राजपूत मरने मारने वाले थे, दरवाजा उघाड़ कर मुकाबला किया। सबलसिंह ने उन को समझाया भी, परन्तु उन्होंने सबलसिंह के कहने पर कुछ ध्यान नहीं दिया और शस्त्र सजकर सामने आ खड़े हुए। और शेर की तरह लपक कर उन्होंने ऐसी तलवार बजाई कि वीर राठौड़ भी उनके पराक्रम को देखकर चकित होगये। इस लड़ाई में गढ़ में के सब मनुष्य मारे गये परन्तु बाहर के सुभट भी अक्षत नहीं रहे। महाराजा के दो सरदार मारे गये—

१. ऊहड़ राजसिंह जगन्नाथोत.
२ ऊदावत नारायणदास राघोदासोत।

और कई घायल हुए। महाराजा की विजय हुई। नाहरखान आदि ने शत्रुओं के मारे जाने पर गढ़ में प्रवेश किया और महाराजा की आज्ञा प्रवृत्त की। पोहकरण पर पूर्ण अधिकार होजाने पर नाहरखान आदि जोधपुर आए और महाराजा के चरणों में उपस्थित होकर सर्व वृत्तान्त निवेदन किया।

वि० सं० १७१५ की माघ सुदि ४ चतुर्थी (ई० स० १६५६ ता० १६ जनवरी) को बादशाह औरंगजेब ने महाराजा जसवंतसिंह को अपना कट्टर शत्रु समझ कर बदला लेने के लिये ६००० सवारों की सेना देकर अमीनखां मीरबख्शी को ज़ोधपुर पर भेजा और जोधपुर का राज्य राव अमरसिंह के पुत्र राव रायसिंह के नाम लिख कर उसे राजा और फतहजंग की पदवी दी। उसका मनसब चार हजारी जात व चार हजार सवारों का करके एक लाख रुपये खर्च के लिये नक़द दे, उसको अमीनखां के साथ जोधपुर भेजा और रवाना होते समय खिलअत भी दिया गया।

अमीनखां और राव रायसिंह ने कृष्णगढ़ राज्य के गांव पानरसींदरी में आकर डेरा डाल दिया, औरंगजेब को महाराजा की

ओर का बड़ा भय था, इस लिये वह खुद अजमेर आने का इरादा कर वहां से रवाना हुआ। वानरसींदरी गांव में बादशाही सेना का डेरा था, उसके शामिल होगया।

महाराजा को सूचना मिली कि जोधपुर राव रायसिंह को लिख दिया है और उसकी तामील कराने के लिये अमीनखां बड़ी सेना लेकर आता है।

महाराजा ने आसोप ठाकुर कूंपावत नाहरखान राजसिंहोत और मूहणोत नैणसी को दस हजार १०००० सेना के साथ बादशाही सेना से मुकाबला करने के लिये भेजा। उसने मेड़ता नगर में जाकर मुकाम कर दिया, जो अजमेर से २० कोस के अन्तर पर है। महाराजा भी इनकी मदद के लिये सिवाना से जोधपुर आये और जोधपुर से सेना लेकर बीलाड़ा गांव में आए। यहां फिर सेना एकत्र की और वहां से जैतारण पहुंचे। उस समय महाराजा ने विचार किया कि मेड़ता में नाहरखान की अध्यक्षता में सेना का मुकाबला है उसके शामिल हो जायं।

औरंगजेब ने देखा कि महाराजा जसवंतसिंह ने बड़ी सेना जमा कर ली है और उधर गुजरात से दाराशिकोह आरहा है, दोनों शामिल होजायंगे तो बड़ी मुश्किल होगी, कहीं हाथ में आई हुई बादशाहत चली न जाय, इस विचार से बादशाह ने महाराजा के साथ जयपुर महाराजा जयसिंह की मारफत सुलह करली, जिससे होती हुई लड़ाई रह गई। महाराजा जसवंतसिंह को कूंपावत नाहरखान का पूर्ण विश्वास था, इसी से उसने बादशाह की सेना के मुकाबला में नाहरखान को भेजा था।

जब इसकी मृत्यु का समय समीप आया तब उसने अपनी कन्या का विवाह भी अपने हाथ से कर देना उचित समझ कर अपने घराने के योग्य वर ढूंढ कर विवाह का दिन नियत किया और बड़ी धूम धाम के साथ विवाह किया। दहेज में दास, दासियां घोड़े ऊंठ और बहुत सा द्रव्य दिया। अपनी कन्या को जवाहिरात के गहने

और जरदोज़ी कई पोशाकें दीं। बराती लोकों का पूर्ण सत्कार किय गया। जिससे वर वधू और बराती परम प्रसन्न हुए।

कन्या का विवाह आनंद मंगल और धूम धाम के साथ होगया तब अवशिष्ट द्रव्य और शस्त्र भूषण वस्त्रादि तथा घोड़े, ऊंट, पाल की, रथ आदि सब ब्राह्मण, संन्यासी, साधु, चारण, भाट, ढोली दास, दासियों को दे दिया। जैसे इसीके पूर्वज रघु राजा ने विश्वजित यज्ञ करके सर्वस्व दान कर दिया था। वैसे इसने भी उस समय सर्वस्व योग्यतानुसार बांट दिया, इसने अपने पास कुछ भी नहीं रक्खा।

जिस समय यह सर्वस्व दे चुका था उस समय में एक अपरिचित चारण इसके निकट आया और उसने प्रार्थना की कि मैं बहुत दूर से आपका नाम सुनकर आया हूँ, मुझे भी मेरी योग्यतानुसार कुछ मिलना चाहिये। उसकी दीनता भरी प्रार्थना सुन कर ठाकुर ने उससे कहा कि इस समय मेरे पास कुछ भी नहीं है, मैं तो सर्वस्व दे चुका हूँ। ठाकुर को उसकी दीनता पर बड़ी दया आई, परंतु करै क्या? उसके पास कुछ भी नहीं था। उसने चारण से कहा कि अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है, केवल मेरा शरीर है।

यह सुनकर चारण ने ठाकुर से कहा कि जो आपके पास है वह दे दीजिये। जब आपके पास शरीर है तो उसे दे देने में आप क्यों हिचकते हैं? पूर्व काल में महर्षि दधीचि ने इन्द्र के मांगने पर अपनी अस्थि दी थी। और जगदेव पंवार ने कंकाली को अपना सिर दिया था। जिसका नाम और सुयश आज तक संसार में प्रख्यात है। यह सुन कर ठाकुर ने विचार किया कि इसका कथन सत्य है। दधीचि मुनि सत्य युग में हुए थे, परंतु आज भी उनका यश रूपी शरीर जिंदा है। और पंवार जगदेव पाटण के राजा सोलंकी सिद्धराव जयसिंहदेव के समय में विक्रमी बाहरवीं शताब्दी में हुआ था उनका

नाम संसार में प्रख्यात है और यह शरीर पड़ने वाला है तो मैं इस शरीर को देकर अमर क्यों न होऊं? चारण की तो आशा पूर्ण होगी और मेरा अमर नाम रहेगा। इस प्रकार विचार करके ठाकुर ने अपना नाम अमर रखने के लिये पेट में कटारी खाकर अपना शरीर चारण को दिया। धन्य है ऐसे दानवीर प्राणी को, जिसने जीवन समय में तो शरीर को स्वामी के समर्पित किया और अंतिम समय में चारण को देकर यश शरीर को संपादित किया।

इस ठाकुर का शिलालेख आसोप में मिला है। उसमें लिखा है कि संवत् १७१५ शाके १५८० (ई० सं० १६५८) की फाल्गुन सुदि १५ पूर्णिमा को नाहरखान कटारी खाकर मरा। इस शिलालेख में इसकी वंशावली लिखी है।

१ कूंपो २ मांडण ३ खीमो ४ राजसिंह ५ नाहरखान।

के ९ नौ पुत्र थे।

१९ । ३ सूरजमल

यह नाहरखान का ज्येष्ठ पुत्र था। पिता के सर्वस्व दान कर देने से उसके पास कुछ भी नहीं रहा था। तथापि इसने अपनी बुद्धिमानी से आसोप की गद्दी पाकर ठिकाने को तरोताजा कर लिया। यह भी बादशाही नौकर हो गया था। महाराजा की इस पर पूर्ण

---

(१) शिलालेख की प्रतिलिपिः—संवत् १७१५ वर्षे शाके १५८० महामांगल्य-प्रद मासोत्तम फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १५ पूर्णिमासी पुण्यतिथौ शुभ दिने ॥ राठौड़ युद्धे सत्कीर्ति प्रासवान् राजिश्री कूंपाजी तत्पुत्र गंगांबुपानपरिसेवनचित्तवृति (त्ति) मांडणजी तत्पुत्र पर्म (रम) धम (धार्मिक) राजिश्री खीमाजी तत्पुत्र महाराजा धुरंधर प्रौढ भुजदंड राजिश्री राजसिंहजी तत्पुत्र सोर्यौदार्य (शौर्यौदार्या) दि सर्वगुण संपन्न राजिश्री नाहरखानजी कामि आया कटारी। महासती पात्र श्री केसरि ॥ सुभं भवतु ॥

कूपा थी। वि० सं० १७३५ में महाराजा जसवंतसिंह का पेशावर के पास जमरूद के स्थान में स्वर्गवास हो जाने पर राठौड़ गर्भवती रानियों को लेकर लाहोर आए। वहां महाराजा की दोनों रानियों के उदर से दो पुत्र हुए। जिनमें से एक मर गया और दूसरा अजीतसिंह राजपूतों की रक्षा में रहा। बादशाह औरंगजेब ने राजपूतों को उसे देने के लिए कहा, जब इनका डेरा दिल्ली में था। इनके इनकार करने पर बादशाह ने २०००० सेना भेज दी और इनको घेर लिया। वहां से महाराजा अजीतसिंह तो निकाल दिया गया और राजपूत सब लड़कर काम आए, तब बादशाह ने जोधपुर पर अपनी सेना भेज कर जोधपुर में अपना थाना बिठा दिया। तहवरखान सेना लिए पुष्कर में था। उसने वाराहजी का मंदिर तोड़ा वहां राठोड़ों की सेना पहुँची। और महा घमासान युद्ध हुआ। जिसमें मेड़तिया सरदार बहुत मारे गये। उसी संग्राम में ठाकुर सूरजमल भी काम आया। और कान्हसिंह का पौत्र मुकनसिंह का पुत्र इन्द्रभाण भी बड़ी बहादुरी से लड़कर स्वर्ग को सिधारा। यह घटना वि० सं० १७३७ की आश्विन सुदि १४ चतुर्दशी को हुई थी। इस प्रलयकारी युद्ध में और भी छः ६ कूंपावत राठौड़ काम आए। माधवसिंह, महासिंह, करणसिंह, भीमसिंह और किसनसिंह।

सूरजमल का छोटा भाई जैतसिंह दक्षिण में काम आया। उसका ब्यौरा इस प्रकार है—

वि० सं० १७२३ में बादशाह औरंगजेब ने महाराजा जसवंतसिंह को दक्षिण में भेजा। क्योंकि उस समय दक्षिण में मरहटा शिवाजी ने बड़ा उपद्रव मचा रक्खा था। शिवा जैसे महावीर पुरुष को दबाना कोई साधारण बात नहीं थी। बादशाह ने उसको दबावे जैसा महाराजा जसवन्तसिंह को समझकर आज्ञा दी कि तुम दक्षिण में जाकर शिवा का दमन करो। महाराजा बादशाह की आज्ञा पाकर वि० सं० १७२३ की चैत्र सुदि ९ को रवाना होकर दक्षिण की ओर गया।

उस समय उक्त ठाकुर सूरजमल और उसका छोटा भाई जैतसिंह भी महाराजा की सेवा में उपस्थित था। महाराजा ने शिवा के ऊपर अपनी सेना भेजी, जिसमें कूंपावत जैतसिंह नाहरखानोत अग्रणी था। इसने जाकर शत्रुओं को दबाया और शत्रु सेना के साथ महा घोर संग्राम हुआ, जिस में यह बड़ी बीरता से लड़ कर स्वर्ग को सिधारा। इसका शिलालेख आसोप में मिला है जिसमें लिखा है कि वि० सं० १७२३ शाके १५८८ वैशाख सुदि सप्तमी को यह काम आया और इसके साथ दो सतियां हुईं।[1]

इसके दो पुत्र हुए, बड़ा कीरतसिंह जो आसोप का ठाकुर हुआ। और छोटा मोतीसिंह जिसको गारासणी मिली।

---

(१) शिलालेख की प्रतिलिपिः—"श्रीगणेशाय नम· ॥ संवत् १७२३ वर्षे शाके १५८८ मा (म) हा मांगल्यप्रद मासोत्तम वैशाखमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां पुण्यतिथौ शुभदिने राठौड़ युद्ध सत्कीर्तिप्रान्ति (प्ति) वान् राजि श्रीकूंपाजी तत्पुत्र गंगांवुपान परिसेवनचित्रति (त्तवृत्ति) राजिश्री मांडणजी तत्पुत्र पर्मि (रम) ध (धा) र्मिक राजि श्री खीमाजी तत्पुत्र महाराज धुरंधर प्रौढ भुजदंड राजि श्री राजसिंहजी तत्पुत्र नाहरखानगृहे सौदर्ये दार्ये (शौर्यौदार्या) दि सर्व-गुण-संपन्न राजि श्री जैतसिंहजी काम आया। प्रज (पूज्य) मा (महा) सतिः (ती) राज्ञि (ज्ञी) श्री चन्द्रांण जगरूपदेजी भटी (टि) याणी श्री जशरूपदेजी ॥ शुभं भवतु ॥"

शिलालेख में संवत् १७२३ मारवाड़ी संवत् लिखा गया है। पंचांग का १७२४ होता है।

नवम अध्याय ।

२० । ७ कीरतसिंह

सूरजमल के अनंतर ज्येष्ठ पुत्र होने से कीरतसिंह आसोप की गद्दी बैठा । यह भी बादशाही मन्सबदार था । वि० सं० १७६३ (ई० स० १७०६) में बादशाह औरंगजेब का अंतकाल होगया, उस समय महाराजा अजीतसिंह जालोर में था । बादशाह के मरण की सूचना पाते ही महाराजा अपनी राठोड़ों की बड़ी सेना लेकर जोधपुर की तरफ चले और नगर को घेर लिया। नगर पर कब्जा करके किले पर आक्रमण कर अंदर प्रविष्ट होने लगे उस समय कीरतसिंह ने बादशाही मन्सबदारी का हक् बजाने के अभिमान से महाराजा को किले में घुसने से रोका और कहने लगा कि आप बादशाह की आज्ञा बिना किले में प्रविष्ट न होवें । उसने उस समय यह विचार नहीं किया कि ये मेरे मालिक हैं, मैं किनको रोकता हूँ ? परन्तु दैव प्रतिकूल होता है तब उलटी ही सूझती है । उस समय राजसिंह के बड़े भाई किसनसिंह के प्रपौत्र रामसिंह ने कीरतसिंह को बहुत समझाया कि ये अपने स्वामी हैं, अपने घर में जाते हैं, तू इन्हें मत रोके, परन्तु उसने उसका कहना नहीं माना, पर वह कर क्या सकता था ? रामसिंह महाराजा के साथ होगया और महाराजा किले में प्रविष्ट हो गये। और अपने पितृ परंपरागत राजसिंहासन को सुशोभित किया ।

महाराजा ने जोधपुर का राज्य पाकर अपने स्वामिभक्त सरदारों और सेवकों को दानमानादि से संतुष्ट किया ।

वि० सं० १७६४ में अपने स्वामिभक्त रामसिंह की उक्त बंदगी से प्रसन्न होकर उसको आसोप की जागीर कीरतसिंह से जब्त करके इनायत की, जो उसके घर में परंपरा से चली आती थी। स्वामिद्रोही कीरतसिंह निकाल दिया गया ।

इसी अर्से में कूंपावत सबलसिंह के पुत्र भीमसिंह ने एक बादशाही मन्सबदार को, जो महाराजा के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा था, धानमण्डी के मध्य मार डाला। जिससे प्रसन्न होकर महाराजा ने आसोप उसकी इच्छानुसार उसको दे दिया और बड़लू आदि ग्राम रामसिंह को दिये। रामसिंह आसोप दूसरे को देने से नाराज होकर चला गया। महाराजा को इस स्वामिभक्त सेवक के चले जाने से परिताप हुआ और उसकी प्रथम की हुई सेवा का स्मरण करके वि० सं० १७७० में उसे बुलाकर आसोप की जागीर दी। वह उसके जीवन पर्यंत उसीके अधिकार में रही।

१८ । ५ मुकनसिंह

यह नंबर १७ । ४ कान्हसिंह का पुत्र था । लिख आए हैं कि महाराजा जसवंतसिंह ने कान्हसिंह से नाराज होकर आसोप की जागीर उसके छोटे भाई राजसिंह को दे दी थी। उसकी ४ पुश्त तक उसके वंशजों के अधिकार में रही। राजसिंह के प्रपौत्र कीरतसिंह से नाराज होकर महाराजा अजीतसिंह ने आसोप की जागीर कन्हसिंह के प्रपौत्र रामसिंह के नाम फिर बहाल कर दी।

ठाकुर मुकनसिंह अपने पट्ट-स्थान बड़लू में शासन करता था। महाराजा जसवंतसिंह की इस पर पूर्ण कृपा थी । इसने भी महाराजा की पूरी तन मन से सेवा की।

ठाकुर मुकनसिंह के छोटे भाई श्यामसिंह और भावसिंह जगत्प्रसिद्ध महावीर राव अमरसिंह के पास रहते थे। राव अमरसिंह बड़ा उद्धत और उद्दण्ड था। इसके पिता महाराजा गजसिंह की शिफारिस से बादशाह ने इसे नागौर का राज्य देकर चार हजारी जात और तीन हजारी सवार का मन्सबदार कर दिया था।

यह बादशाह के दरबार में मुजरा करने गया। इसने सलावतखां

बख्शी को मुजरा कराने के लिए कहा, परन्तु उसने देरी की, तब इसने स्वयं जाकर मुजरा किया। बादशाहों के दरबार का यह कायदा था कि कोई भी मन्सबदार मुजरा करने जावे वह बख्शी की मारफत मुजरा करै। अमरसिंह ने उस मर्यादा का उल्लंघन किया जिससे उसने अमरसिंह को 'गंवार' कह दिया। अमरसिंह जैसे वीर को कब सहन होसकता था, सरे आम दरबार 'गंवार' शब्द मुख से निकलने के साथ ही सलावतखां के कलेजे में कटारी भोंक दी। सलावतखां वहीं ढेर होगया। इस विषय में किसी कवि ने यह दोहा कहा था—

दोहा

"उन मुख तैं गग्गो कह्यो, उन कर लियौ कटार।
वार कहन पायो नहीं, जमधर होगयो पार॥"

अमरसिंह सलावतखां को मारकर वापिस लौटा उस समय अर्जुन गौड़, जो उसका साला होता था, अमरसिंह के पीछे हो लिया। अमरसिंह को यह भ्रम नहीं था कि यह मुझे मारने के लिये मेरे पीछे आ रहा है। क्योंकि साला बहनेऊ का नाता था। अर्जुन गौड़ ने ड्योढी के पास आते मौका पाकर अमरसिंह को मार डाला। ड्योढी पर अमरसिंह के साथ १४ मनुष्य थे उन्होंने अमरसिंह की यह गति देखकर तलवारें खींचीं। अर्जुन गौड़ तो अमरसिंह को मारकर पहले ही रफूचक्कर होगया था। ड्योढी पर जो बादशाही नौकर थे, उन पर टूट पड़े। बड़ी विकट लड़ाई हुई।

उक्त १४ सुभटों में ठाकुर मुकनसिंह का छोटा भाई श्यामसिंह कान्हसिंहोत अग्रणी था। इसकी अध्यक्षता में इन १४ सुभटों ने ऐसी तलवार बजाई कि दिल्ली में शोर मच गया। ये बादशाही ३६ मनुष्यों को मारकर रण-शय्या-शायी हुए।

बादशाह ने ये समाचार सुनकर अमरसिंह की हवेली पर सेना

भेजी। हवेली में राव अमरसिंह के सरदार विचार कर रहे थे कि, अब क्या करना चाहिये? इतने में बादशाही सेना ने आकर हवेली को घेर लिया। भीतर राव अमरसिंह के सरदार और कामदार बैठे हुए थे, वे सब सजकर तैयार हुए। जिनमें ये मुखिया थे—

१ कूंपावत राठौड़ भावसिंह, मुकनसिंह का छोटाभाई, कान्ह सिंह का पुत्र।

२ चांपावत बलू, जिसको उदयपुर के महाराणा जगतसिंह ने इसकी वीरता की प्रशंसा सुनकर उसकी सवारी के योग्य एक बहुमूल्य घोड़ा भेजा था।

३ व्यास गिरधर पोहकरणा ब्राह्मण।

इनकी अध्यक्षता में राव अमरसिंह के सैनिकों ने बादशाही सेना से मुकाबला किया और शेर की तरह लपके। महा घोर संग्राम हुआ। इस युद्ध में राव अमरसिंह के ६४ वीर और बादशाह के २५० मनुष्य हताहत हुए। बादशाही सेना में तीन ३ बड़े मन्सबदार और छोटे दो २ मारे गये। जिनमें तीन बड़े मन्सबदार ये थे:—

१ बिजलीखान, सैयद खानजहां का भतीजा, जो तीन हजारी मन्सबदार था।

२ दो मन्सबदार दो दो हजारी। जिनके नाम ज्ञात नहीं।

राव अमरसिंह के सरदारों में एक मुख्य सरदार (चांपावत बलू) और एक कामदार (व्यास गिरधर) मारे गये। और एक मुख्य सरदार (कूंपावत भावसिंह) घायल होकर बचगया। जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है।

१ चांपावत बलू काम आया।

२ व्यास गिरधर पोहकरणा ब्राह्मण काम आया।

कूंपावत भावसिंह राव अमरसिंह का पूर्ण विश्वास-पात्र था। अमरसिंह का सब सामान इसीके पास रहता था। उसने वह सामान राव अमरसिंह के छोटे बेटे ईसरसिंह के पास पहुँचा दिया।

इस (भावसिंह) का पुत्र इंद्रभाण वि० सं० १७३७ में पुष्कर में तहवारखान की सेना के साथ राठौड़ों का युद्ध हुआ जिसमें मारा गया। यह वृत्तान्त नाहरखान के पुत्र सूरजमल के इतिहास में लिखा जाचुका है।

इस ठाकुर के तीन पुत्र हुए १ जैतसिंह २ मनोहरदास ३ उदयसिंह।

१६ । ६ जैतसिंह

मुकनसिंह के स्वर्गवास करने पर उसका ज्येष्ठ पुत्र जैतसिंह पितृपट्ट का अधिकारी हुआ। इसने महाराजा अजीतसिंह की परम स्वामिभक्ति के साथ विपत्ति के समय में पूर्ण सेवा की।

वि० सं० १७६० में महाराजा अजीतसिंह जालोर में थां। चांपावत उदयसिंह लखधीरोत प्रधानामात्य था। महाराजा उसका बड़ा आदर मान करते थे। उसको बाबोजी कहकर बतलाते थे, परंतु जैतावत अर्जुनसिंह के बहकाने से उदयसिंह महाराजा से बदल गया। उसकी साजिश से राव इन्द्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह ने जालोर पर चढ़ाई की। उसके भय से महाराजा को जालोर का किला छोड़ कर नेगे के पहाड़ का शरण लेना पड़ा और पुत्रों सहित अंतःपुर को भी जालोर से हटाना पड़ा। इस बात की खबर मेड़तिया और ऊदावत सरदारों को हुई तब ये एक दम जालोर प्रान्त में पहुँचे। कूंपावत राठौड़ जैतसिंह भी उनके शामिल हुआ। गांव मजल धुनाड़ा के पास मोहकमसिंह के और इनके मुठभेड़ हुई। महा विकट संग्राम हुआ। इस युद्ध में उक्त ठाकुर जैतसिंह बड़ी वीरता से लड़ा, मोहकमसिंह के पैर उखड़ गये। महाराजा अजीतसिंह की विजय हुई।

वि० सं० १७६३ में महाराजा का जोधपुर पर अधिकार हुआ तब जिन्होंने विपत्ति के समय में सेवा की थी उनको प्रतिफल देते हुए महाराजा ने जागीरें देकर संतुष्ट किया। ठाकुर जैतासिंह की भी जागीर वहाल कर दी गई। जिसमें पांच गांव थेः—

१ वड़लू २ रातकूड़ियो ३ रजलाणी ४ जावो और ५ खवासपुरो।

जिनकी रेख १७९५०) की थी। इस स्वामिभक्त सरदार का स्वर्गवास वि० सं० १७६९ (ई० स० १७१२) में हुआ था।

इस ठाकुर के दो पुत्र हुए १ रामसिंह २ पदमसिंह।

१० । ७ रामसिंह

जैतासिंह के स्वर्गवास करने पर उसका ज्येष्ठ पुत्र रामसिंह पट्टाधिकारी हुआ। यह महाराजा अजीतसिंह का कृपा पात्र था।

वि० सं० १७६३ में बादशाह औरंगजेब के मरजाने पर महाराजा अजीतसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया। परंतु उसके पश्चात् उसके उत्तराधिकारी बहादुरशाह ने दूसरे वर्ष महाराजा अजीतसिंह को बिना आज्ञा जोधपुर पर अधिकार कर लेने और आंबेर के महाराजा जयसिंह व आजम को साथ देने के हेतु दंड देने के लिये राजपूताना पर चढ़ाई की।

बादशाह अजमेर आकर ठहरा, उस समय दोनों राजा बादशाह के पास गये। बादशाह इनसे अप्रसन्न था। उसने जोधपुर और आंबेर को जब्त करके दोनों ठौर अपने मनुष्य रख दिये। महाराजा अजीतसिंह, जयपुर महाराजा जयसिंह और उनके साथी दुर्गदास आदि बादशाह के साथ दिल्ली गये। जहां से उनको तुरंत ही बादशाह के साथ दक्षिण की तरफ जाना पड़ा। परंतु दोनों राजा अपने राज्यों की जब्ती के कारण अप्रसन्न थे।

ठाकुर रामसिंहजी आसोप

बादशाह जब नर्बदा नदी पर पहुँचा, ये दोनों राजा अपने डेरे उठाकर मेवाड़ की तरफ चल दिये और उदयपुर में आकर महाराणा अमरसिंह से मिले। वहां से दोनों वि० सं० १७६५ में जोधपुर आए। उस समय इनके पास ३०००० तीस हजार सेना थी। महाराजा की सेना में कूंपावतों में से रामसिंह जैतसिंहोत, विजयसिंह, केसरीसिंह, भीमसिंह, फतैसिंह और हरनाथसिंह ये छः सरदार सेवा में उपस्थित थे। महाराजा का आगमन सुनते ही फौजदार मिहराबखां, जो दस ग्यारह मास से हाकिम बना हुआ था, विना लड़े भिड़े जोधपुर छोड़कर चला गया।

महाराजा ने वि० सं० १७६३ में जोधपुर लिया था, उस समय भी रामसिंह सेवा में उपस्थित था और कीरतसिंह को समझाने के लिये बड़ी कोशिश की थी। यह वृत्तान्त कीरतसिंह के इतिहास में लिखा जा चुका है।

महाराजा के वि० सं० १७६५ में जोधपुर पुनः हस्तगत होने पर इसके पिता (जैतसिंह) की जागीर इसको लिख दी गई। जागीर में ये गांव थेः—

१ वड़लू २ रातकूड़ियो ३ रजलाणी ४ जावो और ५ खवासपुरो।

ठाकुर रामसिंह के वर्णन का यह प्राचीन छंद है—

छंद

कूंपावत राज लाज सिंधू जस धारे,
रूकके सुजल़ खल़ आगके अंगारे।
रामसिंह जैतका सो जैतही निभावै,
कूंपावत जंगमें मतंग सेल ढावै ॥ १ ॥

फतेसाह सोह आए वाह गणे धारे,
बिजावत विजय राखी पराजय निवारे।
जाको जोस देखी बंस सोच नहीं धारे,
अंधकार जात जैसे दीपक के उजारे ॥२॥
केसरीसिंह रामसिंह सबल के जाए,
रांम बाण से अचूक रौद्र छोम पाए,
महावीर महासूर तेज सरसावे,
मांडण ज्यूं जोसवंत कुळ मंडण कहावे ॥३॥
भावसिंह सबळका मांडण सवाई,
ओछाह सी लागे जाकूं शाह सूं लँड़ाई ॥

आसोप का इतिहास
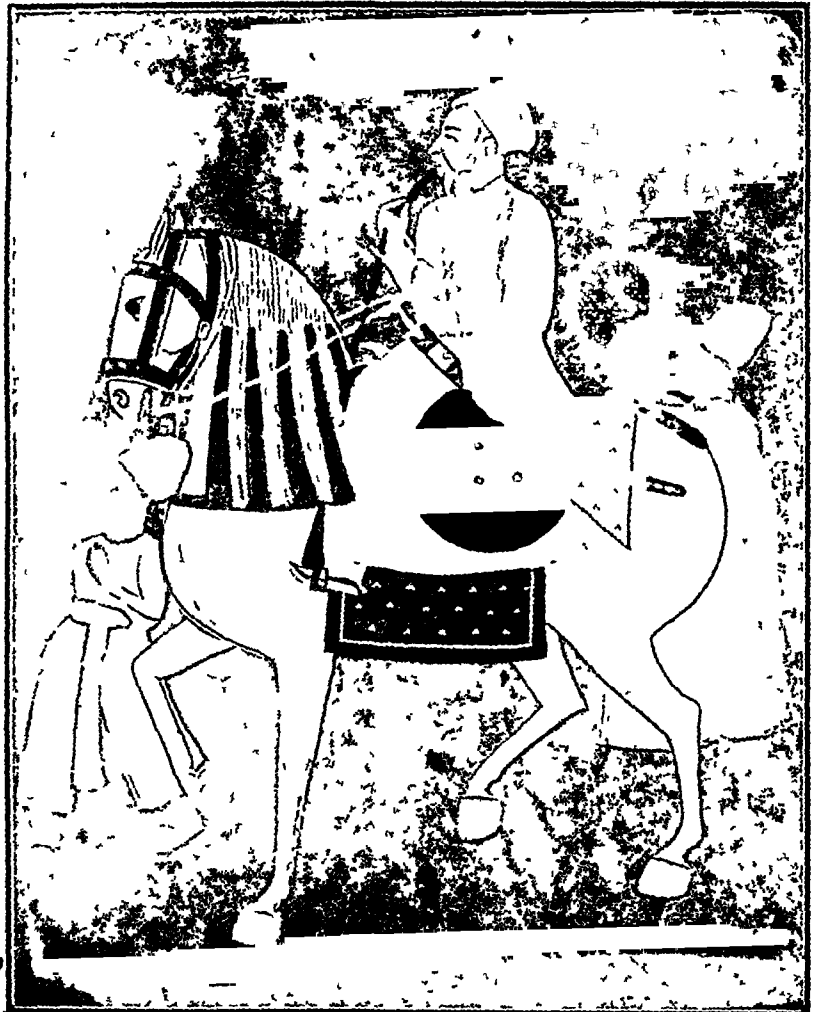
दशम अध्याय ।

२१ । ८ कनीराम

ठाकुर रामसिंह के अनन्तर कनीराम अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ और उसी वर्ष में इसको अपने पिता की जागीर मिली, जिसमें बड़लू आदि ५ ग्राम थे।

वि० सं० १७८० में महाराजा अजीतसिंह का स्वर्गवास होजाने पर उसका ज्येष्ठ पुत्र अभयसिंह जोधपुर के सिंहासन पर अधिरूढ हुआ। उस समय ठाकुर कनीराम ने महाराजा को आसोप के लिये अर्ज किया तो महाराजा अभयसिंह ने कनीराम को कहा कि महाराजा अणंदसिंह, रायसिंह और किशोरसिंह को लेकर चांदावत दौलतसिंह जूंझारसिंहोत बागी होगया है तुम उसे मार दो तो तुम्हारा आसोप बहाल कर दिया जाय।

कनीराम ने महाराजा की आज्ञा शिरोधार्य की और अपने चुनिंदे सुभट साथ में लेकर उसकी तलाश में चला। जो जिस उद्योग में लगता है ईश्वर उसे अवश्य सहायता देता है। कनीराम ने मौका पाकर दौलतसिंह चांदावत को मार लिया और महाराजा के चरणों में उपस्थित हुआ। दौलतसिंह को मार देने से कनीराम पर महाराजा अत्यंत प्रसन्न हुए। महाराज अणंदसिंह आदि तीनों भाइयों को दौलतसिंह बहकाता था और उत्तेजित करता था। इसके मारा जाने से महाराजा के हृदय का शल्य निकल गया। महाराजा परम प्रसन्न हुए। वि० सं० १७८३ की वैशाख वदि ३ को जगत्सिंह से तागीर करके आसोप कनीराम के नाम वहाल कर दिया गया।

वि० सं० १७८७ में महाराजा अभयसिंह को वादशाह मुहम्मद शाह ने अहमदाबाद का सूबह दिया और महाराजा से कहा कि,

अहमदाबाद का सूबहदार सर बिलंदखां सरकस होगया है, खुद बादशाह बन बैठा है, आज्ञा का पालन नहीं करता है, उस उद्दंड को दंड देकर वहां से निकाल दो। अहमदाबाद का सूबा तुम्हें दिया गया है।

महाराजा ने अदब के साथ बादशाह की आज्ञा को शिर पर चढ़ाया और कहा कि आपके तेज प्रताप के आगे वह क्या वस्तु है? आपकी कृपा से मैं विलायत के बादशाह को जीत सकता हूँ। यह सुनकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और महाराजा को खिलअत दी गई। उसके साथ हाथी, पालकी, मोतियों की माला, मोती (कानों में पहनने के), किलंगी, जड़ाऊ तलवार, सोना रूपा की सागत के ३० घोड़े इनायत किये और पन्द्रह लाख रुपये खर्च के लिये दिये।

महाराजा दिल्ली से जोधपुर आए और सेना जमा की। छोटे भाई राजाधिराज बख्तसिंह को बुलाया, वे भी ५००० पांच हजार सवारों से जोधपुर में आ शामिल हुए। महाराजा बड़ी भारी सेना ले अहमदाबाद गये। जिसमें कूंपावत कनीराम महाराजा की बंदगी में था।

अहमदाबाद में सर बिलंदखां के साथ महा विकट संग्राम हुआ। जिसमें कूंपावत कनीराम घायल हुआ और इसके बहुत से मनुष्य मारे गये। परंतु इसने एक बड़ा मारके का काम यह किया कि शेख अलियारखां को मार गिराया। उस विषय का यह प्राचीन गीत है-

१. गीत

वधे साथियां हूंत सिरबिलंद थट बिहंडिया,
ओर असं हाथियां हूंत अड़ियो।
सेख अलियार रै हियै नवसांहसा,

जंगी होदा बिचै सेल जड़ियो ॥ १ ॥
एह कर रीस साम्हो तुरंग ओरियो,
पिसण मो देख जुध न को जूपै ।
चोट अजरंग कर जड़े साबल चुगल,
कोट जबरंग मझ राव कूंपै ॥ २ ॥
कान्ह तोखार गज भार झोके कहर,
सिलह पर धार तरवार साहे ।
तन सिलह पूर बज्रकोट चहुँवै तरफ,
मारियो साररा दुरंग मांहे ॥ ३ ॥
करी असवार अंग पार चौधार कर,
जड़े गह पूर उजबक जरूरा ।
सेल बावण तणौ झोक नवसांहसा,
सेल काढण तणो झोक सूरा ॥ ४ ॥
रांम सुत लोहड़ां अड़ै मदझर रवद,
लड़ै जस अहमदाबाद लहियौ ।
मुसाहब मुगल साहब तणौ मारियौ,
कमंध साहब अभै वाह कहियौ ॥ ५ ॥

२ गीत

हलो जोधांण नाथरो माथे अहमदाबाद रे हले,
जांणे लंका सीस चढे राम रा जोधार ।
अभैसिंह राम ज्यूं ही कान कूंपो लछा एवो,
और भाल कीस ज्यूंही सूरमा अपार ॥१॥

हणुमान रूप वीर उदेभाण साथ हले,
बाळी रा सुजाव जेम सीरछारो वीर ।
बाळ भ्राता जिसो साथे प्रथीसिंह जुधां बंको,
धुजे धरा किया धंको ऋहूं वीर धीर ॥ २ ॥
फतेसिंह वाळा जोध तीनों ही लड़ाक फाबे,
इसे रूप चमू बीच सूरमा अथाग ।
कमंधां आदीत राड़ तुरकां आरंभ कीधी,
खंभा ठोर भिड़ै कूंपा ठहे रीठ खाग ॥ ३ ॥
रवी भाळै पांण वीरां आसमांण ठाम रथां,
महावीरां संक मेछां मेल दीधो मांण ।
निभाया बोलिया बोल जाजुली राठोड़ नाथ,
जीत जंगां राम ज्यूं ही आविया जोधांण ॥४॥

३ गीत

अभंग अमावळ कान्ह रिण जंग विच ओरिया,
अड़ निहंग दळां देतो उथालो ।
अंग उनवंग रुधर चोल रंग आपरो,
भिड़ज वप सुरंग रंग सुरंग भाळो ॥१॥
रामवत घड़ा जळबोळ विच रालिया,
पछट हरवल हुवे गोलरा पार ।
कलह अर चोळ रत चोळ सावळ किया,
अस वणै चोळ रग चोळ असवार ॥ २ ॥
अभनमो किसन गैढाळ उथालतो,
छोह अणपार ढाहै छंछोहा ।

कूंत रंग लाल रंग लाल फाबे कमँध,
लाल रथ तुरंग अणपार लोहा ॥ ३ ॥
अस सहत कमँध सुरां मुकट ओपियो,
बोट धैधींगरा लिया बोहै ।
फुरल़ गज डंबरा करै ऊभौ फते,
सुबप लालंबरा इसो सोहै ॥ ४ ॥

४ गीत

जबर साहियां हबोल़ा करे पावक ज्युंही,
कड़कती बीजलां दीठ कांसे ।
अखाड़ै रामरे चीतरी अराबां,
धीबियो सरावां अवर धांसे ॥ १ ॥
तीख अणियाल़ बधोल़ियां तेरमे,
ओरिया तुरंग मग जहां घणे हूंत ।
कर खुरी तुरां घमरोल़ियो कांनड़े,
किलमचे परा जकबोल़ियो कूंत ॥ २ ॥
ख्याल देखे तरण वरण अछरां खड़ी,
करण बल छटां जुध काहा केहो ।
रोदचे पिंजर असरण सरण रोपियो,
जम गिरण ओपियो अरण जेहो ॥ ३ ॥
परम उर धारियो पूर मांटी पणो,
चापड़े नूर ओपे चल़ूल़ा ।

किलम घड़ स्याम हो करग तूटो कना,
पार फूटो धजर झालपूळा ॥ ४ ॥
स्यांम चो सारियो काज नवसांहसे,
तारियो देस वंस सगसताळो ।
चापड़े निबाबां तणो रत चारियो,
भुजां सिणगारियो वणे भाळो ॥ ५ ॥

छंद [सूरजप्रकाश में]

चांपावत एम लड़ै कळि चाळ । कूंपावत बाहत खाग कराल ॥
तिके कुळ सूरज कांन सतेज । जोए खळ थाट करै नह जेज ॥
जई धख वारण मारण जोम । धिखे चख दारण आरण धोम ॥
घड़ा जम रूप भयंकर घाट । भिड़े धज मूँछ फणीस भुँहाट ॥
तई भुज सावळ कीध त्रिभाग । वहे असि उप्रमतो मझि बाग ॥
आयो असुरांण दळां मझि एम । जाळंधर ऊपरि रूधिर जेम ॥
वधै दळ मूगळ कूंत बहेत । सिल्है घट पाखर बाज सहेत ॥
जुथां विहराय गजां परिजाय । वहै जिम लाय झिकोळिय वाय ॥
होदां मझि लोह करै करि हाक । महारिख देखि हुवै मुसताक ॥
हिलोळि छड़ाल ग्रहे चंद्रहास । तछै घण मीर कलम्म तरास ॥
कितां धड़ सीस पड़ै भड़ केक । हुवै अध फाड़ पड़ै भड़ हेक ॥
उडै अध सीस बहै तरवारि । आधा तरबूज तणी उणहारि ॥
सहो भ्रम राम प्रवीत सराह । वधे इम कन्ह करै खग वाह ॥
औरै असि बूंदल जंग अथाह । निचोड़त मीर खगां नरनाह ॥

जड़कत सेल मिले जरदाल । कड़कत कंध वहै करिमाल ॥
दादो जिण गोवरधन्न दुझाल । ढाहे गजसाह अगै गजढाल ॥
अभैमल अग्र अखाहर एम । जुडै भंड जाहर नाहर जेम ॥

महाराजा अभयसिंह की इस ठाकुर पर पूर्ण कृपा थी। क्योंकि इसने महाराजा की इच्छानुसार उस बागी को मार डाला था, जिसने राजवी महाराजा अणदसिंह, रायसिंह और किशोरसिंह को खड़ा करके मारवाड़ के राज्य में उपद्रव मचा दिया था।

वि० सं० १८०५ में महाराजा अभयसिंह का स्वर्गवास होगया। महाराजा रामसिंह जोधपुर में गद्दी बैठा। इस राजा में छिछोरपन बहुत अधिक था। इसीसे महाराजा अभयसिंह को इसकी बड़ी चिंता थी। महाराजा ने अपने अंतिम समय में रीयां ठाकुर शेरसिंह मेड़तिया और कूंपावत कनीराम आसोप ठाकुर को भलामन दी थी कि यह तुम्हारी गोद में है, इसकी भलामन तुमको है। परन्तु रामसिंह अपनी आदत से लाचार था। उसे तो वही सूझती थी। उसने अपने छिछोरपन से इन सरदारों को नाराज कर दिया। कनीराम अपने घर आसोप जाकर बैठ गया।

महाराजा रामसिंह ने अपने चचा राजाधिराज बख्तसिंह को भी अप्रसन्न कर दिया था जिससे वह इसका राज्य छीनने का प्रयत्न करने लगा। इसके बहुत से सरदारों को दान-मानादि से संतुष्ट करके राजाधिराज ने अपने पास बुला लिया। बहुत से सरदार महाराज रामसिंह को छोड़ कर उसके पक्षपाती बनगए।

वि० सं० १८०८ में आउवा ठाकुर कुशलसिंह महाराजा रामसिंह को छोड़ कर राजाधिराज बख्तसिंह के पास चला गया। बख्तसिंह ने उसे खासा घोड़ा और प्रधानगी आदि देने का कह दिया। उधर रामसिंह ने पोहकरण ठाकुर चांपावत देवीसिंह आदि सरदारों

को भी अप्रसन्न कर दिया जिससे देवीसिंह रामसिंह को छोड़ कर ठिकाना रास और वहां से नींवाज गया। देवीसिंह के जाने पर बहुत से सरदार, जिनमें चांपावत तो समग्र, रामसिंह को छोड़ कर अलग होगये। ये समाचार राजाधिराज को ज्ञात हुए परंतु उन्होंने कुछ भी नहीं कहा। तदनन्तर कुशलसिंह को इस बातकी खबर मिली तब उसने राजाधिराज से कहा कि पोहकरण ठाकुर देवीसिंह रामसिंह से अलग होगया है, उसे बुला लेना चाहिये। तब राजाधिराज ने कुशलसिंह से कहा कि वह बड़ा सरदार है, हमारे घरमें उसका निर्वाह नहीं होसकता। उसके पास घोड़े राजपूत बहुत हैं, दूसरा प्रधानगी दिये बिना वह आ नहीं सकता। और प्रधानगी का पद मैं तुमको दे चुका हूँ अब उसको कैसे बुला सकते हैं? तब कुशलसिंह ने जोश में आकर कहा कि 'कुशलसिंह नागौर में अपना निर्वाह करने के लिये रामसिंहजी से अलग नहीं हुआ है। किन्तु आपको जोधपुर दिलाने के लिये आप के पास आया है। यदि आपको जोधपुर न दिला दूं तो मैंने यह त्याग ही क्यों किया? आपने प्रधानगी का पद मुझे देने का फरमाया है वह पद मैं अपने हाथ से देवीसिंहजी को देता हूं, आप उन्हें बुला लीजिये। आप खुद मेरे साथ चलें, वह जैसे आवेंगे ले आवेंगे। कुशलसिंह का आग्रह और भावी सफलता देखकर राजाधिराज ने भी स्वीकार कर लिया। क्यों कि कुशलसिंह का कहना यथार्थ था। अब दोनों राजाधिराज और कुशलसिंह ६ ऊंट साथ में लेकर नागौर से रात्रि में गुप्तरूप से रवाना हुए। रातोरात केसरपुरा गांव में पहुंचे। जो रास ठिकाने से एक कोस के अंतर पर है। वहां खड़े रहकर रास ठाकुर केसरीसिंह को समाचार भेजे। रास ठाकुर राजाधिराज का आगमन सुनते ही रात्रि में उनके चरणों में उपस्थित हुआ। परस्पर वार्तालाप होकर यह निश्चय हुआ कि नींवाज जाना चाहिये। तब राजाधिराज दोनों सरदारों के साथ नींवाज गये। वहां नींवाज ठाकुर के साथ वार्तालाप

होकर परस्पर धर्मकर्म दिये गये और देवीसिंह आदि सब नागौर गये।

सरदारों ने नागौर पहुंच कर अपने डेरे नागौर नगर से बाहिर खड़े किये और कूंपावत ठाकुर कनीराम के द्वारा कहलाया कि "महाराजा अभयसिंहजी ने हमको अत्यन्त आराम के साथ रखा है, इस लिये हम अभयसिंहजी का नाम कायम रखेंगे। यदि आप अपने पुत्र विजयसिंह को अभयसिंहजी के दत्तक पुत्र करें, यानी "विजयसिंह अभयसिंहोत" ऐसी सलामी बोली जावे और विजयसिंहजी के पुत्र का आपका पुत्र होना स्वीकार करें तो जोधपुर रामसिंहजी से लेलिया जावे।" समय देखकर सरदारों के इस कथन को राजाधिराज ने स्वीकृत किया। तब सरदारों ने महाराज कुमार विजयसिंहजी को अपने डेरों में बुला लिया और "विजयसिंह अभयसिंहोत" ऐसी सलामी बोली गई। फिर राजाधिराज बख्तसिंह ने मेड़ता नगर पर, जो जोधपुर राज्य के शामिल था, अपना अधिकार कर लिया। रामसिंह मेड़ता छुड़ाने के लिये सेना लेकर मेड़ते गया। बख्तसिंह बड़ा वीर और नीति-निपुण बुद्धिमान् राजा था। वह भी सेना सजकर युद्धार्थ तैयार होगया।

वि० सं० १८०९ (ई० स० १७५२) में मेड़ते के पास इन दोनों चचा भतीजों के परस्पर घमासान युद्ध हुआ, जिसमें महाराजा रामसिंह के बहुत से सरदार मारे गये। उस समय कनीराम निष्पक्ष रहा। क्योंकि चचा भतीजे का मामला था। इस लड़ाई में महाराजा रामसिंह के बहुत से सरदार मारे जाने से राजाधिराज बख्तसिंह की विजय हुई और उसने जोधपुर का राज्य दबा लिया। तब महाराजा रामसिंह ने मरहटों की शरण ली।

राजाधिराज बख्तसिंह, महाराजा रामसिंह को पराजित करके जोधपुर में आये और बीकानेर महाराजा गजसिंह के साथ नगर में प्रवेश किया। उस समय गजसिंह ने बख्तसिंह को कहा कि शहर

को लूट लेना चाहिये। तब बख्तसिंह ने कहा कि यह शहर मेरे बाप दादों का और मेरा है, मैं इसे कैसे लूट सकता हूँ? तथापि उनके अति आग्रह करने से कुछ हिस्सा लूटा गया।

इस अवसर पर गजसिंह ने कुछ अर्से तक जोधपुर में निवास किया। जोधपुर राज्य से उनको खर्ची मिलती रही और दूसरे सरदार भी जोधपुर राज्य से वेतन लेते रहे। आसोप ठाकुर कनीराम ने वेतन नहीं लिया। महाराजा बख्तसिंह ने ठाकुर कनीराम को कहा कि तुम खर्ची क्यों नहीं लेते? तब कनीराम ने कर-बद्ध होकर अर्ज किया कि, मेरी जागीर मेरे अधिकार में है उससे मेरा निर्वाह होरहा है। हम सरदार लोगों को जो जागीर दी जाती है वह सेवा करने के लिये ही दीजाती है। इस विपत्ति के समय में हम जो वेतन लेवें उसे आप कभी विस्मृत नहीं होसकते। जिस समय जागीर से निर्वाह नहीं होगा उस समय लेलूंगा। इस समय तो श्री दरबार साहिबों के प्रताप से भली भांति निर्वाह होरहा है।" इस प्रकार निवेदन करके वेतन लेने से इन्कार कर दिया। दूसरा यह मेड़ते के युद्ध में शरीक नहीं हुआ था। तीसरा कारण यह भी हुआ कि इसका पुत्र दलपत महाराजा बख्तसिंह को सच्ची बात कहने में हिचकता नहीं था। जिससे जोधपुर का राज्य हस्तगत होने पर महाराजा बख्तसिंह ने ठाकुर कनीराम की जागीर आसोप जब्त करके इसके छोटे भाई छत्रसिंह को देदी। क्योंकि बख्तसिंह के कहलाने पर भी इसने बख्तसिंह का पक्ष नहीं लिया था। जागीर जब्त होजाने पर यह नाराज होकर बीकानेर चला गया।

वि० सं० १८०९ (ई० स० १७५२) में महाराजा बख्तसिंह का विष प्रयोग से गांव सींधोली (जयपुर राज्य) में देहान्त होगया। तब उसका पुत्र विजयसिंह जोधपुर के राज्यसिंहासन पर बैठा। इस महाराजा के और सरदारों के परस्पर मनोमालिन्य होगया था। उसका कारण यह था कि सरदार तो यह समझते थे कि मारवाड़

राज्य के हर्ता कर्ता हम हैं और राजा अपना अधिकार चाहता था। ठाकुर छत्रसिंह विरुद्ध पार्टी में था। इस विरुद्ध पार्टी के अगुआ ये चार सरदार थेः—

१ पोहकरण ठाकुर देवीसिंह चांपावत

१ आसोप ठाकुर छत्रसिंह कूंपावत

१ रास ठाकुर केसरीसिंह ऊदावत

१ नींबाज ठाकुर दौलतसिंह ऊदावत

महाराजा विजयसिंह ने वि० सं० १८१६ में इन चारों को किले में पकड़वा कर कैद कर दिया। इन में से दौलतसिंह बालक जान कर छोड़ दिया गया। बाकी तीनों सरदार सलेम कोट की कैद में ही मरे।

इसी वर्ष में महाराजा विजयसिंह ने ठाकुर कनीराम को खास रुक्का भेजकर बीकानेर से बुलाया। खुद महाराजा दरवाजे तक उसके आदरार्थ सामने गये। कनीराम की महाराजा ने बड़ी खातिर की और कहा कि तुम्हारे जैसे स्वामिभक्त हमारे घरमें कितने हैं? तुमने अपना धर्म जैसा निबाहा है ऐसे ही सदा निबाहते रहो। कनीराम ने करबद्ध होकर निवेदन किया कि आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। यह सेवक सदा अपना कर्तव्य ही करता रहेगा। कभी स्वामी से विमुख न होगा। महाराजा इसके बचन सुनकर परम प्रसन्न हुए। उसी वर्ष की फाल्गुन सुदि १२ द्वादशी को आसोप मय बड़लू के बहाल कर दिया गया। इसने आजन्म अपने स्वामी महाराजा विजयसिंह की पूर्ण प्रेम और भक्ति से सेवा की और महाराजा इसकी स्वामि-भक्ति के कारण इस पर प्रसन्न रहे।

विक्रम सं० १८३२ के कार्तिक मास में यह असार संसार को

ड़कर दिव्य देह धारण कर सुरराज का अतिथि बना। इस ठाकुर
देहान्त जोधपुर में हुआ था। दाह कागा बाग में हुआ। इसका
ष्ठ पुत्र दलपतसिंह इसके जीवनकाल में ही स्वर्गवासी होगया
। राव रणमलजी से कनीराम तक वंश-वृक्ष।

सिंहजी आसोप
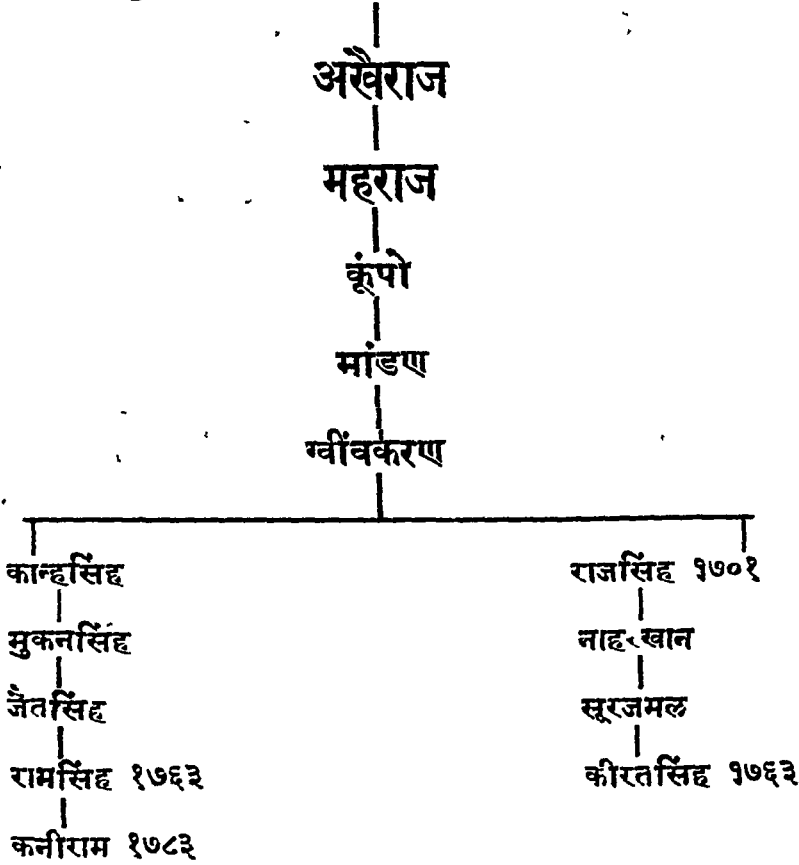
एकादश अध्याय ।

१२ । ९ कुंवर दलपत

महाराजा बख्तसिंह ने जोधपुर के राजसिंहासन पर आरूढ होकर समग्र कोठारों की निगरानी की । एक दिन खाबका महलों के नीचे के कोठारों की निगरानी कर रहे थे । उस समय कूंपावत दलपत ने निम्न लिखित सरदारों (१ चांपावत देवीसिंह २ ऊदावत केसरीसिंह ३ ऊदावत कल्याणसिंह ४ पेमसिंह ५ कूंपावत कनीराम) को, जो वहां विद्यमान थे, कहा कि " महाराजा ने राज्य तिलक का मुहूर्त अपने नाम से दिखवाया है और समस्त सरदारों के सामने यह प्रतिज्ञा की थी कि कुंवर विजयसिंह राज्याधिकारी होवेगा, उस का भंग होता है आप कहो तो कोठार की कुलफ बंद करदूं ।" तब सरदारों ने कहा कि "ठहरो, अभी तो बहुत समय है, ऐसे मौके तो आते ही रहेंगे ।" वहां पास ही सिंघवी फतेचंद खड़ा था, उसको चांपावत देवीसिंह और ऊदावत केसरीसिंह ने सूचित किया तब फतेचंद कोठार के अंदर जाकर महाराजा को बाहिर ले आया ।

महाराजा बख्तसिंह ने गढ़ में प्रवेश किया और दौलतखाने में सभा जुटी । समस्त सरदार, मुत्सद्दी और प्रतिष्ठित पौरजनों की नजर न्यौछावर हुई । उस समय महाराजा ने आवेश में आकर कहा कि "श्रीकृष्ण भगवान् ने पाण्डवों की सहायता की थी, उसकी अपेक्षा हमारी सहायता विशेष रूप से की है । पाण्डवों का मूलोच्छेद करके राज्य प्रदान किया था और हमारी सारी सभाको विद्यमान रखकर राज्य दिया है ।" उस समय खुशामदी समस्त सरदारों ने यही कहा कि आप यथार्थ फरमाते हैं । इस समय पृथ्वी में आपके समान दूसरा कौन राजा है ? सबोंने राजाकी इच्छानुसार वचन कहे । उस समय कूंपावत कुंवर दलपत कनीरामोत बोल उठा । उसने

गुप्त रीति से विद्यमान सरदारों को कहा कि "सरदारों! दरबार फरमाते हैं उस पर ध्यान दो, महाराज के इस कथन से यह पाया जाता है कि राज्य के अधिकारी खुद ही हुए हैं। कुंवर विजयसिंह के वास्ते जो शर्त हुई थी, वह इस समय नहीं रही है। आप लोगों ने महाराजा से कहा था कि राज्य का अधिकारी कुंवर विजयसिंह होगा और वह अभयसिंह का पुत्र कहलावेगा और महाराजा ने उस शर्त को स्वीकृत किया था। वह आप लोगों का वचन विफल होता है, उस पर ध्यान देवें।" यह सुनकर ऊदावत केसरीसिंह बखतासिंहोत ने कहा कि "यह रीति तो सदा से चली आती है। हम लोग राजा लोगों की समानता नहीं कर सकते। हम सेवक हैं, ये स्वामी हैं। सेवक और स्वामी की बराबरी नहीं हो सकती। मालिक विचारे वही सही। हम क्या कर सकते हैं? इन्होंने अपने बल पराक्रम से जोधपुर लिया है। इस समय आपन को कुछ कहकर जतलाना नीति विरुद्ध है। महाराजा सब जानते हैं। इस समय जो इनके ध्यान में आवेगा वही करेंगे।" इन दोनों को कानाफूसी करते देखकर पोहकरण ठाकुर देवीसिंह ने संकेत किया कि "यह समय इस प्रकार की चर्चा करने का नहीं है, इनके प्रताप की ओर दृष्टि दीजिये।" यह वार्ता प्रकट होगई तब महाराजा ने ठाकुर कनीराम से कहा कि तुम्हारा पुत्र हमारे राज्य में रह नहीं सकता। कुंवर को तो निकाल दो और तुम बैठे रहो। तब कनीराम ने अर्ज किया कि मेरा पुत्र कुपुत्र है, अवगुणों का भंडार है, परंतु मैं इसे छोड़ दूं तो दुनिया में मेरी कितनी अपकीर्ति होगी। इस लिये मैं एक बार तो इसे लेकर बीकानेर चला जाऊंगा, वहां इसका ढंग लगाकर वापिस चरणों में उपस्थित होजाऊंगा।

तदनन्तर ठाकुर कनीराम अपने पुत्र दलपत के साथ बीकानेर चला गया। और महाराजा विजयसिंह के बुलाने पर कनीराम तो

जोधपुर आगया और दलपत बीकानेर से सीधा महाराजा रामसिंह के पास मंदसोर चला गया।

महाराजा रामसिंह मरहठों की मदद लेकर मंदसोर से मारवाड़ में आये। उनके साथ आपो पटेल और उसका पुत्र दन्तू था। इन्होंने मारवाड़ में आकर नागौर के निकट ताउसर गांव के पास डेरा किया और जोधपुर की तरफ आपा का बेटा जनकू, पुरोहित जगू, व्यास दोलो, सीधो, रूपनगर का राजा सरदारसिंह, कूंपावत दलपत कनीरामोत और करमसोत जोरावरसिंह उदयसिंहोत, और इनके सिवाय और भी बहुत से सुभटों को लेकर आए। जोधपुर शहर से उत्तर की तरफ बालसमंद तालाब पर डेरा किया। वि० सं० १८११ की कार्तिक सुदि १५ को शहर के दरवाजे बंद किये गये। वि० सं० १८१२ की कार्तिक सुदि ५ तक तेरह महीने शत्रु शहर को घेरे रहे[1]। समेर वैद्य के बाग में रूपनगर के राजा सरदारसिंह का और चांदपोल के बाहिर जहां भगत का कूआ और देवालय था, वहां कूंपावत दलपत का मोरचा था। सदा लड़ाई होती रहती। इस तरह लड़ते २ तेरह महीने व्यतीत होगये। घेरा १३ महीना रहा जिससे तंग आकर शहर के बहुत से लोग बाहिर चले गये। इस वर्ष में वृष्टि न होने से महादुर्भिक्ष हुआ। अन्न और घास की महँगी इतनी बढ़ी कि जनकू आदि मरहटों को जोधपुर का घेरा उठाकर गोडवाड़ की तरफ जाना पड़ा। जनकू आदि गूंदोच में पहुँचे। वहां भी घोर युद्ध हुआ जिस में दलपत शामिल था। एक दिन कूंपावत दलपत गांव धणेड़ी के महादेव के दर्शन करने को गया था। वहीं पेट में दर्द हुआ और तांण आई, उसीसे दलपत का देहान्त होगया।

दलपत गद्दी का स्वामिधर्मी था, इसलिये महाराजा अभयसिंह

---

(१) उक्त वर्ष में ज्येष्ठ मास दो थे।

के पुत्र रामसिंह के पक्ष में रहा। महाराजा रामसिंह को महाराजा अभयसिंह ने अपना पट्टाधिकारी नियत करके चांपावत देवीसिंह, पंचायण व कूंपावत दलपत आदि को भलामन दे दी थी कि यह चलचित्त है, इसकी रक्षा तुम करना। इसी कारण से दलपत महाराजा रामसिंह के पक्ष में रहा।

कुंवर दलपतसिंह के विषय में सांदू अर्जुन ने यह गीत कहा था:—

गीत

महि ऐला कूंप करण घर मोटो, सक दोय राह सराहै।
जग कोड़ीक दलो नीपजियो, मुरधर सामँद माँहे ॥ १ ॥
पिंड सोभा जळहळतो पौरस, सह रजवट हरखांणी।
वण आसोप कनकगढ बांणक, कण मांणक कान्हांणी ॥२॥
इम कव पात जूसरी आखे, किंमत कोड़ां मयंक कहाय।
दलपत रतन अमोलक दीठो, मुरधर खांण अमोलक मांय ॥३॥

द्वादश अध्याय।

१३ । १० महेशदास

वि० सं० १८३२ में ठाकुर कनीराम के स्वर्गवास करने पर उसका उत्तराधिकारी महेशदास (बड़े भाई दलपतसिंह के पिता की विद्यमानता में स्वर्गवासी होजाने से) हुआ। यह बड़ा वीर पुरुष था।

वि० सं० १८३७ में महाराजा विजयसिंह ने ऊमरकोट पर सेना भेजी। उसमें महेशदास सेनापतियों की गणना में था। टालपुरा

बिजड़ विराऊ नामक ग्राम में दुर्ग बनाकर रहता था और मारवाड़ राज्य के गांवों में लूट पाट करता था। जिससे महाराजा की प्रजा तंग होगई थी। प्रजापालक महाराजा ने उसे दण्ड देने के लिये अपनी सेना भेजी। उस सेना में कूंपावत महेशदास और चांपावत सवाईसिंह अग्रणी थे। उन्होंने जाकर पिराऊ की गढ़ी को घेर लिया और बिजड़ को कहलाया कि तुम गढ़ी छोड़कर अपने वतन को चले जाओ या युद्ध के लिये तैयार हो जाओ।

बिजड़ बड़ा वीर पुरुष था। जिसने सिंध के बादशाह से खुदाबाद और हैदराबाद छीन लिए थे। और जिसके भय के मारे सिंध का मींया अपने बादशाह के शाहजादे के साथ सिंध से निकल कर फलोधी नगर, और वहां से जोधपुर आया। वह (बिजड़) डरनेवाला कब था? तुरंत युद्ध के लिये तैयार होगया। इधर से महाराजा की सेना ने उस पर आक्रमण किया। भाटकी नामक ग्राम में बड़ा विकट संग्राम हुआ। इस युद्ध में चांपावत सवाईसिंह पोहकरण ठाकुर और कूंपावत महेशदास बड़ी बहादुरी से लड़े।

महेशदास ने कई शत्रुओं को मार गिराया, उस विषय का यह गीत है:—

❀ गीत ❀

कठठ थाट चडिया कडे घाट वण करारो,
वेध मच धरारो ऊठ वागां।
मेस भड़ सिरारो भीजती मोसरां,
खानसूं वाजियो वधे खागां ॥ १ ॥
सिंधवो वाज धुव गाज तोपां सिरे,
समेला ठाकुरां मोहर सारां।

चापड़ै गनीमां तणा दळ चूरिया,
धणी आसोप रे फूलधारां ॥ २ ॥
स्याल रथ ठांभियो भांण जोवे खड़ो,
वांह भुज पांण तेगां बड़ाळी ।
दळावत किया जुड़ होळका तणे दिन,
थाळ दिखणाद रा मूंग थाळी ॥ ३ ॥
लोहड़ां पांण नीसांण माडे लिया,
प्रवाड़ो कान्ह हर भलो पायो ।
जीवज्यो घणा दिन चढंती जवानी,
आसमानी फतै खाट आयो ॥ ४ ॥

परन्तु टालपुरों को दुर्ग का आश्रय मिल जाने और महाराजा की सेना मैदान में आजाने से महाराजा की सेना को पीछे हटना पड़ा। तत्पश्चात् सब के सब चले आये। कूंपावत महेशदास व्यौपारी लोगों की रक्षा करता हुआ उनको अपने साथ लेकर जोधपुर आया। उस का विचार यह था कि वह महाराजा को प्रणाम करके आसोप जावे परन्तु अवसर न मिलने से वह सीधा आसोप चला गया।

महेशदास बड़ा मानी पुरुष था। महाराजा विजयसिंह की उपस्त्री (पासवान) महाराजा की पूर्ण प्रीति-पात्र होने से सर्व मान्य होगई थी। सब सरदार उसे मुजरा करते थे, परन्तु इस मानी पुरुष ने अपना गौरव रखते हुए पासवान को मुजरा नहीं किया।

बीकानेर के महाराजा गजसिंह और उनके पुत्र राजसिंह के परस्पर मनोमालिन्य होजाने से महाराज-कुमार राजसिंह जोधपुर चले आये। महाराजा विजयसिंह ने उनको आश्रय देकर बड़े मान

के साथ अपने पास रक्खा। वे ६ वर्ष पर्यन्त जोधपुर में रहे। वि० सं० १८३८ में महाराजा विजयसिंह ने पिता पुत्र का द्वेष मिटाकर राजसिंह को बीकानेर भेजा। उस समय निम्न लिखित सरदारों के वचन दिवाये गये कि अब महाराजा गजसिंह की ओर से आप को किसी प्रकार का खतरा न होगा।

१ कूंपावत महेशदास आसोप

१ चांपावत गिरधरदास

महाराज-कुमार राजसिंह को इन सरदारों का पूरा भरोसा था। वास्तव में ये सरदार ऐसे ही सच्चे दिल के थे। इन पर विश्वास करके राजसिंह बीकानेर गये। इन सरदारों का प्रभाव दूसरों पर इतना पड़ता था कि बीकानेर महाराजा गजसिंह भी इन सरदारों का वचन होने से शान्त होगये।

वि० सं० १८४४ में मरहटों ने जयपुर राज्य में जाकर देश विप्लव करने का विचार किया और ढूंढाड़ की तरफ प्रयाण भी कर दिया। तब जयपुर महाराजा प्रतापसिंह ने जोधपुर महाराजा विजयसिंह को सहायतार्थ लिखा कि "मरहटों का इस समय महान् उपद्रव है। यदि ये आगे बढ़ने से रोक दिये जायं तो देश की रक्षा हो सकती है। आज ये मेरे राज्य में घुस गये तो कल आपके राज्य में भी घुस आवेंगे। इसलिये आपसे प्रार्थना है कि आप स्वयं या अपनी विश्वास-पात्र सेना को भेज कर सहायता करें।" महाराजा ने जयपुर महाराजा का पत्र पाकर विचार किया कि बात तो सत्य है। आज उन पर तो कल हम पर। महाराजा ने सहायता करना उचित समझ कर अपनी सेना भेजी। जिसमें कूंपावत महेशदास सेनापतियों में से था। उधर जयपुर महाराजा प्रतापसिंह ने हलदिया दौलतराम की अध्यक्षता में अपनी सेना भेजी। ये दोनों सेनाएं तुंगा नामक स्थान में संमिलित हुई। उधर से सिंधिया माधोराव मार्ग के ग्रामों

को लूटता हुआ तुंगा ग्राम के पास पहुँचा। अब तो दोनों ओर की अनियां तुलीं और शस्त्र चलने लगे और वीर भट आगे बढ़ बढ़ कर पिलने लगे। उस समय जयपुर राज्य की कछुवाहों की सेना और राठौड़ सेना अपने स्थान पर डटी रहीं। मरहटों ने आक्रमण किया उस समय राठोड़ों ने ऐसी तलवार बजाई कि मरहटों के पैर उखड़ गये। फरासीसी सेनाध्यक्ष डिवोयन को अपने प्राण बचाने कठिन होपड़े, और माधोजी सिंधिया को रणांगण से विमुख हो भागना पड़ा। राठोड़ों की विजय हुई। इस युद्ध में कूंपावत महेशदास के वल पराक्रम और युद्ध-कुशलता को देखकर अपने और पराये सब चकित होगये।

इसके पश्चात् तुंबरावटी के पाटन नामक नगर में फिर युद्ध हुआ। जिसमें जैपुरवालों ने अपने देश की रक्षा के निमित्त मरहटों से गुप्त संधि कर ली कि आप हमारे देश में उपद्रव न करें तो हम युद्ध के समय अलग हो जायंगे। मरहटों ने उस बात को स्वीकृत कर लिया और कछुवाहों ने वैसा ही कृतघ्नता और विश्वास-घातकता का कार्य किया। जैपुर की सेना अलग हो एक ओर जा खड़ी रही। राठोड़ सेना के वीर बड़ी वहादुरी से लड़े। परन्तु उस महती मर-हटों की सेना के आगे उसे रणांगण छोड़ना पड़ा।

माधोजी की तुंगा के युद्ध में जो पराजय हुई उससे वह अति ल-ज्जित हुआ और उसका बदला लेने का निश्चय करके अपनी सेना को सुरक्षित किया। तीन चार वर्ष के अर्से में सेना सुरक्षित होगई तव उसने फिर मारवाड़ की ओर प्रयाण किया। वि० सं० १८४७ में माधोजी सिंधिया का मारवाड़ पर यह आक्रमण हुआ। उस समय महाराजा विजयसिंह ने सभा करके यह कहा कि आप ने पहले जो मरहटों के साथ संधि की है तदनुसार फिर कर लेनी चाहिये। अज-मेर देकर पीछा छुड़ाना चाहिये। परन्तु सरदारों ने इस बात को स्वीकृत नहीं किया। उन्होंने अर्ज किया कि तुंगा के युद्ध में हम

उन्हें देख चुके हैं, आप किसी प्रकार का विचार न लावें, युद्ध की तैयारी करें।

उस समय महाराजा विजयसिंह ने महेशदास को अभिमुख करके ये दोहे कहे:—

दोहा

दिखणी आयो सज दलां, प्रथी भरावण पेस।
कूंपा तो बिण कुण करै, म्हांरी मदत महेस ॥ १ ॥
सुख महलां नह सोवणो, भार न झलै सेस।
तो ऊभां दलपत तणा, मुरधर जाय महेस ॥२॥

इसके प्रत्युत्तर में महेशदास ने ये दोहे कहे:—

दोहा

हम हत्थी ठल्लैं भुजन, घल्लैं अद्रिन बत्थ।
खंडैं दल दिक्खण खगन, मंडैं रिण बिन मत्थ ॥१॥
विदा हुवौ विजपालसूं, मांगी सीख महेस।
ऊभां पगां न आण दूं, दिखणी मुरधर देस ॥ २ ॥
दिखणी डोलो भेजियो, आयो मुरधर देस।
दूजां ऊतर दाखियौ, बणियो बींद महेस ॥३॥

गीत

करी सीख विजपाल सूं मेस मुजरो करे,
महपती राखजो कृपा म्हांसूं।

मीलणो लूणरो करूं माथा सटे,
तदी उरण होऊँ भूप तोसूं ॥ १ ॥
दलावत आंण आसोप ड़ेरा दिया,
देवसूं प्रसन्न किय जात दीधी ।
अमरनामा करण वरण घड़ कंवारी,
कंवर नैं भार भल सीख कीधी ॥२॥
किया घोड़ा भड़ां थाट आयो कमंध,
धरा खत्रवाट रा विरद धारे ।
मूझ ऊभां पगां लिये कुण मेड़तो,
मरूं काय मरहटां लेहूँ मारे ॥ ३ ॥
फौजरे ऊपरै फूटती फजर रा,
गूजर रा गनीमां दिया गोला ।
लड़ै रण कान्हहर तोपखानो लियो,
इंढरा ठाकुरां लिया ओला ॥ ४ ॥
स्यांमध्रम जांण जुध पांण अति सांचियो,
भांण रथ खांचियो देख भालो ।
बिया भड़ जोड़रा समर तज बाहुड़े,
आहुड़े धणी आसोप वालो ॥ ५ ॥
भाल छत त्रपत विजपाल ज्यांरा भुजां,
सिंघणी भोलाई भार सूंपो ।
होड करता जिके घरां दिस हालिया,
कोड कर भिड़े भाराथ कूंपो ॥ ६ ॥

सळकिया कळह मझ झाट देखे सको,
लोहड़ां न कीधौं लोह मिळतौ ।
एक माहेस जिसा हुता ऊमरा,
भूप रो कदेह नह देह भिळतो ॥७॥
चढे माधां दळां उराड़े चाड़तो,
झाड़तो खगां बिच पंथ झड़ियो ।
नरां भाजण तणै पंथ पड़ियो नहीं,
पलटतां मेड़ते खेत पड़ियो ॥ ८ ॥
हालियो सती ले बांधिया छेहड़ा,
गज घड़ां विधूंसण तणी गळियो ।
देस में कियो परवेस जद दिखणियां,
मेस परमेस री जोत मिळियो ॥ ९ ॥

महाराजा ने अपने सामन्तों का इस प्रकार उत्साह और साहस देख कर उनकी प्रशंसा करके सबको सिरोपाव दिये । कूंपावत महेशदास को जो सिरोपाव दिया गया उसमें स्वतः ही केसर में रंगा हुआ केसरिया रंग का दुपट्टा आगया था । ठाकुर महेशदास दरवार का दिया हुआ दुपट्टा धारण करके किले से हवेली आ रहा था। शहर में मरहटों के आने और दरबार की ओर से सामन्तों को मुकावले में भेजने की वार्ता मुखोमुख होरही थी। ठाकुर महेशदास के शरीर पर केसरिया दुपट्टा देख कर शहर के लोगों के मन में ऐसा भाव उत्पन्न हुआ कि ठाकुर ने मरणोन्मुख होने का चिन्ह यह केसरिया दुपट्टा धारण किया है और मुख से कहने लगे कि "आसोप ठाकुर ने केसरिया किया है ।" जनता के मुख से ऐसा वचन सुनकर ठाकुर ने अपने मन में निश्चय कर लिया यातो विजय होनी ही है, नहीं

तो जीता आना भला नहीं। इसी विचार से ठाकुर ने अपने राजपूतों से कहा कि "जिनको मरना है वे तो हमारे साथ चलैं और जिनको घर प्यारे हैं और स्त्री पुत्रादिकों का स्नेह व प्रेम है वे अपने घर को चले जायं अथवा यहीं रहैं। हमारे साथ तो वेही चलैं जिन्होंने सिर को हथेली में रख लिया है। उस समय ठाकुर के साथी राजपूत वीरों ने कहा कि हमें ऐसा अवसर फिर कब मिलेगा? कि हम स्वामी के लिये काम आवें। यदि मरगये तो स्वर्ग में जायंगे और जीते रहे तो मालिक की मिहरबानी से अच्छे भोग भोगेंगे। ठाकुर उनके वचन सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ और अपने सदृश दृढप्रतिज्ञ वीर पुरुषों को अपने साथ लेकर मेड़ते को रवाना हुआ।

इधर महाराजा की आज्ञा से राठोड़ मेड़ते में एकत्र होने लगे और उधर माधोजी सेंधिया खुद तो अजमेर में ठहर गया और अपने सेनानायक लकवा, जीवाजी दादा, सदाशिव, भाऊ व फरासीसी ड़िबोइन को, जिसके साथ अस्सी ८० तोपें और शिक्षित गोलंदाज थे, मेड़ते की तरफ भेजा।

महाराजा विजयसिंहजी की सेना का मुकाम गांव डांगावास में था जो मेड़ता नगर से एक कोस के अन्तर पर है। और मरहटों का डेरा गांव नेतड़ियां में था। वहां से घुड़सवार सेना तो आगे बढ़ कर मेड़ते के समीप पहुँच गई। परन्तु डिबोइन की तोपें लूनी नदी के दलदल में फंस गई। उस समय राठौड़ वीरों ने आगे बढ़ कर मरहटों की सेना पर आक्रमण किया। उधर से मरहटों की सेना मुकाबले में आई। परस्पर घोर संग्राम हुआ जिसमें राठोड़ों की विजय हुई और राठौड़ भार ढोने वाले पशुओं को ले आये। उक्त विजय से उत्साहित होकर राठोड़ों के प्रधान सेनानायक सिंघवी भीमराज और भंडारी गंगाराम से कहा कि मरहटों की मारकी फौज डियोइन की तोपें लूनी नदी के कीचड़ में फंसी हुई हैं। इस समय मरहटों को मारने का अच्छा मौका है, शीघ्र युद्ध की आज्ञा दें। हम

अभी उन्हें मार हटावेंगे। परन्तु भीमराज ने लड़ने की आज्ञा नहीं दी। और सिंघवी खूबचंद का, जो उस समय जोधपुर का मुख्य मुसाहिब था, पत्र दिखला कर कहा कि महाराजा विजयसिंहजी जोधपुर में विराजते हैं और मुख्य मुसाहिब सिंघवी खूबचंद है। वह लिखता है कि "जब तक इस्माइलबेग न पहुँच जाय, तब तक किसी प्रकार शत्रुओं पर आक्रमण न करना।" इस लिये आपको उसका इन्तजार करना चाहिये। सिंघवी भीमराज और खूबचंद के बनती नहीं थी, इस लिये इसने रणोत्साही सरदारों को उसका बहाना करके रोक दिया। यदि ईर्ष्यालु सिंघवी उन सरदारों को न रोकता तो महाराज की विजय हो चुकी थी, क्योंकि उस समय डिबोइन की तोपें कीचड़ में फंसी हुई थीं। जिसके बल से मरहटे राठोड़ों पर चढ़ आये थे। शोक है कि भीमराज ने उन उत्साही वीरों को रोक कर मारवाड़ देश का विध्वंस करा दिया।

राठौड़ वीर भीमराज के रोकने से हतोत्साह होगये थे और दूसरे दिन डिबोइन तोपों का लंगर लिये वहां आ पहुँचा। डिबो-इन ने तोपें दागनी शुरू कीं। तोपों की मार के आगे पैदल सेना के पैर उखड़ गये और महाराजा की सेना भागने लगी। उस समय बीकानेर के राजा गजसिंह भी विजय होती न देख कर अपने देश की रक्षा करना उचित समझकर रणांगण से निकल गये। सिंघी भीमराज और भंडारी गंगाराम भी रणांगण छोड़ कर चले गये।

आसोप और आउवा के ठाकुर कुछ दूरी पर थे। उन्होंने सुना कि महाराजा की सेना विचलित होगई है। सेनानायक भीमराज और गंगाराम रणांगण से विमुख होगये हैं। उस समय आसोप ठाकुर महेशदास से आउवा ठाकुर ने कहा कि आप तो अफीम का सेवन करके सो रहे हैं और महाराजा की सेना तितर बितर हो गई है। बीकानेर महाराजा भी चले गये हैं। यह सुनते ही तुरंत निद्रा

से उठे हुए उस वीर ने कहा कि "भय क्या है? चलो घोड़ों पर सवार हूजिये।"

इन दोनों वीरों को अपने सुभटों सहित सजे हुए देख कर अन्य सरदार भी इनके साथ होलिये। सब मिल कर चार हजार सवार तोपों के सामने चले और घोड़ों को इतने वेग से चलाया कि एक दम तोपों पर जा पड़े।

दोहा

गयण अछायो उड गिरद, सीस भ्रमायो सेस।
जंग अधायो जब्र ज्यूं, वो आयो माहेस॥

कई सुभट तोपों के गोलों से मारे भी गये, इन्होंने तोपों को जा ही लिया। इनके पहुँचते ही मरहटों के छक्के छूट गये और विकल होकर भागने लगे।

आसोप ठाकुर महेशदास वहां पहुँचा, जहां तोपों का प्रबंधकर्ता डिवोइन खड़ा था। इस कराल कालमूर्ति महेशदास को देख कर डिवोइन होश भूल गया और अपने प्राण बचाने के लिये तोप के चर्खे के नीचे घुस गया। महेशदास ने उसको मारने के लिये तलवार का प्रहार किया वह डिवोइन चर्खे के नीचे घुस जाने से डिवोइन पर तो न लगा, तोप के मुंह पर लगा। वह प्रहार ऐसा कारगीर हुआ कि तोप का मुंह कट गया और वह रणांगण में उस समय शत्रुओं को काल रूप दिखाई देने लगा। शत्रुओं का संहार करता हुआ वह कूंपावत अनेक शत्रुओं को मारकर अपने वीर साथियों के साथ रणशायी होकर स्वर्ग को सिधारा। यह घटना वि० सं० १८४७ की भादों सुदि २ को हुई थी।

टाड साहिब भी लिखते हैं कि "आसोप के सामन्त बहुत अफीम

ाते थे। जिस समय यह समाचार वहां पहुँचा, उस समय वह
अफीम के प्रताप से गाढी नींद में शयन कर रहे थे। आउवा के
सामन्त ने बड़ी कठिनाई से उनको जगाया और शोक के साथ कहा
कि भाई शिविर के सब लोग भाग गये, केवल हम और तुम अकेले
रह गये हैं।" निद्रा से उठे हुए वीर ने अभिमान के साथ उत्तर दिया
कि "भय क्या है? चलो घोड़े पर सवार होकर चलें।" उन वीरों
ने रणभेरी बजाई और अपनी सेना लेकर बाहर निकले। बाईस
सामन्तों ने एक साथ अफीम मिला हुआ जल पीलिया। डिवोइन
के आक्रमण से केवल प्यादे और गोलन्दाज ही कायर पुरुषों की
समान युद्धस्थल से भाग गये थे। किन्तु उस समय तक अन्यान्य
सामंत मण्डली युद्धस्थल में ही थी। आसोप और आउवा के सा-
मन्तों की सेना को रणसज्जित देखकर वह भी अपनी २ सेना
सजाने लगे।

सब से पहले साहसी-श्रेष्ठ मेड़तिया दल के नेता रीयां के सामन्त
और आलणियास, ईड़वा, चाणोद तथा गोविन्दगढ़ के सामन्त एक-
त्रित हुए। सब चार सहस्र साहसी राठौड़ एकत्रित हुए। तब रीयां
के सामन्त ने सब को पुकार कर कहा कि "भ्रातृगण! हम कहां
भागें? इस स्थान में ऐसा कोई राठौड़ है जो लज्जा से अधिक अपना
कोई प्रिय पात्र इस संसार में रखता हो? यदि कोई हम में स्त्री
पुत्र को अधिक समझता हो तो वह अभी यहां से चला जाय।"
इस बात को सुनकर सब ही मौन होगये। थोड़ी देर में सब राठोड़ों
ने अपने माथे पर हाथ रखा। तब आउवा के सामन्त ने उत्साहित
हृदय से कहा "युद्ध स्थल में चलो। जन्म भूमि और स्वजाति के
निमित्त प्राण देने का संकल्प करके चार सहस्र राठौड़ वीर सवार
हुए और बहुत शीघ्रता से युद्ध में पहुँच गये।

महाराष्ट्रियों के प्रधान सेनापति डिवोइन अस्सी तोपों को चतु-
राई के साथ स्थापित करके प्रतीक्षा कर रहा था। प्राणों की ममता

छोड़ कर उन चार सहस्र दृढ प्रतिज्ञ राठौड़ अश्वारोहियों को नंगी तलवार हाथ में लिये हुए आते देख कर डिबोइन की तोपें जलते हुए गोले उगलने लगीं। किन्तु थोड़ी देर में ही "पाटन की बात मत समझना" यह कह कर उन जलते हुए तोपों के गोलों को अग्राह्य करके वह चार सहस्र साहसी राठौड़ वीर तोपों के निकट पहुंच गये। सामने के प्रत्येक पदार्थ को नष्ट भ्रष्ट करके तोपों की रक्षा करने वाले महाराष्ट्रियों को छिन्न भिन्न कर दिया और आकाश-भेदी शब्द से शत्रु व्यूह को भेद कर शत्रुओं का नाश करने लगे। उस भयंकर आक्रमण से भयभीत हुए महाराष्ट्री लोग पहले तोपें छोड़ कर भाग गये थे। हा शोक! यदि उस समय वहां पहुंच कर राठौड़ पैदल सेना का एक दल तोपों पर अधिकार कर लेता तो उस प्रथम आक्रमण में ही वह चार सहस्र राठौड़ वीर महाराष्ट्रियों को परास्त कर देते। तुंगा के युद्ध की अपेक्षा मेड़ता का यह समर राठोड़ों के वीरत्व यश गौरव को प्रबल रूप से बढ़ा देता किन्तु दुर्भाग्य का विषय है कि राठौड़ पदाति सैनिक सबसे पहिले ही भाग गये थे।

राठौड़ वीर महाराष्ट्रियों के गोलन्दाजों को यद्यपि छिन्न भिन्न करके लौट आये थे, किन्तु चतुर डिबोइन उनके लौटते ही संपूर्ण तोपों को फिर से श्रेणी-बद्ध करके राठोड़ों के आने की प्रतीक्षा करने लगा। रणोन्मत्त राजपूत अश्वारोही एक श्रेणी के महाराष्ट्रियों को मार कर दूसरी ओर जा रहे थे, इतने में डिबोइन के गोलन्दाज बदला लेने की इच्छा से उत्तेजित होकर बड़े २ गोलों की वर्षा करने लगे। तथा उसी समय अन्य सेनादल ने आकर उनको चारों ओर से घेर लिया। परम साहसी राठौड़ वीर अपनी वीरता दिखाके पीछे एक एक करके संपूर्ण वीर पृथ्वी पर शयन कर गये। ये सब वीर चौबीस घंटे तक अचेतन अवस्था में पड़े रहे। रात्रि का समय था और युद्ध समाप्त होने के पीछे मूसलधार पानी बरस गया था जिससे घायल वीर विषम यँत्रणा भोग रहे थे। उस समय आउवा ठाकुर के एक

सेवक ने अपने स्वामी को खोज कर थोड़ी अफीम खिलाई जिससे चैतन्यता होने पर वह उसे रणांगण से उठा लेगया।

आसोप ठाकुर कूंपावत महेशदास रणांगण में मरा पड़ा था। उसे एक मेड़ते के सेवग (शाकद्विपी ब्राह्मण) ने जाकर देखा। ठाकुर महेशदास युद्धार्थ गया उस समय मेड़ता के सेवगों को कह दिया था कि "हम सब इस लड़ाई में मरने को आये हैं, हम सब मारे जायंगे। मैं अपने शव की पहचान के लिये अपनी बाहु के पट्टी बांध लेता हूँ। जब युद्ध समाप्त होजाय और रणक्षेत्र सम्हाला जाय उस समय इस गेरूँआ पट्टी को देखकर मेरे शव का विधि पूर्वक दाह करना। मेरे शव की पहचान के लिये यह चिन्ह धारण करता हूँ।" यह कह कर ठाकुर ने अपनी भुजा के गेरूँआ रंग की पट्टी बांध ली और सेवगों को सोने रूपे के रत्न जटित आभूषण दे दिये। सेवग उस गेरूँआ रंग की पट्टी के चिन्ह से ठाकुर महेशदास को पहचान कर शव को डांगावास गांव के तालाब पर ले गये और ठाकुर के कथनानुसार विधि पूर्वक दाह क्रिया की। आसोप ठिकाने से रणांगण में प्रथम जानेवाले सेवग का भरण पोषण किया गया।"

इस वीर पुरुष के विषय में जो कविता उपलब्ध हुई है वह यह है :—

गीत का अंश

"मेड़ते भागलां साथे न भागो महेस"

दोहा

दूजां ज्यूं भागो नहीं, दाग न लागो देस।
वागां खागां वांकड़ो, मह बांको माहेस॥

गीत १.

(दौलताबाद के युद्ध का)

सिधां सांवतां सहेतो अखाड़े सोहियो,

राग सिन्धु बजै खाग रीठो ।
समझ भूपाळ आदेश करतां सहू,
दळां माहेस माहेस दीठौ ॥ १ ॥
ऊधड़ै जिरह कंथा सिधां आहुधां,
भेक भगवां करे रुदर भाती ।
जिसो कान्हाहरो सोहियो महाजुध,
जिसा जोधार वणिया जमाती ॥ २ ॥
खागरी भुगत ढाळां खपर खड़हड़े,
कळस चाढै कमंध वीर खेलो ।
मधूकर बडो सिध लोहड़ै मिळतै,
महासिध हुवौ दिखणाद मेळो ॥ ३ ॥
कमंध जोगेस आदेस सह जग करे,
दीध आसीस कर रीस दूणी ।
घाल आयौ तूंहीज बेरियां तणै घर,
धुकै घमसांण जीरांण धूणी ॥ ४ ॥
दलारो दौलताबाद ढाळो दियौ,
वाद बाजे दिखण नाद बागो ।
दीह सब रातरी भती दीठी दळां,
लागवा इसो गुर कान लागौ ॥ ५ ॥

गीत २.

(मेड़ने के युद्ध का)

वागौ निहाव अरावां गोळां रजी धूंए छायो वोम,

राड़ चाले लागो भांण ठांभियो रहेस ।
मामले खेड़ते खागां आभ लागो तांण मूंछां,
मेड़ते भागलां साथे न भागो महेस ॥ १ ॥

खैंगां सांमी मोरिया ओरिया माथे तोपखाना,
साजतां फिरंगी थारां आरना सारांन ।
फिरंगी मुसद्दी हक हरोलां जावतां फौजां,
आवगो दलारे वीर मचायो आरांण ॥ २ ॥

अड़ै भुजां आभसूं भुंआरां भिड़ै मूंछां अणी,
कदम्मां सेस धूजड़े धणी राज काम ।
सारवेत तारा लोप जुड़ी केतां छूवां साथ,
सतारा आसोपनाथ मचाता संग्राम ॥ ३ ॥

धरा सूर पड़ै की आहुड़ै झड़ै धाट धारां,
खलां पड़ै नारंगां सुरंगां रखै खेत ।
सार बाजै माहेसरा भागै के विरंगी समै,
सतारा अमीरां साझै फिरंगी समेत ॥ ४ ॥

रंभ बरां वरावै रिझावै कियां हास रिखी,
दूतां बीच गपां से जीवता रहा ओट ।
ऊभां कूंपे मेड़ते न थटे जेण किणी आघा,
कूंपे पाड़ां मेड़ने पलट्टै मालकोट ॥ ५ ॥

भागा खेत मेड़ते जीव धू दाग लागा भड़ां,
तिण कूंपा आभ लागा दीध मूंछां ताव ।

सांमभ्रमा सांमरी सरीत रीत चले सुरा,
रांमरी साजोत मांहे मिले मारू राव ॥ ६ ॥

३ गीत

दिखणी दल़ सबल़ उलटिया दोल़ा,
घट बटका करतो खग घाय ।
झाटां प्रसण दलावत झाड़ै,
ईसर खड़ौ अखाड़ै आय ॥ १ ॥
दैणो मरणो रीत जुगादु,
खत्रियां आदू विरद खरो ।
गुर सूरां हूंतां हर मांगै,
कमध सीस बगसीस करौ ॥ २ ॥
माल़ा बिचे म्हारा वप माथै,
धारा गंग सुमेर धरूं ।
कमल़ वरीस कहे हर कूंपा,
कमल़ माल़ सिणगार करूं ॥ ३ ॥
कहे महेस महेस सुणो कथ,
गात अडोल़ै फिरूं गल़ै ।
विच माल़ा रुंडमाल़ बणाऊं,
मसतक जो साबूत मिल़ै ॥ ४ ॥
भारत मांय अजेनी भोल़ा,
विल़कुल़ कमध कहै आ बात ।

साजो भ्रकुट न लाधै सूरां,
सूर भ्रकुट बटका व्है सात ॥ ५ ॥
चुण रिण खेत मेड़तै चौसर,
लाल नगां बिच पोय लियो ।
वर गिरजा सिणगार न बणियो,
कंठ गिरजा चन्द्रहार कियौ ॥ ६ ॥

४ गीत

सांदू उम्मेदासिंह सीहू निवासी कृत

घावां बाणांसां तिलकां धू साबळां गंगाजळां घोक,
बीलपत्रां कटारां अखत्तां गोळी बांण ।
सोर धूप झाळां दीपमाळां फळां गोळा सीस,
पूजे यूं सतारा दळां माहेस पीठांण ॥१॥
हरी हरा रहां चहूं तरफां असेस होत,
नमेस इसट्टां धार खत्रीवट्टां नेम ।
पड़े पावां सार भट्टां हजारां भ्रकुट्टां पेस ।
अरच्चे भूतेस नामी मारहट्टां एम ॥२॥
टणकारां गैघट्टां झालरी भणंकार टोपां,
धारा फूल चौसरां गळांरां जांगी धूंस ।
रुंड नचै मोती थाळ आरती उतारै रंभा,
रुद्र गोती गनीमां चरच्चे इसी रूंस ॥३॥
पिनाकी रीझियो कूंपौ सतावी विरोध पूजा,

वगस्से निरभै धाम काटै पाप बंध ।
केवांण भसम्मी कड़ाहूंत कीधा प्रलैकारां,
केलास लेगयो सारां पूजारां कमंध ॥४॥

५ गीत

संमत अढार साल सैंतालो,
कटकां कहर गनीमां कोप ।
धमचक धजर धरा सह धूजी,
आलोचै कूंपा आसोप ॥ १ ॥
हार जीत हूणी हर हाथे,
हात बात में कमी न होय ।
मरदां जो मरणो रिण मंडो,
करगां धके न आवे कोय ॥ २ ॥
मझ मुरधर रिण खेत मेड़तो,
सुभटां ओ लादो अवसांण ।
उजवालो कीरत आगलड़ी,
भाले थांभ तमासो भांण ॥ ३ ॥
मांझी दे हेला माहेसो,
सुण आया भीरी सिरदार ।
वरावरी हंदा दोहुं बाजू,
वागां ले विढिया उण वार ॥ ४ ॥

बरंग करे दिखणी दल़ बांटे,
घट घावां लौटै घण घाय ।
प्याला भर जोगण रत पीजै,
रंग दीजे राठोड़ां राय ॥ ५ ॥

ओनह धापै महेस आपायत,
आगे कुण झालै आपांण ।
वध घावां छकियोड़े वाही,
कूंपे तोप परा केवांण ॥ ६ ॥

रंग थारा हाथां दलपतरा,
घणा देख आभंचे घाय ।
साहब मदत मदत भ्रम सांमे,
तोप कटी खरबूजा ताय ॥ ७ ॥

राखे धजर देस रजपूती,
राखै कथ कायम दोहुं राह ।
राखै पाल़ण कथन कह्यारी,
नीठ धरा पड़ियो नरनाह ॥ ८ ॥

६ गीत

सांदू नंद बारहट कृत

पती नागराई फेण साचो गण आगराई पीधा,
साउ सीख दीधा पांव पागड़ां सकाज ।
माहेस साबलां भुजा डंडां लीधा खल़ां माथे,

वेढीगारे सीधा वीच कीधा बाजराज ॥ १ ॥
गैण ऊंची सवां भांण खंचायो थटेल ग्रीधां,
वका रू जटेल पाठ वंचायो बीरांण ।
ऊझटां ललट्टां कालो नचायो चावंडावालो,
पटेल बरूथां मारू मचायो पीठांण ॥ २ ॥
भलक्क सांगड़ा क मुराड़े धके भूतरासा,
अरिंदां छांघड़ा राह रूतरासा ऊप ।
अखाड़े ऊठिया चेला खांघड़ा ए धूतरासा,
रूठियां रांघड़ां जब्र दूतरासा रूप ॥ ३ ॥
जलावोल़ भले कोह वगी वीरां हाक जेतो,
कचां आकबा कंचता सचां कटां धार ।
छाजे करे ऊधरे किलकां भेरूं छाक लेतो,
जोगी फिरे डेरू डाक देतो जटाधार ॥ ४ ॥
खड़े आरहटां रोस अछरां वीवांण खाथा,
सारहटां झड़े माथा पवे ब्रजू सोह ।
तेग धारहटां नामी सुभटां हूचके तातो,
वांमी वंदा मारहटां मानो चकाबोह ॥ ५ ॥
मजो लेण भणंका बजाई वेण राव मुनि,
सायकां सणंका सूरां जगाई सारीस ।
तोल टंकां पराला साबात दगाई तोपां,
किना जांणे लंका लाय लगाई कपीस ॥ ६ ॥
वहे गोला लालचोल़ वोलवाल़ ज्वाल का सा,

रोळ मूंग थाळ का सा हबोळां हरीप ।
केवांण झमंका करे धरां दीप काळका सा,
दमंके दुधारा दीपमाळ का सा दीप ॥ ७ ॥
लंगरां रठ्ठां झाट नागेस नमाबा लागो,
रिमां थाट अराबां घमाबा लागो रेण ।
लोहां लुथबुथां कूंपो गनीमां रमाबा लागो,
भाराथां भ्रमाबा लागो गजां भीमसेण ॥ ८ ॥
पेला छै हरि की सी अलंगी जंगी होदां परा,
जावे झाप केहरी पटत्त की सी जोट ।
कठी रूक डंडां रोड़ लगावे गेहरी की सी,
चालागारो वतावे ते हरि की सी चोट ॥ ९ ॥
हुवै बावनेस वीर विखमी हकारवाड़ा,
धरा पारवाड़ा सरां साबळां सधोम ।
सिंधु राग रेड़ते आहुड़े के सिंघारवाड़ा,
भूटके मेड़ते मारवाड़ा वीर भोम ॥ १० ॥
हगामां संपेखे हंस बारंगां सोहता हूरां,
दोम हू दूरदां घड़ा ढोहता दवान् ।
विजाई खूटिया सीह सांकळां सोहता वागा,
जूटिया जटेल नागा नोहता जवान ॥ ११ ॥
काळी पत्र झाले पीक धरा थभ कुंभ काळी,
हकाले दवाळी बंद बराकां हणेस ।
चावां स्रोण लाली पेठ लेण धुज माती चाले,

गुलाली वणाव कीधां दकाले गुणेस ॥ १२ ॥
भातांण रांमरा बांण छोहरां अणावे त्रूहां,
खेड़ैच बेढेच अंगां ऊफणावै खीज ।
अघाया लुंणावे गैण झुंड वीरभद्र वाळा,
रुंडमाळा वणावे अदूजां रीज रीज ॥ १३ ॥
ऐळा आभ छावै उडै बघूळा गिरंदां वाळा,
दाव घाव कराळा करद्दां जोम दीठ ।
आयुधां छाकिया झड़ै पलक्कां त्रंबाला आवै,
रवताळा पैला झोक खावै आकारीठ ॥ १४ ॥
पंगी उवारकां चंगी चोढाड़ै जोधांण पांणी,
सारकां पोढाड़ै लड्यो पोढियो समीच ।
इळा सांमध्रमो धूप धारकां सनांन ऊगौ,
बीजौ कांन पूगो लोक ब्रंदारकां वीच ॥१५॥

७ गीत

सको तेड़ियां भूपती बिजै भाई बेटां बूझ सला,
आया सुणो दिखणी लुटीजे लोक आथ ।
कईक कायरां कह्यो आटे लूण जोग कटे,
न लागे थेगली आभ फाटे प्रथीनाथ ॥ १ ॥
कहे मेस भांण वंसी सारां रे तुले सो कीजे,
हिये हार मान नै न दीजे कानां हात ।
ललोपती रखायां न पावे प्रीत दामां लोभी,

बिना साव चखायां न लागे ढाळे बात ॥ २ ॥
भड़ां तरवारियां बाजियां होसी सारी भली,
हाम हिये हारियां कहासी गळां हार ।
जो रूधे बधारियां री आद सूं कहीजे जमी,
बेरियां मारियां मुवां रहसी मारवाड़ ॥ ३ ॥
स्यांम मोद लाय मनां करारा बचनां सुणे,
जोम तेज पुंज में बरारा साच जांण ।
भोम लाज नौकोटी घरारां थंभ थारे भुजां,
बार बार आखे कानहरा रा बखांण ॥ ४ ॥
आज बीड़ो झलतां मिजाज़ गाळी भड़ां आंन,
आदू रिड़मालां तणी संभाळी ऐसोत ।
पीढियां बडाळी रीत स्यांमध्रमी प्रीत पाळी,
दादा बापवाळी बातां उजाळी देसोत ॥ ५ ॥
सीख करे स्याम सूं हवेली आय महा सूर,
पड़े ठोर अम्बागळां पिलाणां पिलांण ।
कहायो भीमेण नेत खड़ी फौजां त्यार कीजे,
भेळा आय होवांला पीपाड़ ऊगे भांण ॥ ६ ॥
छछोहा हांकिया बाज मेड़ते पागड़ो छंडे,
करां सूरबीरां नैं गाळवां दीधा खास ।
इते फोज घड़ाबंद तोपां फेर कीधा आय,
बेव सूं ग़नीमां माथे हाकिया अहास ॥ ७ ॥
आय सूरां दिखणी घेरियो घोड़ां लेण आगे,

मोरचा जमाया ठांम ठांम तोपां मंड ।
राड़ रा उमाया एम बीरारसां छाया रोस,
थाया उभे ओड़ने अरोड़ां भड़ां थंड ॥ ८ ॥
संदेसो कहाड़े मेस रूक जोर करे सळा,
पळां भक देवा ओ पधारे भोमपाळ ।
बीरां रिड़मालां तणी राड़ हेला जेण बोल,
ताजी भलां बेगी बाग ऊठी निराताळ ॥ ६ ॥
तीन घड़ी रात रेतां हजारां दाहुड़े तोपां,
बाड़ भड़ी हत्तनाळां हजारां बेहंत ।
नरां सूरबीरां री हजारां नड़ी नड़ी नचे,
पड़ी भगी कायरां हजारां लीया पंथ ॥ १० ॥
फेट दे साकुरां तणी मोड़तो मारकी फौजां,
खगाटां गनीमां झाटां जोड़तो खेसोत ।
गैघड़ा तोड़तो थाटां रातंगां धपातो गैण,
दलाणी आवियो सिन्धु रोड़तो देसोत ॥ ११ ॥
अंगां क्रोध भटका बटका बटका अरी,
केकांण रटका करे झटकां केवांण ।
गरटां थटका ग्रीध ग्रीधणियां गटका गिळे,
जगनाथ अटका फटका सीस जांण ॥ १२ ॥
जगी नींद बज्र देख घुमंडे तेनेता जंगां,
हूरां रंभा चौसरां गूंथवा लागी हार ।
खुले पटी चखां आयो अकाळी ऊनंगी खागां,
बीरां हाक मार मार बागी जेण वार ॥ १३ ॥

धका धूम धारका बकार सांमा आया धीठ,
गनीमां सारका कोट चापड़े गहेस ।
भांजतो पारका भड़ां बाहतो कराळी वाह,
मारको वो बीर जंगां आहुड़े महेस ॥ १४ ॥
छाक चंडी पीधो स्रोण पत्रां पूर आप छकी,
महादेव लीधो सीस कीधो माळा मेर ।
जुगां क्रोड़ रहासी यो मंडळां में नाम जितै,
फौजां पाछी मेड़ते न आसी बेळा फेर ॥१५॥
भागा बीच भाराथ चौरासी लाख जूंण मिळे,
हाले सूर हजारां सुरगां बासा होत ।
सती ले अर्धंगा संगा जळेबां में महा सूर,
जीव मारू राव मिळे मोक्ष में संजोत ॥ १६ ॥

ठाकुर महेशदासजी का आलस का गीत

गीत

आलस अखियात सांभळो अवरां,
लड़ण सीख बिध लीजो ।
कीधो कान हरे जिम कमधां,
कोइयक आलस कीजो ॥ १ ॥
बागां डाक बिखम जुध वीरत,
काळ चहूं दिस कोपै,
देतो पग गाढा आडे दिन,

रण में गाढा रोपै ॥ २ ॥
ऊभा अड़े विमाण अध मंगे,
गुण अचरज गावां छां ।
अपछर करै उतावल़ ऊभी ।
इम कहजो आवां छां ॥ ३ ॥
गल़ियारां ढीलो गज गाहण,
अवखाणा उजल़ायो ।
वागां हाक महेस बीरवर,
आल़स भलो उडायो ॥ ४ ॥
गैंवर नर हैवर बहो गुड़िया,
धीरज अति चित धारे ।
सांमो आय दलानंद सुरपति,
पाछे सुरग पधारे ॥ ५ ॥

गीत

विमुख स्यामभ्रम हूँत राठोड़ अन बिरड़िया,
चतुरमुख कुजस री लिखी चीठी ।
अनड़ जोधांण लेवा जिके आफल़े,
डोकरो चल़े किम घणी दीठी ॥ १ ॥
करे सुरतो जगो हल्ला गढ़ किवांड़ां,
तोप धरहरे समर तूर त्रहके ।
मींढरा तणां देखे चिरत मांमला,
दलावत बूढ़लो केम डहके ॥ २ ॥

करे सरबस नज़र रसत चाढै किले,
धार सिर पर धणी मांण धूनो ।
लूण री सरीगत बहै कुलवट लियां,
जुदो नह होवसी कमध जूनो ॥ ३ ॥
ऊजळी मूंछ कीधी घणी ऊजळी,
भूप छळ अचळ सादूल भालो ।
बीकपुर तणो दळ अंजन ओरी बसे,
कानहर लगायो नहीं कालो ॥ ४ ॥

नं० १० गीत

भारत मेड़ते माहेस भिड़तां,
पड़ै बीजाछळ खळां पछाड़ ।
मेली परी फूल गळ माला,
लिया रथां उर कंठ लगाड़ ॥ १ ॥
मन हुय खुसी सुरगपुर माल्ही,
जोखां की निस दीह जठै ।
सोळंखणी सती हुय स्वग में,
आई खामंद कनें उठै ॥ २ ॥
अपछर नें महासती आखियो,
ओ ठाकुर मुरधर उजवाळ ।
इण कज देह उलट हूँ आई,
ज्वाला अनळ विचे तन जाळ ॥ ३ ॥
देख परी बोली हुय दुचित,

सती इतो दुख केम सहो ।
लाखां विचे कंथ हूँ लाई,
कठे गया छा जरां कहो ॥ ४ ॥
क्रोध वचन रांणी इम कहिया,
करसी न्याय उठे करतार ।
बेस्या कंथ माहरो थारे बस,
रहसी किम मन मांह बिचार ॥ ५ ॥
रांणी परी बेहूँ झगड़ंती,
निजरां भांण निहारी ।
कोतक काज न्यावरे कारज,
बीच सरग पंथ वाली ॥ ६ ॥
सुणो हकीकत कहियो सूरज,
बिध साची क्यों बिगड़ै ।
अंपछर देख महासती आयां,
झूटी तूँ क्यों झगड़ै ॥ ७ ॥
दुचिती गई अपछरा घर दिस,
सती थई बामंग माहेस ।
थिर मन प्रसन दलांणी थायो,
रांणी वर पायो राजेस ॥ ८ ॥

नं० ११ गीत

खागां रंगेजी स्रोण में वागां बारंबार और खेंगां,
दोखियां चंगेजी नागां धरे जोम देस ।

जोड़ रा ठाकरां सारां मल दी मंगेजी जठे,
मंगेजी आवगी भुजां अंगेजी महेस ॥ १ ॥
जुथां गीत जोधांण नाथरा दलां ढाल जेठी,
आसरां पाथरां पाड़े चहुं वा रे वाह ।
दूसरां सारां ही आंट छाडी समय भाव देखै,
दलारे आंटीले आंट न छाडी दुबाह ॥ २ ॥
खत्री मागां धियागां खाग रे पांण धीठ खत्री,
दूजां जेम न दीधी बाग रे माग दौड़ ।
पती जोधाणेस आगे नमै सीस जोड़ पांण,
ठौड़ दूजी सीस नथी नमावै राठौड़ ॥ ३ ॥
बेहूँ राह बिचाळे उबारी कथां वामी बंध,
हथां करे भारी चाव गिड़ंगा हैराव ।
दाखी नाम आज री अरोड़ कूंपा दसूं देसां,
राखी राम राज री मरोड़ मारू राव ॥ ४ ॥

दोहा

आसांणो अंजस करै, अँजसै मुरधर देस ।
दळ दिखणी रे ऊपरा, बणियो बींद महेस ॥ १ ॥
मेस कहे रे मेड़ता, साची साख भरेह ।
कुण भिड़सी कुण भागसी, देखे जिसी कहेस ॥ २ ॥
पग जड़िया पाताळ सूं, अड़िया भुज अमरेस ।
तन भड़िया तरवारियां, मुड़िया नहीं महेस ॥ ३ ॥

मंडियो महाजुध मेड़ते, रिण अरियां दे रेस ।
तन झड़ियो तरवारियां, मुड़ियो नहीं महेस ॥ ४ ॥
जुड़ दल अरियां जुट्टियो, रिण खागां दे रेस ।
मुरधर राखी मेड़ते, मुरधरिये माहेस ॥ ५ ॥
स्यामधरम नैं धार सिर, उजवाळी आसोप ।
मारू लड़ियो मेड़ते, अँग बीरारस ओप ॥ ६ ॥

२४ । ११ रतनसिंह ।

महेशदास का स्वर्गवास होने पर उसका ज्येष्ठ पुत्र रत्नसिंह आसोप की गद्दी बैठा। वि० सं० १८४७ में इसके नाम से आसोप का पट्टा लिख दिया गया। महाराजा विजयसिंहजी इस पर पूर्ण अनुग्रह रखते थे। कारण इसका यह था कि महाराजा इसके पिता महेशदास की स्वामिभक्ति और अटल सेवा को अपने हृदय से कभी अलग नहीं कर सकते थे। महाराजा को इसके पिता का स्वर्गवास होने से जिस प्रकार शोक हुआ वह महाराजा के इस खासरुक्के से प्रकट होता है:—

"सिधश्री ठाकरां रतनसिंघजी जोग्य मारो जुहार बांचजो अप्रंच ठाकरां महेसदासजी काम आया सो मांने फिकर हुवो थे सपूत हो सो मांने थांरो पूरो भरोसो है थांरे बाप मांने बचन दीयो है सो थे सारी बात चाकरी पूगण लायक हो और समाचार नराणदास केहसी। मीती पोस बद ३ गुरः सम्वत् १८४७।"

महाराजा के मन में रत्नसिंह का पूर्ण विश्वास था । महाराजा ने इसके नाम खासरुक्का लिखकर भेजा जिससे प्रकट होता है कि महाराजा की इस पर पूर्ण कृपा थी और इसको पूर्ण स्वामिभक्त जानते थे। खासरुक्के की प्रतिलिपि—

" श्री इष्टरी आंण छै"

"सिध श्री ठाकुरां रतनसिंघजी जोग म्हांरो जुहार बांचजो अप्रंच थे जमा खातर राखजो। ठाकुरां सादूलसिंघजी नैं सूरजमल रै साथ समाचार कवाया जीमें तफावत कर्यां तो मांनै इष्टरी.........आंण है थे म्हांरो सांमधरमो राखजो पोकरण थांनै देसां परधानगीरी थांरी है। मीती चैत वद ६ रवी सम्वत् १८४९"

महाराजा विजयसिंहजी की पूर्ण कृपा होने से विपक्षी लोग इनसे मन में जलने लगे और महाराजा के मन में भ्रमोत्पादक वार्ताओं का सूत्रपात कर दिया जिससे महाराजा विजयसिंहजी की कृपा दृष्टि में अन्तर पड़ गया। ठाकुर रत्नसिंह बड़ा बुद्धिमान् और नीतिनिपुण था। इसने महाराजा के नेत्रों में बल आया देख कर जोधपुर राज्य में निवास करना उचित न समझा और आसोप छोड़ कर वि० सं० १८५० में बीकानेर की ओर चला गया।

रत्नसिंह के बीकानेर जाने पर महाराजा विजयसिंहजी ने आसोप का पट्टा उसी वर्ष में जगरामसिंह को इनायत कर दिया। जिसके वंशज इस समय गच्छीपुरा[1] के अधीश हैं। जगरामसिंह के विषय में किसी कवि ने यह दोहा कहा था—

दोहा

"मरजो मती महेस ज्यूं, राड़ बिचै पग रोप।
झगड़ में भागो जगो, उण पाई आसोप॥

वि० सं० १८५० में महाराजा विजयसिंहजी का वैकुंठ वास होगया और उनके पौत्र महाराजा भीमसिंहजी ने वि० सं० १८५१

---

(१) यह आसोप के समीप है और इसे गजसिंघपुरा भी कहते हैं।

में जोधपुर के राजसिंहासन को सुशोभित किया। उन्होंने कूंपावतों के पट्ट-स्थान आसोप पर महेशदास के वंशजों से अन्य वंशजों का अधिकार रखना उचित न समझ कर ठाकुर रत्नसिंह को बुलाया। उसने महाराजा के चरणों में उपस्थित होकर प्रणाम किया उस समय महाराजा भीमसिंहजी ने ठाकुर से कहा कि तुम हमारे परम स्वामिभक्त सेवक हो। तुम्हारे पिता ठाकुर महेशदास ने मरहटों से ठौर ठौर युद्ध करके उनको परास्त किया था और अन्त में उन्हीं के साथ युद्ध करके अपना मस्तक स्वामी के अर्पण किया था। ऐसे स्वामिभक्त सेवक की सन्तान घरबार छोड़ कर बाहिर विपत्ति में दिन बितावै, इसमें हमारी शोभा नहीं। हमने तुमको अपना परंपरा-प्राप्त ठिकाना देने के लिये बुलाया है तुम अपने स्थान में जाकर बैठो। जागीर की सनद हम लिखाकर भेजते हैं। ठाकुर ने महाराजा को सविनय प्रणाम किया और "जो आज्ञा" कह कर अपने स्थान पर जाने के लिये प्रयाण किया। जागीर की सनद वि० सं० १८५२ की भादों सुदि २ को जगरामसिंह से तागीर होकर लिखी गई। और वि० सं० १८५३ के कार्तिक मास में इस ठाकुर का स्वर्गवास होगया। महाराजा भीमसिंहजी ने ठाकुर रत्नसिंह को बुलाया था उस विषय का यह प्राचीन गीत है—

गीत

सुणजो अरज सको सिरदारां,
जोधां पत समझावो।
जे चावौ थे जतन राजरो,
महा भड़ रतन मनावो ॥ १ ॥

खीजायां धर हुवे खराबो,
रीझायां थिर राजो।

दलानंदहर रीस दलाहर,
कोटां घणो अकाजो ॥ २ ॥
कूंपावत सादूल तिकारै,
पांण सदा सुख पावो ।
बाजे जिकां भरोसे बाजा,
राजा किम रीसावो ॥ ३ ॥
अण भंग पटा चौगुणा आपो,
दूणा कूरब दीजै ।
बेराजी मत्त करो विजाहर,
कमधज राजी कीजै ॥ ४ ॥
वां आयां थोक हुवेला इतरा,
भला सकव गुण भाखै ।
नाहर चोर सांचरे नांही,
दुसमण जोर न दाखै ॥ ५ ॥
रजवड़ सोहड़ ठिकाणे राजै,
परज सदा सुख पासी ।
कूंपा राजस थिर नव कोटां,
मुरधर अमल जमासी ॥ ६ ॥

२ गीत

ऊेहण बाण जस धिनो रतनेस कमधां तिलक,
सुपह भड़ पैसतां तखत आसांण ।
बिलकुले सजन मन छोह चढिया वदन,

मींढगर निरख गळिया असह मांण ॥ १ ॥

तिजड़ हथ राजतां पाट माहेस तण,
जुते कर मठां पग डोर जड़ियां ।
जोम अंग ऊफणै हरक मन मित्रजण,
प्रसण छक जोध उर दहल पड़ियां ॥ २ ॥

दलाहर राजतां तखत किरणाळ दुत,
ताकवां भार अंक अछत टूटा ।
सवय चित बिमल मुण सोह बलियां सुबर,
छोह तम देख अरि डोह छूटा ॥ ३ ॥

भड़ां सिणगार रतनेस अणियां भंवर,
रूक दिन बाद कर डरे रहिया ।
हरक चित सजन उछाह घर घर हुवो,
असह नर पेख तप मगज़ डहिया ॥ ४ ॥

रत्नसिंह बड़ा वीर पुरुष था। मनुष्यों की कदर मरने पर होती है, तदनुसार इस वीर पुरुष के गुणों के विषय में किसी कवि ने कहा है कि तुम्हारे विना आज आठों मिसल विचार में पड़ रही है घोल मथान हो रहा है तुमही कपट जाल काटने को समर्थ हो। इस विषय का यह गीत है:—

गीत

पारख नह विद्या भड़ां नह पारख, नह घट नीत निहाळो।
एक रतन सूग जातां इल में, चहुं दिस हूखळ चाळो ॥१॥
पैज निसारू न को खत्रियां पण, ओठंभ सरण न ओळो।

बड दातार दलावत बिमने, मुरधर घोल़ मथोल़ो ॥ २ ॥
फिरता बचन उबेड़ न फाटे, पले कपट ज्यां पूंजी ।
एक बार सुल़झावण आजो, आठूं मिसल अल़ूझी ॥ ३ ॥
मांझी दला साचोड़ा रिड़मल, आइयो राज उचारै ।
नर सांमद कूंपानैं निस दिन, चारूं बरण चितारै ॥ ४ ॥

गीत

डहतो भुज गयण बयण कहतो दिढ,
एकलगिड़ बहतो अण माव ।
भूरा सिंध रजवट रा भाकर,
आइयो सुधमना अमराव ॥ १ ॥
हिलोल़तो दल़ां हाकलतो,
कहतो ज्यूं करतो कथन ।
इल़ मुरधर वाल़ां थंभ आजो,
रिड़मल मूछाल़ा रतन ॥ २ ॥
हमलां आठ मिसल हीलोल़ण,
भुज बल़ ठलां दियण गज भार ।
आपमला खेटायत आजो,
दला हरा धेटा सिरदार ॥ ३ ॥
इम बहियो छिबतो आधंतर,
जग कहियो धिन नखत जस ।
कूंपावत भेल़ो ज्यां कटकां,

वो चेलो भारी अवस ॥ ४ ॥

आभ भुजां भेलण ऊससतो,
छक बेढक मुरधर औछाड़ ।
अनमी जनम जीत आथमियो,
औरां नह नमियो औनाड़ ॥ ५ ॥

ठहियो ठौड़ ठौड़ खंभ ठोरै,
रजवट बहियो हेकण रंग ।
अड़ियो ज्यां आंगम नह आयो,
आंगमियो घड़ियो ज्यां अंग ॥ ६ ॥

सत्ताईस बरस आसांणे,
इडग मेससुत रहियो एम ।
नग नामी भामी झिलियो नित,
जग स्रग तणां पांवणां जेम ॥ ७ ॥

कुंपावत. केसरीसिंघ जी ठाकुर आसोप

त्रयोदश अध्याय ।

१५ । १२ केशरीसिंह ।

(नं० ११ का पुत्र) वि० सं० १८५३ में आसोप का पट्टा, जो इसके पिता के समय में था, इसके नाम लिखा गया ।

वि० सं० १८५४ में महाराजा भीमसिंहजी ने जालोर पर सेना भेजी, कि जालोर महाराजा मानसिंहजी से छुड़ा लिया जाय। इस सेना का अध्यक्ष सिंघवी भीमराज का पुत्र अखैराज था । अखैराज वि० सं० १८५४ की चैत्र वदी ११ को सेना लेकर जालोर पहुंचा। उसके साथ कई छोटे बड़े सरदार थे । आसोप ठाकुर केशरीसिंह भी उस सेना में शामिल था। मानसिंहजी बड़े पोलिटिकल मनुष्य थे। उन्होंने ठाकुर केशरीसिंह को धर्म पक्ष दिखाते हुए खास रुक्का लिख कर भेजा कि हम को जालोर हमारे पितामह महाराजा विजयसिंहजी ने दिया है, इसलिये हम जालोर नहीं छोड़ेंगे, तुम राजाज्ञावश हम पर आक्रमण करने को आते हो तो खुशी से आवो परंतु धर्म-पक्ष का ध्यान रखना । इस विषय का महाराजा मानसिंहजी का लिखा हुआ यह खास रुक्का है—

॥ श्री रामजी ॥

॥ ठाकुरां केसरीसिंहजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो । तथा आ जायगा तो श्री बड़ा महाराज दादाजी साहब नै पांच राठोड़ां री दीवी म्हांरे आई है सु म्हे तो श्री बाभाजी साहब कनैं मांगण री बधती हर राखां हां. हमैं सारां रै आहीज दाय आई है तो जोख सुं उरा आवजो, म्हे ही डेरां दाखल हां। फेर सारा समाचार करणोत जालमसिंह नैं फरमाया है सु कहसी। संमत् १८५४ रा चेत यद २

लिख आए हैं कि वि० सं० १८५४ की चैत्र बदि ११ को राजकीय सेना जालोर पहुंची थी। और उसके १७-१८ दिन के अनन्तर ही महाराजा भीमसिंहजी ने ठाकुर केशरीसिंह के नाम खासरुक्का लिख कर भेजा कि हमें तुम्हारा पूर्ण विश्वास है, तुम्हारा जैसा उत्साह है वैसा ही तुमने काम किया है। तुमने जालोर पर मोरचे लगाये इस विषय के समाचार हमें सेनापति सिंघवी अखैराज के द्वारा ज्ञात होगये हैं, अब जालोर पर जल्दी अपना अधिकार होजावै वैसा करना। इस विषय का महाराजा भीमसिंहजी का यह खासरुक्का है—

॥ श्री रामजी ॥

॥ ठाकुरां केसरीसिंहजी सुं म्हांरो जुहार वांचजो तथा थांरो भरोसो नै हमगीरी है जिणहीज माफक जालोर मोरचा लगाया सो समाचार कहिया अखैराज रा लिखिया सो मालुम हुवा सो म्हां घणा रजामंद हुवा। हमें जायगा सिताब कायम हुवै म्हे थांरे भरोसे नचीता हां। मिती चैत सुद ५।

वि० सं० १८६० में महाराजा भीमसिंहजी का स्वर्गवास होगया और महाराजा मानसिंहजी जालोर से आकर जोधपुर में गद्दी बैठे। गद्दी बैठते ही महाराजा मानसिंहजी ने सीरोही पर मूहणोत ज्ञानमल की अध्यक्षता में सेना भेजी। इस सेना में कूंपावत केसरीसिंह अग्रणी था। सीरोही पर सेना भेजने का कारण यह था कि "महाराजा मानसिंहजी जालोर में थे और महाराजा भीमसिंहजी की सेना ने उन्हें घेर रक्खा था उस समय उन्होंने सीरोही के राव वैरीसाल को कहलाया था कि हम अपना जनाना आपके राज्य में

---

(१) खास रुक्कों में संवत् लिखा भी जाता है और नहीं भी लिखा जाता है इसमें संवत् नहीं लिखा है परंतु प्रकरण वश पाया जाता है कि यह खास रुक्का संवत् १८५४ का ही होना चाहिये।

भेजते हैं उसका प्रबंध रक्खैं। परंतु वैरीसाल ने भीमसिंहजी के भय से अस्वीकार किया उसका बदला लेने के लिये महाराजा ने सीरोही पर सेना भेजी। दोनों में महा घोर संग्राम हुआ। वहां ठाकुर केशरीसिंह ने महापराक्रम किया और ऐसी तलवार बजाई कि सीरोही वाले परास्त होगये और महाराजा की विजय हुई। उस विषय का महाराजा मानसिंहजी का श्रीमुख से फरमाया हुआ यह गीत है।

गीत

कहे न्रप मान सुण वीर केहर कमँध,
इधक चित समंद साखां उजाळा।
न्रप नरां देवड़ां भड़ां माथे निडर,
अडर खग साज रतनेस वाळा ॥ १ ॥
आभ सिर लाग आबू धरा ऊपरे,
सहायक भूपरे गरज सारू।
रूप नरसींग रे रहो आतस इसा,
मेवासो पाधरो करण मारू ॥ २ ॥
इधक छक देखतां आज दूजा अजा,
सदाई राज भुज भार सूंपां।
लोहड़ां पांण जुध जीत आबू लियो,
कियो थैं पाधरो राव कूंपा ॥ ३ ॥
साह खग चापड़े लूट लीनो सहर,
प्रथीपत नाथरो वचन पाले।
महाबळ राड़रो भोक छिलते मछर,
गरब चहुवांण रो तुहीज गाले ॥ ४ ॥

उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी की कन्या कृष्णा कुमारी का संबंध जोधपुर के महाराजा भीमसिंहजी के साथ होने की बात चीत हुई थी, टीका नहीं आया था। अचानक महाराजा भीमसिंहजी का स्वर्गवास हो जाने से, उक्त राजकुमारी का संबंध जयपुर महाराजा जगत्सिंहजी के साथ होने का प्रस्ताव हुआ। महाराजा मानसिंहजी को इस बात की सूचना हुई कि कृष्णा कुमारी का संबंध जगत्सिंहजी के साथ होता है, महाराजा मानसिंहजी ने जोधपुर की मांग जयपुर को व्याहीजाना अनुचित समझ कर जयपुर वालों को कहलाया कि आप यह संबंध मत करना। परंतु जयपुर वालों ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

महाराजा मानसिंहजी ने इस बात से अपना अपमान समझ कर जयपुर पर चढ़ाई करने का इरादा करके मेड़ते आकर डेरा किया और सेना एकत्र करने लगे। और सहायता के लिये जसवंत राव हुलकर को बुलाया। उधर उदयपुर वालों को लिखा कि "हमारी मांग है, आप जयपुर संबंध कैसे करते हैं?" परंतु उदयपुर वालों ने कुछ परवाह नहीं की और टीका रवाना कर दिया। महाराजा मानसिंहजी को खबर लगी कि टीका जयपुर जाने के लिये रवाना होगया है, उन्होंने उसे रोकने के लिये २०००० बीस हजार सेना भेज दी। गांव धनोप में महाराजा की सेना टीका वालों के पास पहुंची। टीका के साथ केवल एक हजार मनुष्य थे, टीका वापिस उदयपुर लौटा दिया गया और शाहपुरा वालों के द्वारा यह तय हुआ कि अब टीका जयपुर नहीं जायगा।

इस प्रकार जयपुर का अपमान हुआ. उस अवसर पर पोकरण ठाकुर सवाईसिंह जयपुर में था। जोधपुर राज्य में दो पार्टी हो गई थीं, एक तो महाराजा मानसिंहजी की, और दूसरी महाराजा भीमसिंहजी के पुत्र धोकलसिंहजी की, ठाकुर सवाईसिंह धोकलसिंहजी के पक्ष में था। उसने जयपुर महाराजा को फुसला कर जोधपुर पर चढ़ा लाने का प्रयत्न किया। उसका प्रयत्न सफल हुआ।

जयपुर महाराजा जगत्सिंहजी १००००० एक लाख सेना लेकर चले। इधर से मानसिंहजी साम्हने चले। पुष्कर के समीप गींगोली की घाटी में दोनों सेना समक्ष में आईं। सवाईसिंह ने बहुत से सरदारों को बहका कर मानसिंहजी से विरुद्ध करके अपने पक्ष में ले लिया था। जिस से मुकाबला होने के समय महाराजा के बहुतसे सरदारों ने महाराजा का साथ छोड़ दिया। कई शत्रु सेना में जा मिले, कई अपने २ घरों को चल पड़े। महाराजा के साथ केवल निम्न लिखित सरदार रहे—१आसोप २ आहोर ३ नींबाज ४ लांबियां ५ कुचामण और ६ खेजड़ला।

महाराजा जोधपुर आए और शत्रु सेना भी महाराजा का पीछा करती हुई चैत्र वदि ७ को जोधपुर पहुंची। यह घटना वि० सं० १८६३ की है।

वि० सं० १८६३ की चैत्र वदि ७ को जोधपुर शत्रुदल से घिर गया है। इस शत्रु सेना में अग्रणी पोहकरण ठाकुर सवाईसिंह है। उसीकी करतूती है कि जयपुर महाराजा जगत्सिंहजी, बीकानेर नरेश सुरतसिंहजी और पिण्डारी मीरखां तथा मारवाड़ के कुछ सरदार जोधपुर शहर को घेरे हुए हैं। चारों तरफ शत्रुओं के मोरचे लगे हुए हैं, गोलों की वर्षा हो रही है, नगर के लोग दुखी हैं उस समय महाराजा ने इस विपत्ति से बचने के लिये सिंघी इंद्रराज और भंडारी गंगाराम को कारागार से मुक्त करके कहा कि "यह समय स्वामिभक्ती दिखाने का है और तुम कार्य कुशल हो" महाराजा के ऐसे वचन सुनकर दोनों ने करबद्ध होकर अर्ज किया कि होगा तो सब आपके प्रताप से, परंतु सेवक का कर्तव्य है कि प्रयत्न करे। ऐसे कह कर दोनों बाहिर निकल कर सवाईसिंह के पास गए और आधा राज्य धोकलसिंहजी को और आधा मानसिंहजी को देने की बात चीत की जिसमें जोधपुर मानसिंहजी के विभाग में रहने की बात सवाईसिंह ने स्वीकृत नहीं की, तब इन्द्रराज ने

जोधपुर शहर तो धोकलसिंहजी के और किला मानसिंहजी के अधिकार में रहने का कहा तो सवाईसिंह ने स्वीकार कर लिया। क्योंकि वह जानता था कि शहर का कब्जा होने पर मानसिंहजी किले में कितने दिन ठहर सकते हैं? चैत्र सुदी ११ को शहर पर शत्रु का अधिकार करा कर इंद्रराज और गंगाराम शेखावतों का आश्रय लेकर जोधपुर से निकले। इनके साथ आसोप ठाकुर केसरीसिंह, आउवा ठाकुर बखतसिंह, नीवाज ठाकुर सुरतानसिंह, कुचामन ठाकुर शिवनाथ-सिंह, बूड़सू ठाकुर प्रतापसिंह और लांबियां ठाकुर भवानीसिंह आदि शेखावतों के घोड़े साथ लेकर जोधपुर से निकले।

कुछ लड़ने वाली आसामियां किले में रहीं। बाहिर निकलने वाले इंद्रराज आदि प्रथम नींबाज गए। वहां से सेना एकत्र करते हुए मेड़ते पहुंचे।

इसी अर्से में मीरखां के और जयपुर महाराजा के खर्ची बाबत कुछ तकरार होगई। तब इंद्रराज मीरखां से मिला। उसको खर्च के लिए कुछ द्रव्य दिया गया जिससे मीरखां इनके शामिल होगया। अब इन सबोंने कृष्णगढ़ में जा कर डेरा डाला। इंद्रराज आदि तो कृष्ण-गढ़ में रहे। मीरखां और कुचामन ठाकुर शिवनाथसिंह आदि जयपुर की ओर चले। इसी अर्से में जयपुर का बख्शी शिवलाल खर्ची देने के लिये द्रव्य लेकर जोधपुर की ओर आरहा था, उसके और जयपुर जाने वाली जोधपुर की सेना के फागी के मुकाम पर मुठभेड़ होगई। शिवलाल पराजित हुआ उससे द्रव्य छीन लिया गया। अब तो मारवाड़ की सेना का हौंसला बढ़ गया, फिर आगे बढ़ कर गांव भूंठवाड़ा में पहुंचे जो जयपुर से केवल ३ तीन कोस के अन्तर पर है। वहां लूट खसोट की; और स्त्रियों को पकड़ २ कर एक पैसे में बेची गई। वहां से वापिस गांव हरमाड़ा में आए, जो कृष्णगढ़ से ५ कोस उरली तरफ है। वहां सब शामिल हो गए। फिर विचार करके सिंघी इन्द्रराज और मीरखां जयपुर की ओर

रवाना हुए। जयपुर महाराजा जगत्सिंहजी ने यकायक ये सब समाचार सुने तो घबरा गए और जोधपुर को छोड़ कर वि० सं० १८६४ की भाद्रपद सुदि १ को रात्रि के समय जयपुर को चल दिये। जगत्सिंहजी के जाने पर सेना सब तितर बितर होगई। दैव की गति बड़ी विचित्र है, इस से पहले तो मानसिंहजी की क्या दशा थी कि अकेले किले में घिरे हुए बैठे हैं, और जगत्सिंहजी का क्या डोल है कि जोधपुर का किला घेरे हुए लाख सेना लिए गर्जना कर रहे हैं। एक क्षण भर में अब जगत्सिंहजी की क्या दशा हुई है कि भागते हुए जयपुर को जा रहे हैं। इस पर भी तुर्रा यह कि जगत्सिंहजी जैपुर को बहुत त्वरा से जा रहे थे, कि मार्ग में राठोड़ों की सेना से मुठभेड़ हो गई। वहां जयपुर के दीवान रायचन्द्र ने इंद्रराज को १०००००) एक लाख रुपये देकर पीछा छुड़ाया। धन्य हैं सिंघी इन्द्रराज, भंडारी गंगाराम और आसोप, आउवा, नींमाज, कुचामन, बूड़सू और लांबियां आदि के सरदार, कि जिन्होंने अपनी स्वामिभक्ति को प्रत्यक्षरूप से दिखा कर जगत् में आदर्श होने का दावा किया। सिंघी इंद्रराज के विषय में महाराजा मानसिंहजी ने यह दोहा कहा था—

दोहा

"पड़ते घेरे जोधपुर, आयो दळ जु असंभ।
आभ डिगंते ईंदड़ा, तैं दीधो भुज थंभ॥"

ठाकुर केसरीसिंह ने घेरे के समय और उसके अनंतर भी पूर्ण स्वामिभक्ति के साथ सेवा की थी और हर युद्ध में बड़ी वीरता से लड़ा था, उस विषय के ये गीत हैं—

१ गीत

(भदोरा निवासी सांदू अमरदान कृत)

लियां देसरी लाज ब्रध सेसरी धरा लग,
धुरासूं नीसरी चाल रिण धींग ।
आच करण तेसरी रीत जग ऊपरा,
सकळ व्रत धारियां केसरीसींग ॥ १ ॥
ओट आयां बळू दांन खग ईढरां,
सुजस मन मोट खाटण सचूंपा ।
खगाटां चोट जंग दोट न्हाकण खळां,
कोट नव जोधपुर थंभ कूंपा ॥ २ ॥
वीदगां अपण गघ बाध घर विनादी,
भींव छळ दळां सिर क्रपण भाराथ ।
राजरा स्यांमध्रम अचळ रतनेसरो,
नरां सिणगार आसोप रो नाथ ॥ ३ ॥
दळां हरतणां जुग भलापण दाखवां,
वंदां आचार तरवार बाधू ।
घरांणे एण सिरताज जस घणांरा,
अभेड़ा पणारा विरद आदू ॥ ४ ॥

२ गीत

बागां त्रंबाळां अराबां घोर रावतां सजोर बांणी,
झाटके उबांणी तेगां चढे मुखां झार ।
जीवणी सिरारो जेठी जोसमें पाराथ जांणी,
तांणी मूंछां तेण वेळा भेळिया तोखार ॥ १ ॥
पागड़ा छांडिया कूंपे हुई वीर हाकां पाळां,

तोपां सोर झाळां व्है त्रंबाळां सिंधु तान
बींभरे सूरमा बके डोढी किरमाळां वहै,
मेल रंभा वरमाळा छायो आसमान ॥ २ ॥
भीक बाज बाणांसां गोळियां तीरां पड़े झाट,
अधीरां कायरां पाव थाकगा अचूक ।
दूजे दले छाती चाड रावनैं ऊखेल दीधो,
भेल दीधो सैर कोट कीया सत्रां लूक ॥ ३
रिड़माळां मुदाई सूं प्रथीनाथ मांन रीधो,
कूंपे हलो कीधो चोड़ै स्यांमध्रमे काज ।
दाट वाळ सीरोही रावनैं चौड़ै घेर दीधो,
सोभाग आवगो लीधो केहरी सकाज ॥ ४ ॥

३ गीत

जगां तमासो कमाळी जावै नचै वीर खेला जठे,
रचेवा ऊखेला सूं अडोळा पाव रोप ।
जोरावार भड़ांरा सचेळा चेळा तुले ज्यांरा,
आंटादार जिकां भेळा आउवो आसोप ॥ १
आचां करन भोज सो भाळियो ओप हीरी,
गैघड़ा गेहरी मांहे साजे दाव घाव ।
नवां कोटां देहरी भूखळां लाज नागळांणी,
माधोसिंह केहरी जठीने मारू राव ॥ २ ॥

---

१ यह आउवा का ठाकुर था ।

दीसे जोम अटंका बोलवे बैंण बंका दूठ,
डंका त्रंबागळां रा नीभ्रसे धोमे दीह ।
सोवै न्याव रावतां देसरो धड़ो भारी सदा,
सेवारो माहेसरो जिकांरे भीरू सिंह ॥ ३ ॥

धणीरो उजाळे लूंण आउवो आसोप धणी,
वणी वार जासूं कोण पूगे साम्यवाद ।
साजे अणी सिरारी अग्राजे बेहूं महासूर,
मारूराव भुजां छाजे धणीरी म्रजाद ॥ ४ ॥

महाराजा मानसिंहजी ने शत्रुदल के अग्रणी सरदार पोहकरण ठाकुर सवाईसिंह, चंडावल ठाकुर बख्शीराम, बगड़ी ठाकुर केशरीसिंह और पाली ठाकुर ज्ञानसिंह को मूंडवे के मुकाम पर मीरखां के द्वारा मरवाकर बीकानेर के राजा सुरतसिंहजी पर, जो जयपुर महाराजा के शामिल थे, वि० सं० १८६५ में सेना भेजी। सुरतसिंहजी ने चार लाख ४०००००) रुपये फौज खर्च के देने स्वीकार करके संधि कर ली। यह संधि वि० सं० १८६५ के मार्गशीर्ष मास में हुई थी।

तदनन्तर सिंघी इंद्रराज ने महाराजा से अर्ज किया कि बीकानेर के साथ तो रसाई हो गई है, अब जैपुर के साथ निबटेरा कर लेना उचित प्रतीत होता है। महाराजा ने कहा कि तेरा कहना ठीक है यदि सुविधा के साथ हो सकता हो तो करने में क्या हानि है? महाराजा के स्वीकार करने पर इंद्रराज ने अपने पुत्र फतैराज, मुहता सूरजमल, आसोप, आउवा और नींबाज ठाकुर इनको दीवान रायचंद्र से वार्तालाप करने के लिये भेजा। परस्पर वार्तालाप होने

श्चात् यह तय हुआ कि "धोकलसिंहजी के बाबत अब प्रपंच
िया जाय। गींगोली के युद्ध में जयपुर वाले तोपें आदि सामान
ये थे, वह वापिस कर दिया जाय। उदयपुर के संबंध के विषय
ाब चर्चा न की जाय और मारवाड़ के सरदार जो जयपुर में हैं
ो वहां से रवाना कर दिया जाय।" इस प्रकार की शर्तों के
सुलह हो गई। इस कार्य में आसोप ठाकुर केशरीसिंह से बड़ी
यता मिली थी, उस विषय को महाराजा का खास रुक्का
: करता है।

ा रुक्के की प्रतिलिपि—

"॥ श्री जलंधरनाथजी सत्य छै ॥

"ठाकुरां केसरीसिंहजी सुं म्हांरो जुहार वांचजो तथा थांरी हम-
ो रा समाचार फतेराज लिखिया सो मालम हुवा। थांरो इणी
भरोसो हैं। अब डेरा सहर में करजो नै विसेस मजबूती राख-
। नवाब मेहमद अयाखांजी नुं हँसी खुसी सुं पाछा विदा कीया
समाचार इंद्रराज सूरजमल लिखसी संवत १८६५ रा जेठ सुद ४"

वि० सं० १८७२ में सिंघी इंद्रराज और नाथसंप्रदाय के आचार्य
नाथजी, मुहता अखैचंद के इशारे से मारे गए उस शोक से
ाराजा मानसिंहजी अत्यंत व्याकुल हुए और उनके चित्त पर
ार से विरक्ति सी छागई। तब मुहता अखैचन्द ने आसोप ठाकुर
रीसिंह और आउवा ठाकुर विष्णुसिंह आदि दो चार सरदारों
शामिल लेकर महाराजा की इच्छा न होने पर भी महाराजा के
छत्रसिंहजी को वि० सं० १८७४ की वैशाख सुदि ३ के दिन
राज बनवा दिया।

वि० सं० १८७४ में गवर्नर जनरल मार्क्विस आफ हैस्टिंग्ज
समय ईष्ट इंडिया कंपनी के और जोधपुर राज्य के मध्य अहद-

नामा हुआ जिसमें कंपनी की तर्फ से तो गवर्नर जनरल के हस्ताक्षर और जोधपुर राज्य की तर्फ से आसोपा विसनराम व्यास के हस्ताक्षर हुए थे। अहदनामा होने के पूर्व सलाह के लिये ठाकुर केसरीसिंह बुलाया गया था। उस विषय का यह ग्वास रुक्का है—

"॥ श्री जलंधरनाथजी सत्य छै

ठाकरां केसरीसिंहजी सुं म्हांरो जुहार वांचजो तथा अंगरेज आदले से सला विचारणी है सु सिताब हाजर आवजो सं० १८७४ रा मी॥ बद २"

अब तो मुहता अखैराज की बन पड़ी। राज्य का कार्य समस्त अपने हाथ में ले लिया है। महाराज कुमार नवयुवक होने से विषय भोग की ओर चल पड़े। परिणाम यह हुआ कि तुरंत ही वि० सं० १८७४ की चैत्र बदि ४ को युवराज का स्वर्गवास होगया।

युवराज के स्वर्गवास करने से महाराजा का दुःख और भी सीमा से बाहिर होगया। मुहता अखैचंद अपने पक्षवालों के साथ राज्य कार्य कर रहा है। जब गवर्नमेन्ट में इस बात की रिपोर्ट हुई कि युवराज का वैकुण्ठवास होगया है और महाराजा मानसिंहजी उन्मत्त दशा में हैं तो गवर्नर जनरल मार्किस आफ हैस्टिंगूज ने महाराजा की परिस्थिति जानने के लिये अपने मुन्शी बरकतअली और मिस्टर विल्डर्स को भेजा। वे एक वार मिले जब तो महाराजा उसी दशा में रहे। दूसरी मुलाकात में महाराजा ने अपना गुप्त भेद कहा। तब उन्हें ज्ञात होगया कि महाराजा उन्मत्त नहीं हैं, राज्य करने योग्य हैं। महाराजा मानसिंहजी को सर्वाधिकार है, ऐसी गवर्नमेन्ट की संमति प्राप्त होने पर महाराजा ने राज्य कार्य अपने हस्तगत किया और विपक्षी लोगों को दंड दिये जाने लगे। केशरीसिंह महाराजा के विरुद्ध पक्ष में था, इसलिये भय के मारे मारवाड़ छोड़ कर बीकानेर के गांव देसणोक चला गया, जहां करणी माता

का स्थान है। वहीं इसका वि० सं० १८८० में स्वर्गवास होगया।

ठाकुर केसरीसिंहजी का मरसिया—

गीत

अवनी पेखिया गढ कोट अनेकां,
जास तणां भड़ दीठा जोय।
वा गाहड़ लीना अड़पायत,
केहर जिसो न दीठो कोय ॥ १ ॥
बांकी मूँछ भुहांरा बांका,
मधुरा इम्रत बोल मही।
अनमी राव तणे उणिहारे,
नारी जायो कमंध नहीं ॥ २ ॥
तेढी नज़र सुरख रंग तोरे,
गुमर न खोले गाढ घणे।
इण तसबीर रो रूप अमोलक,
बिहद चितारा नहीं बणे ॥ ३ ॥
गहर सभाव मेर मन गाढो,
आछा नसा घणेरा ओप।
इण मुरधर रा कमंध आंटीला,
एकर सुं आजो आसोप ॥ ४ ॥
तपस्या घणी घणी प्रभुताई,
चौज घणी मन मोजां चाव।

सारी बात घणी सुख दायक,
ऊमर तुछ पाई उमराव ॥ ५ ॥

पंचदश अध्याय ।

१६ । १३ ठाकुर बखतावरसिंह ।

(नं० १२ का पुत्र) पिता के अनन्तर यह आसोप की गद्दी बैठा। उस समय इसकी उम्र ६–७ वर्ष की थी। वि० सं० १८७६ की आषाढ सुदि १५ पूर्णिमा को इस का जन्म हुआ था। महाराजा मानसिंहजी ने इसके पिता की सेवा पर ध्यान देकर इसे आसोप का पट्टा वि० सं० १८८१ में इनायत किया। जिसकी प्रतिलिपि निम्न लिखित है—

"॥ श्री जलंधरनाथजी सायछै

❀ सही श्री दरबार साहिबों की ❀

॥ स्वारूप श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री मानसिंघजी बचनायतं सिंघवी फतेराज दिसै सुप्रसाद बांचजो तथा

सिंहजी आसोप
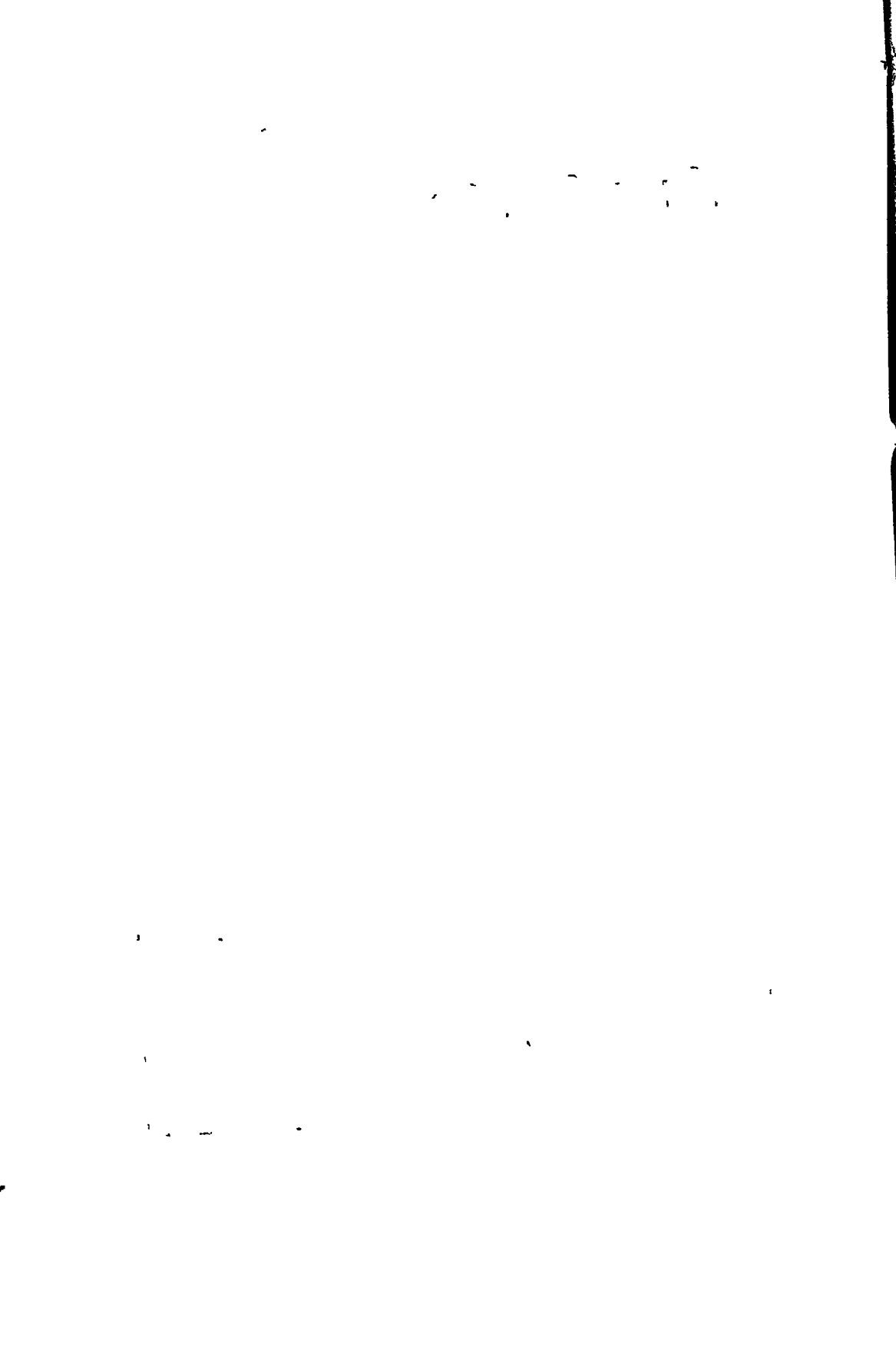
राठोड़ बखतावरसींघ केसरीसींघ रतनसींघोत खांप कूंपावत सुं म्हेरबान होयनैं पटो इनायत कीयो है सो संवत् १८८१ री साख सावणुं था अमल दीजो गांव में विना हुकम सांसण डोहली देण न पावै दाण जमैबंधी वगेरा बाब दरबार रा है।

२१५००)२ गढ जोधपुर रा गांव इनायत खालसा रा
१८७५०) १ गांव आसोप खास
२७५०) १ गांव रामपुरो तफे आसोप
२१५००) २

रेख साढा ईकवीस हजाररी............गांव दोय

॥ संवत् १८८१ रा काती सुद १२ दुवो श्रीमुख मुकाम पाय-तखत गढ जोधपुर

। लिखते सिंघवी फतैराज संवत् १८८१ री साख
सावणु था अमल देजो

। नकल लीवी श्री हजुर रे दफतर ।
। नकल लीवी दीवाणी दफतर ।
। नकल लीवी बखसीरे दफतर । नकल लीवी चोकी नवीसांरे दफतर
। नकल लीवी चोकीनवेसरे दफतर । नकल लीवी चोकीनवीसांरे दफतर"

यद्यपि इसकी अवस्था बहुत अल्प थी, इसने तरुण अवस्था में पदार्पण किया ही था तथापि इसने अपनी बुद्धिमत्ता से माता आदि अंतःपुर और कार्यकर्ता तथा प्रजावर्ग को सर्व प्रकार से प्रसन्न कर लिया था। इस बात की इसके मन में पूरी बसी हुई थी कि हमारे पूर्वज सदा स्वामिभक्त रहे हैं तो मुझे भी उन्हींके मार्ग का अनुसरण करना चाहिये। इसी विचार से यह महाराजा मानसिंहजी की सेवा में सदा उपस्थित रहता और इसकी स्वामिभक्ति के कारण महाराजा की भी इस पर पूर्ण कृपा थी। इसने १२-१३ वर्ष की

उम्र होने पर अपनी जागीर का प्रबंध अपने हाथ में ले लिया था। परंतु बुद्धिमानी यह थी कि माता की आज्ञा पालन करते हुए कार्य कर्ताओं की सलाह से कार्य करता था। वि० सं० १८९३ में अठारह १८ वर्ष की अवस्था में इसका अंतकाल हो गया। इसकी अकाल मृत्यु होने से इस की प्रजा इतनी व्याकुल हुई कि अपने कर्तव्य कर्म की भी सुध भूल गई। सारे नगर में कुहराम छागया। नगर निवासी समस्त नरनारी के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। घरों में शोक सा छागया। उस दिन नगर भर में एक भी चूल्हा न जला। समय पाकर दुःख का अंत होता ही है। धीरे धीरे शोक शांत हुआ,

इस के गुण वर्णन का यह प्राचीन गीत उपलब्ध हुआ है—

गीत

(सांदू पनजी का कहा हुआ)

कमंध ईढरा केई बंका आज तोसूं करै कोल,
कोल मांही रहे केई न रह केवार ।
गाढै राव रहै पगां कोल कीधां थका गाढा
लाडा फोजां तणा कूंपा न चूके लगार ॥ १ ॥
परापरी जगां हूंत फते करै भाजे पैला,
भरै तिकां तणी साख साखतो भूलोक ।
अेमदा अभारा छलां वधायो कांम सारां आगे,
झाले खाग सेर तूं तुराटां दीधी झोक ॥ २ ॥
महेस दाखियो वोल वीजानैं अवसरां माथे,
आनो माच कीधा जके भांणरा ऊतांण ।
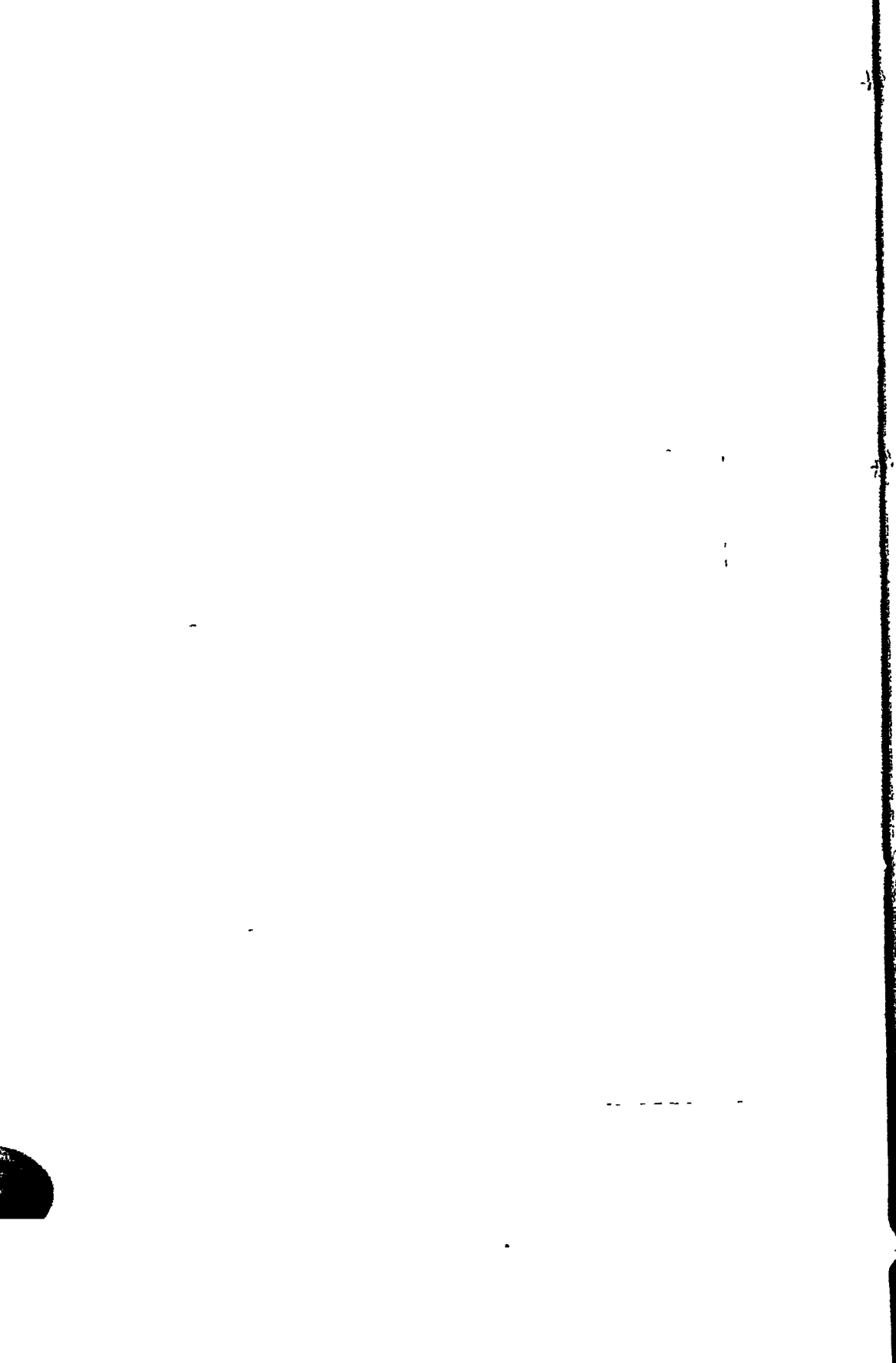
चढे घोड़ां छोड पांण भागा जाडी जोड़ जोड़े,
अड़े आभ कूंपा अड़े मेड़ते आरांण ॥ ३ ॥
स्यांमध्रमा तेण तावे धणी छलां दिपै सीस,
किणी समे करै केवी ऊपरा प्रकोप ।
फेरनैं तंबोली पांन आंणे गेह माथे फेर,
ऊथापे न आज्ञा सदा भूपरी आसोप ॥ ४ ॥
दलो मेस रतनेस केहरी बखतो दाखूं,
पूरो वेढीगारां देवै ऊजलो प्रसाद ।
सिंह बखतेस घणो स्यांमध्रमी प्रथी सिरे,
मारूराव भुजां राखे देसरी म्रजाद ॥ ५ ॥
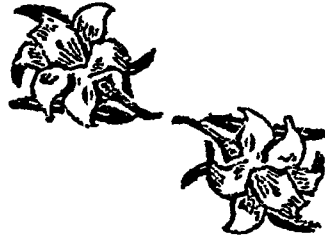
२७ । १४ ठाकुर शिवनाथसिंह ।

ठाकुर बखतावरसिंह का स्वर्गवास बहुत अल्प अवस्था में हो गया था । उसके पुत्र नहीं था इसलिये शिवनाथसिंह हींगोली ग्राम से गोद आया और महाराजा की ओर से दत्तक पुत्र लेने का स्वीकार होजाने पर वि० सं० १८६३ की चैत्र सुदि ६ को महाराजा ने इसको आसोप का पट्टा इनायत किया । जिसकी रेख ३०५००) रुपये की थी । गांव ८ थे ।

—: पट्टे की प्रतिलिपि :—

"श्रीजलंधरनाथजी साय छै

सही श्री दरबार साहिबों की

॥ स्वारूप श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री मानसिंहजी वचनायतं सिंघवी गंभीरमल दीसै सुप्रसाद बांचजो तथा राठोड़ सीवनाथसींघ बखतावरसींघ केसरीसींघोत खांप कूंपावत सुं म्हेरवान होय ने पटो ईनायत कीयो है संवत् १८६३ री साख उनालु था अमल देजो गांव में बिना हुकम सांसण डोहली देण न पावें दाण जमेबंधी वगैरे बाब दरबार रा है ३०५००) ८ गांव तागीरात राठोड़ बखतावरसिंघ केसरीसिंघोत खांप कूंपावत री

२७५००) ७ गढ जोधपुर रा गांव
१८७५०) १ आसोप खास
२७५०) १ रायपुरियो तफे आसोप
४०००) ४ बड़लू तफे पीपाड़
२०००) १ कुकड़दो तफे आसोप
२७५००) ७

३०००) १ नागोर रो गांव कंकड़ाय परगने रूण
३०५००) ८

रेख साढा तीस हजार री.......................गांव आठ

। संवत् १८६३ रा चेत सुद ६ दुवो श्रीमुख मुकाम पायतखत गढ जोधपुर

। लिखत सिंघवी गंभीरमल फतम-

। नकल लीवी श्री हजुररे दफतर　　लोत संवत १८६३ रा साख उनालु था अमल देजो

। नकल लीवी दीवाणांरे दफतर　　। नकल लीवी बखसीरे दफतर

। नकल लीवी चोकीनवीसांरे दफतर । नकल लीवीचोकीनवेसांरे द०

इस ठाकुर का विवाह झालामंड के ठाकुर राणावत गंभीरसिंह की कन्या से हुआ था और महाराजा तखतसिंहजी ने भी उसी की बहन का पाणिग्रहण किया था। इस संबंध के कारण महाराजा की इस पर पूर्ण कृपा थी। परन्तु ठाकुर के मन में राजपूती का बड़ा घमंड था, जिससे कभी कभी साहस भी कर बैठता। तथापि महाराजा आभ्यन्तर संबंध के हेतु इसको प्रसन्न रखते थे। इसीसे इसको और पट्टा दिया था, जिस में नीचे लिखे ग्राम थे—

गांव

१	रड़ोद	आधा,	रेख रु० ४५००)
१	पालड़ी		रेख रु० १५००)
१	गोयनपुरो		रेख रु० ७५०)
१	खारियो	परगना मेड़ता	रेख रु० ३०००)
१	गादेड़ी		रेख रु० ७५०)
१	भानावास		रेख रु० २०००)
१	चीमाणो	परगना फलोधी	रेख रु० २०००)
			कुल रेख रु० १४५००)

वि० सं० १६०८ में महाराजा तखतसिंहजी ने सरदारों के वकीलों को बुलाकर आज्ञा की कि राज्य के कार्य में जो बहतरी का काम हो उसके लिये अर्ज किया करो। तब पोहकरण, नींबाज,

रायपुर, भाद्राजण, खेजड़ला, चाणोद और गूलर आदि के सरदारों ने, जिन में आसोप का नाम भी शामिल गिना गया था, प्रपंच रचा। और २३ कलमें लिख कर एजेंट मालकम साहब को अर्जी दी गई कि राज्य का कार्य इस प्रकार होना चाहिये। महाराजा को यह पसंद नहीं आया। उस समय आसोप ठाकुर शिवनाथसिंह और नींबाज ठाकुर ने पट्टानवीश धनरूप की मारफत अर्ज करवाया कि हम इस षड्यंत्र में शामिल नहीं हैं। कार्य सब महाराजा की इच्छानुसार होगा, तब पोहकरण ठाकुर बभूतसिंह ने उस प्रपंच को मुलतवी रख दिया।

आसोप ठाकुर शिवनाथसिंह का वकील कूंपावत करणसिंह का भाई सांवतसिंह था। वह भी अपने स्वामी के समान बड़ा साहसी और अभिमानी था। उसके बरताव से अजंट साहब नाराज हुआ और उसने ठाकुर शिवनाथसिंह से कहा कि यह आपका वकील योग्य नहीं है, हम इसको नहीं चाहते, आप इसको बदल देवें। परंतु ठाकुर ने स्वीकार नहीं किया। इसी बात पर परस्पर तनातनी होगई। एजेंट साहब नाराज होने से महाराजा के मन में भी कुछ अंतर पड़ गया। यह घटना वि० सं० १९०८ की ज्येष्ठ सुदि १४ को हुई थी।

वि० सं० १९१० में ठाकुर शिवनाथसिंह नींबाज ठाकुर से मिलने नींबाज गया। महाराजा तख्तसिंहजी नींबाज ठाकुर से किसी बात पर नाराज थे। शिवनाथसिंह के नींबाज जाने से महाराजा को इसके विषय में भी कुछ संदेह होगया और उसी सबब से इसके बधारा के ६॥ गांव जब्त किये गये। तब ठाकुर शिवनाथसिंह नाराज होकर उन मेड़तिया राठोड़ों के शामिल होगया, जो महाराजा की आज्ञा पालन करने में शिथिलता करते थे। इसका कारण यह था कि मेड़तियों में दरबार की रेख की रकम बकाया थी जिससे उनको तंग किया गया। सिंघी कुशलराज को सेना देकर गूलर पर भेजा। उसने गूलर गांव को

घेर कर गोले बरसाने शुरू किये परंतु गढी टूटने न पाई। तब कुशलराज ने एकदम आक्रमण किया। उस आक्रमण से अन्दर के लोग भयभीत होगये और युद्ध बंद करने के लिए सुफेद झंडा दिखाया गया। और गढी के भीतर के लोगों के साथ ठाकुर कृष्णगढ़ के प्रतिष्ठित पुरुषों के द्वारा संधि करके गढी से निकल कर चला गया। उक्त सरदारों में से कितने एक गूलर आदि के सरदार बागी होगये थे। यह ठाकुर भी उनके शामिल होगया।

वि० सं० १९१४ में काले लोग अंग्रेजी सरकार से बदल गये थे। उनको आउवा ठाकुर ने सहायता दी थी और ठाकुर शिवनाथ-सिंह की भी सलाह आउवा ठाकुर के शामिल थी, जिससे महाराजा तखतसिंहजी ने आसोप की जागीर जब्त कर ली, तब ठाकुर ने बगावत करनी शुरू की, परन्तु उस समय भी ठाकुर का ध्यान धर्म की ओर था। ब्राह्मण, साधु आदि को नहीं लूटा।

मौका पाकर ठाकुर ने बड़लू में जाकर जमाव किया। महाराजा ने बड़लू पर सेना भेजी। इस सेना का सेनापति कुशलराज सिंघवी था। इसने जाकर बड़लू को घेर लिया। ठाकुर ने गढी का आश्रय लेकर मुकाबला किया। कुछ दिन लड़ाई हुई। अन्त में सिंघी ने साम उपाय से ठाकुर को शान्त किया और अपने साथ जोधपुर ले आया। महाराजा ठाकुर से अप्रसन्न थे इसलिये किले में नजर कैद कर दिया। कुछ अर्से तक किले में नजर कैद रहा। वि० सं० १९१६ की कार्तिक बदि अमावास्या को दीपमालिका का उत्सव था आतिशबाजी छूटने लगी। पहरेदार उसे देखने में लगे, इस अवसर पर ठाकुर किले से निकल गया। उसे पकड़ने को राज्य की सेना भेजी गई परंतु यह पकड़ा नहीं गया। और पकड़े जाने के अंदेशे से ठाकुर मारवाड़ छोड कर बीकानेर राज्य में चला गया। वहां के राजा सरदारसिंहजी ने इसका स्वागत किया और अपने

यहां रख लिया और नित्य खर्च का प्रबन्ध कर दिया। विपत्ति के दिन वहां निकाले और देश को लूटता रहा।

वि० सं १६२५ में सरदारों ने राज्य प्रबंध ठीक न होने से अपने गांव दबा लिये। उस समय मार्गशीर्ष मास में यह भी आसोप में आ बैठा। एक दो दिन राजकीय मनुष्यों से युद्ध हुआ। अंत में मार्गशीर्ष वदि अमावास्या को आसोप पर ठाकुर का पूर्ण अधिकार होगया। उस विषय का निम्न लिखित गीत उपलब्ध हुआ है—

भदोरा निवासी सांदू गिरवरदान कृत

गीत

परगह थट लियां सिंघरे प्राक्रम, रवताळे गाढ़ा पग रोप,
किंयौ अमल रजवट कांटाळे, आंटाळे ठाकुर आसोप ॥१॥
रिण रस फते वीर रस रीधो, मद पायो पीधो अणपार।
कमधज सिवे नांव जग कीधो, आप मते लीधो आधार॥२॥
भड़ां किंवाड़ जैत हत भुजळग, समदां लग नखतेत सराह।
धूहड़ नेर वंध चित धेठो, बैठो थह थांनक बेबाह ॥३॥
घोड़ां भड़ां समूह घूमरां, लीधां सँग उमराव लड़ाक।
किले अबीह गाळवां कीधा, उतली बळ पीधा ऐराक ॥४॥
लाख पटो आंकां विध लिखियो, जेबी जेब कही नह जाय।
अस हाथां चेतन अकबकियो, मद छकियो आतां गढ मांय ५
देवा दवा फिरादू दादू, लाधू बळ दिधणीगां लोग।
आदू धरा लेण की इचरज, जोध नवाधू खाटण जोग ॥६॥

रजवट ध्रम्म हुतो रँग रातो, अरंभांण खातो अणबीह ।
मद मातो कूंपो राव मारू, सिवनाथो चिरजीव सदीह ॥७॥

आसोप पर अधिकार करने से पूर्व ठाकुर ने अपनी जागीर मिलने के लिये महाराजा के पास अर्जी लिख भेजी थी उसके उत्तर में महाराजा ने खास रुक्का लिख भेजा था उससे प्रतीत होता है कि ठाकुर पर महाराजा की कृपा थी। खास रुक्के की प्रति लिपि–

"॥ श्रीनाथजी ॥

॥ ठाकरां सीवनाथसींघजी सुं मांरो जुहार वांचजो तथा अरजी थांरी आई समाचार मालुम हुवा सो थे जमाखातर राखजो मांरी पुरण मरजी है समाचार कांमेतीयांने फुरमाया है सो थांने लीखसी संवत् १६२५ रा काती सुद १०"

उसके पश्चात् दूसरा खास रुक्का इसी विषय का महाराजा ने फिर लिखा था उस समय ठाकुर का वकील जूंझारसिंह था जो महा बुद्धिमान् और प्रपंची था। खास रुक्के की प्रतिलिपि—

"॥ श्रीनाथजी ॥

ठाकरां सिवनाथसिंघजी सुं म्हांरो जुहार वांचजो। तथा किताक समाचार जुंझारसिंह ने फरमाया है सो केसी। म्हांरी मरजी है खातर खुसी राखजो मिति वैसाख सुद ७"

वि० सं० १६२७ में जागीर के अमल की चिट्ठियां सरदारों के नाम लिखी गईं, उस समय आसोप की भी अमल की चिट्ठी फाल्गुन वदि १३ को लिखी गई। बड़लू खालसे में रखा गया।

---

(१) यह संवत् राज्यकीय है, जिसका आरंभ श्रावण वदि १ को होता है।

(२) गांव बड़लू महाराजा तखतसिंहजी के पुत्र भोपालसिंहजी को दिया गया।

उसके लिये यह शर्त रखी गई कि जब महाराजा मिहरबान होवेंगे तब दे दिया जावेगा। रड़ोद आदि अन्य समस्त गांव बहाल हुए।

ठाकुर शिवनाथसिंह बड़ा वीर और साहसी पुरुष था। इसने विपत्ति के समय में कभी भी हिम्मत नहीं हारी और गरीबों पर बड़ा दया भाव रखा। जिस समय आसोप इससे छूट गया था उस समय यह लूट पाट करके अपना निर्वाह करता था। परन्तु जब इसे यह ज्ञात हो जाता कि यह गरीब अथवा जाति का ब्राह्मण वा साधु है तो उसको लूटना तो दूर रहा, अपना सवार साथ में देकर उसको उसके घर पर सकुशल पहुँचा देता।

वि० सं० १६२८ में महाराजकुमार जसवंतसिंहजी का विवाह नरसिंहगढ़ के राजा की कन्या से होना निश्चित हुआ। उस समय महाराजा ने बरात में जाने के लिये ठाकुर को खास रुक्का लिख कर भेजा कि महाराजकुमार की बरात नरसिंहगढ जावेगी सो तुम अच्छे ठाठ के साथ कार्तिक बदि ३ को जोधपुर आओ। खास रुक्के की प्रतिलिपि—

"॥ श्रीनाथजी ॥

ठाकरां सिवनाथसिंघजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो तथा मांरो पधारणो नरसिंहगढ काती बद ३ नैं होसी सु थे आछा साथ सामान सुं काती बद ३ ने अठे आय हाजर होवसो संवत् १६२८ रा आसोज सुद ११"

इसी वर्ष में महाराजकुमार जोरावरसिंहजी ने महाराजा से अर्ज किया कि मैं श्रीजीवणमाताजी के दर्शन करने को जाता हूँ, मार्ग में नागौर आवेगा, मैं नागौर का किला और नगर देखना चाहता हूँ, श्रीदरबार की आज्ञा होनी चाहिये कि वहां मुझे कोई रोक टोक नहीं करें। महाराजा ने आज्ञा दे दी परंतु उसके साथ यह फरमाया

कि तुम वहां ज्यादा दिन मत ठहरना। महाराजकुमार का कहना तो सरल था परंतु मन में कुटिलता थी, वे नागौर दबा लेना चाहते थे।

नागोर जाने से पहले जोरावरसिंहजी ने नागौर प्रांत के खाटू, आगोता, हरसोलाव आदि सरदारों से नागौर का राज्य दबाने की प्रतिष्ठित पुरुषों के द्वारा सलाह कर ली थी। उन्हें कहला दिया था कि हम नागौर आवें उस अवसर पर तुम अच्छे वीर सुभटों का संग्रह करके तोपें लेकर नागौर में हमारे शामिल हो जाना। यह गुप्त मंत्र किसी प्रकार से प्रगट न हुआ। जोरावरसिंहजी जोधपुर से प्रथम अपने पट्टे के गांव बेराई में गए। वहां गोठ की। वहां से नागौर गये। मानासर तालाव पर डेरा किया। वहां समस्त सरदार, जिनसे पहले सलाह हो चुकी थी, अपने २ सुभटों का संग्रह करके मरना ठानकर नागौर में आकर शामिल हुए। उस समय महाराजा आबू पहाड़ पर थे। महाराजकुमार जसवंतसिंहजी जोधपुर में थे। उन्होंने नागौर हाकिम को आज्ञा-पत्र लिख भेजा कि कोई महाराजकुमार अथवा रावराजाओं में से उधर आवे तो शहर और किले में प्रवेश न करने पावे। परन्तु जोरावरसिंहजी ने दिल्ली दरवाजे की तरफ हल्ला करके नागौर में प्रवेश किया। कुछ लोग निसेनियां लगाकर कोट पर चढ़ कर नगर में प्रविष्ट हुए। जोरावरसिंहजी कोट गिरा कर भीतर घुसे। कुछ लड़ाई हुई जिसमें दो विसनसांमी मारे गये। कुछ घायल हुए। बाहिर के भी कुछ मनुष्य मारे गये। जोरावरसिंहजी ने राज्य के अधिकारियों को पकड़ कर कैद किया। गांवों में रकम उघाई गई। शहर के लोगों से बीस हजार २००००) रुपये दण्ड के लिये गये। विसनसांमियों ने, जो गढ में थे, मुकाबला किया, परन्तु अंत में उनको समझाया गया कि हम गनीम नहीं हैं, महाराजा की औलाद हैं, इस प्रकार के वचनों से किले में के विसनसांमी भी शांत होगये।

इस उपद्रव के समय महाराजा ने अपने विश्वासपात्र आसोप ठाकुर शिवनाथसिंह के नाम खास रुक्का लिखकर भेजा कि "नागौर की ओर फसाद हो रहा है, ऐसा न हो कि मूंडवा और कुचेरा लुट जावे, इसलिये तुमको लिखा जाता है कि कुचेरा और मूंडवे का बंदोबस्त रखना। इसका पूरा खयाल रखना।" इस विषय का यह खास रुक्का है—

"॥ श्रीनाथजी ॥

ठाकरां सीवनाथसींघजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो तथा नागोर कानी फिसाद कर राखीयो है सो एक तो मूंडवो ने कुचेरो इणरो बंदोबसत राखजो इणरो पूरो खयाल राखजो संवत् १६२८ रा असाढ सुद १"

नागोर के किले पर जोरावरसिंहजी ने अधिकार कर लिया है, यह सुनकर ए० जी० जी० ने एजेंट साहब से पूछा कि "यह कैसे हुआ?" और महाराजा से भी पूछा गया कि "यह घटना आपकी इच्छा से हुई है अथवा जोरावरसिंहजी ने अपनी इच्छा से की है? उस समय महाराजा आबू पर ही थे। महाराजा ने इसके उत्तर में कहा कि "जोरावरसिंह ने हमें जीवणमाता का दर्शन करने के लिये पूछा था। हमने उसको जीवणमाता का दर्शन करने की इजाजत दी थी। इसके सिवाय हमने कुछ भी नहीं कहा था।" यह सुन कर ए० जी० जी० ने कहा कि "यदि ऐसा है और उसने नादानी की है तो उसके हक में बुरा होगा" और इसके साथ यह भी कहा कि "अगर आपकी आज्ञा विना उसने नागौर पर अधिकार कर लिया है तो आप खासरुक्का लिख दीजिये कि "तुम नागौर का किला और शहर छोड़ कर निकल जाओ, नहीं तो फौज आवेगी और तुमको निकाल देगी और तुमारे हक में बहुत बुरा होगा।" तब महाराजा ने ए० जी० जी० से कहा कि मैं खुद जाऊंगा और एजेन्ट

साहब को भी साथ लेजाऊंगा। जोरावरसिंह जैसे छोड़ेगा वैसे नागोर उससे छुड़ालेंगे।

आषाढ़ सुदि १२ को महाराजा बग्गी में बैठ कर जोधपुर आये। सुदि १३ को एजेन्ट साहब भी जोधपुर आ गया। सूरसागर में डेरा किया। उसने समस्त सरदार और मुत्सद्दियों को बुला कर कहा कि "तुम हमारे साथ चलो और जोरावरसिंहजी से नागोर छुड़ाओ।" उत्तर में सरदारों ने कहा कि "महाराजा नागोर पधारेंगे तब जोरावरसिंहजी स्वयं नागोर का किला छोड़कर महाराजा के चरणों में उपस्थित हो जायंगे।"

वि० सं० १६२६ की श्रावण बदि ३ को महाराजा ने नागोरी दरवाजे के बाहिर डेरा किया। बदि ४ को एजेन्ट साहब ने अपना चपरासी जोरावरसिंहजी के पास भेजकर कहलाया कि "तुम नागोर छोड़ दो नहीं तो दूसरी तजवीज होगी।" इस पर जोरावरसिंहजी ने कहलाया कि "हमने एजेन्ट साहब का कुछ भी विगाड़ नहीं किया है। मैं अपने पिता के घर में से मांगता हूं, मेरा भी प्रवंध होना चाहिये। इस उत्तर से एजेंट साहब कुपित हुआ। महाराजा को कहलाया कि "अब शिथिलता करने का समय नहीं है।" तब महाराजा श्रावण बदि ५ को जोधपुर से रवाना हुए। साथ में ४ बड़ी तोपें ली गई। बदि १३ को महाराजा का डेरा बड़लू में, १४ को आसोप में और सुदि ४ को मूंडवा में हुआ। उस समय मूंडवा में आसोप ठाकुर शिवनाथसिंह का प्रवंध था।

महाराजा और एजेंट साहब का डेरा मूंडवा में था उस समय महाराजा ने एजेन्ट साहब के साथ सलाह की तो वहां पर यह सलाह ठहरी कि एक वार समझास की जाय, यदि मान जायं तो अच्छी बात है, नहीं तो फिर दूसरा उपाय किया जाय। समझास के लिये महाराज की ओर से पंडित शिवनारायण कश्मीरी, एजेन्ट

साहब की तर्फ से मीरमुन्शी और सरदारों की तर्फ से कुचामन ठाकुर का कामदार हांसू खां गये। इन्होंने जोरावरसिंहजी को अनेक प्रकार से समझाया कि "आप महाराजा का कहना मान लें, आप के हक में ठीक होगा। आप महाराजा के पास चलें, आप उनके पुत्र हैं, वे आपके पिता हैं, पिता पुत्र का संबंध कैसा घनिष्ठ है, पुत्र पिता की आत्मा ही होती है, वे आपका भला ही करेंगे" परंतु जोरावरसिंहजी ने यह प्रत्युत्तर दिया कि "मेरा जन्म जोधपुर में हुआ है इसलिये जोधपुर की गद्दी का हक़दार मैं हूं। जसवंतसिंहजी का जन्म अहमदनगर में हुआ है इसलिये अहमदनगर के हक़दार हैं, जोधपुर के नहीं। तिस पर भी यदि श्री हजूर साहिबों की इच्छा जोधपुर की गद्दी उनको देने की है तो ख़ैर, परन्तु नागोर तो मुझे भी देना चाहिये।" यह सुन कर तीनों पीछे आए और सब समाचार कहे।

महाराजा ने इस उत्तर को पाकर हुक्म दिया कि मोरचे तंग किये जावें। तब जोशी हंसराज ने करबद्ध होकर महाराजा से निवेदन किया कि "आप मुझे आज्ञा दीजिये, मैं उन्हें समझाकर चरणों में लाकर उपस्थित कर दूंगा।" महाराजा ने कहा कि "अच्छा तुम जाओ और समझाओ यदि समझ जायं तो अच्छी बात है।" हंसराज जोरावरसिंहजी के पास गया और उनसे निवेदन किया कि "आपके उज्र सब सत्य हैं, परन्तु महाराजा साहब स्वयं आगए हैं और उनके मनमें पूर्ण संकट है और आप सपूत हैं, अपनी सुपुत्रता पर ध्यान देकर महाराजा के चरणों में उपस्थित होजाइये। इस बखेड़े को मिटा दीजिये। आप इस बखेड़े को मिटा देंगे तो एजेन्ट साहब प्रसन्न होजायगा और आपके हक़ में भला होगा।" इस प्रकार समझाकर हंसराज ने जोरावरसिंहजी को लाकर महाराजा के चरणों में उपस्थित कर दिया। जोरावरसिंहजी ने महाराजा के चरण छूकर अर्ज किया कि "आपने इतना परिश्रम क्यों उठाया? यह नागोर नगर

आपका है और मैं भी आप ही का हूं, जैसी इच्छा हो वैसा कीजिये।" यह सुन कर महाराजा प्रसन्न हुए और जोरावरसिंहजी को साथ में लेकर जोधपुर पधारे। आसोप ठाकुर ने मूंडवा और कुचेरे का प्रबंध बहुत उत्तम किया जिससे महाराजा उन पर अत्यंत प्रसन्न हुए।

इस वीरवर साहसी पुरुष का स्वर्गवास वि० सं० १६२६ की पौष सुदि १२ को हुआ। इसके पुत्र नहीं था।

ठाकुर शिवनाथसिंह के विषय की निम्न लिखित कविता उपलब्ध हुई है वह नीचे लिखी जाती है—

गीत

हुवै हैकंपा चोफेर दुनी सेस धू सुमेर हले,
राड़ झले आंमी सांमी चोड़ै झझ रोप।
आसमांन फाटो थांभो न लागो ठिकाणां ओरां,
आसमांन फाटां थांबो लगायो आसोप ॥ १ ॥
माहेस मेड़ते खेत वाही खाग तोपां माथे,
गही भुजां सताराही तोले भुजां गैण।
पती आसोप रा चढे सुरां लोक पाई फतै,
बिजै छत्रधारी सूं निभायो कूंपै वैण ॥ २ ॥
रतनेस आंटीले महेस जेम आंट राखी,
राखी घोड़ां भड़ां तणी तीख मारूराव।
रची आपरंगी झड़ी रूपगां सुरावां रागां,
चंगी मोजां समापे सुपातां करे चाव ॥ ३ ॥

मारू घरे केहरी आहुड़े खांगी फोजां तणी,
सादूल किले में मेली रसतां सकाज ।
सींह वखतेस तणो सिवो तपे दीह साजे,
अगंजी ठिकांणे भड़ां मुरब्बी सु आज ॥ ४ ॥
तेजपुंज दादा जेम अग्राजे उद्योत ताले,
राजे जोधांणरो थंभ अनंमी राठोड़ ।
अनेकां सत्रवां साज वीरता उद्योत ओपै,
माहेस रो हरो दीपे सदा वंस मोड़ ॥ ५ ॥

षोडश अध्याय ।

२६ । १५ ठाकुर चैनसिंह

इस का जन्म वि० सं० १९१७ की आश्विन शुक्ला १४ को गांव वारणी में हुआ था । यह ठाकुर गांव नेनड़ियां के ठाकुर गुमानसिंह का पौत्र और दौलतसिंह का तृतीय पुत्र था । दौलतसिंह के ३ तीन पुत्र थे । ज्येष्ठ पुत्र भैरोंसिंह पिता का स्वर्गवास होने पर पट्टाधिकारी हुआ । दूसरा पुत्र जोरावरसिंह अपने सहोदर के पास रहा । तीसरा पुत्र चैनसिंह आसोप गोद आया ।

यह ठाकुर बालपन से ही मधुरभाषी साहसप्रिय दृढप्रतिज्ञ और कुशाग्रबुद्धि था जैसा कि आगे चल कर इसकी जीवनी से प्रकट होगा ।

राव बहादुर ठाकुर चैन सिंहजी

इस ठाकुर की स्कूली शिक्षा साधारण थी, क्योंकि उस समय शिक्षा का अधिक प्रचार नहीं था। जब यह बारह १२ वर्ष की अवस्था को प्राप्त हुआ तो यह आसोप ठाकुर शिवनाथसिंह के कोई कंवर न होने के हेतु और नजदीकी हकदार होने के सबब वि० सं० १९२९ की माघ वदि ८ को आसोप गोद आया। उसी साल में माघ सुदि १५ को जोधपुर महाराजा श्री तख्तासिंहजी का स्वर्गवास होजाने के कारण यह ठाकुर फाल्गुन कृष्णा ५ को प्रथम ही प्रथम जोधपुर में आया और १२ दिन तक रीत्यनुसार श्रीदरबार के मातम में शरीक रहा।

वि० सं० १९२९ की फल्गुन सुदि ३ को महाराजा जसवंतसिंहजी राजसिंहासन पर विराजमान हुए तब उन्होंने प्रारम्भ में ही इस ठाकुर को अपनी नौकरी में ले लिया। महाराजा की इस ठाकुर पर पूर्ण कृपा व धनियाप थी। एक बार दरबार के पूछने पर कि "तुम्हारे ठिकाने का क्या हाल है और तुम्हारे साथ लोगों का कैसा वर्ताव है?" उस समय ठाकुर ने अपना समस्त दुःख निवेदन किया जो कि पाठकों को आगे चलकर विदित होगा। ठाकुर ने श्री दरबार से सविस्तर अर्ज किया, जिस पर दरबार ने फरमाया कि "ठाकरां! तुम तुम्हारे ठिकाने का अच्छी तरह सुधार और इन्तजाम करो। हमारे पास अगर कोई माजी वगैरह की शिकायत तुम्हारे खिलाफ आवेगी तो हम कोई ख्याल नहीं करेंगे। बल्कि तुम्हारा संकट दूर करने का यत्न किया जायगा।" महाराजा के इन वाक्यों से ठाकुर मन में परम संतुष्ट हुआ और महाराजा से घर जाने की आज्ञा लेकर आषाढ वदि १३ को वापिस आसोप आया और ठिकाने का काम अपने हाथ में लिया।

इस ठाकुर के गद्दीनशीन होने के समय ठिकाने की दशा अत्यंत ही शोचनीय थी। क्योंकि ठिकाना ऋणग्रस्त होने के कारण सर्व प्रकार

मय ओर से दबा हुआ था। समस्त ठिकाने की आमदनी बोहरों के हाथ में जाती थी और दरबार के भी बहुत से रुपये बकाया थे माजी साहिबा और छोटे बड़े सब कर्मचारी इनके विरुद्ध थे। ठिकाने की ऐसी विकट स्थिति होते हुए भी इस ठाकुर ने ठिकाने के जमा खर्च की तर्फ ध्यान देकर अपनी विचक्षण बुद्धि और विपुल साहस तथा धैर्य द्वारा ठिकाने का प्रबंध बड़ी उत्तमता से किया और दिन ब दिन उन्नति की।

ठिकाने की दशा बहुत ही गिरी हुई थी परंतु कार्यकुशल बुद्धिमान् ठाकुर ने अल्प काल में ही अपने ठिकाने की दशा सब प्रकार से सुधार कर ठिकाने को उन्नत दशा पर पहुंचा दिया। उसे देख कर लिखना पड़ता है कि ठाकुर को दरबार साहिबों की नौकरी में रहते और ठिकाने का खर्च आदमी, घोड़े, ऊंट, गाड़ी, बैल वगैरह ठिकाने की योग्यता के अनुसार रखते हुए भी ठिकाने को अनृण करना, खर्च चलाना और ठिकाने को उन्नति देना उसी ठाकुर जैसे नीति-निपुण विचक्षण व्यक्ति का ही काम था।

यह ठाकुर १४ वर्ष की अवस्था में पहुंचा उस समय इसका संबंध (सगाई) रियासत अलवर के ठिकाने गढी के अधिपति राव बहादुर ठाकुर मंगलसिंहजी सी० आई० ई०, जो अलवर राज्य के प्रधान मंत्री थे, की सौभाग्यवती पुत्री श्रीमती सोनकुंवर के साथ हुआ। टीके का दस्तूर विक्रमी सं० १६३० की फाल्गुन सुदि १ को आसोप में हुआ था।

तदनन्तर वि० सं० १६३१ की आश्विन बदि ५ पंचमी को महाराजा ने खास रुक्का भेजकर ठाकुर को बुलाया। जिसकी प्रतिलिपि निम्न लिखित है—

" श्रीनाथजी

ठाकरां चैनसिंघजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो तथा कदमां हाजर

होवजो म्हांरी मरजी है। संवत् १९३१ रा आसोज बद ५"

जब यह ठाकुर महाराजा से गांव जाने की आज्ञा लेकर गांव को रवाना हुआ उस समय श्रीदरबार साहिबों की ओर से वि० सं० १९३१ की ज्येष्ठ सुदि ११ को हाथी सिरोपाव इनायत हुआ जो निम्न लिखित रुक्के से स्पष्ट होता है—

"॥ श्रीजलंधरनाथजी

पोता सुं दीजो मिति आसोज बद १० शुकर मुकाम पायतख्त गढ जोधपुर सं० १९३२ रा

तालके इनायत खरच—राठोड़ चैनसिंह शिवनाथसिंघोत खांप कूंपावत रे पटे आसोप तीणां ने सीखरो मुजरो सं० ३१ रा जेठ सुद ११ कियो तरां निवाजिश इनायत कराई तिणरी कीमत रा.

५००) हाथी इनायत करायो तिणरी कीमत रा रोकड़ रु० ५००) पांच सौ
३००) पालखी इनायत कराई तिणरी कीमत रा रुपया तीन सौ
८००)

इण मुजब रुपया आठसौ मांडने दीजो छु॥ दा॥ महता हरजीवणदास, चीठी बगसियां रा दफतर सुं अखरे रुपया आठसौ

—परतापसिंह"

प्रथम लिखा गया है कि उक्त ठाकुर ने उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। साधारण मारवाड़ी लिखना, पढ़ना और हिसाब जानता था, तथापि अपनी बुद्धिमानी और विचक्षणता के कारण बड़े २ होशियार और कानून कायदा जाननेवालों को कायल करके नीचा दिखाता था। इसीसे श्रीदरबार साहिबों ने अल्पावस्था में ही इसको अपने राज्य प्रबंध के कार्य में संयुक्त किया।

इसी साल जोधपुर में गुलाबसागर तालाब के पास राजमहलों में प्रजावर्ग के झगड़ों को सुभीते से निपटाने के लिये श्रीदरबार

की तरफ से एक पंचायत मुकर्रर की गई जिसमें इस ठाकुर को भी श्रीदरबार ने खास रुक्का भेज कर पंच मुकर्रर फरमाया।

यह ठाकुर बड़ा साहसी और सच्चा स्वामिभक्त था, इसीसे श्रीदरबार जब कभी बाहर पधारते तो इसको प्रायः अपने साथ रखते थे। और जब कभी जरूरत होती तब खास रुक्का भेज कर बुलाया करते थे। खास रुक्के की प्रति लिपि—

"श्रीनाथजी

ठाकरां चैनसिंघजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो तथा अठे काम रो मुदो है सो मिताब हाजिर होवजो संवत १९३२ रा आसाढ वद ५"

वि० सं० १९३३ के माघ मास में महाराजा जसवंतसिंहजी दिल्ली दरबार के अवसर पर दिल्ली पधारे तब इस ठाकुर को अपने साथ ले गये।

इसी साल बीकानेर दरबार डूंगरसिंहजी का विवाह भुज रियासत में हुआ था। बरात रेल न होने के कारण खुश्की रास्ते गई थी। उस समय मार्ग में आसोप आया, ठाकुर के मनुहार करने पर बीकानेर दरबार ने पौष सुदि ५ को आसोप में डेरा किया और ठाकुर की तरफ से गोठ दी गई। ठाकुर ने एक घोड़ा और ४० सजे हुए थालों से दरबार में नजराना भेजा। ठाकुर की भक्ति और प्रेम देखकर महाराजा परम प्रसन्न हुए। महाराजा के साथ ३५०० आदमी घोड़े, ऊंट और गाड़ियां वगैरह की बड़ी भीड़ थी।

कार्यवश ठाकुर जोधपुर आया। यहां ठाकुर के विवाह दिन की सूचना मिलने पर महाराजा से आज्ञा लेकर ठाकुर आसोप को रवाना हुआ उस अवसर पर श्री दरबार से वि० सं० १९३४ में नीचे लिखा हुआ सिरोपाव इनायत हुआ।

सिरोपाव संबंधी आज्ञा की प्रतिलिपि—

राव बहादुर ठाकुर मंगलसिंहजी सी. आई. ई. ठिकाने गढी

"॥ श्रीनाथजी साय छै ॥

कपड़ां रा कोठार सुं दीजो । तथा रा ॥ चैनसिंघ शिवनाथसिंघोत
टे गांव आसोप तिणांने सिरोपाव हुवो सं॥ ३४ में जिणरा
ण मुजब दीजो ।

२ बागो कीन खापरो थान
१ १
२ कामेनी २ रे दुसाला
४

सलामती बोलीजी जिणमेंली जिनस चीजां दीवी होवे सो
ठीक, ने कीं रही हुवे सो दे दीजो सं १९३५ रा वैशाख वद १

परतापसिंह"

वि० सं० १९३४ की माघ सुदि ५ को इस ठाकुर का विवाह ऊपर
लिखे हुए अलवर मिनिष्टर रावबहादुर ठाकुर मंगलसिंहजी सी०
आई० ई० की पुत्री से ठिकाने गढी में सानंद धूमधाम के साथ
संपन्न हुआ । बरात आसोप से अजमेर तक खुश्की रास्ते गई ।
गढ़ी ठाकुर मंगलसिंहजी ने बरात का बड़ा आदर सत्कार किया
जिससे बराती अत्यंत प्रसन्न रहे । और दुल्हा बने हुए आसोप ठाकुर
ने त्याग देकर चारण भाटों को अत्यंत प्रसन्न किया, जिससे कूंपावत
ठाकुर की कीर्ति सर्वत्र प्रसृत हुई । इस विषय का गीत भदोरा
निवासी सांदू गिरवरदान ने कहा था वह यहां उद्धृत किया जाता है—

गीत

सझे जांन घमसांण भाई भड़ां साझरे,
ताकवां आजरे कुरंद तोड़े ।

मांडवो गढीपति मंगल महाराज रे,
जोम कूंपेसरे कमध जोड़े ॥ १ ॥
बांधतां मोड़ सेवा सुतन वीर वर,
लखां मुख हजारां प्रभत लीधी ।
कूरमां जाग सामांन भारी किया,
कूंपहर त्याग दे अचड़ कीधी ॥ २ ॥
कविंदां दियण सिरपाव मोती कड़ा,
धराथंभ अनोखा बिरद धारू ।
तणीबंध नरूका झोक लागे तनैं,
मोड़बंध भोकरे झोक मारू ॥ ३ ॥
पती आसोप गघ बाज मोजां प्रसद,
वींद बण चैन द्रब छोल बूठो ।
आवतां नरूकां चौक इम आखवां,
ताकवां भाग राठोड़ तूठो ॥ ४ ॥

विवाह होजाने के अनन्तर महाराजा ने ठाकुर को रुक्का भेज कर बुलाया ।

खास रुक्के की प्रति लिपि—

"श्री महादेवजी

ठाकरां चैनसिंघजी सुं म्हांरो जुहार बांचजोः तथा कामरो मु[illegible] है सो सिताय हाजिर होवजो । संवत १९३४ रा फागण वद ६"

महाराजा का खास रुक्का आने पर ठाकुर जोधपुर में आकर म[illegible]

राजा के चरणों में उपस्थित हुआ और कई महीनों तक वहीं निवास किया। वि० सं० १९३५ के मार्गशीर्ष मास में ठाकुर को यह खबर मिली कि रेजिडेंट साहब मिस्टर केप्टन डी० डब्लू० के० बार, आसोप की हवेली ठाकुर से मिलने के लिये आवेंगे। यह खबर मिलने पर ठाकुर जोधपुर गया और मार्गशीर्ष कृष्णा १२ को रेजिडेंट साहब हवेली आया उसका ठाकुर ने अपने मित्र सरदारों सहित स्वागत किया। रेजिडेंट साहब भी इनकी योग्यता देख कर परम प्रसन्न हुआ।

वि० सं० १९३६ में श्री दरबार ने नीचे लिखा हुआ खास रुक्का भेज कर ठाकुर को जोधपुर बुलाया। खास रुक्के की प्रतिलिपि—

"॥ श्रीनाथजी

ठाकरां चैनसिंघजी सुं म्हांरो जुहार वांचजो तथा कामरो मुदो है सो शिताब सुं कदमां हाजिर होवजो संवत १९३६ रा असाढ सुद ५"

ठाकुर ने कुछ दिन श्री दरबार की सेवा में रह कर गांव जाने की आज्ञा मांगी उस समय श्रीदरबार से ठाकुर को नीचे लिखी नवाजिश हुई उस आज्ञा पत्र की प्रतिलिपि—

" श्रीनाथजी सत्य छै

जरजर खाना सुं दीजो। तथा आसोप राठोड़ चैनसिंघ शिवनाथसिंघोत खांप कूंपावत ने सीख हुई जिणरी निवाजिस इण मुजब दीजो

१ पिंडांरे मोतीयां री कंठी
४ कामेतियां जणा २ रें

२ कड़ांरी जोड़ी
२ मोतियां रा चौकड़ा

———
५

संवत १९३७ रा माह वद ४

" श्रीनाथजी सत्य छै

कपड़ां रा कोठार सुं दीजो तथा आसोप राठोड़ चैनसिंघ शिवनाथसिंघोत खांप कूंपावत ने सीख हुई जिणरो सिरोपाव इण मुजब दीजो

१ पिंडांरे दुपट्टो
२ कामेतियां जणां २ रे दुशाला
———
३

सं० १९३७ रा माह वद ४"

वि० सं० १९३८ में महाराजा जसवंतसिंहजी का विचार जोधपुर राज्य में रेलवे लाइन बनाने का हुआ उस समय सलाह के वास्ते ठाकुर चैनसिंह को बुलाया। क्योंकि महाराजा जानते थे कि ठाकुर चैनसिंह दूरदर्शी पुरुष है, अवश्य नेक सलाह देगा। पूछने पर ठाकुर ने महाराजा से अर्ज किया कि "यह तो बहुत ही उत्तम बात है प्रजा को सुख और लाभ की सूरत है।" यह सुनकर महाराजा ने ठाकुर की प्रशंसा की और घर जाने की आज्ञा मांगने पर आज्ञा देकर निम्न लिखित सिरोपाव इनायत किया। उस आज्ञा पत्र की प्रतिलिपि-

"॥ श्री जलंधरनाथजी साय छै

जरजर खानासुं दीजो तथा आसोप ठाकुरां ने सीख रो इण मुजब इनायत हुवो है सो दीजो

१ पींडांरे मोतीयां री कंठी १ अेक
४ कामेती जणां २ ने
२ प्रो॥ मूलचंद

१ कड़ां री जोड़ी
१ मोतीयां रो चौकड़ो
२ राठोड़ जुंझारसिंघ
१ कड़ांरी जोड़ी १
१ मोतियां रो चौकड़ो
४

इण मुजब दीजो
सं॥ १६३८ रा मिगसर सुद १२

" श्री जलन्धरनाथजी साय छै

कपड़ां रा कोठार सुं दीजो तथा आसोप रे ठाकरां ने सीखरो इण मुजब इनायत हुवो है

१ पींडारे दुपटो अेक
२ कामेती जणां २
१ प्रो॥ मूलचन्द रे दुशालो
१ रा॥ जुंजारसिंघरे दुशालो
३

इण मुजब दीजो
सं॥ १६३८ रा मिगसर सुद १२

वि० सं० १६३६ की माघ वदि ३ को बूंदी महाराजा रामसिंहजी अपने पुत्र का विवाह करने के लिये बरात बनाकर बूंदी से जोधपुर आए। उस विवाहोत्सव पर महाराजा ने बड़े २ सरदारों को बुलाया। उक्त ठाकुर के नाम आज्ञापत्र भेजा गया। महाराजा के आज्ञा पत्र को शिरोधार्य करके ठाकुर बड़ी सजावट के साथ जोधपुर गया।

खास रुक्के की प्रतिलिपिः—

" श्रीनाथजी

ठाकुरां चैनसिंघजी सुं म्हारो जुहार वांचजो तथा आछी जमीत व जलूस सुं सीताब हजूर आवजोः संवत् १९३९ रा पोस बद १२

बूंदी महाराजा जोधपुर पहुंचे उस दिन संध्या समय से पूर्व ४ बजे के अनुमान बूंदी महाराजा रामसिंहजी ने हाथी के होदे बैठ कर सजे धजे पांच हजार बरातियों के साथ सवारी की। इधर महाराजा जसवंतसिंहजी हाथी के होदे में विराज कर बूंदी महाराजा का स्वागत करने के लिये राईकाबाग से रवाना हुए। इस समय जोधपुर महाराजा जसवंतसिंहजी के साथ करीब दस हजार मनुष्यों का जमाव होगया था। गांव डीगाड़ी की सीमा में दोनों महाराजाओं की मुलाकात होना नियत हुआ था। उधर से बूंदी महाराजा की सवारी और इधर से मरुधराधीश की सवारी हुई। दोनों में एक मील का फासला है, दोनों ओर नक्कारों पर डंके पड़ रहे हैं, सुरणाइयों (एक प्रकार का फूंक से बजने वाला वाद्य) का रसीला घोष हो रहा है, जिस घोप से अरण्य गूंजने लगा, मानों अरण्य गूंजार कर रहा है, रज से आकाश आच्छादित हो गया है, दर्शक गण दौड़ २ कर आगे से आगे बढ़ रहे हैं, वह दृश्य यद्यपि विवाह संबंधी था, तथापि ऐसा दिखाई देता था कि मानों दोनों ओर की सेनाएं युद्धार्थ अभिमुख आ रही हैं। दोनों महाराजाओं का गांव डीगाड़ी की सीमा में, जो स्थान मिलाप का नियत था, हाथियों के होदे रीत्यनुसार मिलाप हुआ। फिर बूंदी महाराजा का डेरा मालदड़ों के मैदान में कराया गया जहां दलबादल[1] नामक डेरा और अनेक सामियाने खड़े कराये गये थे। उस सवारी में ठाकुर चैनसिंह को खवासी (प्रधानगी) की जगह बिठाया गया था। फिर जब बूंदी महाराजा की सवारी किले पधारी तो मार्ग में आसोप की हवेली के सामने हाथी को बिठाकर उन्होंने रीत्यनुसार ठाकुर की नजर ली।

---

१ दलबादल डेरा इतना बड़ा है कि जिस में हजार पन्द्रह सौ आदमी बैठ सकते हैं.

ठाकुर चैनसिंह बड़ा मिलनसार और पूर्ण सज्जन पुरुष था। जिस पुरुष से ठाकुर की मुलाकात होती वह उसीका बन जाता था। वि० सं० १९३९ की फाल्गुन वदि ६ को रेजिडेंट लेफ्टिनेंट कर्नल डबलू टी डी, साहब ठाकुर से मिलने को हवेली आया और इनके आपस में एक वार के मिलने से ही अच्छी मित्रता होगई, जैसा कि नीचे लिखे पत्र से विदित होता है।

" श्री परमेश्वरजी ॥

सिद्ध श्री सर्वोपमा ठाकुरां राज श्री चैनसिंघजी जोग्य कर्नल डबलु टी डी साहब बहादुर सी० ऐस आई० पोलिटिकल एजेंट मगरबी रियासत हाय राजपूताना लिखावतं सलाम वंचावसी। अठा का समाचार भला है राजका सदा भला चाहिजे। अपरंच खत राज का लिखा हुवा असाढ बद १ संवत हालका आया और समाचार राजके जोधपुर में आणे आसोप से खैराफियत मिजाज के मालूम हुवा राजने हमारे खैराफियत मिजाज हाल दरियाफत किया सो जबाब में राजको लिखणे में आता है कि खुदाके फजल से हमारा मिजाज खैराफियत से है। फकत। और समाचार राजकी खुशी मिजाज का लिखावसी। ता० २० जून सन् १८८९ ई० मुकाम आबू

Sd. L. H. Col
w. tweedie Agent
Political

विवाह कार्य संपादित होने पर यह ठाकुर वापिस अपने गांव आसोप आगया मगर फिर ४। ५ मास के अनंतर श्रीदरबार ने नीचे लिखे खास रुक्के से इनको जोधपुर याद फरमाया जिससे यह ठाकुर जोधपुर गया।

खास रुक्के की प्रतिलिपि—

" श्रीनाथजी

ठाकरां चैनसिंहजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो तथा डोढी सिताब हाजिर होवजो संवत् १६४० रा असाढ सुद १२"

वि० सं० १६४१ की भादों सुदि ११ को इनके प्रथम कंवर फतेसिंह का जन्म अपने ननिहाल गढ़ी नगर में हुआ। गढ़ी से पुत्रोत्पत्ति के समाचार लेकर वहां का मनुष्य आया और उसने मुख जबानी कंवर होने के समाचार कह कर पत्र दिया उसे पढ़ कर ठाकुर अत्यंत आनंदित हुआ, फूले अंग नहीं समाता था। उसी समय बधाई दार को पूर्ण द्रव्य देकर संतुष्ट किया। ठिकाने में ठौर ठौर नक्कारों की ठौर होने लगी। मंगल गीत गाये जाने लगे। दास दासियों को नवीन वस्त्र व आभूषण इनाम दिये जा रहे हैं। चारण भाट आदि स्तुति पाठक गुणगान कर रहे हैं। उन्हें मोती, कड़े, दुपट्टे, मंदीलें आदि दिये गए हैं। समस्त बंधुवर्ग इस उत्सव पर आए हैं, उनका यथोचित सत्कार किया गया है। सभा के अंदर अफीम की मनुहार होरही है। सब लोगों के मुखों पर खुशी छारही है। इतना विशेष आनंद होने का कारण यह था कि दो तीन पीढियों से ठिकाने में गोद ही आते थे। ईश्वर की कृपा से इस समय यह बाधा दूर हुई। इस विषय का गीत उस समय किसी कवि ने कहा था वह नीचे लिखा जाता है—

गीत

दामां हजारां गरीबां उग्र भाल़रो लुटाय दीधो,
रीधो मठां सालरो कलेजे भालो रोप।
लाखां मुखां दूण चित वाल़रो सोभाग लीधो,
औछाह ऊमदा कीधो लालरो आसोप॥ १॥
जातरो मुरब्बी सारी जहांन सरावे जादा,

सूमां उग्र हाथरो न स्वाही सूल़ ।
आथां अप्रमाणरो उडातां सैणां मोद आयो.
कूंपांण भाणरो थायो तातरो कैतूल़ ॥ २ ॥
अंक धारी जचायो हियामें सैणां मोद आछो.
सारी रीत कैतूल़ मचायो प्रभा साव ।
अदेवाल़ां न चायो जहांन थारी कीत आखे,
चैनसिंघ रचायो पुत्ररो भारी चाव ॥ ३ ॥
आभ आणीं ठिकांणे गाडियो नथी दाम आघो,
इल़ा रीझां बखांणी बैंछबा लागो आथ ।
कैतां रौर भागो जला गहांणी चिरंजी कूंपा,
वागो थाल़ सुजाव नरिंदां जांणी बात ॥ ४ ॥

इस अवसर पर ठाकुर ने ऊंट भी बड़ी संख्या में इनायत किये जिस विषय का गीत किसी कवि ने कहा था वह इस प्रकार है—

गीत

भारी कुल़ भांण चैन उग्रभागी,
थेटु वडकां विरद थया ।
सांट हुकम देवासी सूंपे,
कूंप घर घर ऊंट किया ॥ १ ॥
गातां सलिल कांगरा गढरा,
आथां भर वाथां आखेट ।
जातां जुगां सुजस नह जावे,

पातां घर बाधा पाकेट ॥ २ ॥

अंगरा प्रचंड आरसी ईडर,

घाट सुघाटां मोल घणां ।

बीजा होड करै कुण बापो,

तोड दिये शिवनाथ तणां ॥ ३ ॥

कूंपाहरा वधावै कूरब,

आडे दिन थावै जस ओप ।

जाचै जके घरां चढ जावै,

ऊंठां दत पावै आसोप ॥ ४ ॥

कंवर जन्म की बधाई पहुँचने पर ठाकुर ने गांव जाने की आज्ञा ली तो श्रीदरबार की तर्फ से नीचे लिखी नवाजिश हुई—

"१५० सं॥ ॥ श्रीजलंधरनाथजी ॥

॥ जरजर खाना सुं देजो । त्था आसोप रा ठाकुरां ने श्री हजूर सुं गांवरी सीख हुई है तीणांने मदाबंद सरसने तफसील

पींडांरे कंठी

कामनीयां २ रे कड़ा मोती

इण मुजब दीजो

सं॥ १६४१ रा मी॥ सुद ६ ता॥ २७ नवम्बर सन् १८८४ ई॥

सही अंग्रेजी में

गांव की सीख करने के पहले ठाकुर से मिलने को वि० सं० १६४१ की भाद्रपद सुदि १४ के दिन लेफ्टिनेंट कर्नल पी० डब्ल्यू०

पौलेट साहब रेजिडेंट आसोप की हवेली आए जिनका स्वागत ठाकुर ने बहुत उत्तम रीति से किया।

वि० सं० १६४२ की पौष वदि १३ को श्रीदरबार इनको अपने साथ आखेट में देसूरी ले गये। ठाकुर साहब बंदूक चलाने में बड़े दक्ष थे। इनका निशाना अच्छा होने के कारण श्रीदरबार आखेट में भी इनको प्रायः अपने साथ रखते थे।

तदनंतर इसी साल की माघ वदि ३० अमावास्या को श्रीदरबार के कनिष्ठ भ्राता सर प्रतापसिंहजी घोड़ों की रेस देखने के लिये लखनऊ गए तब वे इनको अपने साथ लेगये। क्योंकि महाराजा प्रतापसिंहजी जानते थे कि आसोप का ठिकाना सदा से स्वामिभक्त रहा है और इसीसे श्री दरबार साहिबों की इन पर पूर्ण अनुकम्पा है। जिस पर मालिक मिहरबान होता है उसका आदर सन्मान सब कोई करते हैं। स्वामिभक्ति एक ऐसी वस्तु है कि वह स्वामी को अपनी ओर आकर्षित करके अपने अभिमुख कर लेती है। स्वामिभक्ति एक वशीकरण मंत्र है।

वि० सं० १६४२ की वैशाख वदि १२ को रेजिडेंट लेफ्टिनेन्ट कर्नल एच० पी० पीकॉक साहब ठाकुर से मिलने को हवेली आए और पूर्ण मित्रता के ढंग से मिले। उस समय रेजिडेन्ट लोग इन सरदारों से मिलना और प्रेम बढ़ाना उचित समझते थे।

महाराजा की ठाकुर पर पूर्ण कृपा थी और ये भी सदा सेवा में तत्पर रहते थे। ठाकुर की सेवा और बरताव से प्रसन्न होकर श्री दरबार ने वि० सं० १६४२ की ज्येष्ठ वदि ३ को नीचे लिखे गांवों का पट्टा इनायत किया। पट्टे की प्रतिलिपि—

" श्री जलंधरनाथजी साय छै

(सही श्रीदरबार साहबों की)

स्वारूप श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज म्हाराजा श्री जसवंत-सिंघजी वचनायतं राय बहादुर म्हेता बीजैमल दिसे सुप्रसाद वांचजो तथा राठोड़ चैनसिंघ सीवनाथसींघ बखतावरसिंघोत खांप कूंपावत नुं मेरवान होय नैं पटो इनायत कीयो है सो संवत १६४२ री साख उनालु था अमल देजो गांव में बीना हुकम सांसण डोहली देण न पावै दाण जमैबंधी वगेरा बाब दरबार रा है

६०००)५ परगना रा गांव

४०००)३ गढ जोधपुर रा गांव

७५०)१ गोयंदपुरो तफै आसोप जागीरात राठोड़ सुरजमल मूलसींघोत खांप कूंपावत री

७५०)१ गादैड़ी तफै लवेरो जागीरात चुहाण मानसिंह अजीतासिंघोत री

२५००)१ पालड़ी राणावतां तफै आसोप जागीरात राणावत पनैसिंह देवी-सिंघोत नै सा॥ जीतमल मनरूप री

४०००)३

३०००)१ परगने मेड़तारो गांव खारीयो बडो तफै रायण तागीरात पातावत पीरदान भेरूंसींघोत ने अरजनसींघ नाथुसींघोत खांप कूंपावत री

२०००)१ परगने फलोदी रो गांव चीमणवो तागीरात चीमनसींघ जुगतसींघोत खांप पातावत री

९०००)५

रेख नव हजार री.........................गांव पांच

। संवत १९४२ रा जेठ बद ३ दुवो श्रीमुख परवानगी राठोड़ मंगलसींघ गुमानसिंघोत खांप चांपावत मुकाम पायतखत गढ जोधपुर

। अमल दीजो । प्रतापसिंह

लि॥ राय बाहादुर मेता बीजेसींघ करणसींघोत सं॥ ४२ री साख उनालु था अमल दीजो

। नकल लीवी श्री हजूररे दफतर । नकल लीवी बगसीयांरे दफतर

। नकल लीवी दीवाणरे दफतर । नकल लीवी चोकी नवेसांरे दफतर

। नकल लीवी चोकी नवेसांरे दफतर ॥"

उक्त गांव कुछ अर्से तक तो इन ठाकुर के पट्टे में रहे परन्तु इन गांवों के पुराने जागीरदारों के बलवा करने व श्रीदरबार के पास उज्र पेश करने पर श्रीदरबार ने फरमाया कि "हमने तुम्हारी सेवा से प्रसन्न होकर अभी जो गांव दिये हैं तुम इस समय उन गांवों को छोड़ दो मैं इन गांवों व बड़लू (जो पहले जब्त हो चुका है) की एवज में दूसरे गांव तुमको देदूंगा।" महाराजा के फरमाने पर ठाकुर

ने स्वामी की आज्ञा शिरोधार्य करके ऊपर लिखे गांवों को छोड़ दिया।

इसी साल की ज्येष्ठ सुदि १५ को ठाकुर तीर्थ यात्रा करने को गये और तीर्थ यात्रा करके आषाढ सुदि ५ को आये। इसके कुछही अर्से के बाद आश्विन सुदि ८ का लिखा हुआ श्रीदरबार साहिबों का खास रुक्का आया कि लाट साहिब बहादुर आनेवाले हैं, इसलिये अच्छी सजावट के साथ जल्दी हाजिर होओ।

खास रुक्के की प्रतिलिपि—

" श्रीनाथजी

ठाकरां चैनसिंहजी सुं म्हांरो जुहार वांचजो। तथा लाट साहब बहादुर रो अठे आवणो हुसी सो आछी जलूस सुं वाचत रुके सिताब हाजर होवजो संवत १९४२ रा आसोज सुद ८"

इस खास रुक्के को शिरोधार्य करके ठाकुर अच्छी सजावट करके जोधपुर गए। लाट साहब बहादुर लार्ड डफरिन के जोधपुर में आने पर रीत्यनुसार दरबार हुआ। जिसमें ठाकुर ने अपने स्थान को सुशोभित किया।

वि० सं० १९४३ की श्रावण बदि २ को इनके द्वितीय पुत्र गुलाबसिंह का जन्म हुआ परंतु वह तुरंत ही देवलोक सिधार गया।

पहले लिखा जाचुका है कि श्री दरबार साहिबों का इस पर पूर्ण विश्वास था और इसका निशाना भी अच्छा था इसलिये श्रीदरबार आखेट करने को पधारते तब इसको अपने साथ लेजाते।

वि० सं० १९४३ की कार्तिक सुदि १४ को श्रीदरबार देसूरी और मार्गशीर्ष सुदि ९ को जालोर और जालोर से जोधपुर पधार कर फिर जोधपुर से पौष सुदि ९ को डुवा[illegible]
को आबू पहाड़ पर भ्रमणार्थ व आखे[illegible]
को साथ लेगये।

जालोर में यह ठाकुर श्री दरबार के साथ ओदी में बैठा हुआ था उस समय नाहर सामने आया तो श्री दरबार के यह फरमाने पर कि "ठाकरां इस नाहर की शिकार तुम करो।" ठाकुर ने नाहर के गोली लगाई जिससे वह नाहर एक ही गोली में चित होगया।

वि० सं० १६४४ की मार्गशीर्ष वदि ११ को महाराजा श्री जसवंतसिंहजी साहब अपने जनाने सरदार तथा महाराजा प्रताप-सिंहजी व किशोरसिंहजी के जनाना सरदारों के साथ जिसमें ३२ जनाने सरदार और एक सहस्र मनुष्यों की भीड़ भाड़ थी, बड़े समारोह के साथ आसोप पधारे और ३ दिन आसोप में विराजे। इस अवसर पर ठाकुर ने दरबार को २ घोड़े और २ ऊंट नज़र किये। अमले की अच्छी खातिरदारी की और सब सरदारों की योग्यता-नुसार नज़र न्योछावर करके पहरावनी[1] दी। ठाकुर का प्रबंध देख कर दरबार बहुत प्रसन्न हुए और ठाकुर को नीचे लिखे अनुसार हाथी सिरोपाव इनायत फरमाया—

७५०) ठाकुर के लिए सिरोपाव

५६०) हाथी १ के ५००) दुशाला की जोड़ १ के ६०)

४४) दुपट्टा १ के २५) मंदील १ के ११) कीनखाप के ८)

१४६) फुलगारी के ६) मोतियों की कंठी के ८०) सिरपेचके ६०)

———
७५०)

(१) पहरावनी का दस्तूर ठाकुर की तरफ से इस सबब से किया गया कि श्रीदरबार साहब और ठाकुर दोनों ठिकाने झालामंड के भानजे थे।

२६०) कामदार वकील वगैरह चार आदमियों के लिये-
१८०) कड़ोंकी जोड़ी ४ के। दुशाला की जोड़ ४ के
१००) ८०)
८०) मोतियों के चोकड़े ४ के
२६०)

१०१०)

ऊपर लिखी हुई नवाजिस फरमाकर दरबार की सवारी नागोर पधार गई और उसी अवसर पर गैरासणी के ठाकुर समर्थसिंह को, जो उस समय आसोप का कामदार था, इकेवड़ी ताजीम इनायत फरमाई।

वि० सं० १९४४ में ता० २२-९-१८८७ को राज्य कार्य के सुप्रबंध के लिये दरबार की तरफ से स्टेट कौंसिल नियत की गई जिसमें दरबार ने इस ठाकुर को भी एक मेम्बर मुकर्रर फरमाया, जिसमें इसने बहुत वर्षों तक काम किया। दूसरे मेम्बरों के तनख्वाह लेते हुए इस से भी तनख्वाह लेने को कहा गया तो इस ने वापिस अर्ज किया कि हम तो श्रीदरबार के हमेशा के सेवक हैं। रोटी के वास्ते दरबार ने हम को काफी जागीर दे रक्खी है। मैं तनख्वाह नहीं लूंगा। इस प्रकार इस ने हमेशा रियासत की सेवा अवैतनिक रूप से ही की, जिससे श्रीदरबार ने प्रसन्न होकर वि० सं० १९४५ की पौष वदि ४ को इसके गांव वड़लू (रेख. रु० ४०००) आमद रुपया १५०००) की एवज़ में, जो पहले जप्त हो चुका था, गोडवाड़ परगने का गांव डूंडा खेड़ा २ रेख रु० ६०००) और परगना बिलाड़े का गांव कागल रेख रु० ७५०) जुमले दो गांव इनायत फरमाये। जिनकी सलामती महाराज श्री सर प्रतापसिंहजी साहब ने बोली। इन गावों का पट्टा जो सादिर हुआ उस पट्टे की प्रतिलिपि नीचे दी जाती है—

"॥ श्री जलंधरनाथजी साय छै

। सही श्रीदरबार साहबों की

॥ स्वारूप श्री राजराजेश्वर महाराजाधीराज म्हाराजा श्री जसवंतसिंघजी बचनायतं राय बहादुर म्हेता बीजेमल दीसे सुप्रसाद बांचजो तथा राठोड़ चैनसिंघ सीवनाथसींघ बखतावरसींघोत खांप कूंपावत सुं म्हेरवान होयने पटो इनायत कीयो है सो संवत १९४५ री साख सांवणु था अमल देजो गांवमें बीना हुकम सांसण डोहली देण न पावे दाण जमेबंधी वगेरे बाब दरबार रा है

६७५०)३ गांव इनायत खालसा रा

६०००)२ परगने गोडवाड़ रो गांव ढेंहडो

७५०)१ गढ जोधपुर रे परगने वीलाड़ा रो गांव कागल

६७५०)३

रेख साढा सीड़सट सो री.................। गांव तीन

। संवत १९४५ रा पोस वद ४ दुवो श्रीमुख परवानगी राठोड़ मंगलसिंघ गुमानसींघोत खांप चांपावत मुकाम पायतखत गढ जोधपुर

अमल देजो । प्रतापसिंह

। नकल लीची श्री हजुर रे दफतर

लि॥ राय बाहादुर म्हेता बीजेसींघ करण-
सींघोत सं॥ ४५ री साख सांवण था
अमल दीजो

। नकल लीची दीवाणांरे दफतर । नकल लीवी बखसीयांरे दफतर
। नकल लीची चोकीनवेसांरे दफतर। नकल लीवी चोकी नवेसांरे दफतर

गीत

प्रथीनाथ आसोप कूंपां तणा पाटवी,
आपसूं थाटवी अँजस आंणे ।
आठही मिसल रा मुदायत आज दिन,
जोधपुर नाथ धिन तने जांणे ॥ १ ॥
सिवारा सिंघली सुरधरा सहायक,
कूंपरा पोतरा उपकारी ।
अंजसे गोतरा आज दिन आपसूं,
धजाबंध चिरंजी छत्रधारी ॥ २ ॥
सलारा कोट महाराज रा सिरायत,
लाजरा लंगर भुज भार लीधां ।
आजरा वखत इण मांय फिर अबारूं,
देसपति आपने गांव दीधां ॥ ३ ॥
चैन सुदतार सोभा बढी चौतरफ,
जस हरफ आपरा प्रथी जांणे ।
वापरा भागसूं सिवायो बुद्धिवर,
आपरो भाईपो मोद आंणे ॥ ४ ॥

जब कभी यह ठाकुर जोधपुर से गांव की सीख कर गांव आता तो इसको श्रीदरबार की तर्फ से नवाजसें हुआ करती थीं। जिनमें से कुछ निवाजसों के हुक्म की नकलें नीचे दी जाती हैं।

"॥ श्री जलंधरनाथजी सत छै

। श्री माताजी ।

ता॥ चो।. नं। वा।.

६—१—३ २१–४–५

॥ खासा खजाना रा पोतासुं दीजो ता॥ ईनायत ग्वरच

आसोप रा ठाकुरां ने सीरोपाव ईनायत हुवा जीणरा रुका हुवा नहीं सु मीलण बा॥ केफीयत वकील ठीकाणारी मय फेरीसत रे आई जीण पर डोर्डीदार सुं दरीयाफत सलामतीआं बोलीरी कीवी गई तो तसदीक कीवी जीण पर रुका कर देवण रो हुकम ता॥ १८ अप्रेल सन हाल हुवो

तफसील

१६००) ईनायत ग्वरच रा सीगा में

८००) सं १९३१ रा बरस में मातमपोसी हुय अवल सीरोपाव सीग्वरो हुवो

५००) हाथी ३००) पालकी

८००) सं० १९३४ रा माहाबद ३ व्याव ऊपर हाथी सीरोपाव हुवो

५००) हाथी ३००) पालकी

१६००)

९८०) जरजर खाना ता॥

१४०) सं. १९३७ में सीखरो

५०) पींडाने कंठी

९०) कांमेती ने कड़ां री जोड़ी २ मोती वगेरा

---

१४०)

१४०) सं. १९३८ में सरेजन

१४०) सं. १९३९ में सरेजन

१४०) सं. १९४० में सरेजन

१४०) सं. १९४१ में सरेजन

१४०) सं. १९४२ में सरेजन

१४०) सं. १९४५ में सरेजन

९८०

६५३) कपड़ां रा कोठार ता॥

१९८) सं. १९३४ रा बरस में ब्याव उप्र

१५८) पींडाने वागो खीनखाफ

४५०) ८)

४०) कांमेती २ रे दुसाला २

---

१९८)

६५) सं. १९३७ रा बरस में सीखरो

२५) पींडारे दुपटा रा

४०) कामेती २ ने दुसाला जोड़ी २

---

६५)

६५) सं॥ १९३८ रा बरस में सरेजन

६५) सं॥ १९३९ रा बरस में सरेजन

६५) सं॥ १६४० रा बरस में सरेजन
६५) सं॥ १६४१ रा बरस में सरेजन
६५) सं॥ १६४२ रा बरस में सरेजन
६५) सं॥ १६४५ रा बरस में सरेजन

६५३)

३२३३) अखरे रुपीया बतीस सो तेतीस रो रुको कीयो है सु ोजो ह्॥ वकील प्रो॥ मुलचंद सं॥ १६४७ रा चेत सुद १० ता॥ १८ ापरेल सन १८६१ खजाना सुं देसी

प्रतापसिंघ

रु॥ ३२३३) तीन हजार दोयसो तेतीस कलदार देजो
उ॥ दरोगारे दफतर चेत सुद १४
। खास ठपारे दफतर चे॥ सुद १२ सं॥ १६४७ रा
उ॥ चे॥ सुद १०–सं॥ ४७ में"

इनमें से सं० १६३१–३४–३७–३८ के सिरोपाव पहले लिखे जाचुके हैं ।

वि० सं० १६५१ की फाल्गुन सुदि ४ को ठाकुर साहिब और कविराजा मुरारदान रियासत जोधपुर की तरफ से वाल्टर कृत सभा में शरीक होने के लिए अजमेर गये और वहां राजपूताना के A. G. G. कर्नल ट्रेवर साहब से भेंट की ।

इसी साल में ता० २४–७–१८६४ के लिखे महकमा खास के परचे के अनुसार ठाकुर कोर्ट सरदारान में ज्वाइंट जज नियत हुए ।

परचे की प्रतिलिपि–

"नं० ६८३

मे० खा० श्री० द० रा० मा० अं० प० ब० कामदार ठाकुर साहब

आसोप तथा कोर्ट सरदारान में जब कभी बड़ा मुकदमा पेश होगा उसमें ठाकुर साहब आसोप बतौर ज्वाइंट जज के शरीक इजलास हुवा करेंगे सो इणरी इत्तला थे थांरे ठाकुर साहब ने कर देवो: तारीख २४ जौलाय सन् १८६४

परतापसिंह"

इस समय ठाकुर कौंसिल मेम्बर और ज्वाइंट जज दोनों ओहदों का काम करते थे।

वि० सं० १६५२ की कार्तिक बदि ८ को महाराजा जसवंतसिंहजी साहब का स्वर्गवास हुआ और महाराजा सरदारसिंहजी साहब गद्दीनशीन हुए, उस अवसर पर महाराजा श्री सर प्रतापसिंहजी साहब ने ठाकुर का डेरा वीटसन साहब के बंगले रातेनाडे में कराकर पौष सुदि ६ को नये महाराजा की सेवा में ठाकुर की नौकरी नियत की। ठाकुर ने इन दरबार की सेवाएं भी अच्छी तनदेही के साथ कीं जिससे इन महाराज की भी ठाकुर के ऊपर असीम अनुकम्पा रही।

इसी वर्ष रतलाम महाराजा की कन्या के विवाह में श्रीदरबार साहब पधारे उस समय ठाकुर को साथ लेगये और ठाकुर बदस्तूर बहुत अर्से तक उनकी सेवा में रहा।

इसी साल ठाकुर ने अपने कँवर फतहसिंह का संबंध (वाग्दान) रियासत जयपुर में खंगारोतों के ठिकाने हरसोली के ठाकुर करनसिंह की सौभाग्यवती पुत्री रतनकंवर से किया।

बहुत अर्से तक जोधपुर में रहने के पश्चात् वि० सं० १६५३ की वैशाख बदि १३ को ठाकुर ने दरबार से अपने ठिकाने में जाने के लिए अर्ज किया इस अवसर पर श्रीदरबार ने इसकी निःस्वार्थ सेवाओं से प्रसन्न होकर इसको नीचे लिखे अनुसार हाथी सिरोपाव इनायत फरमाया।

७८०) ठाकुर को सिरोपाव

७२५) हाथी के कंठी के सिरपेच के दुशाला के
५००) ८५) ६५) ७५)

५५) दुपट्टे के। कीनखाप के मंदील के फुलगारी के
३०) ८) ११) ६)

७८०

१३०) वकील २ को सिरोपाव

८०) दुशाले २ के मोतियों के चोकड़े २ के
४०) ४०)

५०) कड़ों की जोड़ी २ के
५०)

---

१३०)

---

६१०) कुल

इसी साल की मार्गशीर्ष सुदि १४ को ठाकुर श्रीदरबार साहिबों के साथ अलवर दरबार की शादी में कृष्णगढ़ गये।

वि० सं० १६५२ में महाराजा जसवंतसिंहजी का स्वर्गवास होने पर महाराजा श्रीसरदारसिंहजी नावालिग होने से रीजेंसी कौंसिल स्थापित हुई, जिसके प्रेसीडेंट महाराजा सर प्रतापसिंहजी साहिब थे। उस कौंसिल में ठाकुर चैनसिंह मेम्बर चुना गया था। इसने उस कौंसिल में तन मन से अर्से तक अपना कर्तव्य पालन किया।

ठाकुर इन वर्षों में महाराजा साहब के पास जोधपुर में ही रहता था। वि० सं० १९५४ में A. H J मारटंडेल साहब एजेंट ठाकुर से मिलने को हवेली आया।

इसी साल माघ वदि ६ गुरुवार को महाराजकुमार श्रीसुमेर-

सिंहजी साहब का जन्म हुआ। जिसकी खुशी में इस ठाकुर ने अच्छा इनाम इकरार वितरण किया। सरदारों ने भी दावतें दीं। इसके २।३ मास पश्चात् ठाकुर गांव की आज्ञा लेकर आसोप आया।

इसी वर्ष की फाल्गुन वदि १३ त्रयोदशी के दिन श्रीसरदारसिंहजी साहब बहादुर को अख्तियारात मिलने का उत्सव हुआ। जिस अवसर पर बीकानेर महाराजा गंगासिंहजी और A. G. G. मार्टंडेल महोदय पधारे। अख्तियारात का दरबार किले के मोतीमहल में हुआ। जिसमें दाहिनी मिसल की सिरे की कुर्सी पर यह ठाकुर और बांई तरफ की सिरे की कुर्सी पर रास ठाकुर फतहसिंह बैठे।

वि० सं० १९५६ में मारवाड़ में सर्वत्र भीषण अकाल पड़ा। मनुष्यों को अन्न, जल और मवेशियों को चारा मिलना बड़ा कठिन होगया था। उस समय इस प्रजावत्सल ठाकुर ने प्रजा के व गरीबों के लिये अपने अनाज के कोठार और चारे के ढेर (बागरें) खुलवा कर अपनी प्रजा और पशुओं का पालन किया। गरीब बुभुक्षित मनुष्यों के लिये सदाव्रत का प्रबंध किया जिससे प्रजा को बड़ी सहायता मिली। इस ठाकुर ने वि० सं० १९५६ के आरम्भ से वि० सं० १९५७ के आरम्भ तक दुर्भिक्ष पीड़ित १२६३३८ नर नारियों का पालन किया। यह दुर्भिक्ष ऐसा भयंकर था कि माता भूख से पीड़ित होने के कारण पुत्र को खाने की दशा पर पहुँच गई थी। उस अकाल के समय में ठाकुर ने अपने अन्नागार और बागरें (तृणपुञ्ज) बेरोकटोक करके अपनी प्रजा के प्राण बचा लिये।

वि० सं० १९५८ की आषाढ सुदि ८ को ठाकुर ने अपने पुत्र फतहसिंह का विवाह ऊपर लिखे हुए ठिकाने हरसोली के ठाकुर करनसिंह की पुत्री से सानन्द धूम धाम के साथ सम्पन्न किया। बरात की रवानगी के समय बड़े बड़े सरदार, राजवी व मुत्सद्दी आए जिनमें से कई लोग बरात में पधारे।

वि० सं० १९५९ में ठाकुर जोधपुर गये और रेजिडेन्ट साहब लेफ्टीनेंट कर्नल आर. एच. जैनिंग से मिलने को उनके बंगले गये जिसके बदले में रीत्यनुसार रेजिडेन्ट साहब भी ठाकुर से मिलने हवेली आये।

वि० सं० १९६१ में मेजर डब्लू. आर. स्ट्रैटन रेजिटेन्ट साहब बहादुर ठाकुर से मिलने को हवेली आये।

महाराजा श्री सरदारसिंहजी साहब का दूसरा विवाह वि० सं० १९६३ की वैशाख सुदि १ को उदयपुर महाराणा फतहसिंहजी साहब की पुत्री से हुआ उस अवसर पर ठाकुर बरात में गये और वहां प्रधानगी की जगह हाथी पर बैठे। बरात में तोरण वन्दन के समय सवारी का हाथी 'पागड़े की हथणी' नामक जगह पर बिगड़ गया, तो महावतों ने उसे बहुत रोका परंतु वह फिर भी कुछ दूर तक वापिस लौटा जिससे दरबार महावतों पर रुष्ट हुए और उनके नौकरी से अलग किये जाने का अंदेशा भी था परंतु इस ठाकुर के अर्ज करने व समझाने पर दरबार ने महावतों को माफी दी। धन्य है, ऐसे स्वामी को कि जिन्होंने अपने सच्चे और ग़ैरख्वाह सरदार की अर्ज पर ग़ौर फरमाकर अपना विचार बदल दिया।

वि० सं० १९६५ के कार्तिक मास में ता० १-११-१९०८ को भारतवर्ष के वायसराय लार्ड मिन्टो का जोधपुर में शुभागमन हुआ उस समय खास रुक्का देकर ठाकुर को जोधपुर बुलाया और इसकी ड्यूटी लाट साहब बहादुर की अरदली में बतौर अंग-रक्षक के मुकर्रर फरमाई, जिसको इसने बहुत अच्छी तरह से तनदेही के साथ निभाया। खास रुक्के की प्रतिलिपि—

"श्री

ठाकरां चैनसिंहजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो तथा लाट साहब

बहादुर रो अठे आवणो हुसी सो आछी जलूस सुं ता० २० अक्टोबर सन हाल ने सिताब हाजिर होवजोः संवत १९६५ रा आसोज वद ६"

इसी अवसर पर श्रीदरबार साहबों को बादशाह सलामत की तर्फ से के० सी० एस० आई० (K. C. S. I) का पदक वायसराय ने दिया, जिसके उपलक्ष्य में जोधपुर कचहरी के पास दलबादल में दरबार हुआ जिसमें उक्त ठाकुर दाहिनी लाइन की सिरेकी कुर्सी पर बैठे.

वि० सं १९६७ की चैत्र वदि ५ को महाराजा श्री सरदारसिंहजी साहिबों का देवलोक गमन होने के अनन्तर इस ठाकुर ने प्रायः अपने ठिकाने आसोप में ही निवास किया। क्योंकि अपने स्वर्गीय स्वामी का यह बहुत अफसोस करता था और कुछ वृद्धावस्था थी कुछ बीमारी भी रहा करती थी। तथापि राज्य संबंधी कार्यों में ऐड-वाईजर कौंसिल के मेम्बर होने के हेतु इनको जोधपुर आना पड़ता था।

उक्त ठाकुर को वि० सं० १९६६ की पौष सुदि ६ को गवर्नमेंट से राव बहादुर का खिताब हुआ। जिसकी इत्तिला पण्डित सुख-देवप्रसाद के पास इलाहाबाद से तार द्वारा हुई; और फिर जब दरबार इलाहाबाद से वापिस पधारे तब इस ठाकुर को गोठण स्टेशन पर याद फरमाया जिस पर यह ठाकुर स्टेशन पर हाजिर हुआ।

राव बहादुर का पदक ८ अप्रेल सन् १९११ को जोधपुर में रेजिडेंट साहब के बंगले पर A. G. G. राजपूताना मिस्टर कॉलविन साहब ने आम दरबार करके दिया। जिसमें श्रीदरबार साहब, अंग्रेज ऑफीसर, स्टेट ऑफीसर और महाराजा के बड़े २ सब सरदार विद्यमान थे। A. G. G. ने ठाकुर की तारीफ में एक स्पीच दी, जिसका शुक्रिया ठाकुर ने जो स्पीच द्वारा अदा किया वह इस प्रकार है—

" आनरेबल मिस्टर कॉलविन साहब बहादुर !

SANAD

To

Thakur Chain Singh,

of Asop,

Member of Council of the Jodhpur State,

in Rajputana.

I hereby confer upon you the title of Rao Bahadur as a personal distinction

Hardinge of Penshurst

Viceroy and Governor General of India

Fort William,

The 2nd January 1911

पहला मेरा फरज है कि मैं मेरे मालिक महाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री सरदारसिंहजी साहब बहादुर जी० सी० एस० आई० (G. C. S. I), जिन्होंने धणियाप फरमाकर मुझे यह इज्जत दिलाने की सिफारिश फरमाई थी, उनके देवलोक होने का रंज जाहिर करूं। यह हमारे मुल्क के अभाग्य थे कि, हमारे सिर पर से ईश्वर ने ऐसा रहमदिल नेक फयाज हरदिल अजीज और लायक रईस को उठा लिया परंतु परमेश्वर से जोर नहीं।

मैं आपका और रेजिडेंट साहब बहादुर का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने मेरी खिदमत पर गवर्नमेंट आलिये हिन्द को तवज्जह दिलाई जिसका नतीजा यह हुआ कि आप अपने मुबारिक हाथों से मुझको यह इज्जत आज इनायत फरमाते हैं।

मैं आपको इतमिनान दिलाता हूँ कि मैं अपनी बाकी मांदा-जिंदगी में मेरे मालिक महाराजा सुमेरसिंहजी साहब बहादुर की खिदमत तन, मन, धन से इस तरह करूंगा कि जिससे उस इज्जत को, जो आज गवर्नमेंट आलिये हिन्द ने मुझको इनायत फरमाई है, और उस दर्जे को, जो पीढियों से श्रीमारवाड़ दरबार ने मेरे ठिकाने को बख़्श रखी है, अच्छी तरह से निभाऊं।" इस विषय की यह कविता है—

मथाणिया निवासी बारहठ जैतदान कृत

दोहा

स्याम धरम उन्नति सदा, चैन यथोचित चाह।
राव बहादुर पद प्रसद, समप्यो साहन साह॥

कवित्त

साहनसा जॉर्ज को अखंड राज्य रहो सदा,
कहांलों सराहां ईस करता कदरको ।
पति आसोप चैन बैठे निज ग्रेह पठ्यो,
सनद सहित पद रावबहादुर को ॥
धन्य जैतदान धनवान पति स्यामध्रम,
भासन भयो है ऐसो सासन सदरको ।
दच्छन मिसल जेठी पौरस प्रचंड वीर,
तेरे भुज डंड हू पैं मंड मुरधर को ॥ १ ॥

भदोरा निवासी मांदू सादूलदान कृत

दोहा

सन उगणीस इग्यार में, अछी जनवरी ओप ।
राव बहादुर पद रिधू, पायो पति आसोप ॥ १ ॥
अंजस आयो ईढरां, आँनंद छायो ओप ।
पायो पद पतसाह सूं, आयो चैन आसोप ॥ २ ॥

वि० सं० १९६८ मुताबिक सन् १९११ के कोरोनेशन दरबार में
ठाकुर महाराजा सुमेरसिंहजी के साथ दिल्ली गया था। और इसी
प्रकार हर मौके पर जहां दरबार का पधारना दरबार वगैरह में होता
था उस समय ठाकुर श्रीदरबार के साथ रहता था।

दिल्ली दरबार से वापिस आने पर यह ठाकुर आसोप आया मगर फिर महकमा खास का नीचे लिखे मुआफिक परचा आने से यह ठाकुर वापिस वि० सं० १९६८ की कार्तिक बदि ४ को जोधपुर गया—

परचे की प्रतिलिपि—

" श्री।

मः खाः श्रीः दः राः माः
बः वकील ठिकाने आसोप

तथा महाराजा रीजेंट साहब ने ठाकरां को याद फरमाया है सो ठाकरां ने लिख देवो सु अठे हाजिर होवे। ता० ११-१०-११

जालमसिंह"

वि० सं० १९६९ की आषाढ सुदि ८ तदनुसार ता० २२-६-१९१२ को यह ठाकुर महकमा खास के परचा नं० ३०२ के द्वारा ऐडवाईजर कौंसिल का मेम्बर मुकर्रर किया गया और फिर सिर्फ ४ दिन के बाद ता० २६-६-१९१२ तदनुसार सं० १९६९ की आषाढ सुदि १२ को कन्सलटेटिव कौंसिल का मेम्बर भी मुकर्रर किया गया। उस विषय के परचों की नकलें नीचे दी जाती हैं—

:— परचों की प्रतिलपि :—

" श्रीः।

नं० ३०२

मः खाः श्रीः दः राः माः अं: पः
बः वकील ठिकांणे आसोप

तथा थांरे ठाकुर ऐडवाइज़र कौन्सिल रा मेम्बर मुकर्रर किया

गया है सो ठाकुर यहां हाजिर रह कर काम अंजाम देते रहें। फकत
ता० २२ जून १९१२

परतापसिंह

॥ श्रीः ॥

नं० ३०५

मः ग्वाः श्रीः दः राः माः अंः पः
वः वकील ठिकाने आसोप

तथा ठाकर आसोप मेम्बर कन्सलटेटिव मुकर्रर किये गये हैं सो ठाकरां ने लिख देवो कि वे बहुत जल्दी जोधपुर में आय जावें।
ता० २६ जून १९१२

परतापसिंह"

वि० सं० १९७० की मार्गशीर्ष बदि ३ को रेजिडेंट कर्नल विण्हम साहब ठाकुर से मिलने के लिये रीत्यनुसार भंडारी हणूतचंदजी के बाग में आए। जहां ठाकुर का डेरा था। ठाकुर ने बड़े प्रेम के साथ स्वागत किया। और रेजिडेंट साहब ठाकुर के व्यवहार से प्रसन्न हुआ[1]।

वि० सं० १९७१ की माघ बदि ३० अमावास्या तदनुसार ता १५ १-१५ को निम्न लिखित जरूरी काम संबन्धी महकमा खास का परचा आने पर ठाकुर चैनसिंह आसोप से जोधपुर गया।

—: परचे की प्रतिलिपि :—

(१) अगर कोई सरदार रेजिडेंट व ए० जी० जी० से मिलने को उनके बंगले पर जाता है तो वे भी वापिस सरदार से मिलने के लिये उनके डेरे पर आते हैं। क्योंकि इनका व्यवहार आपस में बराबरी का होता था। और खतोखिताबत में बराबरी के तौर पर होती थी, जैसा कि पाठकों को कर्नल ट्रवीडी के पत्र से विदित हुआ होगा।

" श्रीः ।

नं० ५६८

मः खाः श्रीः दः राः माः अंः पाः
बः वकील ठिकांणे आसोप

तथा जरूरी कामरे वास्ते थांरे ठाकरां रो अठे आवणो जरूरी है सो थांरा ठाकरां ने लिख देवो सो जल्दी ता० २४ जनवरी सन् हाल तक आय जावे।

फकत। ता० १५-१-१५

जालमसिंह"

वि० सं० १६७४ (ई० सन् १६१७) में जब कि योरोप का महान् युद्ध चल रहा था, उस समय जोधपुर में रंगरूट भरती करने के विषय में विचार करने के लिये एक कमेटी बैठी, उसमें शरीक होने के लिये श्रीदरबार का खास रुक्का आने पर ठाकुर उसमें शरीक होने के लिये जोधपुर गया। और उसमें स्वीकृत हुए प्रस्तावों के अनुसार इसने गवर्नमेन्ट को धन व जन से अपने ठिकाने की योग्यतानुसार अच्छी मदद दी। और ठाकुर रंगरूटिंग बोर्ड का मेम्बर मुकर्रिर किया गया। और परगना जोधपुर व सिवाणा इसके चार्ज में रक्खे गये। और हाकिमों को हुक्म पहुँच गया कि आसोप ठाकुर जो हुक्म दें उसकी तामील करें।

इसी विषय का आज्ञा पत्र महाराजा श्री सुमेरसिंहजी साहिबों का ता० २० जून सन् १६१८ का लिखा हुआ प्राप्त हुआ उसकी प्रतिलिपि-

"॥ श्री ॥

नं० ६ ६२

श्रीः दः अंगरेजी

म: ग्वा: श्री: द: रा मा: अं: प:
व: वकील ठिकाने आसोप

तथा तुमारे ठाकुर रंगरूटिंग बोर्ड के ऑनरेरी मेम्बर मुकर्रर किये गये हैं प्रगने मीवाणा जोधपुर इनके चार्ज में रखे गये हैं और रावराजा तेजसिंहजी भी इन परगनों में रंगरूट भरती करने के लिये मेम्बर मुकर्रर हैं सो हरएक परगने में वहां के जागीरदारों की सब कमेटियें मुकर्रर करके रंगरूटों को भरती करने का काम बहुत जल्द जारी करें और हाकिम परगना भी रंगरूटिंग सब कमेटी के मेम्बर मुकर्रर किये गये हैं और उनको हुकम दिया गया है कि इसके मुतालिक मेम्बर इन्चार्ज याने ठाकुर आसोप वो रावराजा तेजसिंहजी जो हुक्म देवें उनकी तामील करो। ता० २६--१२--१७

मेहरबान"

"श्रीनाथजी सहाय छै

राव बहादुर ठाकरां चैनसिंहजी सुं म्हांरो जुहार बांचजो तथा रंगरूटांरे भरती करण री तजवीज वास्ते मीटिंग ता० २५ जून ने होवेला सो इणमें शरीक होवण वास्ते ता० २३ जून तक अठे हाजिर होजाओ संवत १९७४ रा जेठ सुद १३

Sd/ Sumair Singh
20-6-18"

महाराजा श्रीसुमेरसिंहजी बड़े वीर, साहसी और उदार विचार वाले नरेश थे और युवावस्था में पदार्पण किया ही था कि कराल काल के वेग से उन नवयुवक नरेश का वि० सं० १९७५ की आसोज वदि १४ को स्वर्गवास होगया। तदनंतर नये महाराजा श्री उम्मेदसिंहजी साहब गद्दी बैठे उन की सेवार्थ किले पर डेरा करदेने की आज्ञा का पर्चा वकील के नाम आया।

आज्ञा पत्र की प्रतिलिपि—दफतर अंगरेजी

१ चैन सुख निवास का बाहरी दृश्य
२ श्री श्यामजी का मंदिर
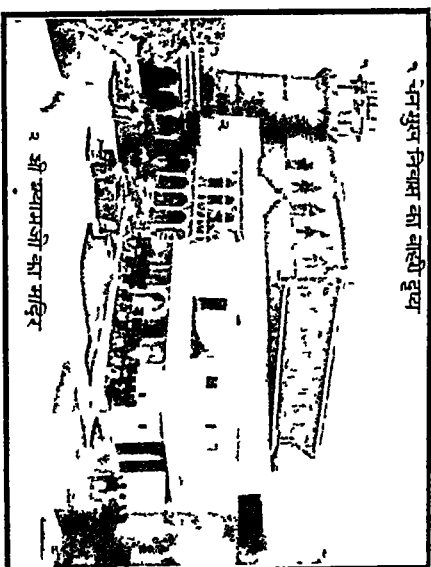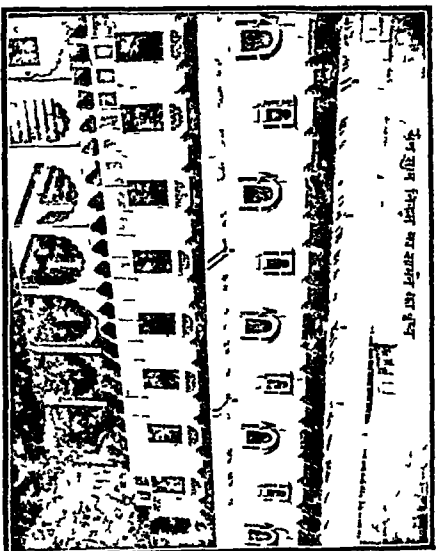
" मे: खा: श्री: द: रा: मा: अ: प: व: वकील ठिकाने आसोप तथा थांरे ठाकरां री तईनाती श्रीजी साहिबों के खिदमत में की गई है सो कल सवेरे किले पहुँच डेरा कर देवो और श्रीजी साहिबों के तासली वगैरा दूसरे कामों की संभाल रखें ।
फ़कत ११--१०--१८

Sd/ Chaguram"

यद्यपि ठाकुर को कौंसिल मेम्बरी और ज्वाइएट जजी के कार्य-वश अधिकतर जोधपुर में निवास करना पड़ता था तथापि अपने ठिकाने का प्रबंध ऐसा उत्तम किया कि दूसरे सरदार इनके प्रबंध के अनुसार अपने ठिकानों का प्रबंध करने लगे थे ।

इसने अपने ठिकाने को पूर्ण वैभवशाली और आलीशान मकान बनवाकर ठिकाने को अत्यंत सुशोभित किया था ।

(१) चैन--सुख--निवास---यह विशाल दर्शनीय भवन है । इसकी रचना और सुन्दरता दर्शकों के मनको मोहित करती है । यह भवन ठाकुर ने जनाना भाग में बनवाया था । यद्यपि कई लोगों ने इसके वास्ते अर्ज किया था कि यह मकान मरदाने में बने तो अच्छा रहे, परन्तु उसने अपनी मरजी से इसे जनाने में ही बनवाया।

इस भवन के विषय में मथाणिया निवासी बारहठ जैतदान कृत कविता

गीत

पाया द्रढाया नींवरा सेसनाग सीस गाढा पणें,
भराया वणाव जाडा ग्रावां थी भिड़ाव ।
घड़ाया सिलप्पी साच सुघटा सचूंप घणा,
चुणाया चहके चूने चौखण्डां चढाव ॥ १ ॥

जोड़ दासां जड़ाळां वड़ाळां डाळां कड़ां जठे,
थटे गज्जगीरी पठे भराटां सुथम्भ ।
पेख आळां नाळां छवी अनोखा आसोप पट्टे,
अघट्टे उजासी चैन पीढ़ियां आरम्भ ॥ २ ॥
ताकां आलमारियां बारियां हवा तावदानां,
खाना खानां एम सोभा धारियां अखण्ड ।
प्रसारियां नवां गेहां नौ निधी विराजे मानों,
छाजे यों अछानो रूप रारियां अछण्ड ॥ ३ ॥
दुछत्ता घेरियां गोखां दिपावे कवाणीदारां,
बीच वारां सोळे हथां अलंगां बणाव ।
थटे टूंक ऊंचा पणे वणावे गैणाग थोभा,
सपूताचार री सोभा जणावे आसेर ॥ ४ ॥
घटा मूं चूमती अटा सुघटां दिपाव घणों,
भणां जित्ती छाजे तूझ कीरती भूपांण ।
तेजधारी कमठांणो भाळ भाळ तूझ तणो,
प्रतापीक पणो दीसे जाहरी कूंपाण ॥ ५ ॥
आगे हूंत दूणी सोभ चौगणां चढाया ऊंचा,
जड़ाया जाळियां गोखां अनोखां उजास ।
भिड़ाया बुरज्जां आसमांन सूं राठोड़ भूरा,
आधतरां चढ़ाया तें आसांणे एवास ॥ ६ ॥

मारवां तेरे उजासीस वहे धू म्रजादा वंस,
कहे जैत आसीस प्रतप्पो जुगां कोड़ ।
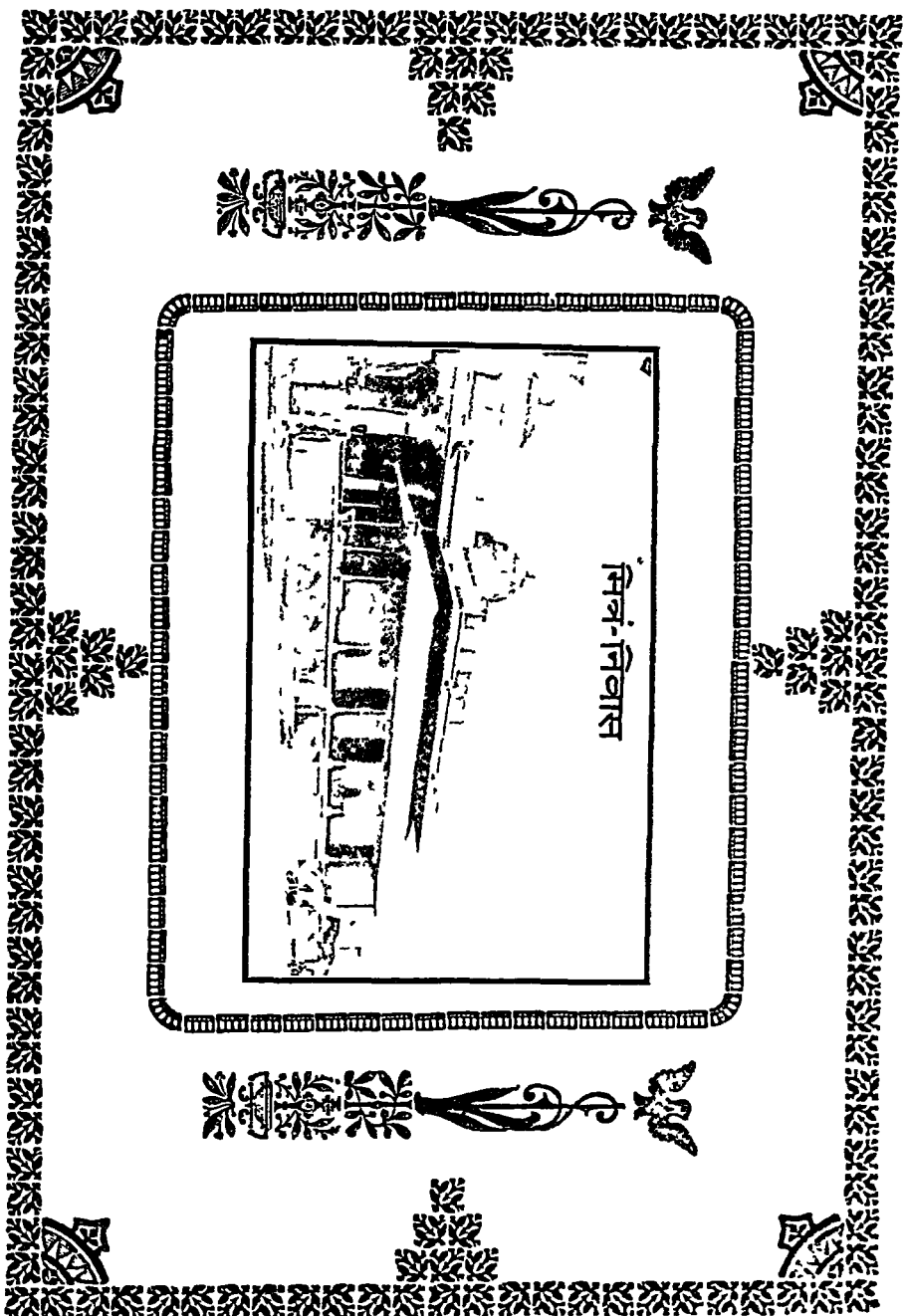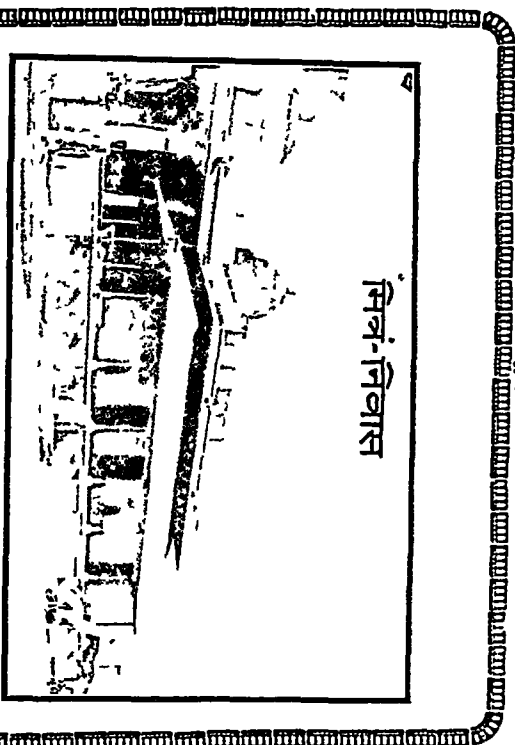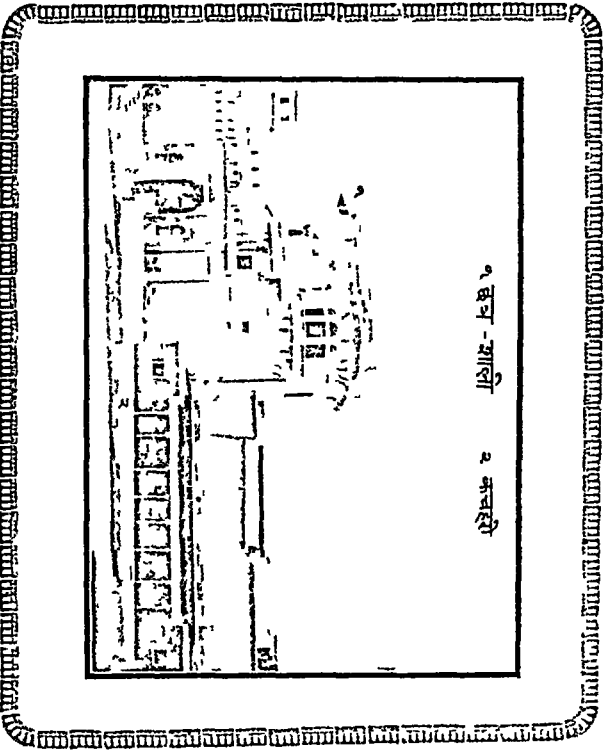
मित्र-निवास

१ छत्र-शाली
२ कचहरी

लहे छवि उन्नता महलां हूं तो आभ लागो,
रहै ऊंचो त्यों ही सारी बात में राठोड़ ॥ ७ ॥

(२) अश्व-शाला--जिसमें २५ घोड़े बड़े आराम के साथ
ह सकते हैं ।

(३) श्रीश्यामजी भगवान् का मंदिर--यह मंदिर गढ़ के अंदर
ही 'चैन--सुख--निवास' से सट कर बना हुआ है। जिस में सुबह
शाम दोनों संध्याओं के समय घड़ी घंटाओं का निनाद गढ
निवासियों को परम आनन्द देता है।

(४) मित्र--निवास--यह बंगला गढ़ के बीच के दरवाजे के
अंदर जाते बांई तरफ है। उक्त बंगला गर्मियों में ठंडा और सर्दियों
में गर्म रहता है। ठाकुर का निवास प्रायः इसी बंगले में हुआ करता
था। यह बंगला आधुनिक ढंग पर बना हुआ है।

(५) चित्र--सारी---यह चित्र सारी करीब १२५ फीट की उंचाई
पर गढ़ के बीच के दरवाजे के ऊपर बनी हुई है। जहांसे करीब
आठ दस मील की दूरी का दृश्य दिखाई देता है। वर्षा ऋतु के दिनों
में इस मकान के रहने वाले प्राकृतिक सौन्दर्य का अवलोकन
पूर्णतया कर सकते हैं ।

(६) मोटरालय ।

(७) बागर का बड़ा दरवाजा ।

जोधपुर में आसोप की हवेली में जो महलात और अश्वशाला
है वह भी इसी ठाकुर की बनवाई हुई है। महल में रंग का काम
अच्छा कराया गया है।

ठिकाने में इसने ठाकुर नाहरसिंहजी के महल का और दरीखाने के ऊपर के झरोखों का भी जीर्णोद्धार कराया। राजमहल को भी तैयार करवाया।

उक्त ठाकुर बड़ा बुद्धिमान् और नीति निपुण होने के साथ स्वामी की सेवा में तत्पर रहता था। और महाराजा भी इसके बरताव से परम प्रसन्न थे। उसका उल्लेख प्रथम किया गया है। और यह ठाकुर अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन करता था जिससे प्रजा का इस पर पूर्ण प्रेम का व्यवहार था। और इसकी गुणग्राहकता के कारण विद्वान् और कविगण इसका आश्रय लेते थे। कवि लोगों ने इसके विषय में कविता की रचना की थी। उसमें से जो उपलब्ध हुई है, वह यहां सज्जन-विनोदार्थ उद्धृत की जाती है।

गांव मथाणिया निवासी बारहठ जैनदान कृत—

॥ गीत ॥

उजां पिंड आकाय धर भुजां पोरस अफर,
वीरवर निडर चित धीर बांधै।
टरतां निजर भर मुरद्धर कूंपहर,
सरोभर अवर नर कवँण साधै ॥ १ ॥
सिमल अठ भार थट धरण सुभटां मुगट,
करण जग अघट मग नीत काजा।
वरण खटतीस भट खत्रवट आभरण,
प्रगट जस वित्थरण मंहण पाजा ॥ २ ॥
धनद कोठार भण्डार अणपार रिध,
सार आचार विध प्रसद सारी।
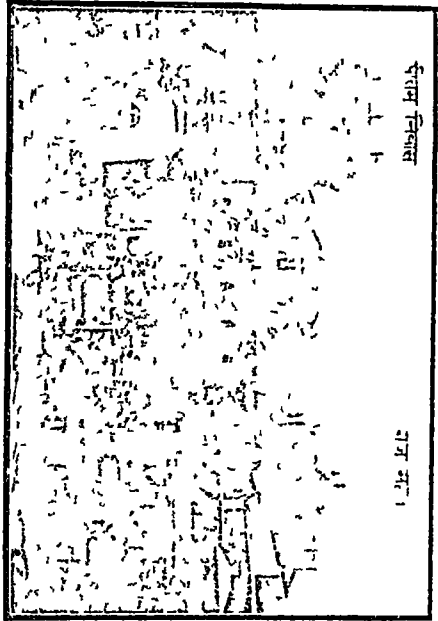
दुरद तोखार असवार हद जलूसी,
तारबन्ध बहण सद काज त्यारी ॥ ३ ॥
रखण कुळ प्रमाणै बोध बन्ध आचरण,
जोम धर घरांणै चाल जांणे ।
सरब जन वखांणे धिनोधिन चैनसी,
उजासी ठिकांणे इसा आंणे ॥ ४ ॥
जई आसोप पति सावचेती दुभ्फल,
थई भल इसी नह केई थांने ।
सरव कारज सही हुकम माफिक सालिले,
खलल नहीं एक ही कारखाने ॥ ५ ॥
भाखरां आव आसीस जैतो भणैं,
त्रयोदस साखरां भाग तीखो ।
लियो सोभाग सुख पटायत लाखरां,
सीख अन ठाकरां इसी सीखो ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

बंधे घटैं केइवार, मन मरजी हित ऊमरां ।
सदा नजर हिकसार, सूरज कूंपा चैनसी ॥१॥
बेटा बिरचै बाप, वन्धव ही बिरचै बहै ।
धणी चैन धणियाप, तूं अबिरच कूंपा तिलक ॥ २ ॥

दोहा

अवसर अवसर पर अगर, सिर अरि झुके सार ।
है थेट्ट घर कूंपहर, भुज मुरधर भरभार ॥ १ ॥

वीरा रस धरियां भुजां, लोयण भरियां लज्ज ।
पति कूंपा आसोप पत, धणी चैन कमधज्ज ॥ २ ॥
वांण वंध आपांण वड, खत्रवट खांण अखण्ड ।
पांण चैन आसांण पत, मांण मुरद्धर मण्ड ॥ ३ ॥
वोल वन्ध गह बीरता, मुरधर तणी मिजाज ।
पोरस छक राठोड़ पण, उजां चैन भुज आज ॥ ४ ॥
गाहक गुण तज अवगुणां, एतो बडपण आप ।
धारण साचो चैन धिन, मोटा पण मा बाप ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

धर साची धणियाप, आप म्हनें अपणावियौ ।
मोटापण मा बाप, सूरज कूंपा चैनर्सी ॥ १ ॥

गांव व्हिण के कवि लूंगीदान कृत—

॥ गीत ॥

करण रीझ अप्रमांण घण जांण मोतीं कड़ा,
धरण ब्रद वधावण अघट धूरा ।
सकवि नव खंड राजके आवै सरण,
भरण नित चढावण आप भूरा ॥ १ ॥
समापण मोजरा धिनो लहरी समँद,
लार ऊन भोजरा बिरद लीधा ।
कमन्ध जयचन्द ज्यूं सुपह कन्नोजरा,
राज महाराज रा माज रीधा ॥ २ ॥

बडम सिवनाथ रा झोक ताला विलन्द,
भाग बड़ ताकवां सुजस भळिया ।
बीरबर चैन चढती रती वेसरां,
गुमर तज धेसरां गरभ गळिया ॥ ३ ॥
मेसहर दखूं तप तेज भूपां मुकट,
कवी मुख लखां जसवास कहसी ।
सुधारण काज जोधाण रा सिघाळा,
रिधू रवि चन्द लग बात रहसी ॥ ४ ॥

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृत--

॥ दोहा ॥

क्रज काटण उन्नत करण, आछां विरदां ओप ।
चैन बारणी मूं चतुर, आया गोद आसोप ॥ १ ॥
माचो इणहिज साल में, चैनै कियो विचार ।
सेवा करणी स्याम री, ओ रजवट आचार ॥ २ ॥
कूंपे सेवा करण री, चित में धारी चाय ।
जोग समझ जसवन्त त्रप, दिल में आयो दाय ॥ ३ ॥

॥ छन्द मोतीदाम ॥

रयो निस बासर प्रीत लगाय, भयो त्रपके मन पूरण भाय ।
रखो मन स्यांमध्रमो रुख राह, चिते चितमें नित मालक चाह ।१।
रयो इकरंग सुमारग राच, गिणै त्रपकी इक बन्दगी साच ।
लग्यो नह लोभतणो लवलेस, वध्यो मन स्वामीको भाव विसेस।२।

सदा वसुधा विच एक सो भाव, चितमें नित नीत सुमारग चाव।
अहो वुध ऊपज में अप्रमाण, जदी जसवंत सुजोगोय जांण ।३॥
सूंपे न्रप राज सुकाज संभाल, वहे नित स्यामध्रमी मग भाल ।
पहली पंचायत काम सुधार, हुवो इक नित्य ही नित्य विचार ।४॥
अछो न्रप जोग गिण्यो उमराव, नहीं सुपने अणनीत सुभाव।

॥ छन्द पद्धरी ॥

कौंसिल तणो जद कियो काम, अब होत काम सद इन्तजाम।
जद कियो हुकम राजाधिराज, कर कृपा तनख्वा देण काज ॥१॥
कर जोड़ चैन भड़ अरज कीध, आपरा वडेरां रिज़क दीध।
माहवार लेण नांही मँजूर, वन्दगी करूंला मैं हजूर ॥ २ ॥
सरदार कोरट रो काम कीध, मुरधरा देस में सुजस लीध।
सिवनाथ सुत्तन उज्ज्वल सुभाव, स्यामध्रमपणे रो सचो भाव ॥३॥
जद करी कृपा जोधांणनाथ, सुभनिजर बधाई एक साथ।
सपूती लछण साचा प्रयोग, जोड़ रा भड़ां में घणो जोग ॥४॥
एवज वड़लूरी उभय गांव, कागल़ अर डैंडो कहै नाम।
हुव खुसी जसे न्रप मेहर कीन, रिज्जक सहेत फिर कुरब दीन॥५॥
राजरा काज सारा सुधार, धणीरी चाकरी हिदे धार ॥

॥ छन्द मोतीदाम ॥

भलो भड़ स्यामध्रमी सुधभाव, चितमें हित चैन धणी दिस चाव।
अहो भड़ जोग गिणै न्रप आज, सूंपै निज लाल सुधारण काज ।१।

दियो जद चैन सिरै उपदेस, सुधारण लाल सुधारण देस ।
कने सिरदार रयो दिन केक, नांमी उपदेस दियो भड़ नेक ॥२॥
भयो नह सुकृत ओर कुभाव, दियो नह शत्रु दिग हींणो दाव ।
रयो इकरंग बुहो इक राह, सह्यो नह औरन हूंत दबाह ॥३॥
सदा मन सील रयो सुध भाव, चितमें पर भाम तणो नह चाव ।
चखां बिच लाज म्रजादां पूर, दोखी दुर्व्यसन रहा सह दूर ॥४॥
सदा सुभ कारज गेह सुधार, निरखे खुद काम हुवे निरधार ।
करी नह कुकृत्य लोभ कुवास, पिंडां अण नीत रखी नह पास॥५॥
गुणांरी ज्याज बडो रणधीर, हजारां साय बडो हमगीर ।
जची मन चैन लिवी बड झंब, दियो जब चैन सुवन जगदंब ॥६॥
हुवे रँग रागां बोत हगाम, सजे सुखधा सुखधा बहु ठाम ॥

॥ दोहा ॥

सिरे सपूती सेहरो, श्रो श्रवणा अवतार ।
नामी सुत चैनेसरे, जनम्यो राज कुँवार ॥

॥ छन्द मोतीदाम ॥

रयो भड़ चैन सदा इकरंग, सदा मन स्यामभ्रमा दिस संग ।
रयो निरलेप रयो निरदोस, रयो वड मांन रयो वड रोस ॥१॥
रयो बड राह रयो बड रीत, अड़चो जिण वात रयो अगजीत ।
मुड़चो नह मांन मुड़चो नह मन्न, मुड़चो नह गाढ समै वड तन्न॥२।
परसी पर नार कदे नह पिंड, रयो पतनीव्रत धरम अखण्ड ।
सदा मन सील निवाहक सत्त, कही मुख झूट कदे नह वत्त ॥३॥

गमायो रोर वधायो वित्त, कियो कुल दीपक साचो हित ।
मिट्यो नह गाढ घट्यो नह मांण, जियो जितरे अनवी जग जांण ।४।
सुधारण गेह सुधारण राज, भेज्यो भगवन्त कूंपे इण काज ।
सेवा जसवंत तणी वड साज, कने सिरदार सुधारण काज ॥५॥
सुमेर धरापत जातां स्वर्ग, अचानक आप उठी मन अग्ग ।
हुई अण जोग चिंता अति आय, जिसूं चैनेस गयो मुरझाय ॥६॥
रहे ग्रह आप भजे इक रांम, कियो सब कूंवर सुपरत कांम ।
सिरे वड आछा कांम सुधार, कूंपापति गो सुरलोक पधार ॥७॥

कह आये हैं कि ठाकुर की वृद्धावस्था थी और वृद्धावस्था में इन्द्रियां निर्बल हो जाने से व्याधियों का आक्रमण हुआ ही करता है, तदनुसार ठाकुर बीमार रहने लगे । डाक्टरों से वं सिविलसर्जन मेजर हंस से बहुत इलाज करवाया गया परन्तु कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई, और वि० सं० १९८२ की मार्गशीर्ष वदि ४ को अपनी प्रजा व मित्रों को विलाप करते हुए छोड़ कर स्वर्ग लोक को सिधारा। इसके देवलोक हो जाने के समाचार ज्ञात होने पर श्री दरबार ने रीत्यनुसार सचैल स्नान किया और किले का नौबतखाना एक टंक बन्द रखाया ।

नौबत बन्द रखने के आज्ञा पत्र की प्रतिलिपि :—

(१) नं० १५१

मेः खाः श्रीः दः राः माः अंः पः

बः औफिसर किले जात

तथा आसोप ठाकुर चैनसिंहजी गुजर गया है सो नौबत टंक १ माफिक मामूलरे बन्द रखा देवो । फकत ता० ५-११-२५

Sd/. Sukhdeoprashad.

इस ठाकुर का देहावसान होने पर बहुत दूर दूर तक शोक छा गया। जैसा कि पाठकों को सहानुभूति में आये हुए निम्न लिखित पत्रों से प्रकट होगा।

—: पत्रों की प्रतिलिपि :—

॥ श्री ॥ जयपुर ११-११-२५

सिध श्री सरब ओपमा लायक राज श्री ठाकुरां फतेसिंहजी जोग लिखावतं सवाई जयपुर से भूरसिंह केन मुजरो बंचावसी, अठाका समाचार भला छै आपका सदा भला चाहिजै। अपरंच ठाकर साहब चैनसिंहजी के स्वर्गवास होबा को समाचार सुण बडो रंज हुवो। परन्तु इमें किसी को बस नहीं। आप धीरज रखावें! ठाकुर साहब नामी सरदार छा बांकी कीर्ति सरू से आखिर तक निब गई। बांकी मेहरबानी हमेशा याद रेसी। परमेश्वर ठाकुर साहब ने अक्षय स्वर्ग-वास देवे और आपने चिरंजीव राखै। मारी तन्दुरस्ती ठीक न होबा के सबब से मैं ई मोके हाजिर नहीं हो सकूं सो माफ करावसी।

मिती मिंगसर बद १० सं० १९८२ का

मलसीसर ठाकुर (शेखावत)

॥ श्रीरामजी ॥

ता० १२-११-२५

श्रीमान् ठाकुरां साहब राज श्री फतैसिंहजी साहब जोग लिखी जयपुर से देवीसिंह को जुहार मालुम होवे। अत्र कुशलं तत्रा-ऽस्तु। अपरंच पत्र आपको आयो श्रीमान् वडा ठाकुर साहब का स्वर्गवास हो जाणे का हृदय विदारक समाचार जांण कर जितनो दुख हुवो छै लिखवा में नहीं आवे। श्रीमान् जिसा राजपूताना का

प्रसिद्ध दाना व बुद्धिमान क्षत्री कुल भूषण सरदार को उठ जाणो मात्र राजपूत जाति ने असीम क्षतिकरण छै। परन्तु बडा ठाकुर साहब श्रीमान् ने योग्य छोड गया छै ईसे पूर्ण आशा छै कि श्रीमान् भी मारवाड़ ही नहीं राजपूताना में अपने अपणां बुजुर्गां की कीर्ति ने कायम व बरकरार रख कर यश का भागी होवोला।

में जाण्यो धवलो मुवो, खाली हुयगो बग्ग।
वाड़े उणहिज बाछड़ो, ऊठ ताड़ूकण लग्ग॥

ई दोहा की माफिक आप से उमेद छै सो ईश्वर सफल करेला। आप भी दाना छो ज्ञान विचारोला। संसार में मरण जीवण विधि हाथ छै। कृपा वणी रहे।

आपका कृपाकांक्षी
देवीसिंह, चौमूं

" श्रीः।

जोबनेर हाऊस जयपुर
१२-११-२५

श्रीमान् मान्यवर महोदय रा० श० श्री ठाकुरां साहब फतेसिंह-जी साहब की सेवा में जुहार बंचावसी। अपरंच राव बहादुर साहब का स्वर्गवास की सुन कर जो अफसोस हुवो जाहिर कियो नहीं जा सके। वह ऐसा सरदार छा कि आपके तो घाटो पड़ियो बांकी तो बात ही कांई। मारवाड़ मात्र ही नहीं पर राजपूत जाति भर में सुं एक खरा बांका निधड़क सरदार की कमी आ गई। जो पहला का जमानाकासा सरदारां का जेसा वक्त २ पर जवाब ऐसा दियाछै कि खिलाफ सरदारां ने भी दाद देणी पड़ी छै। पर हरि की इच्छा से जोर नहीं चाले। में जरूर हाजिर होव तो और ई आखिरी सेवा में

जरूर आयो रहतो पण एक जरूरी कामरे आ पड़णे सुं नीजोर नहीं आवीजो। जीकां के तांई माफी मांगी जावे। यथा योग्य सेवा लिखावता रहवावसी, कृपा रखावसी।

भवदीय हितेच्छु—
नरेन्द्रसिंह खंगारोत

॥ श्री ॥

महाजन हाउस
बीकानेर
१४-११-२५

सिध श्री सर्व ओपमा लायक ठाकुरां राज श्री फतैसिंहजी जोग महाजन सूं लिखतूं हरिसिंह री जै जोगमाया री बंचावसी। अपरंच कागद १ राज रो आज डाक में आयो जिणसुं आ बात जान करके कि राजरा परमपूज्य भाभो साहब रो स्वर्गवास हो गयो, बहुत ही फिकर हुवो। ठाकुर साहब जिसा योग्य सरदारां रो उठ जांणो राजपूताना री राजपूत जाति वास्ते बहुत ही हानि कारक है। ईश्वर बहुत खोटो कियो परन्तु नाजोर बात है। परमात्मा री मरजी है जोर चाले नहीं। सिवाय धीरज करणेरे और कोई उपाय नहीं। राज बुद्धिमान और अनुभवशील हो सो ज्ञान विचार कर धीरज धारण करावसी। अठै लायक काम काज हुवे सो लिखावसी। सं० १९८२ मिती मिगसर वद १३

हरिसिंह
(गांव) महाजन

JODHPUR.
Rajputana,
18-11-25.

My dear Thakur Sahib.

I need not say how grieved I was to hear of the sad demise of my esteemed & life long friend Rao Bahadur Thakar Chain Singhji of Asop.

He was a charming personality and amongst the leading nobles of the State, he was a true type of the old school of the Rajput aristocracy. His togalty to the Darbar was always unflinching and he gave the best part of his life in serving meritoriously the 4 successive Rulers of the State. His death, is no doubt a great loss to Marwar.

With renewed sympathies and condolences.

Yours Sincerely
Sd. **Sukh Deo**

" श्री।

जोधपुर राजपूताना

१८।११।२५

जो अफसोस मेरे सच्चे और पुराने दोस्त राव बहादुर ठाकुर चैनसिंहजी आसोप के देहान्त से हुआ है उसको जाहिर करने के लिये मैं नहीं जानता कि यह किस तरह जाहिर करूं।

वह बड़े रौब वाले सरदार थे और रियासत के बड़े सरदारों में से थे और उनमें वह खूबियां थीं जो पुराने राजपूत सरदारों में होती थीं। उनका श्री दरबार के साथ पूरा स्वाम-धर्मी-पना था और उन्होंने अपनी जिन्दगी का सब से अच्छा हिस्सा लगातार चार महाराजाओं की नौकरी करने में बिताया। उनका देहान्त होने से बेशक मारवाड़ को बड़ा नुक्सान हुआ।

मैं अपनी हमदर्दी वो रंज मातमपुर्सी के बारे में जाहिर करता हूं।

आपका सच्चा

सुखदेव

उक्त ठाकुर का स्वर्गवास होने पर शोकग्रस्त होकर जिन जिन लोगों ने अपने हृदयोद्गार प्रकट करते हुए जो शोक सम्बन्धी रचना की वह यहां प्रदर्शित की जाती है।

स्वर्गवासी ठाकुर के सुपुत्र फतहसिंह कृत—

॥ गीत ॥

उगणीसो बरस बयांसी आयो,
मिंगसर चौथ निशा बुध वार।
बद पख साढा चार बजन्तां,
सुर पुर ग्यो छोडे संसार ॥ १ ॥
सुणतां खबर हुवो दुख सारे,
भाई कडूंबो भेळो।
अन्तम दरस दिया अनदाता,
मरघट मण्डियो मेळो ॥ २ ॥
कमधज चैन बंसरा दीपक,
मोटी कसर पड़ी मा बाप।
कोई भोळावण दी नहँ स्वामिन्द,
ताती कळियां सहियो ताप ॥३॥
हां ! मां बाप हमें कित हेरूं,
पतो न लागे पूरो।
जगमें छोड गया कित जांमी,
देसाटण कर दूरो ॥ ४ ॥

पूरण स्याम धरम निज पाऴण,
मुरधर में मोटो उमराव ।
पति आसोप सिरायत कूंपा,
एकरहां पाछो फिर आव ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

बाऴपणे प्रतिपाऴ करी बहु,
लाड अनेक प्रकार लडायो ।
चूक करी चितमें न धरी जिंह,
खीज पिता नह आंख जतायो ॥
पास रख्यो नित चरणन में,
नेह निवार हमें छिटकायो ।
हा ! करतार ! अनीत करी,
यह चैन बिना चित चैन न पायो ॥ १ ॥

मथाणिया निवासी बारठ जैतदान कृतः—

॥ गीत ॥

अति हिमत रखण नित पत आसांणे,
स्याम धरम पूरण समराथ ॥
बाऴण भुवण वार बिखमी बिच,
हुवो सुधार सकऴ उण हाथ ॥ १ ॥
पदवी राव वहादुर पामी,
खासी कोइयन बात दिखाव ।

बामी बन्ध बिसरजे किण विध,
मुरधर मझ नांमी उमराव ॥ २ ॥
पौरस अथग हियो गाढापण,
द्रढ पग रह्यो सह्यो न दबाव ।
गाढ न तजियो जियो जठा लग,
दियो न किण ढिग हीणो दाव ॥३॥
चाल बोल बन्ध जिकण आचरण,
बडकां ज्यूं बरतण इण वार ।
ग्यो सरीर पण बातां रहगी,
नैन बधाय सपूताचार ॥ ४ ॥
देस राजकुळ भलो दिखावण,
हिय चळ विचळ कदे नह होय ।
इळ मांडण पाछो अवतरियो,
कुलछण कळंक न लागो कोय ॥५॥
मुरधर ढाल विसाल ओठमिण,
हुवो सुचाल बधावणहार ।
मिळबो है विरलो इण पळ मझ,
सूरत समझ उसो सिरदार ॥ ६ ॥
घण तन जतन करै जग सारो,
प्यारो असती भाती प्रांण ।
राजा रांण देहधर सारो,
रहणो है ऊमर परवांण ॥ ७ ॥

ऊगे दिणयर सोही आथमें,
अवर न को थिर धर अवतार ।
कहे अवर पण सवर लहे किम.
बण दुख बिछटण छेली वार ॥ ८ ॥

दोहा

उगणीसे वैयांसिये, बद मिगसर बुध वार ।
चौथ तजे तन चैनसिंह, बज निस साढे चार ॥१॥

॥ कवित्त ॥

सगाधार प्यार सलावार हू उचार स्नेह,
उरध विचार राजनीत उर धरगो ।
भूखन बसन अन धन तें भँडार भरे,
समय उदारपन जस बिसतरगो ॥
खलल निवार कारखाने तें निहार खुद,
कोऊ भी प्रकार लार कमीहू न करगो ।
सकल सुधार भुज भार फतैसींह सौंप,
हा ! हा ! हेक कँवरपदाको मोद हरगो ॥१॥

भदोरा निवासी मूलदान कृतः –

॥ गीत ॥

गयो धरम सत गाढ वारस गयो गुणपणां,
हाय पारस गयो छूट हाथां ।

हुवो अफसोस मुरधर सको हींजरे,
जोत हर जोत में चैन जातां ॥ १ ॥
आठ मिसलां तणो सिरोमण ऊठगो,
सुरां तरु टूटगो खाट सोभा ।
सुतन सिवनाथ रा आप जातां स्वरग,
जोरवर इसो नह फेर जोवां ॥ २ ॥
कळोधर वखत रा पाड़ मोटी कसर,
वीरवर किया वैकुण्ठ वासा ।
फेर दरसण करण हियो यूं फड़फड़े,
सुपातां नीसरे नहीं सासा ॥ ३ ॥
अकल रो पुंज रजपूत ढंग आभरण,
कमर कस गयो किण मुहम कूंपा ।
एकरां फेर दरसण दिये आपरा,
रीत मरजाद खत्रवाट रूपा ॥ ४ ॥
बणी तसवीर हिरदा बिच बीदगां,
जीवतां न भूलां तने जांमी ।
राज में काम पड़सी जदी राठवड़,
खामदां विनां है घणी खांमी ॥ ५ ॥

शिऊ निवासी सांदू शिवकरण कृतः—

॥ दोहा ॥

चैन स्वरग मग चालियो, तज अनित्य संसार ।
द्रगसूं फिर कद देखसां, ऊ पाछो उणियार ॥ १ ॥

पल़ पल़ प्यारो लागतो, खामन्द थारो खोंप ।
पाछा चैन पधारजो, एकरसां आसोप ॥ २ ॥
चहुँ दिस कूंपा चैन बिन, तिके जो बिलखा तात ।
राव बहादुर राजनें, भूले नह सह भ्रात ॥ ३ ॥
करी तैयारी स्वरग कज, चैना पहर चमीर ।
वा असवारी निरखतां, नैणां बरसे नीर ॥ ४ ॥
चत्रभुज कूंपा चैननें, क्यों खोस्यो करतार ।
करण रुखाल़ी कवियणां, सारां रो सिरदार ॥ ५ ॥
चैन मोक्ष पाई चतुर, भ्रम तज ईश्वर भज्ज ।
आप तणी है आज दिन, कसर घणी कमधज्ज ॥६॥

॥ सोरठा ॥

छाती दुखरी छाप, तें दीधी सिवनाथ तण ।
मिल़सी कद मां बाप, चैन दरस अब चारणां ॥१॥
झट मारग झालेह, बुहो स्वरग दिस वीरबर ।
सजनां हिय सालेह, चैन तणां गुण चौतरफ ॥२॥
भुज झेले सह भार, आडो निस दिन आवतो ।
समवड़ियां सिरदार, चैना घणा चितारसी ॥३॥
पण अब कुण पालेह, फिकर करत फतासिंघ नें ।
चसमां जल़ चालेह, चैन बिना नह चैन है ॥४॥

॥ गीत ॥

करण प्रजा प्रतपाल़ निस दिवस रीझां करण,
देख दुख करो धणियाप धावो ।

कोट आसोपरे आज जोखां करण,
एक बारां कमधराज आवो ॥ १ ॥
झुरे बन बाग अति हेत प्रज सह झुरे,
धिनो तूं सरब वड वीर धारू ।
पियाला फूल मद सुपातां पावजो,
मेसहर आवजो फेर मारू ॥ २ ॥
अरहरां उथापण बंसरा उजागर,
सरण साधार प्रण करण साचा ।
ईहगां बधारो कुरब दिन दिन इधक,
पधारो अगंजी वेग पाछा ॥ ३ ॥
ताकवां सोक कर दूर गिवनाथ तण,
लोकरी आप अब खबर लीजे ।
आपरो हुवो अफसोस मुरधर इला,
दिवाकर चैनसी दरस दीजे ॥ ४ ॥

हिलोड़ी निवासी सुमेरदान कृत:—

॥ दोहा ॥

चिंतामणि कुल चांदणो, हीर बिछूटो हाथ ।
इकवारी आवण करो, नर आसांणे नाथ ॥ १ ॥
आठूं मिसलां आभरण, महपतियां सिर मौड़ ।
एकर चैना आवजो, राज करण राठोड़ ॥ २ ॥
सींहां सम गूंजण सदा, उतम गिरां जस ओप ।

भर रजपूती भार ले, आजो नाथ आसोप ॥ ३ ॥
स्वरग गयो चैनो सुभट, तिको बंस सिरताज ।
रजपूती रा रूप री, आगळ टूटी आज ॥ ४ ॥
एकण मुख सूं की अखां, साची करां सराह ।
इकवारी आवण करो, नर आसांणे नाह ॥ ५ ॥
वामी वन्ध जस बोलड़ा, याद घणा दिन आह ।
अनदाता फिर आवजो, नर आसांणे नाह ॥ ६ ॥
वाजी मुरधर देसरी, तीखी बातां तांण ।
मिसलां मांझी मेसहर, भड़ आजे कुळ भांण ॥ ७ ।

॥ गीत ॥

देवण जबाव किसो भड़ दीसे,
मारां में हो तो सिरताज ।
लज्जा मेर मारग चढ लागो,
जस बेड़ी टूटी बड जाज ॥ १ ॥
कोटां नवां बडाळां कमधज,
स्वरग गयो चैनो सरदार ।
वुद्धी वीर महाबळ बापो,
रंकां पाळ गयो रिझवार ॥ २ ॥
दुख पड़ियां दूजो नह दीसे,
किण सँग सला पूछसी कोय ।

मारू चैन स्वरग मग लागो,
हूवे मींढ किसो भड़ होय ॥ ३ ॥
खड़ियो आज चैनसा खत्री,
कळव्रछ तूट सला रो कोट ।
एकर दरस दिखावण आजो,
मुरधरिया मारू मन मोट ॥ ४ ॥
हेरां वाट किसी दिस हेरां,
स्वरगां रा डेरां सरदार ।
इळ जस राख अकल रा आगर,
रजवट वट आजो रिझवार ॥ ५ ॥
मीठी बात करण वड मानां,
जग ओठम पूरी वड जांण ।
अधपतिया ! भूलां किण आंटे,
कीरत रा लाडा कूपांण ॥ ६ ॥
थायो नाम प्रथी जस थाहर,
जग जाहर कीरत वड जांण ।
कमधज चैन आवजो कूंपा,
झळहळ तेज ऊगता भांण ॥ ७ ॥

गुजूकी (राज्य अलवर) निवासी आढा बख्तावरदान कृत

॥ सोरठा ॥

कमध उजाळक कीत, रखवाळक मारू धरा ।
पातां पाळक प्रीत, स्वर्ग सिधारक चैनसी ॥१॥

विपमी वात विसेस, दारुण दुख भारत दुसह ।
ख़ग जातां चैनेस; भूंडी घण श्रवणां भणक ॥२॥
प्रवल धरम री पाज, रखण लाज मारू धरा ।
आवे निजर न आज, सकव्यां सुरतरु चैनसी ॥३॥
व्है वड चिंता होस, धर रजपूताणां धणी ।
अंगरेजां अफसोस, स्वर्ग जांण चैनेसरो ॥ ४ ॥
सह खटव्रन रो साथ, मन चिंता धारो मती ।
है उदार घण हाथ, पाट चैन कमधज फतो ॥ ५ ॥

ठाकुर चैनसिंहजी ने अपने धन का उपयोग परोपकारी कार्यों में अच्छा किया था । जैसा कि नीचे उद्धृत किये हुए कुछ आंकड़ों से ज्ञात होता है ।

(१) सं० १९६६ की कार्तिक सुदि १२ को कर्नल वाइली साहब की यादगार में जो गर्लस स्कूल (कन्या पाठशाला) बनी उसमें ४००) चार सौ रुपये प्रदान किये ।

(२) ग्वांडफलसे जोधपुर में मिशन होस्पिटल के निर्माणार्थ रुपया ५००) पांच सौ वि० सं० १९६६ की श्रावण वदि १ को दिये ।

(३) वि० सं० १९६७ की श्रावण सुदि ९ को बादशाह सलामत शाहंशाह एडवर्ड सप्तम की पुण्यस्मृति में रु० ७५०) दिये । इसी तरह कई मौकों पर परोपकारी कामों में द्रव्य दिया ।

———
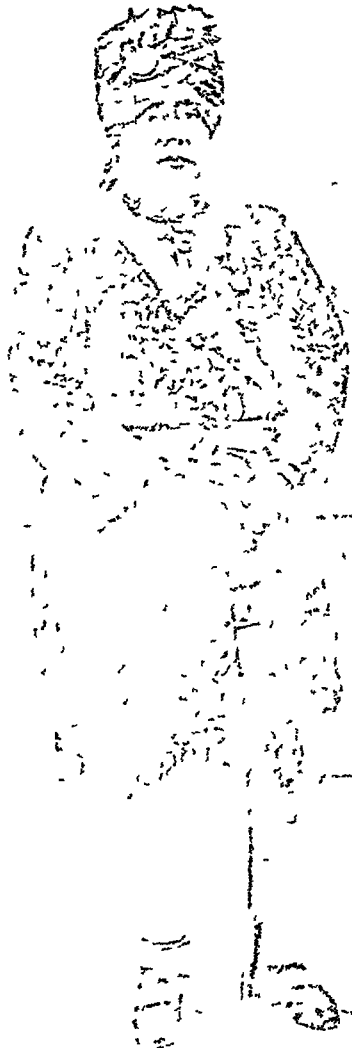
राव बहादुर ठाकुर फतेहसिंहजी आसोप ।

सप्तदश अध्याय

वर्त्तमान ठाकुर फतैसिंह

इनका जन्म वि० सं० १९४१ की भाद्रपद सुदि ११ एकादशी देवझूलनी ग्यारस) को अलवर राज्यान्तर्गत ठिकाना गढ़ी में, जहां इनका ननिहाल है, हुआ। इनके जन्म की सूचना होने पर ठिकानों में खुशियां मनाई गई। ज्यादा खुशी मनाने का कारण यह था कि इस ठिकाने में दो तीन पुस्तों से दत्तक पुत्र ही आते रहे।

यह ठाकुर बाल्यावस्था से ही परम दयालु, धार्मिक, सत्यभाषी, गुरुजन प्रेमी और विनय सम्पन्न थे जैसा कि आगे चल कर पाठकों को विदित होगा।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू में इनके ननिहाल में हुई जहां इन्होंने पुस्तकीय शिक्षा के साथ २ शारीरिक व्यायाम करना भी सीखा था।

इन ठाकुर को इनके पिता हमेशा अपने साथ रखत थे जिससे इनका संसर्ग रईसों व सरदारों से रहता था इसीसे इनको चरित्र गठन में पूर्ण सहायता मिली।

वि० सं० १९५२ में महाराजा जसवन्तसिंहजी का स्वर्गवास हो गया तब महाराजा सरदारसिंहजी गद्दी बैठे उस समय महाराज प्रतापसिंहजी ने महाराजा सरदारसिंहजी के पास ठाकुर चैनसिंह को निरन्तर रहने की आज्ञा की। तदनुसार ठाकुर महाराज के पास रहने लगे। कँवर फतैसिंह आसोप की हवेली में पढ़ाई करता रहा। महाराजा सरदारसिंहजी ने ठाकुर को कह कर फतैसिंह को बुलाकर अपने पास रख लिया। उस समय इसकी उम्र ११ वर्ष की थी।

कुँवर फतैसिंह तीन साल तक महाराजा के साथ रातानाडा पलेस में रहा । वि० सं० १९५४ की माघ वदि ९ को महाराज-कुमार सुमेरसिंहजी का जन्म हुआ उस समय सरदार और मुत्सद्दियों ने गोठें कीं। जन्मोत्सव के जल्से होते रहे उस समय भी महाराजा ने कुँवर फतैसिंह को अपने पास पुत्र की भांति रक्खा।

जब कुँवर ने १७ वें वर्ष में पदार्पण किया। तरुण अवस्था होने पर इनका विवाह खंगारोत हरसोली ठाकुर करणसिंह की सौभाग्यवती पुत्री रत्नकुमारी के साथ वि० सं० १९५८ की आषाढ सुदि ८ अष्टमी को हुआ। इस ठकुरानी के कोई सन्तान नहीं हुई और वि० सं० १९६१ की आषाढ सुदि नवमी को स्वर्गवास हो गया।

तदनन्तर वि० सं० १९६३ की वैशाख सुदि ३ तृतीया को दूसरा विवाह मंडावा (शेखावटी में) के ठाकुर भगवन्तसिंह की कन्या सौभाग्यकुमारी के साथ हुआ। यह ठकुरानी बड़ी सुशील, दयालु और पतिव्रत धर्म पालने वाली है।

वि० सं० १९६४ की वैशाख सुदि ५ को इनके पिता ठाकुर चैनसिंहजी सरदारसिंहजी की सेवा में उपस्थित हुए उस समय यह कुमार भी अपने पिता के साथ प्रणाम करने को महाराजा के चरणों में उपस्थित हुआ। उस अवसर पर महाराजा ने इसको अव्वल दर्जे का कँवरपदे का कुरब और ताजीम इनायत की। जिसकी सलामती ड्योढीदार वनराज ने बोल कर सुनाई।

इस द्वितीय विवाह की ठकुरानी से ४ कुमारिका और ४ पुत्र हुए। प्रथम पुत्र का जन्म वि० सं० १९६४ की श्रावण सुदि १३ त्रयोदशी को हुआ। ठाकुर चैनसिंह ने अपने पौत्र का जन्मोत्सव बड़े समारोह के साथ सम्पन्न किया और बधाइयें बांटी गईं। चारण भाट और ढोलियों को इनाम इकराम दिये गये और गरीबों को दान

दिया गया। परन्तु एक महीने के अनन्तर ही उसका स्वर्गवास हो गया जिससे शोक भी हुआ।

वि० सं० १९७३ की भाद्रपद बदि ८ को तीसरा विवाह जोधपुर राज्य के रामपुरा नामक ठिकाने के स्वामी भाटी मोतीसिंह की कन्या सूरजकुमारी के साथ हुआ।

वि० सं० १९७४ में प्लेग की बीमारी ने आक्रमण किया, उस आपत्ति काल में लोगों को गांव छोड़ना पड़ा, गढ़ खाली कर दिया गया। ठाकुर चैनसिंह ने निज मनुष्यों के साथ पीलवाने नामक तालाब पर डेरा कर दिया था। उस समय कुँवर फतेसिंह प्लेगाक्रांत लोगों का निरीक्षण करने के लिये खुद जाता और उनके औषध आदि का प्रबन्ध बड़े विचार और ध्यान के साथ करता और जो कोई घबरा जाता तो उसे हिम्मत बन्धाता।

वि० सं० १९७६ (ता० २५-६-१९१८) में महाराजा सरदार-सिंहजी की पुत्री सूरजकुमारी का विवाह रीवां दरबार बाघेला गुलाब-सिंहजी के साथ हुआ उस अवसर पर विवाह कार्य के प्रबन्ध में नीचे लिखे रईसों के डेरों का कार्य भार महाराजा की ओर से कुँवर फतेसिंह के हाथ में दिया गया। उस विषय का महकमा खास का पर्चा नं० ७६२ का मिला था उसकी प्रतिलिपि—

" नं० ७६२

ब: वकील ठिकाणे आसोप

तथा सूरजकँवर बाईजी साहब का विवाह ता० २५ जून सन् हाल का मुकर्रर है और बरात रीयां से आवेगी और डेरा राई के बाग होगा और अठपहलू बंगला में श्री रतलाम दरबार साहब वो श्री जावरे नवाब साहब का विराजणा होगा। वहां पर सरबरा वो उनकी खातिर तवाजो वो दीगर बन्दोबस्त मुतालका के लिये

आसोप कंवरजी तजवीज किये गये हैं और कंवरजी के साथ मजी-दुलाखांजी, स्यामसुन्दरलाल, मणीहार माणकचन्दजी तईनात किये गये हैं सो कंवरजी को वाकफ कर देवो कि तनदही से इन्तजाम देवे और कोई सलाह मदद की जरूत होवे तो वो जनरल मैनेजिंग कमेटी मैरेज से ले सकते हैं। फकत। ता० ३०। ५। १६

सुखदेव"

उस कर्तव्य का पालन इन कुँवर ने बड़ी तनदिही के साथ किया जिससे रतलाम दरबार और जावरा नबाव ने इनकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। रीजेन्ट महाराजा सर प्रतापसिंहजी ने भी इनको बुलाकर तारीफ की और खातिर फरमाई कि तुम ने महमानदारों की सेवा अच्छी की।

इनके पिता चैनसिंहजी की तबीयत वृद्धावस्था के कारण कुछ नर्म रहने लगी तब यह अपने पिता का स्थानापन्न होकर जब कभी मीटिंग आदि में काम पड़ता तब जोधपुर जाया करते थे।

महाराजा सर प्रतापसिंहजी की इन पर पूर्ण कृपा थी। जब यह जोधपुर जाते और महाराजा सर प्रतापसिंहजी को अपने पहुंचने की इत्तला करवा देते तो वे इनकी सवारी के लिये मोटर भेज दिया करते थे। और मोटर कारखाना के अधिकारी के पास यह हुक्म पहुंच गया था कि आसोप कुँवर की इत्तला आवे तब नौकरी में मोटर भेज दिया करो।

वि० सं० १९८० की माघ सुदि ८ अष्टमी को मुरधरकुंवर बाई जी (महाराजा सरदारसिंहजी की पुत्री) का पाणिग्रहण वर्तमान जयपुर महाराजा मानसिंहजी के साथ हुआ, उस विवाह के समय बराती लोगों की मान मनुहार करने के लिये सरदार नियत किये गये थे, उनमें आपकी भी गणना थी। बरात जोधपुर से वापिस

ठाकुर कीरत सिंहजी बगरू (जयपुर)

जयपुर गई तब बाईजी साहिबा के साथ जयपुर जाने के लिये रास व पाटोदी के सरदार और आसोप वो बडू के कंवर नियत किये गये। वहां करीब १५ दिन ठहरे।

वहांसे रवाना होते समय इनको जयपुर राज्य की ओर से पालकी सिरोपाव दिया गया। पालकी सिरोपाव देने का कारण यह था कि उस समय यह कंवरपदे ही में थे।

वि० सं० १६८१ में इनकी प्रथमपुत्री मोहनकँवर का विवाह राजावतों के बगरू ठिकाने के अधिपति जसवन्तसिंह के ज्येष्ठ पुत्र कीरतासिंह से हुआ। इस विवाह का प्रबन्ध भी इन्हीकी देख रेख में हुआ था। क्योंकि उस समय इनके पिता का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यद्यपि यह विवाह कार्य इनके हाथ से प्रथम ही प्रथम हुआ था परन्तु इनकी बुद्धिमत्ता से बड़े आनन्द के साथ सम्पन्न हुआ। इस विषय की कविता उपलब्ध हुई है वह नीचे उद्धृत की जाती है।

मथाणिया निवासी बारठ जैतदान कृत—

कवित्त

सुत जसवन्त हूको दुलह किरतासिंह,
चैनसुत सुता को विवाह रंग बरसे।

---

(१) बगरू ठिकाना जयपुर राज्य में अव्वल दर्जे का है। इसको जयपुर राज्य में अध-राजिया भी कहते हैं क्योंकि पहले जब कभी जयपुर महाराजा बाहर जाते तब राजमहलों में बगरू ठाकुर का डेरा हुआ करता था। बगरू शहर जयपुर से पश्चिम में १९ मील के अन्तर पर है। जयपुर से अजमेर को जो सड़क जाती है उस सड़क के बांई तर्फ है। बगरू शहर छपाई का काम, खजूर की चटाइयां व छबड़ियां व पंखियों के वास्ते प्रसिद्ध है। गढ़ में मकान बहुत अच्छे ढंग से बने हुए हैं, किला अनोखे ढंग का है, आबादी भी बहुत अच्छी है। खास बगरू करीब २०० घर की आबादी का शहर है।

कूरम कमन्ध कुल मिलत महान मोद,
जान माढ की जलूस हेर हिय हरसे ॥
उत ढुंढार मारवाड़ समाचार आद,
प्यार को निहार दूध भात मेल दरसे ।
नामधेय राज तायें जैत आसीस जपे,
दोहुने समान उपमान नैन दरसे ॥

शिऊ निवासी सांदु विशनदान कृतः—

॥ कवित्त ॥

आनन्द उछाव व्याव विवध प्रकार बन्यो,
चतुरभुजोत चाव कोड चहुँ कानीनै ।
आवाहन देव कुल देवगण राज आये,
मंगल मरजाद सूं मनावो मोह मानीनै ।
राजावत राज के घराने सोहे राग रंग,
निरखत विमोह बीन्दराजा जोड़ जानीनै ।
पूरन प्रमानी देव वानी में प्रभाव प्रेम,
वगरू वखानी तेरी कीरत भवानीनै ॥

॥ दोहा ॥

मन वगरू वर मोहिया, जियो चिरंजी जोड़ ।
दोनूं देसां दिप रया, महागुणां सिर मोड़ ॥१॥

वि० सं० १९८२ में इनके पिता का स्वास्थ्य बिलकुल बिग
गया और इसी वर्ष की मार्गशीर्ष वदि ४ चतुर्थी को स्वर्गगामी हुआ।

पिता की रुग्णावस्था में इन्होंने सेवकों के विद्यमान रहते हुए भी अपने हाथ से परम प्रेम के साथ सेवा की जिस विषय की निम्न लिखित कविता है।

मदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृतः—

॥ सोरठा ॥

कल जुग बहे करूर, पिता हुकम हद पालियो।
जसरी धजा जरूर, फारूके भारी फता!॥

दोहा

दिल उज्वल अरु काछ द्रढ, चाले बडकां चाल।
ये थांमें आसोप पत, मोटा गुण फतमाल ॥१॥
पिता भगत पोहमी प्रगट, सारी जगत सराह।
जग कैवे सरवण जिसो, वाह फता भइ वाह ॥२॥

॥ छप्पय ॥

पिता हुकम परवांण, रात दिन फतसी रहियो,
पिता हुकम परवांण, भले विण मारग वहियो।
पिता हुकम परवांण, साच आज्ञा अनुसरियो॥
पिता हुकम परवांण, कह्यो चैने ज्यों करियो।
पितु मात हुकम राखण प्रसिध, जग सह सरवण जांणियो।
सपूतां मोड़ सारां सिरे, अंजस भायां आंणिणो ॥ १ ॥

वि० सं० १९८३ की चैत्र सुदि ४ को ठाकुर चैनसिंह की मातमपुर्सी के वास्ते महाराजा श्री उम्मेदसिंहजी साहब आसोप की हवेली

पधारे। रीत्यनुसार स्वागत किया गया और महाराजा ने ठाकुर चैनसिंह के स्वर्गवास की शोक सहानुभूति प्रकट करते हुए ठाकुर फतैसिंह को धैर्य बंधाकर खातिर की।

इसी वर्ष की वैशाख वदि ६ को द्वितीय पुत्री सजनकँवर का विवाह पदमपुरा के ठाकुर बलवन्तसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र राजावत सुलतांनसिंह से किया गया।

पदमपुरा वरात की प्रशंसा के विषय में भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृत कविताः—

॥ गीत ॥

सजे जांन सेमांन अप्रमांण सारां सिरै,
वजै तीन वार अत सुरंग बाजा।
धुजै धर पमंगां पोड़ लागे धमक,
रजै राजावतां तणो राजा ॥ १ ॥
तुरँग खड़ तेज आसोप आया तुरत,
मेसहर बधाया राव मारू ।

---

(१) ठिकाना पदमपुरा जयपुर राज्य के अन्तर्गत है और जयपुर से करीब ५० मील पूर्व की तरफ है। इस के स्वामी राजावत कल्याणोत सरदार हैं। राजावत कछवाहों की एक शाखा है।

(२) कुंवर सुलतानसिंह जयपुर मानगार्ड में लेफ्टीनेंट पद पर सुशोभित हैं, जयपुर दरबार की इस पर पूर्ण कृपा है। कुंवर सुलतानसिंह को आखेट का बड़ा शौक है। निशाना लगाने में अत्यन्त निपुण है। इसने अजमेर मेयोकॉलेज में डिप्लोमा पर्यन्त की शिक्षा प्राप्त की है। यह अपने हठ और पेन का पक्का है। पदमपुरा का डाक घर और रेलवे स्टेशन महुवा रोड़ मंडावर है, जो B B. & C. I. Ry. की लाइन पर है। पदमपुरा वहां से करीब १५। १६ कोस के अन्तर पर है। महुवा रोड़ से पदमपुरा जाने के लिये ऊंट वगैरा की सवारी मिलती है।

कंवर सुलतान सिंहजी पदमपुरा (जयपुर)

हवायां जब्बर तोपां तणीं होय रही,
सवाया दांन दे प्रभा सारू ॥ २ ॥
करण सूं इधक बलवन्त रीझां करे,
थिरूं त्रिहुं लोक में कीत थाई ।
पदमपुर पती है मान दूजो प्रगट,
गुणियणां बडाई सत्त ग़ाई ॥ ३ ॥
कँवर रा विवाह में सकव अभरी किया,
कूरमां तणो नित सुजस करसां ।
कवीरी अरज हर ईस साची करो,
बर बनी चिरंजी कोड़ बरसां ॥ ४ ॥

गांव गुजूली निवासी आढा बखतावरदान कृतः--

॥ सोरठा ॥

बाजा मँगल़ बजाय, कँवर पाट उपवन करण ।
सुभ गजनेत सवाय, कुल़ किलाण बलवन्त तिलक ॥१॥
आदर कर अण पार, भूपत घण भेल़ा किया ।
जस त्रंबाल़ बजाय, सझि बरात बलवन्त सी ॥२॥
बल़वन्त कीध विशेष, सुत विवाह सुरतांण रे ।
महि जस रखण हमेस, अगणित द्रव्य लुटाइयो ॥३॥
जयपुर जोधांणेह, उमरावां मिजलस सजे ।
है धिन आसांणेह, इसा हुवे जलसा इधक ॥४॥
अठी फतो आसांण, उठी पदमपुर रो पती ।
प्रकट सुजस अप्रमांण, धिन सम सम्बन्धी मिले ॥५॥

चित उदार चह सीह, रीतां ये गहसी सरब।
सुकवी जस कहसीह, ये बातां रहसी अमर ॥६॥
आरम्भ गढ़ आसांण, सजनकँवर जग साभियो।
मांडे जस अप्रमांण, कूंपां पत आछो कियो ॥७॥
धिन अगणित दीधीह, पत्री कुंकुं प्रेम री।
हित कर सह लीधीह, तैं कीरत कीधी फता ॥८॥
इधको कीध उछाह, सुजस वाह चहुं दिस दखे।
बाई सजन विवाह, कमन्ध नाह आसांण किय ॥९॥

इसी वर्ष में उक्त विवाह दिन के १९ उन्नीस दिन के अनन्तर यानी वैशाख सुदि १० को तृतीय पुत्री अनोपकँवर का विवाह ठिकाने थांसी के रावत तखतसिंहजी शक्तावत के ज्येष्ठ पुत्र हरिसिंह के साथ किया गया।

उक्त विवाह सम्बन्धी कविता बारठ लिखमीदास कृत--

---

(१) यह ठिकाना उदयपुर राज्य के अव्वल दर्जे के १६ ठिकानों में से शक्तावतों का है। शक्तावत सीसोदिया राजपूतों की एक शाखा है। मेवाड़ राज्य की तरफ से इस ठिकाने के स्वामी को रावत की पदवी है। प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रतापसिंहजी के कनिष्ठ भ्राता शक्तिसिंहजी से यह शक्तावत शाखा प्रचलित हुई है। थांसी खास अच्छी रमणीय पहाड़ी के ऊपर स्थित है। चातुर्मास के दिनों में यहां अपूर्व छटा दृष्टिगोचर होती है। थांसी का डाक घर वोहेड़ा (मेवाड़ में) है जहांसे थांसी करीब ४-५ मील के अन्तर पर है। थांसी का रेलवे स्टेशन नींबाहेड़ा है। जो थांसी से २५-२६ मील की दूरी पर है।

रावत हरीसिंहजी ठिकानें बांसी (मेवाड़)

॥ दोहा ॥

प्रघल़ तेज राज़स प्रघल़, प्रघल़ पुत्र परवार ।
तालावर तखतेसरो, इल़ा प्रघल़ आचार ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

चिरंजीव भड़ च्यार, मूँछां वट घालै मरद ।
सह दाखै संसार, तीख भाग थारो तखत ॥ २ ॥
सारो जग सुणियोह. हरियन्द सादी हौकबौ ।
बड जानी बणियोह, तूं जस खाटण तखतसी ॥ ३ ॥
समदां सीमाड़ाह, सुजस तणा ग्रह कै सबद ।
(तूं) मनरो मेवाड़ाह, तायो सोब्रन तखतसी ॥४॥
देवण दत दूणाह, चन्द्रहासां ब्रद चोगणै ।
ए ब्रद अगलूणाह, तुँहिज उजालै तखतसी ॥ ५ ॥
माठां मद मोड़ाह, मूंघो जस खाटण मतै ।
चावो चीतोड़ाह, तूं जग ठावौ तखतसी ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

सुजस तणां हाका सुणै, मठां हुए चित मन्द ।
रैली द्रब मारू रयण, हौय वनै हरियन्द ॥ १ ॥

(बासणी के कविया हेमदान कृत)

॥ कवित्त ॥

सोभित कनक मोर नगन जटित स्वच्छ,

भूषण अनूप और रूप लघु बसको ।
मदन समान छबी बदन प्रकासमान,
धार गज छँवर विभव विबुधेस को ।
दुलह कनैया कहां किधों रघुरया कहां,
मन का हरैया यातें बरतन विसेस को ।
ऐसी प्रभा पायके दिखायो घन आनन्द यो,
तीव्र तेज तरुण तनय तखतेस को ॥ १ ॥

ये तीनों विवाह इस ठाकुर ने अपनी खुद की देख रेख में
कम समय में अच्छी धूमधाम और शान्ति से सम्पन्न किये थे
से इसकी योग्यता का लोगों पर पूर्ण प्रभाव पड़ा।

मांडहा (कन्या का पितृगृह) के विषय की प्रशंसा सम्बन्धी कवि

(भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृत)

॥ गीत ॥

धिनो बांधतां सुरंगी तणी घणी कीत छाई धरा,
रीत आदु बडकांरी निभाई राजेस ।
ईढरां भड़ां सूं दूणी उन्नति सदा ही ओपे,
सौ गुणी वधाई सोभा बंसरे दिनेस ॥१
मांढवो कूंपेस जिसो रचायो फतेस मारू,
आनन्द मचायो आछो आसांणे अपार ।
कविन्दां रिझायो जदी मनां उमंगायो कूंपो,
भरे बांध लीनो भजां बिरदां रो भार ॥२

झड़ी रीझ लागी घड़ी हुई है अमोल जठे,
नड़ी नड़ी सज्जनां हरखे जेण वार ।
द्रवे छोळां बरसे कूंपांण पती छत्र धारी,
नीच मनां थरके आ दातारी निहार ॥३॥
हमाऊ पांख ज्युं हात ईहगां ऊपरे हुआ,
वीदगां सरबेतां तणां थया उग्र भाळ ।
सिरोपाव कड़ां डोरां मोतियां सहेतां सूंपै,
नरांनाथ कूंपै कीधा सुपातां निहाल ॥४॥

॥ कवित्त ॥

कमंध फताह वाह वाह है सराह तेरी,
उन्नत अथाह हू को थाह हू न पायो है ।
केते सुने दानी ज्यांकी कीरती प्रकास रही,
कीरत के काज महराज सो दिखायो है ॥
मांढवो रचायो मारू आनन्द मचायो खूब,
कवी हरखायो मन जद ही जस गायो है ।
जग को सोभाग लीनो दान अणपार दीनो,
चैन नन्द रंग भीनो द्रव झड़ मचायो है ॥

॥ सोरठा ॥

अण पळ दान अखूट, दीनो थे नित दूथियां ।
लीनों है जस लूट, मांढा रच कूंपा मुकट ॥

वारणी निवासी कविया हेमदान कृतः—

॥ दोहा ॥

तर्णा वांध चैनेंस तण, इधक बणी ब्रद ओप ।
अड़ी भ्रूंह मूंछां अणी, एम धणी आसोप ॥ १ ॥
जस बावत दाखे जिता, अत्ता विरदां ओप ।
मन ऊंचो घर में मता, इधक फता आसोप ॥ २ ॥
चैन मुरद्धर चांदणो, अदभुत राखी ऐन ।
फावे गुण वेहिज फता, चैन तणां सब चैन ॥ ३ ॥

भदोरा निवासी सांदू मूलदान कृतः—

॥ गीत ॥

सराहे देख मेवाड़ ढूंढाड़ रा सिरायत,
मोद छक मुरधरा घणो मांही ।
धणी आसांण फतमाल द्रब ऊधमें,
तणी बन्ध तेवड़ी सुजस तांई ॥ १ ॥
कमधजां मोड़ उग्र भाग चाढे कलस,
कुमेरां किया भण्डार कूंपै ।
अचम्भे रया भड़ देखतां ईढरा,
रचाया स्वयम्बर अडग रोपै ॥ २ ॥
आभरण वंस रा कोट नव उजागर,
ऊँच चित कठा लग सकव आखां ।
तांख रा ज्याग कर आप वायां तणां,
लियो जस सिवा हर मुखां लाखां ॥३॥

अंजसै धणी जोधांणरो आपसूं,
बलोबल कीरती सकव वाचां ।
मुकट मिण अमीरां रचाया मांडहा,
अभनमा केहरी तूझ आचां ॥ ४ ॥
ब्याव बडकां किया जिकण सूं बाध कर,
कँवरियां ब्याव फतमाल कीधा ।
बैन रा सुतन अभरी किया चारणां,
दान में थैलियां सुद्रब दीधा ॥ ५ ॥

आंगदोस निवासी बारठ लिखमीदान कृतः—

॥ दोहा ॥

जनक सुता सौयम्बर ज्युँहीं, द्रब खरचै सुध दिल्ल ।
भलो कियो सह जग भणै, मांढ घुमँड फतमल्ल ॥१॥
समवड़ भड़ अँजसै सको, सांभल जसरा स्वाल ।
कूंपावत आछो कियो, मांढ घुमँड फतमाल ॥२॥
दहुँ राहां उग्रवट दिपै, इण घर रा आचार ।
राह विना दी राखणा, वाह फता रिझवार ॥३॥
वाह फता इण बखत में, सत जुग राह सचोप ।
सौयम्बर मुथरा जनक सौ, आरँभियो आसोप ॥४॥

॥ सोरठा ॥

कहवां मींढ किसाह. फूटरमल थारै फता ।
आरम्भ ज्याग इसाह, आवै वण आसोप हूँ ॥१॥

ग्रहके त्रंबालाह, प्रभतारा दुनियां असद ।
(ए) आदू उजवालाह, फाबै ब्रद थां घर फता ॥२॥

माठां भागां मांण, जस त्रंबक वागा जबर ।
कियो फतै कूंपांण, सौयम्बर दहुँ राहां सिरे ॥३॥

ब्याव अछा इण वार, तैं कीधा कँवरयां तणा ।
पङ्गी समँदां पार, फैली चहुँ देसां फता ॥४॥

रयणे नह रहतीह, प्रभत बेल सुकृत पड़ी ।
तैं आसोप पतीह, फेर हरी कीधी फता ॥ ५ ॥

जड़ तक सूके जात, लाख थौक जसरी लता ।
हेम सींच निज हात, फेर हरी कीधी फता ॥ ६ ॥

सावत करे सम्भाल, जल सूँ द्रब सींची जबर ।
हौय गहर हरियाल, फैली जस तँतू फता ॥ ७ ॥

॥ गीत ॥

सिरे कियो घमसांण मांढौ जनक सारखो,
सब भड़ां वडाला थाट सोहै ।
सपूतां सिरोमण बिया सिवनाथसी,
मता द्रब थैलियां प्रभत मोहै ॥ १ ॥
मुरधरा दाहणीं सिरारा मुदायत,
सुपातां दियण दत गरज सारू ।
ब्यावरां कोट दहुँ राह धिन धिन कहै,
मीढ कुण कर सकै राव मारू ॥ २ ॥
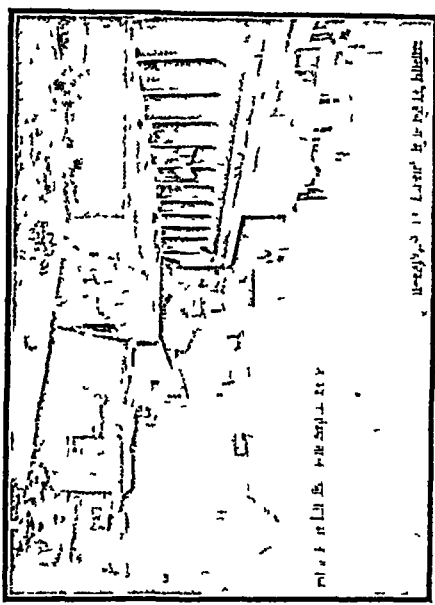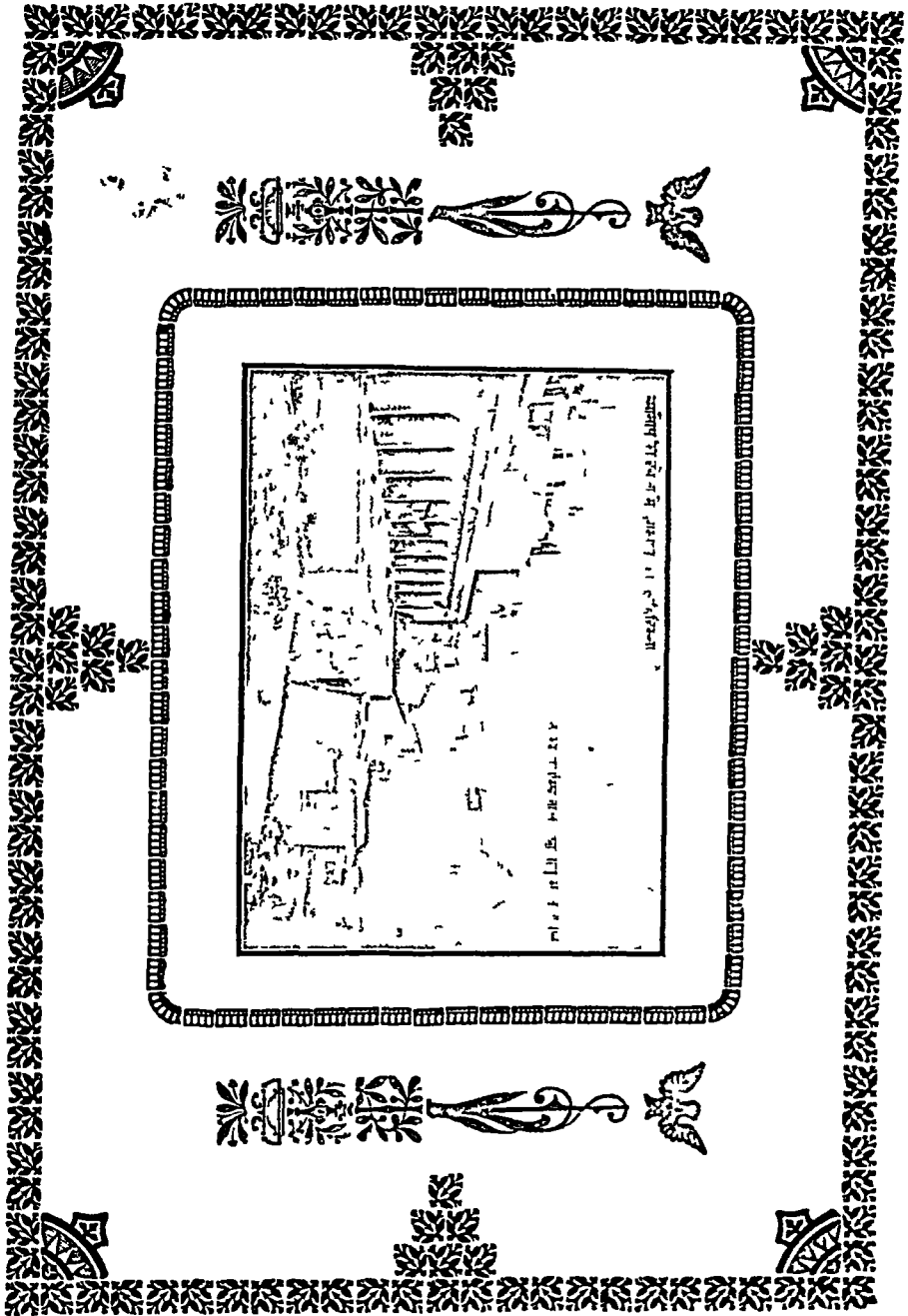
भागरा उजागर सरब आलम भणै,
थरक चित अदत तज मांण थाका ।
जाय नह बात अखियात जातां जुगां,
सौयम्बर तणौ जस अमर साखा ॥ ३ ॥
जुगादू राह घरवट तणीं जांणवो,
तांणवो मूँछ आचार तावै ।
आसती पणौ इण वार ब्रद ऊजला,
फता छत्र धार तौ भुजां फावै ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

राखी घरवट रीत, तेज फता वांधै तणी ।
जबरो आराजीत, हुतो सुदत सिवनाथ हर ॥ १ ॥

इसी साल में इन्होंने अपने स्वर्गवासी पिता ठाकुर चैनसिंह की पुण्यस्मृति में तालाव नौसर के पश्चिमी किनारे पर एक भव्य बारहदरी बनवाई ।

वि० सं० १६८४ में इस ठाकुर ने जोधपुर में तलहटी के महलों के पास जो आसोप की हवेली है उसका पुनरुद्धार कराया और उस में बाजार की तरफ १३ नई दूकानें बनवाई और आसोप में भी पुराने जनाने महलों का नये ढंग पर निर्माण करवाया ।

इसी वर्ष की ता० २०-११-२८ को यह ठाकुर महकमा खास के परचा नं० ६१७-१०-११-२८ के द्वारा वाल्टरकृत राजपूत हित कारिणी सभा के मेम्बर किये गये

नकल परचा महकमा खास

"नं० ६१७

बः वकील ठिकाने आसोप

तथा कौंसिल रिजोल्यूशन नं० ६ ता० २४-१०-२८ के श्रीजी साहवां मया फरमाय थांरे ठाकरां ने वाल्टरकृत हितकारिणी सभा रा मैम्बर मुक़र्रर फरमाया है सो थांरे ठाकरां ने इत्तला कर देवो। फकत। ता० १०-११-२८

फतैसिंह
महाराज सी० एस० आई०
होम मम्बर"

इन्होंने ८ वर्ष पर्यन्त बड़ी योग्यता के साथ अनेक उन्नति के कार्य करने की सलाह देकर सभा की सहायता की। परन्तु घरू कामों की अधिकता के कारण ई० सन् १९३६ में सभा की सदस्यता का त्याग-पत्र दिया।

वि० सं० १९८४ की कार्तिक बदि १४ को तीसरी शादी से इनके प्रथम पुत्र कँवर देवीसिंह का जन्म हुआ। इस अवसर पर ठिकाने में बड़े उत्साह के साथ खुशियां मनाई गई। क्योंकि कँवर जन्म के वास्ते सब लोग लालसा युक्त हृदय से उस परम प्रभु की तरफ दृष्टि लगाये बैठे थे।

इसी खुशी में ठाकुर ने आसोप से पूर्व की तर्फ करीब आध कोस की दूरी पर पट्टे के गांव रामपुरा की सरहद में श्री करणी माता का एक नया स्थान स्थापित किया और उसके चारों ओर ५०० बीघा जमीन गोचर के वास्ते पुण्यार्थ नियत की।

इस पुत्रोत्सव के अवसर पर कवि लोगों ने जो कविता की थी वह यहां उद्धृत की जाती है।

प्रथम कवर देवी सिह जी

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृतः—

॥ गीत ॥

सम्वत् उगणीस चौरासी आयो,
वद कार्तिक चवदस मन भायो ।
जोगो सुत भटियांणी जायो,
सुपह फता धर हरस सवायो ॥ १ ॥
तोपां हुवे हवायां ताजी,
गहरे नाद नोबतां गाजी ।
जगतंब वकत कीवी आजाजी,
राम हरा रो मन है राजी ॥ २ ॥
बाजा घणां सुरंगा बाजे,
छत्रधर चैन जिसो ओ छाजे ।
राजा कूंप सवायो राजे,
बगत हरो इन्द्र रूप विराजे ॥ ३ ॥
दि़ल उज्जल़ द्रव्य छोल़ां देवै,
लाखां तणी आसिका लेवै ।
कविजन कीत अनेकां केवै,
सत भ्रम नीत कूंपावत सेवै ॥ ४ ॥
करनी मात अरज सत कीजो,
लाख प्रकार कमन्ध सुख लीजो ।
देवी नित नित आनन्द दीजो,
रिधु फतैस कँवर इल़ रीजो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

विध विध वहुत वखांण वध, हद नित कीरत होत ।
कँवर वधाई में कमन्ध, दीनी धर देसोत ॥ १ ॥

ग्राम गुजूकी (अलवर) निवासी आढा बख्तावरदान कृत—

॥ सोरठा ॥

इन्द्र सगत आखीह, कँवर होवण फतमल कमन्ध ।
हां घण जण साखीह, वंस वधायो बीसहथ ॥ १ ॥
साचो इष्ट हमेस, चित राचो करनल चरन ।
वधसी वंस विसेस, तप प्रताप थारो फता ॥ २ ॥
लसो सहित श्रीलाल, न्हसो सकल सत्रू बिघन ।
तपो तखत फतमाल, आसांणे मुरधर अमर ॥ ३ ॥
श्रवण खुसी सुणतांह, लाल जनम फतमाल रै ।
मोद उछव मुणतांह, रसना यह नायक रट्टं ॥ ४ ॥
तन अम्बर न समात, आनन्द सुण आसांण रो ।
महर करी घण मात, करनादे दीधो कँवर ॥ ५ ॥
उर अहसांन अछेह, दृढ देवी देसांण रो ।
स्रवणां वेग सुणेह, कँवर जनम कूंपा तिलक ॥ ६ ॥
दखसूं सोव्रन दीह, लखसूं फतमल लाल जद ।
जपसूं आसिख जीह, उर आणन्द थपसूं अधिक ॥७॥

॥ सवैया ॥

त में पूरन चाह उछाह तें साथ हितू सुकवी परिवार की ।
वत बान बसू निधि चंद को राधसु चौदसि है गुरु वार की ॥
तेजगो बलिदान कड़ाहिलौ औ करि पूजन प्रेम अरार की ।
ाज देसांण आसांणपति दई जात झडूला सूं राजकुमार की ।१।

॥ सोरठा ॥

नित कवि करण निहाल, चित उदार चैनेसरो ।
लाल सहित फतमाल, मात रखो करनल अमर ॥१॥

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृतः—

॥ गीत ॥

छकां जोर आनन्द फतैसिंह घर छावियो,
इष्ट फल पावियो आज आछो ।
ग्यान सूं करनला तणो गुण गावियो,
सेव हर पावियो सुतन साचो ॥ १ ॥
थिरू रवि चन्द लग कँवर इल थावसी,
गुणी गुण गावसी हरक गाढे ।
लालरो अंजस भड़ ईढरा लावसी,
चावसी जिकां घर आभ चोढे ॥ २ ॥
हरो चैनेस रो चैन मग हाल ही,
धेस रां घालही हिये दहलां ।

मेस रतनेस ज्यों प्रथी पर मालही,
सत्रुआं सालही रमण सहलां ॥ ३ ॥
वंसरो भांण भल़ पुन वाधावतो,
जबर जग चावतो मात जायो ।
भाग रो पुंज सैणां हिये भावतो,
आवतो सर्ब सुख लेर आयो ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

विध विध अति वाखांण बहु, हद नित कीरत होत ।
कँवर बधाई में कमन्ध, दीनी धर देसोत ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

धर समपी छत्रधार, कँवर बधाई में कमन्ध ।
पोहमी जस दध पार, हद थारो सेवा हरा ॥ १ ॥
खत्रवट कीरत खाट, जस कारण दीधी जमी ।
वडकां वाल़ी वाट, तूं वैवे चैनेस तण ॥ २ ॥
सुपहां मिल सारांह, कियो दिवालय कीतरो ।
चित सुध चैनाराह, कमन्ध फता चाढ्यो कल़स ॥ ३ ॥

॥ गीत ॥

सुरां खगिन्द्रां नरिन्द्रां नरां निवाह करत्ती सारां,
भरत्ती अनेकां पेट जननी विसेस ।
ग्राछा काज सरत्ती ग्रम्रत्री वेद केवे इल़ा,
तिका ग्रा धरत्ती रीझां वरत्ती फतेस ॥ १ ॥

अदेवाळां न चायो पोहमी वाळी देख आचां,
चैन नन्द रचायो आसांणे भारी चाव ।
छायो मोद सजनां सवायो दिपे छत्रधारी,
मेस दूजो दिखायो फतेस मारू राव ॥२॥
धीट सूंमां न दीनी न लीनी जिका साथ धरा,
इळा दीनी जिकां नाम उबार्यो ऐसोत ।
धार्यो आद बिरदां बधार्यो धरम कळाधारी,
दळा हरे बलाकारी धरा दी देसोत ॥ ३ ॥
जामी फतो मिळतां सादूळ वाळो भाग जागो,
स्यामध्रमी बधे आगो दानरो समन्द ।
बागो थाळ पुत्र रो कबिन्दां घरे रौर भागो,
कळूरो बायरो थनै न लागो कमन्ध ॥ ४ ॥

आसोप ठिकाने के वकील पंचोली मूलचन्द कृत:—

॥ कवित्त ॥

इष्ट को उधार्यो जिनको जगत बीच तार्यो वाको,
कारज सब सार्यो सो तो ग्रन्थ केई वखांनिये ।
करणी को इष्ट धार इष्ट हूको जान सार,
बेर बेर की पुकार मात चित लांनिये ।
एकाग्रह भक्ति जान बड़पन को बिरद आंन,
अम्ब हुई मेहरबांन लीजे मन मांनिये ।
कृपा कर देवी देवीसिंघ पुत्र दीनो तोय,
अमर यह रहेगो सूर बीर धीर जांनिये ॥ १ ॥

आंगदोस निवासी बारठ लक्ष्मीदान कृतः—

॥ दोहा ॥

कमँध फतारे हो कँवर, आंगण फलियो अम्ब ।
आ वाजी आसोप री, तैं राखी जगदम्ब ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

आ काती अणमोल, चवदस आई चाह सूं,
साचा गुणां सतोल, कमध फतारे हो कँवर ॥ १ ॥

रामपुरिया निवासी आढा मुरारदान कृतः—

॥ कवित्त ॥

सम्वत उगणीसे चौरासी कृष्ण कार्तिक में,
इम्रत निवास बैन ऐसो मो सुनायो है ।
कूंप कुल़ कमल़ उदार फतैसिंहजी के,
रानी भटियांनीजी को जचा नाम आयो है ॥
याको मन उछव हुतो जु चैनसिंहजी,
वाही को उदार पुण्य पूरण दिखायो है ।
अहो श्री आसोप धीस देतहां वधाई आज,
कँवर कनैया जन्म भलां मोद भायो है ॥ १ ॥

ग्राम इन्दोकली निवासी बारठ देवकरण कृतः—

॥ दोहा ॥

दूंधर वाल़ा डोकरा, ऊंदर रा असवार ।
सुन्दर आखर समपियो, बर मांगूं इण वार ॥ १ ॥

गीत जात ललित मुकट

अम्ब कृपा कर आपियो, कमँधज हूंत कँवार ।
किसो पात बरनन करे, उच्छव आज अपार ॥

उच्छव अपारं कमध कुमारं आप अवतारं लीध यहां ।
वीदग कुल़ बारं सदा रुखारं कष्ट निवा़रं सत्य कहां ॥

निज बिरद समारं हल्लन हारं होय कुमारं भक्त हरी ।
जिन जस जग जहारं ग्रभ अरि गारं जीत अपारं बृन्द अरी ॥१॥

सुर द्विज ही पूजक सदा, प्रगट भयो भूपाल़ ।
सैणां मन हरखत सही, सत्रां करकत साल ॥

सत्रां उर सालं बुद्धि विसालं खल खय गालं बहुरि क्षमा ।
भुजडंड प्रचडं दुष्टन डंडं आयु अखंडं करही उमा ॥
सब जगत सरानं जोग्य ही जानं भूपति भानं उदय भयो ।
नृप नीत निदानं बिग्यावानं कवि गुन गानं जय हु जयो ॥२॥

॥ मनहर छन्द ॥

आगर अकल वाल़ सागर सकल़ गुण,
दीनन दयाल लाल ताके प्रतिपाल़ है ।
प्रभुता कुमार की खुमार कौन पावे पात,
नीती के तुमार चलें करिये निहाल है ॥
स्रवन समान सिसु पितु अग्या पालवे को,
साधवे को क्षत्री धर्म अरियन को साल है ।

हरनी हरमेस कष्ट बरनी ना जानहारी,
करनी कर कृपा आप्यो धरनी की ढाल है ॥१॥

॥ सवैया ॥

जन्त्र न मन्त्र न तन्त्र न जानत जोतिष वेद कछू नहिं जानूँ।
साधत है ध्रम भूप फतैसिंघ बीरता दान कूँ देख बखानूँ॥
रे सुदतार फता महाराजन पुन्य प्रभातें बात प्रमानूं।
एक कहा कवि गात अनेक हैं भो अवतार क्षत्री कुळ भानूं।१।

॥ दोहा ॥

सहित सभा अविचळ सकळ, अविचळ सकळ उदार।
राज फतो अविचळ रहो, कायम सदा कुमार ॥१॥

बोरून्दा निवासी देथा जुगतीदान कृतः—

॥ दोहा ॥

सन उगणीस चौरासिये, अछो सोम इळ ओप।
तिथ चवदस काती बदी, उदै कँवर आसोप ॥ १ ।

—डिया निवासी सांदू सायबदान कृतः—

॥ सोरठा ॥

। फता अनूप, करनीदे दीधो कँवर।
। कीजो भूप, जोत करै जगतम्बरी ॥ १

हालोड़ी निवासी सांदू सुमेरदान कृतः—

॥ सवैया ॥

जुग चार हजार जीवो जुगमें सुत कूंप बली फतमाल पियारो,
आनन्द जोत उजास महा शशि कोट ही रूप सरूप निहारो।
रघुवीर जिसो कुल रूप कहां धिन भाग फता जु कुमार तुहारो,
भल लोक अनेक उछाह करै थिर राज सदा थिर लाल तुम्हारो ॥

इसी वर्ष श्री दरबार साहिबों की तर्फ से एक कमेटी 'रंग का पेचा कमेटी' के नाम से मुकर्रर की गई। जिसकी एक रिपोर्ट इस बात की तैयार करने को सौंपी गई कि सरदारों को और मुत्सद्दियों को रंग का पेचा जो उनके पिता की मृत्यु पर दिये जाते हैं उनकी दर्जेवार तफसील करें। इस कमेटी में यह ठाकुर नीचे लिखे हुए हुक्म के द्वारा प्रेसीडेन्ट मुकर्रर किये गये। इस कमेटी का काम इन्होंने सुचारु रूप से सम्पन्न किया और जो रिपोर्ट इस कमेटी ने की उसी माफिक "रंग का पेचा" का कानून पास हुआ।

—: हुक्म की नकल :—

OFFICE ORDER

No. 3944

Dated Jodhpur 17th. May 1929.

With a view to systematise the work of the grant of Rang—Ka—Pecha to the Jagirdars and mutsadies on the death of their father, it is here by order that the committee consisting of the following members should be constituted for the preparation and submission of a draft schedule of Jagirs etc. showing the class of Rang-Ka-Pecha which the various Jagirdars Mutsadies should receive at the time of succession and other occasions from the Durbar.

1. Thakur Fateh Singhji of Asop President.
2. Seth Noratan Malji B. A. L L. B.
3. Supdt. Tribute-
4. Daroga Dastari
5. Daroga Capron Ka Kothar.

सं० १६८५ के वैशाख और ज्येष्ठ मास में आसोप में अग्नि-प्रकोप हुआ। जगह जगह लोगों के घर व बागरें जलने लगीं, कई लोग अग्नि देव की ज्वालाओं से परिवार हीन हो गए। उस अवसर पर इन प्रजा-वत्सल ठाकुर ने दुःखित लोगों को हर प्रकार की मदद दी, जैसी जिसको आवश्यकता थी।

इसी वर्ष में सर्वत्र मारवाड़ में भीषण महँगी हुई उस अवसर पर श्री दरबार की तर्फ से प्रजा की सहायता करने के लिये हर एक ठिकाने से धान्य की सहायता मांगी गई तो इन ठाकुर ने अपने ठिकाने से जिस भाव पर श्री दरबार ने लेना चाहा उसी भाव से १००० मन गेहूँ तो गुजिश्ता (वर्तमान) साल के लिये और १००० मन बाजरी तथा ५००० मन गेहूँ आगामी फसल पर देने को कहा। परन्तु बाद में श्री दरबार ने इलाके गैर से गेहूँ व गल्ला काफी तादाद में सस्ते भाव पर मंगाने का इन्तजाम किया जिससे इनका दिया हुआ व वादा किया हुआ गल्ला सधन्यवाद वापिस किया गया। धन्यवाद पत्र की नकल पाठकों की जानकारी के लिये नीचे दी जाती है।

No. 68 of 14-4-29- *Jodhpur.*

My Dear Thakur Sahib, *Rajputana.*

Under instructions of J. W. Young Esqr. Finance & President Food Grain Committee, I have the pleasure to convey to you the high appreciation and thanks of His Highness the

aharaja Sahib Bahadur for the prompt offer of 1000 maunds wheat of the last year with a promise for 1000 maunds of ajri and 5000 maunds of wheat from next year's crop at any ate that the Durbar might think fit for the purpose of opening f cheap Grain Shops.

However, since very large consignments of good wheat re required and have been *secured at reasonable prices from* outside Marwar so that local stocks may further be augmented and the quantity offered by your Thikana is not so large as to ubstantially meet the demand, it is decided not to take advantage of the kind and proferred assistance

Thanking you once more for your coming forward with the offer to meet the wishes of the Durbar.

Yours Sincerely,
S/d *Phiroj*
Secretary Food Grain Committee,
JODHPUR.

अनुवाद—

माई डियर ठाकुर साहिब,

ब मुआफिक हिदायत J. W. Young ऐसक्वायर फाईनेन्स मेम्बर व प्रेसिडेन्ट फूड ग्रेन कमेटी, मैं निहायत खुशी से आपको इत्तला करता हूं कि श्री श्री १०८ श्री दरबार साहब बहादुर आप से बहुत खुश हुए हैं और आपके लिये श्री दरबार साहब के दिल में बहुत दिलजमई है और आपको थेंक्स देते हैं बाबत आपके १००० मन गेहूं गुजिश्ता साल के देने पर और आपके १००० मन बाजरी और ५००० मन गेहूं आइन्दा फसल के मोहिया करने के वादे पर जो कि किसी निरख पर जो श्री दरबार साहब बराये चल्लू करने सस्ती धान की दुकानें मुनासिब फरमावें।

लेकिन चूंकि रियाया के वास्ते बहुत से गेहूँ के गल्ले की जरूरत है और जो कि इलाके ग़ैर से वाज़िब निरख पर हासिल किया गया है ताकि यहां मारवाड़ का गल्ला फिर बढ़ जावे और चूंकि आपके ठिकाने का दिया हुआ व वादा किया हुआ गल्ला रियाया की मांग के वास्ते काफी नहीं हो सकता इसलिये यह तय पाया है कि आपकी इस दी हुई उम्दा और महरबान इमदाद का फायदा न उठाया जावे।

एक मरतबा फिर आपको श्री दरबार साहब बहादुर की हस्बमन्शा गल्ला देने के वास्ते थेंकस देता हूँ।

आपका सिंसीयरली

फीरोज

सेक्रेटरी, फूड ग्रेन कमेटी

जोधपुर।'

वि० सं० १९८६ में बीकानेर दरबार की कन्या का विवाह कोटा महाराज कुमार से हुआ। उस अवसर पर यह ठाकुर जोधपुर दरबार के साथ ता० २८-४-१९३० को बीकानेर गए।

वि० सं० १९८७ की आसोज सुदि १० को, इन्होंने जो बारहदरी अपने पूजनीय पिता की पुण्यस्मृति में बनवाई थी, उसकी बड़ी धूमधाम के साथ प्रतिष्ठा की गई उस अवसर पर कवियों ने जो यश वर्णन किया वह इस प्रकार है:—

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृत:—

॥ दोहा ॥

छिब नौसर आछी छटा, पाजां जळ अप्रमांण।
जठे बाग लग जुगत सूं, जबर नींव सुभ जांण ॥१॥

तात मात दादा तणो, सरणो लियो सदीव ।
इण कारण आ बागरी, नहचे दीधी नींव ॥२॥
पावे परजा सुख प्रगट, जबर पुंन वो जाग ।
बखत हरारी बार में, बणियो नौसर बाग ॥३॥

॥ गीत ॥

सम्वत उगणीस साल सितयासी,
अस्विनी सुद दसम गुरु वार ।
तिण दिन पिता मूर्ति परतिष्ठा,
साझी बेद मति अनुसार ॥ १ ॥
सुत सपूत कहवे जग सारो,
मिणधारी ओपे फतमाल ।
पिता भगत नीती परवांणे,
चैन सुतन चाले कुळ चाल ॥ २ ॥
पंडित सहित मिले प्रोहित जन,
सुभ पुळ सांप्रत दिवस सिरे ।
पोहमी सुजस उऋण होय पितु सूं,
कमधज आछो काम करे ॥ ३ ॥
कीरत लियण काछ दृढ कूंपा,
चारण साची बात चवै ।
इळ अखियात मिळे नह अवरां,
हित दत एकण ठौर हुवै ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

पिता हुकम परवांण, रात दिवस रहियो रिधू ।
जग भागीरथ जांण, फाबै तूं इल में फता ॥१॥
विध जुत बेद बिचार, जामी वो जग रचियो ।
सिरे सपूताचार, फाबे तूं जग में फता ॥ २ ॥

वि० सं० १९८७ की कार्तिक शुक्ला २ को इनके द्वितीय पुत्र भवानीसिंह का जन्म हुआ। उस समय ईश्वर कृपा से ठिकाने में खूब खुशियां मनाई गई जैसा नीचे उद्धृत की हुई कविता से प्रकट होता है।

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृत:—

॥ सोरठा ॥

देवी गण दीधाह, दास जांण देसांण पत ।
कारज सिध कीधाह, मन चाया मेहा सधू ॥ १ ॥
सह जग भरसी साक, ए गण देतां अम्बका ।
आज लिलाड़ी आंक, दीना तें देसांण पत ॥ २ ॥
करे न समवड़ कोय, ईढ तणा अँजस करै ।
दला हराने दोय, दीना सुत देसांण पत ॥ ३ ॥
अंजस फता अपार, सुत दोनूं कुलरा सुरज ।
प्रगट घणो परवार, बधतो राखै बीसहथ ॥४॥
वधियो हरक विसेस, ओ अंजस आसोप में ।
कँवरां जुत कमधेस, कीजै राजस कूंप हर ॥५॥

दुतियै कूंवर रत्नवाणी सिंहजी

॥ गीत ॥

सँमत उगणीस बीज काती सुद,
सुभ सितियासी साल सिरै ॥
दिल खुश होय दिया गण देवी,
कमधज फतो उछाह करै ॥ १ ॥
छक घण हरक युतै मन छायो,
पायो इस्ट तणो परताप ।
गायो मात तणो गुण गाढो,
आछो लाभ उठायो आप ॥ २ ॥
हुय रँग राग हगाम होकबा,
भारी आनन्द आज भयो ।
बधियो बंस फता बड भागी,
थिरचक जस त्रहुँ लोक थयो ॥ ३ ॥
कँवरां सहित आप कूंपापति,
धरवै अति आनन्द धरो ।
शुभ आसीस कहै कवि सादो,
क्रोड़ जुगां लग राज करो ॥ ४ ॥

इसी वर्ष की माघ कृष्णा ५ को इनकी चौथी पुत्री सुगनकँवर का विवाह ठिकाने खेजड़ला[1] के ठाकुर भैरूंसिंहजी से हुआ।

---

१ ठिकाना खेजड़ला मारवाड़ के बीलाड़ा परगने में बीलाड़ा शहर से करीब ५ कोस उत्तर की तरफ उरजनोत भाटियों का अव्वल मिसल का है। यहां के ठाकुर अजमेर मेयोकालेज के डिप्लोमा पास हैं और बड़े समझदार व्यक्ति हैं। यहां का बाग

उक्त विवाह के विषय में जो कविता रचना हुई वह निम्न लिखित है।

भदौरा निवासी सांदू सादूलदान कृतः—

॥ दोहा ॥

सगां सहित बंधव सरब, अठी जमाई आंण।
अंजस हद आसोप में, भल ऊगो वो भांण ॥ १ ॥
मांढे बंधव मुकट मिण, भाटी इत कुल भांण।
मुदे जँवांइयां जोड़ मिल, आनन्द हद आसांण ॥ २ ॥
सगा जँवाई बन्धु सब, खत्रवट गुण री खांण।
ओ शुभ दिन आसोप में, आनन्द इळ अप्रमांण ॥३॥
भाटी जस गायक भला, रण बंका राठौड़।
अंजस लावे ईढरा, जबर सगां री जोड़ ॥ ४ ॥

॥ गीत ॥

करण सुता निज स्वयम्बर नाम पोहमी करण,
धरण खत्रवाट रा बिरद धारू।

और गढ के महलात काबिल देखने के हैं। खेजड़ला के रेलवे स्टेशन पीपाड़ रोड़ और पीपाड़ सीटी दो हैं। खेजड़ला जाने वाले पीपाड़ सीटी उतरें तो सुभीता रहता है। क्योंकि वहां से खेजड़ला तक मोटर सर्विस चलती है, जो आगे वलून्दा वो नीमाज तक जाती है। खेजड़ला से पीपाड़ सीटी करीब १० मील और पीपाड़ रोड़ करीब १५—१६ मील के अन्तर पर है। खेजड़ला का डाक घर पीपाड़ सीटी है।
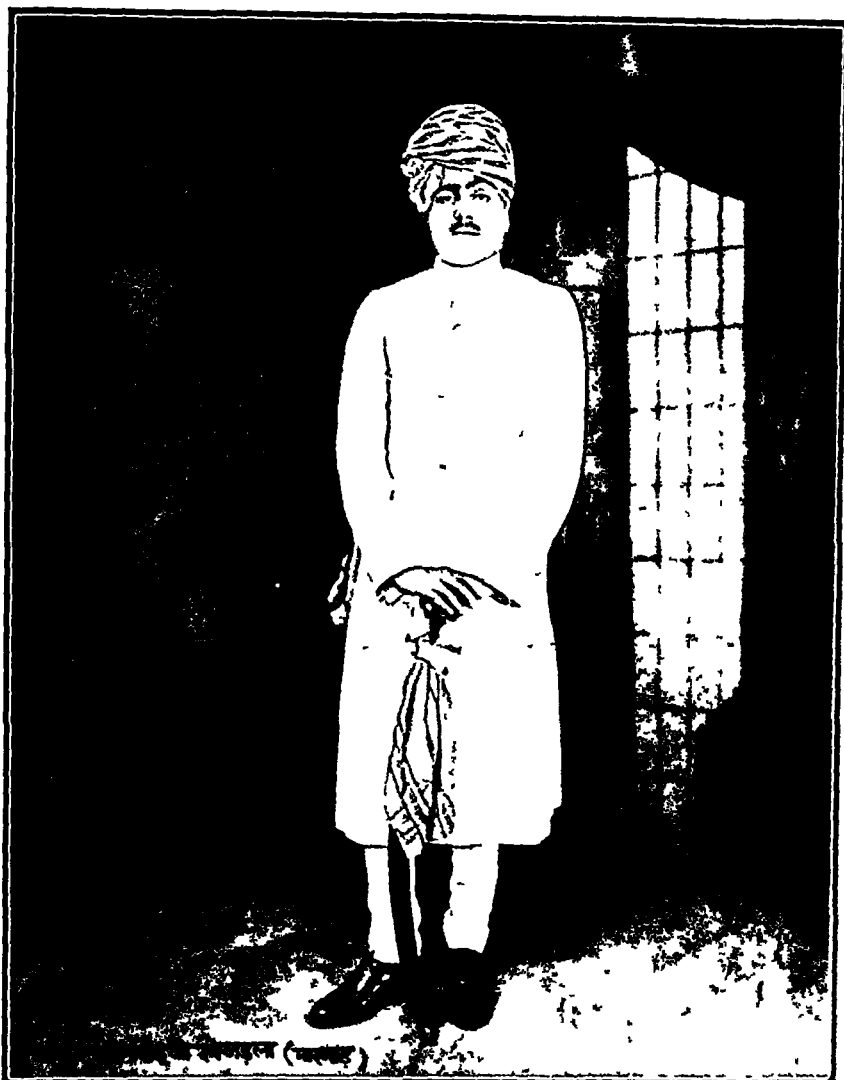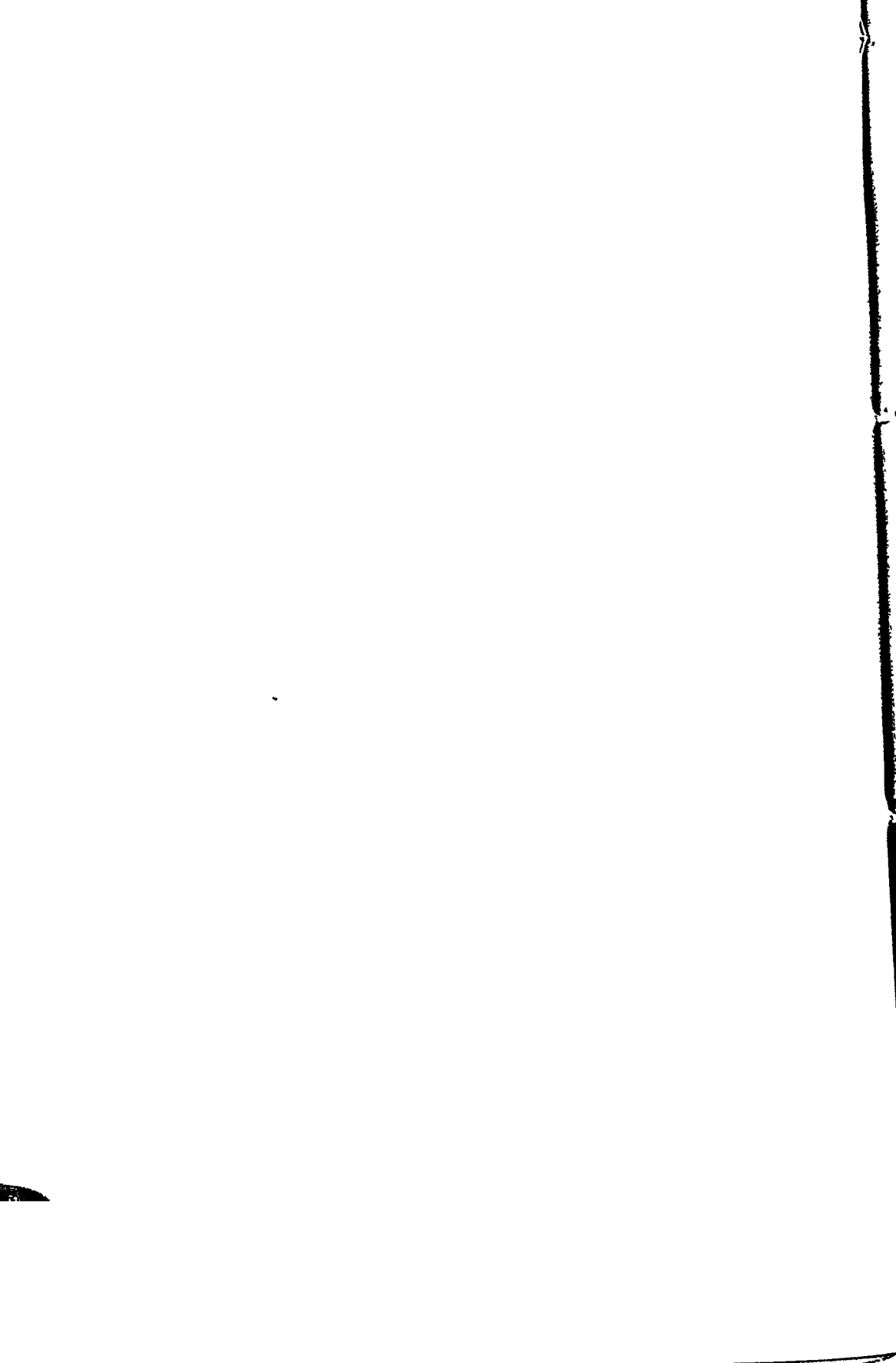
बगत हर आभरण बंस ताला बिलन्द,
माढवा रचे सुभ राव मारू ॥ १ ॥
सरब मिल साथ ढूंढाड़ मेवाड़ वाळा सगा,
जबर हित जँवांइयां जोड़ जाझी।
हुवे रंग राग आनन्द अणपार हुवै,
घुरै घणां नौबतां तोप गाजी ॥ २ ॥
मुरधरा सिरोमण आय बंधव मुदे,
खत्रवट खांण इळ क्रीत खाटी।
सिगाळा अठी राठोड़ मांढे सरब,
भँवर जस गाहकी इतै भाटी ॥ ३ ॥
केई भड़ ईढरा आज अंजस करे,
धरे अणपार मन मोद धावो।
प्रगट बध तिहारी क्रीत देसां परे,
छत्रधर कहै धिन चैन छावो ॥ ४ ॥
सांपरत बहै आनन्द री सौ घड़ी,
जबर जस झड़ी सह जगत जांणी।
दिपे नित फता री म्रजादां दोवड़ी,
तणी बन्ध चौवड़ी सुजस तांणी ॥ ५ ॥

आंगदोम निवासी बारठ लक्ष्मीदान कृतः—

॥ गीत ॥

तणी बांध आसोप रच व्याव कँवरियां तणां,
लखां मुख घणां जस वास लीधा।

समोवड़ ठाकरां देख छक सरा
द्रव भड़ थैलियां
धरा रा आभरण आद ब्रद धारि
सिरा रा सिरोम
वरारा बींटिया वाह केहर बिय
वसु जग गीत रा
दिखाणों चौगुणों हरख हरखे दि
मांढ में मींढ भड़
धिगारां ठिकांणो कियो कूंपा ध
राज कँवरियां तण
रूपगां अनोखां सुणो हद रीभि
हय गयन्द पाय व
छोल दरियाव सूं दवे अदत्ता छ
फता तव द्वार जर

वि० सं० १६८८ में मोगामण्डी (पं
के प्रसिद्ध डाक्टर मथुराप्रसाद भ्रमण करत
के पास आंख के रोग से दुःखित लोगों क
समय ठाकुर ने जोधपुर स्थित अपनी हवे

आसोप की हवेली का अन्दरूनी हिस्सा जोधपुर
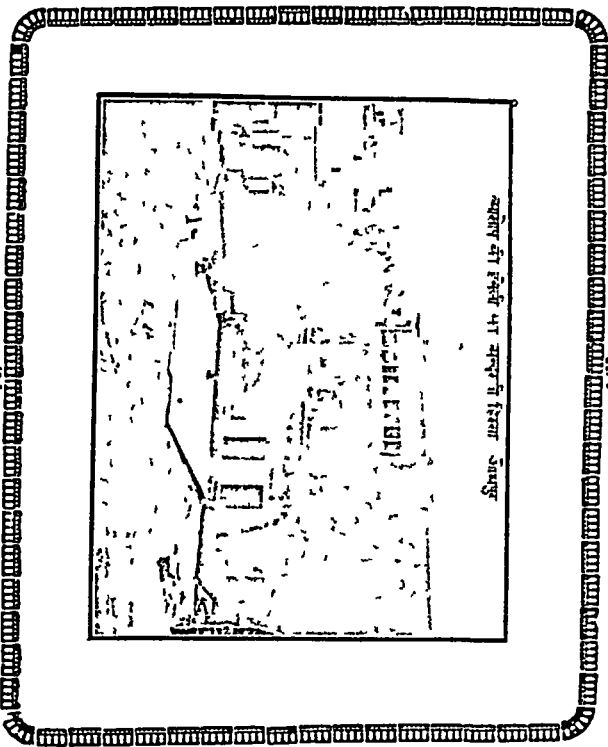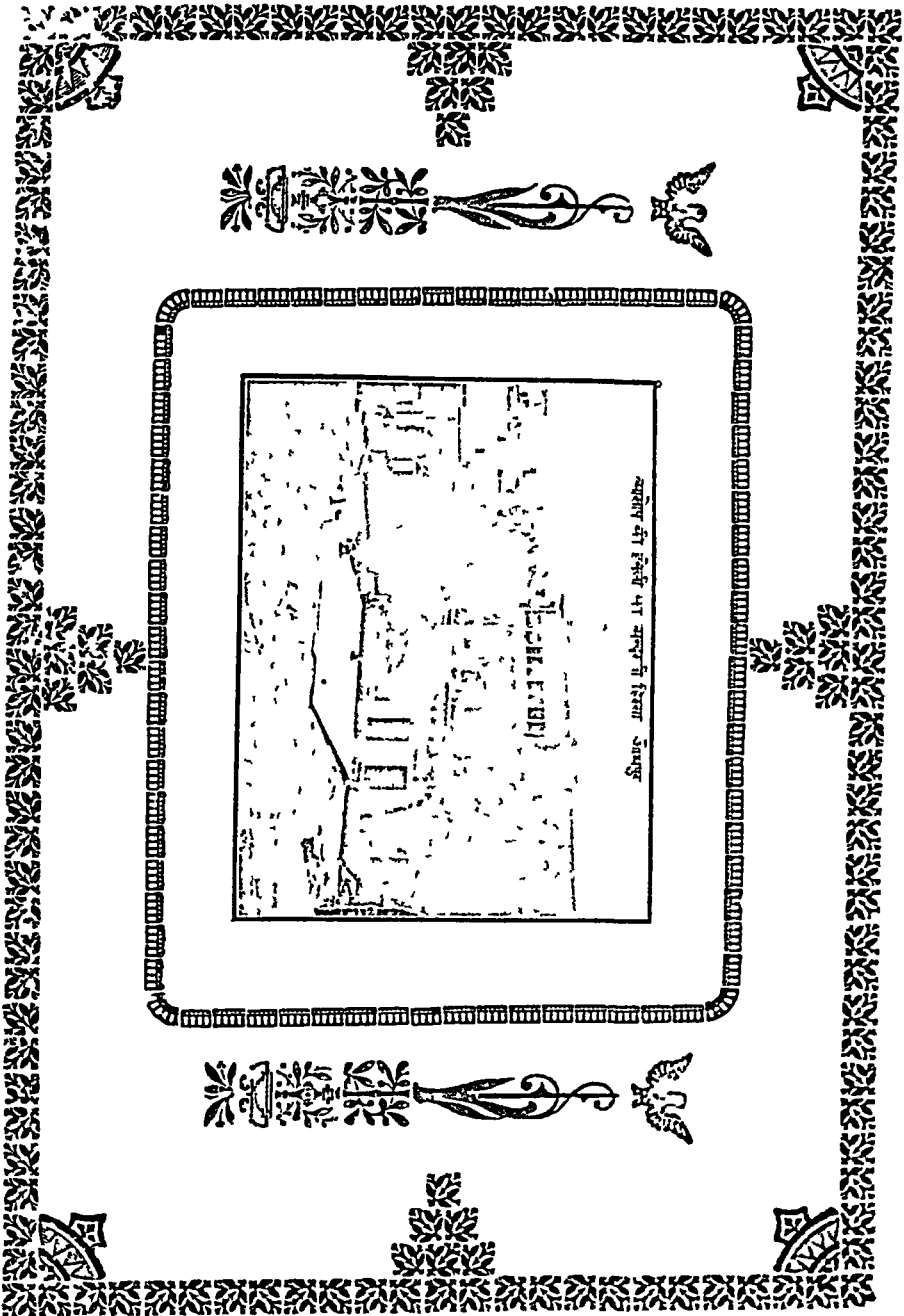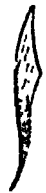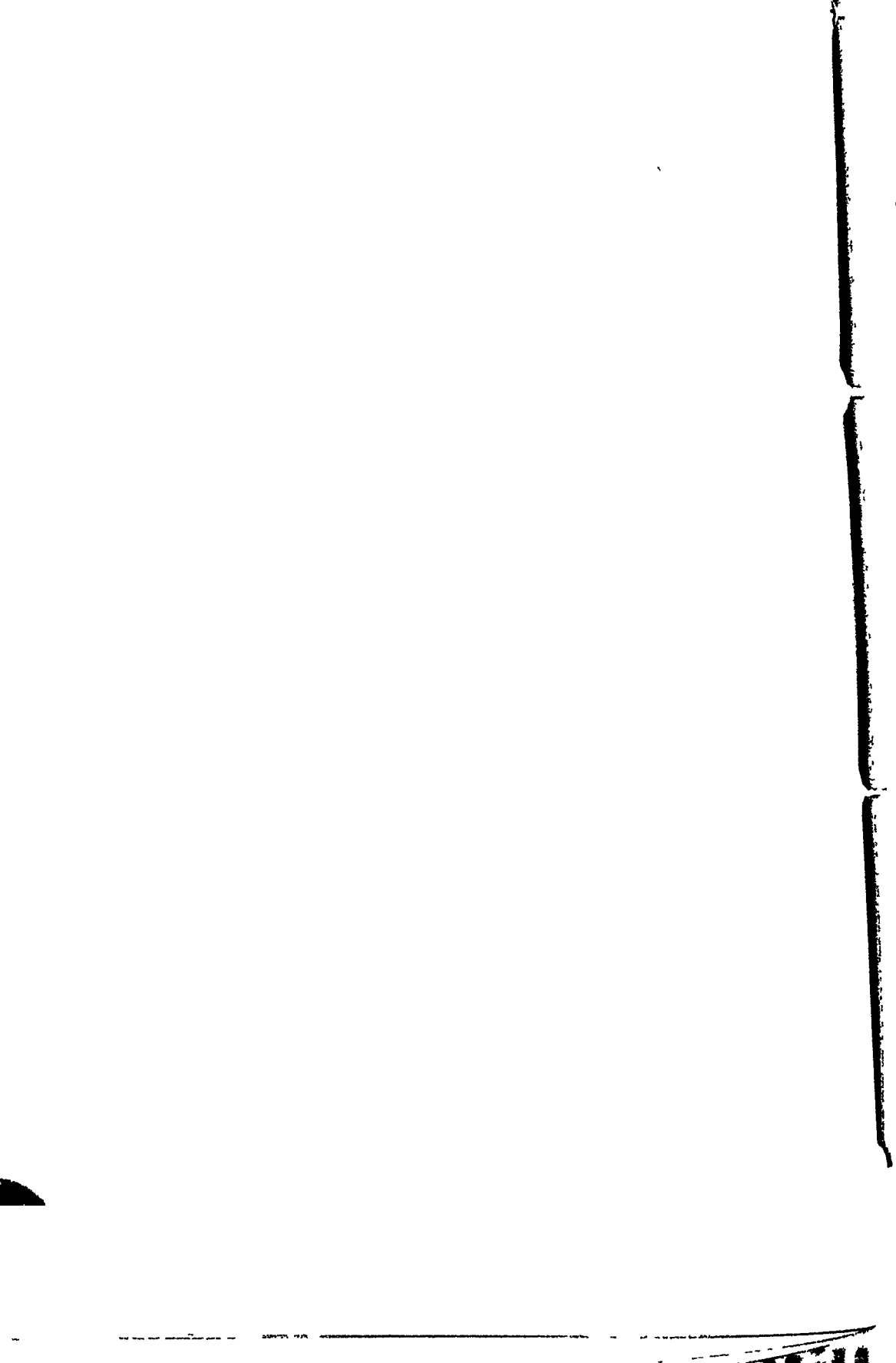
Jodhpur.
Dated 23rd October, 1931.

We the undersigned leading men and Sowcars of Jodhpur, with due respects and humble submission, have the honour to convey, the cordial and hearty thanks, of the public, not only of Jodhpur but of whole Marwar, on their behalf, for the noteable help, whole heartedly rendered, by your nobleself, through your Vakil Lala Mool Chandji in putting the Asop House of yours, at public disposal at the time the Moga Eye Specialist came here and operated hundreds of Marwari peoples last year.

The public is confident enough that your nobleself would have given suitable monetary help, in this holy public cause, if the request were made in that form, but truly speaking the allotment of Asop House at public disposal for the time was far valuable than the monetary help.

In doing so your goodself has not only won the public confidence, but you have excellently proved that your actual position of a Premier to Marwar Darbar held by your ancestors of high prestige that you took best part in Shri Darbar's undertaking of public cause at high and valuable costs and we sincerely hope that the facts when conveyed to Shri Darbar will receive His Highness keen appreciation.

Sir, your House has not only been useful for accommodating the patients. but by the kindness of Raj Singhji to whom you are a true successor, 167 cases out of 170 operated in Asop House turned out successful:—a cent per cent result.

We hope your honour's generosity would always be similarly extending, your helping hand in public concern & thereby reaping the heartfelt gratitude of:—

With good wishes;—
Sir,
Your Most Obedient Servants.

Gulab Das	Tulsi Das Agrwal
Ram Jiwan	Aye Das Khatri
Boda Anraj	Mundaia Murlidhar
Janaki Das	Shah Lal Chand
Ram Prashad	Purohit Fateh Raj
Shri Kishan	Bhora Chain Karan
Kalu Ram	Vyas Pharas Ram
Gavri Chand	Bhora Radha Lal
Rathi Hari Kishan	Bhora Ratan Lal
Bhanwar Lal	Murlidhar
Madan Lal	Shah Kishan Chand
Janvri Dalu Ram	Ganga Das Gatani
Laxmi Narain Agarwal	Ram Das Agarwal
Bhora Kishan Chand	Janki Das

मान-पत्र

जोधपुर.

ता० २३-१०-१९३१

हम नीचे लिखे हुए मुखिया और साहूकार लोग आपको बहुत अदब से उन सहायताओं के उपलक्ष्य में, जो कि श्रीमान् ने मोगामण्डी के नेत्र विशेषज्ञ के जोधपुर में कई आदमियों के आंखों का इलाज करने के अवसर पर मारफत अपने वकील लाला मूलचन्दजी के अपनी जोधपुर स्थित हवेली को पबलिक के इस्तेमाल के वास्ते इनायत फरमाया, अपना हार्दिक धन्यवाद न सिर्फ जोधपुर की पबलिक की तरफ से बलके तमाम मारवाड़ की पबलिक की तरफ से निवेदन करते हैं।

पबलिक को विश्वास है कि श्रीमान् ने जरूर ही इस पुण्य कार्य में धन से भी मदद अच्छी की होती अगर आप से अर्ज की जाती। लेकिन सच कहा जावे तो धन की मदद से ज्यादे आसोप की हवेली को पबलिक इस्तैमाल के वास्ते देना आर्थिक सहायता से कई गुना अच्छा रहा।

श्रीमान् के इस कर्त्तव्य ने सिर्फ पबलिक का ही विश्वास हासिल नहीं किया है बलके आप ने यह भी अच्छी तरह साबित करवा दिया है कि आप भी मारवाड़ दरबार में वही अव्वल दर्जे के उमराव की पोज़िशन रखते हैं जो कि आपके पिछले रखते थे और आप भी दरबार के कार्य में जो कि वे पबलिक के वास्ते करते हैं पूर्ण सहयोग देते हैं। हमें यह विश्वास है कि जब यह बातें भी दरबार को अर्ज की जावेगी तो वे प्रशंसा फरमावेंगे।

श्रीमान्! आपकी हवेली सिर्फ मरीजों के लिये रहने को ही अच्छी साबित न हुई बलके राजसिंहजी की कृपा से जिनके कि आप सच्चे बंशज हो। १७० मरीजों में से १५७ मरीजों को फायदा हुवा जो कि एक बहुत अच्छा नतीजा है।

हम उम्मीद करते हैं कि श्रीमान् की दयालुता दिन ब दिन बढ़ती जावेगी और पबलिक को इमदाद फरमाते रहेंगे और उनकी हार्दिक आशीसें लेते रहेंगे।

तमाम शुभ इच्छाओं के साथ

आपके आज्ञाकारी

गुलाबदास	तुलसीदास अगरवाल	रामजीवण
बोड़ा अनराज	आईदान खतरी	बोरा किशनचन्द
रामप्रसाद	मूंदड़ा मुरलीधर	सा० लालचन्द
श्रीकिशन	पुरोहित फतेराज	कालूराम
ति० गवरीचन्द	बोरा चैनकरण	राठी हरीकिशन
व्यास फरसराम	बोरा रतनलाल	भँवरलाल
जंवरी डालूराम	गंगादास गट्टाणी	मुरलीधर
रामदास अग्रवाल	लछमीनारायण अग्रवाल	सा० किशनचन्द
जानकीदास		

इसी साल की वैशाख बदि ४ को जोधपुर बाईजी लाल श्री किशोरकँवरजी साहिबा का विवाह वर्तमान जयपुर दरबार श्री मानसिंहजी साहब से हुआ। इस विवाह में श्री दरबार ने ठाकुर को मैरेज कमेटी का निम्न लिखित खास रुक्के के जरिये प्रेसिडेण्ट मुकर्रर फरमाया।

खास रुक्के की प्रतिलिपि

"श्री नाथजी सत्य छै

ठाकरां फतैसिंहजी सूं म्हांरो जुहार बांचजो। तथा बाई किशोर कँवर रो व्याव मिती वैशाख बदि ४ रा सावा रो है ने थांने मैरेज कमेटी रा प्रेसीडेन्ट मुकर्रर फरमाया है सो थे आछी जमीत जलूस सूं सिताब हजूर आवजो। सं० १९८८ रा चैत बदि १

उम्मेदसिंह"

यह विवाह कार्य ठाकुर ने अपनी प्रेजीडेन्टशिप में इतनी खूबी के साथ सम्पन्न किया कि जिससे कई रइसों ने इन्तजाम से प्रसन्न होकर इनकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की और खुद जोधपुर दरबार ने भी खुश होकर ठाकुर को अपना चित्र और खास रुक्के दो, एक तो अंग्रेजी में व एक हिन्दी में बतौर इनाम के दिये। इस विषय के प्रशंसा पत्र नीचे दिये जाते हैं।

प्रशंसा पत्रों की प्रतिलिपि—

"श्री नाथजी सत्य छै

ठाकरां फतैसिंहजी सूं म्हांरो जुहार बांचजो तथा थांने किशोरकँवर बाई रे व्याव रे इन्तजाम री कमेटी रा प्रेसीडेन्ट मुकर्रर फरमाया सो थांरी निगरानी में कमेटी काम आछो कियो और व्याव रो इन्तजाम आछो रयो जिण सूं म्हे महरबान हो इण खास रुक्का रे साथ म्हांरी तसवीर इनायत फरमावां हां। सम्वत् १९८८ रा मिती वैशाख सुदि २

उम्मेदसिंह"

अंग्रेजी पत्र की प्रतिलिपि

VICE PRESIDENT'S OFFICE
JODHPUR.
APRIL $\frac{29}{30}$ ×1932,

My dear Thakur Sahib.

Now that the celebrations in connection with the marriage of Sri Kishore Kanwar Baiji Lal Sabiba are over, I wish to convey to you and through you to all the Members of the marriage committee the keen appreciation of myself and the other members of the marriage supervising board of the way in which you all as well as the presidents and members of the various sub-committee carried out your duties. I know well the onerous and responsible work which you all had to do and the admirable efficiency and devotion with which you discharged your duties during an inclement part of the year. Many of your guests have told to the excellent arrangements made for their comfort and convenience during their recent stay in Jodhpur. Will you kindly convey to all concerned our grateful thanks for the work done by them ?

YOURS SINCERELY.
Sd/Maharaj Singh

Thakur Fateh Singhji of Asop,
President,
Marriage Committee,
Jodhpur.

भाषानुवाद—

माई डियर ठाकुर साहिब,

श्री किशोर कँवर बाईजी लाल साहिबां के विवाह का कार्य अब हो चुका है और मैं आपको और आपके मारफत सब 'मैरेज कमेटी' के मेम्बरों को मेरी और " मैरेज सुपरवाईजिंग बोर्ड " की ओर से

बधाई देना चाहता हूँ कि आप व अन्य सब-कमेटियों के प्रेसीडेन्ट और मेम्बरों ने अपने कार्य को सुचारु रूप से संचालन किया है। मुझे भली भांति विदित है कि आप लोगों को भारी जिम्मेदारी का काम करना पड़ा है और इस वर्ष के बड़े कठोर समय में आपने बड़ी प्रशंसनीय योग्यता और प्रेम पूर्वक अपना कर्तव्य पालन किया है। आपके बहुत मेहमानों ने आपके बहुत उत्तम प्रबन्ध का जिक्र किया है। जो कि आपने उनके आराम और सुभीते के लिये यहां जोधपुर में किया था।

क्या आप कृपा करके अपने हार्दिक धन्यवाद, जिन जिन का सम्बन्ध था, उनके कार्य विशेष के हेतु दे देंगे ?

आपका स्नेही
महाराजसिंह

ठाकुर फतैसिंहजी आसोप
प्रेसिडेन्ट मैरेज कमेटी
जोधपुर

अंग्रेजी पत्र की प्रतिलिपि

D. O. N.: 2649

THE PALACE
JODHPUR.
RAJPUTANA
May 6, 1932.

Dear Fateh Singhji,

It is a great pleasure to me to write and thank you, and the members of your committee for the excellent arrangements made in connection with the marriage of Kishore Kunwar Baiji I very well realise the immense amount of labour which you all had to undergo in order to ensure satisfactory arrangements in the short time at your disposal It is a matter of great satisfaction to me that you amply justified your

selection as president of the Marriage- Committee and that everything went off so smoothly and well I would ask you to convey a sense of my appreciation to the members of your committee as also to the muntazims who all did their work with praiseworthy diligence and attention in their respective spheres.

Yours Sincerely,

Sd. Umaid Singh

Thakur Fateh Singhji of Asop,

JODHPUR.

हिन्दी अनुवाद—

डियर फतैसिंहजी,

मुझे आपको और आपकी कमेटी के मेम्बरों को धन्यवाद सहित यह लिखते हुए बड़ा आनन्द हो रहा है कि जिन्होंने श्री किशोर कँवर बाईजी लाल के विवाह के सम्बन्ध में बहुत उत्तम प्रबन्ध किया। आप लोगों ने थोड़े से समय में जो कि आपके अधिकार में था, अत्यन्त परिश्रम उठाते हुए जो सन्तोष जनक प्रबन्ध किया है सो मुझे भली भांति विदित है। मुझे इस बात का पूरा विश्वास हो गया है कि आपको "मैरेज कमेटी" का प्रेसिडेन्ट चुना गया सो बिलकुल उचित था कि जिससे तमाम काम सुगमता से और भली भांति से होते रहे। मेरा यह सराहने का बोध आप अपनी सभा के मेम्बरों को परिचित करादें और उन मुन्तजिमों से भी जिन्होंने अपने कार्य को जो कि उनके अधिकार में था, प्रशंसा योग्य परिश्रम और ध्यान से किया।

आपका हितैषी—

उम्मेदसिंह

ठाकुर फतैसिंहजी, आसोप

जोधपुर

(अंग्रेजी पत्र की प्रतिलिपि)

Government of Jodhpur
JODHPUR.
May 22, 1933.

D. O. No. 3477/F. P I Lak 1/3.

My Dear Thakur Sahib,

I recently submitted the Accounts Report on the Marriage of the Shri Kishore Kanwar Baiji Lal Sahiba to the Council and I am directed to convey to you the appreciation of the Durbar on the work of the Marriage Committee in this connection.

Yours Sincerely,
Sd/ J W. Young.

Rao Bahadur Thakur
Fateh Singhji of Asop,
President of the
Marriage Committee.

Jodhpur.

अंग्रेजी पत्र का भाषानुवाद—

गवर्नमेन्ट ऑफ जोधपुर
जोधपुर
मई २२--१९३३

माई डियर ठाकुर साहिब,

मैंने अभी हाल में ही श्री किशोर कँवर बाईजी लाल साहिबां के विवाह के हिसाब की रिपोर्ट कौन्सिल में पेश की है और श्री दरबार साहिबों ने " मैरेज कमेटी " के काम की प्रशंसा करते हुए मुझे हुक्म दिया है कि इस प्रशंसा की इत्तला आपको दी जाय।

आपका कृपाभिलाषी—
Sd/ J. W. young

राव बहादुर

फतेसिंहजी आसोप

प्रेसिडेण्ट

मैरेज कमेटी, जोधपुर

——×——

विवाह कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् श्री दरबार साहब जब विलायत पधारे तब नीचे लिखे हुए तार के जरिये इस ठाकुर की नौकरी जनानी ड्योढ़ियों पर जोधपुर में तैनात की गई। वह नीचे लिखे पत्र से जाहिर होती है।

(अंगरेजी पत्र)

From,

Narpat Singh
JODHPUR.

To,

Thakur Sahib Asop.

His Highness desires that during his absence in London you should be in attendence on Her Highness at Deodi please come to Jodhpur as soon as possible, Accomodation has been arranged for you at Raikabagh.

ड्यौढी की नौकरी का फॉन

Received From Control Telephone at 3-15.- A. M. Dated 4-10-32 Gotan.

Station Master Gotan
RAMLAL.

भाषानुवाद——

From

नरपतसिंह
जोधपुर

To.

ठाकुर साहिब, आसोप

श्री दरबार साहिबों की इच्छा है कि उनकी अनुपस्थिति में जब तक उनकी सवारी लन्दन में विराजे तब तक आप श्री महारानीजी

साहिबों की ड्यौढ़ी पर हाजिरी में रहें। कृपा करके आप जितनी जल्दी हो सकै जोधपुर पधारें। आपके ठहरने का इन्तजाम राईका बाग में हो गया है।

ता० ४-१०-३२ के तीन बज कर पन्द्रह मिनिट पर कण्ट्रोल से गोटन स्टेशन पर स्टेशन मास्टर रामलाल के नाम टेलीफोन पहुँचा।

इस ठाकुर को गद्दी बैठते ही अपने पिता की जागीर पर अधिकार तो मिल गया था परन्तु उस समय कारण वश पट्टा (आज्ञा-पत्र) नहीं लिखा गया। वि० सं० १९८८ की श्रावण वदि ५ को पट्टा लिखा गया।

—: पट्टे की प्रतिलिपि :—

"श्री जलंधरनाथजी साय छै

स्वारूप श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज माहाराजा श्री उम्मेदसिंहजी महाराज कँवार श्री हणवन्तसिंहजी वचनात मेहकमे खास दीसै सुप्रसाद वांचजो तथा राठोड़ फतैसिंह चैनसिंह सीवनाथ सींघोत खांप कुंपावत सूं म्हैरवान हुयने पटो इनायत कियो है सो संवत् १९८८ री साख सावणु था अमल देजो गांव में बिना हुकम मांमण डोहली देण न पावे दाण जमेबन्धी वगैरा वाब दरबार रा है।

३९०००)८ गांव तागीरान राठोड़ चैनसिंह सीवनाथसिंघोत खांप कुंपावत री

२९२५०)४ गढ जोधपुर रा गांव
१८७५०)१ गांव आसोप खास
२७५०)१ गांव रामपुरो
१२५०) गांव पालड़ी राणावतां आधो
२०००)१ गांव कुकड़दो
४५००)१ गांव रड़ोद आधो

२९२५०)४

७५०)१ परगने बीलाड़ा रो गांव कागल
६०००)२ परगने पाली रो गांव ढैंढ्डो
३०००)१ परगने नागोर रो गांव कंकड़ाय

३९०००)८

रेख गुणचालीस हजार री गांव आठ

संवत् १९८८ रा सांवण वदि ५ हुवो श्रीमुख परवानगी राठोड़ चैनसिंह मंगलसिंघोत खांप चांपावत मुकाम पायतगत गढ जोधपुर

हिम्मतसिंह रेवन्यु मेंबर
(सही अंग्रेजी में)

लीखतु पंडित बीसंभरनाथ सीवनाथोत १९८८

अमल दीजो
चैनसिंह (अंग्रेजी में)

री साख सांवण था अमल दीजो
विश्वम्भरनाथ
(अंग्रेजी में)

नकल लीवी श्री हजूर रे दफतर नकल लीवी महकमे ट्रीब्यूट में"

ता० २--१--३३ को यह ठाकुर गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया की तर्फ से " राव बहादुर " की उपाधि से विभूषित किया गया जिसके सूचना--पत्रों की प्रतिलिपि—

Foreign and Political Department.

NOTIFICATION

New Delhi, the 2 nd. January 1933.

No. 17-H. His Excellency the Viceroy and Governor General is pleased to cofer the title of Rao Bahadur, as a personal distinction, upon:

* * * * * *

Thakur Fateh Singh of Asop
in Marwar, Jodhpur State, Rajputana.

* * * * * *

Sd/-C. C. Watson,
Political Secretary to the
Government of India

हिन्दी अनुवाद—

फौरेन एण्ड पोलीटिकल डिपार्टमेण्ट

इश्तिहार

नई दिल्ली २ जनवरी १९३३

हिज एक्सिलेन्सी दी वाइसराय एण्ड गवर्नर जनरल ने खुश होकर ठाकुर फतैसिंह, आसोप मारवाड़ जोधपुर स्टेट राजपूताना को खास नामवरी के तौर पर "राव वहादुर" की उपाधि से भूषित किया है।

Sd/-C. C. Watson
पोलीटिकल सेक्रेटरी
गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया

To
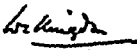
Thakur Fateh Singh,
of Asop,
in Marwar,
Jodhpur State,
Rajputana.

I hereby confer upon you the title of Rao Bahadur as a personal distinction.

Viceroy and Governor General
of India.

New Delhi,
The 2nd January 1933.

(अंग्रेजी पत्र की नकल)

Copy of telegram from the Resident, to the Vice President, Jodhpur, dated 2-1-33

Secretary wires as - Follows:-- Begins please convey ›utanas Heartiest Congratulations to Thakur Fatehsingh of p Marwar on the grant of Title of Rao Bahadur. Kindly also ıvey my congratulations to Thakur Fatehsingh,

Resident.

अनुवाद----

वाइस प्रेसिडेण्ट जोधपुर के नाम, रेजीडेण्ट साहब का तार ासकी प्रतिलिपि २--१--३३

सैक्रेटरी निम्न लिखित संदेशा तार के जरिये भेजता है:—

कृपया ठाकुर फतैसिंहजी आसोप मारवाड़ को 'राव बहादुर' की उपाधि से भूषित किये जाने पर राजपूताने की हार्दिक बधाई दे देना।

(अंग्रेजी पत्र की प्रतिलिपि)

Mehkma Khas, Jodhpur.

D. O. No. 1265

F. P. I. T. H. & P. 2/1. Dated January 3, 1933,

My dear Thakur Sahib,

I enclose a copy of a telegram addressed to me by the Resident, congratulating you on the conferment of the title of "Rao Bahadur"

Kindly accept my own heartiest congratulations for the honour which you deserve so well,

Yours Sincerely
Sd/ Chain Singh

To,

Rao Bahadur Thakur
Fateh Singhji of Asop.

भावार्थ---

D. O. N. 1265
F. P. I/T. H. F. P. 2/2

महकमा खास, जोधपुर
ता० ३ जनवरी १९३३

मेरे प्यारे ठाकुर साहिब !

आपको "राव बहादुर" की उपाधि से भूषित होने पर रेजिडेण्ट साहिब के मेरे पास भेजे हुए बधाई के तार की एक प्रतिलिपि सेवा में भेज रहा हूँ।

कृपा करके मेरी भी हार्दिक बधाई इस इज्जत के कारण जिसके कि आप भली भांति योग्य हैं, स्वीकार कीजिये।

आपका स्नेही
Sd/ चैनसिंह

To

राव बहादुर ठाकुर
फतैसिंहजी आसोप

(अंग्रेजी पत्र-नरपतसिंहजी का) श्री दरबार की तरफ से

Jodhpur,

D. C No. P/660

January 4 1933,

My Dear Thakur Sahib,

I am desired by His Highness to convey his congratulations to you on the title of Rao Bahadur conferred on you.

Yours Sincerely,
Sd/ Narpat Singh.

Rao Bahadur Thakur,
Fateh Singhji of Asop
ASOP
(Marwar)

भाषानुवाद—

जोधपुर
D, O. N. P./660 जुलाई ४ । १९३३

मेरे प्यारे ठाकुर साहिब,

मैं श्री दरबार साहिबों की आज्ञानुसार आपको "राव बहादुर की उपाधि से भूषित किये जाने पर उनकी ओर से बधाई देता हूं

आपका स्नेही
Sd/. नरपतसिंह

राव बहादुर ठाकुर
फतैसिंहजी आसोप
आसोप
मारवाड़

राव बहादुर पदवी प्राप्त होने पर कवि लोगों ने अपने आनन्दोद्गार को प्रकट किया उस विषय की कविता—

शिऊ निवासी सांदू विशनदान कृत

॥ गीत ॥

वेळा सोहणी बड़ेरां ज्योंही विजेता राज री भेवौ,
होवे खुशी रीझां मोजां होकवा हुलास ।
राजसिंघ हरा रीतां वातां थारी सिरै रेवै,
किंग एमपरर देवे उपाधि प्रकास ॥ १ ॥

वंस रा रोपता जोड़ा सपूता चिरंजी रेहो,
जोगमाया जोतरा दीपता चोड़े जाब ।
समापे सम्राट वडी ईजतां भूपतां समूं,
बन्दा रावबहादुरी रा ओपता खिताब ॥२॥
सांवतां सिघाला लाखां लोकांसूं सुजसां लीना,
बंस रा उजाला रंग भीना कूंपा राव ।
देस रा रुखाला चैनवाला तो तुकमा दीना,
बादसा वडाला कीना बिरदां बधाव ॥ ३ ॥
छोह सूं छकाया बंस बेला बीच गढां छाया,
उन्नती सवाया चाया आया अबै ओप ।
साहंसा सराया गांव नांव ने लिखाया सिरै,
ऊंचा पदां पाया फतै दिपाया आसोप ॥४॥

॥ दोहा ॥

कूंप खिणाया है सुवन, लाग रया मन चाव ।
वगसी इज्जत बादसा, आनन्द उमँग उछाव ॥१॥

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृत

॥ दोहा ॥

चैन नन्द चढती रती, वाह फता भड़ वाह ।
राव वहादुर राज ने, पद समप्यो पतसाह ॥ १ ॥
उन्नत हद आसोप में, ओपै फतमल आज ।
पायो पद जग में प्रसिध, राव वहादुर राज ॥ २ ॥

कुँवर सजनसिंहजी आसोप।
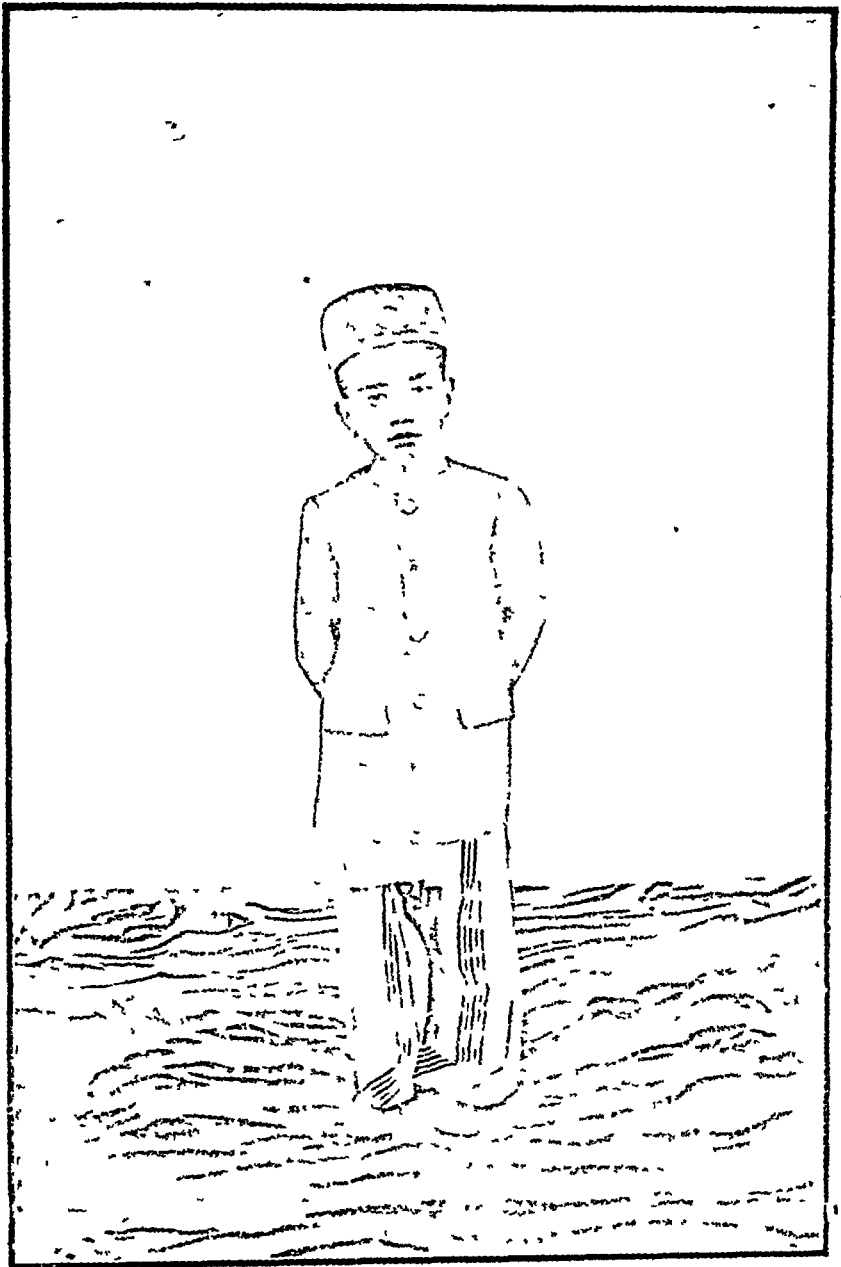
जननी धिन जायो जिका, जस छायो जग ओप।
पायो पद पतसाह सूं, आयो धिन आसोप ॥ ३ ॥

॥ गीत ॥

अमर राज दोऊ देस पतसाह सासन अमर,
कदर सद करण मग नीत काजा।
सरब गुण ग्यात अंगरेज बुध रा समँद,
मुकटमिण दिलेश्वर माहाराजा ॥ १ ॥
जोग भड़ फतो वड नखत चैना जिसो,
जबर धिन कूख जिण मात जायो।
दिये पद राव बहादुर तणो आज दिन,
बादसा मुखां इलकाव पायो ॥ २ ॥

सम्वत् १९८७ की माघ सुदि १३ के अनुसार ता० ८।२।३३ को इसके तृतीय पुत्र सज्जनसिंह का जन्म हुआ। पुत्र विषयक कविता-

आंगदोस निवासी लक्ष्मीदान कृत

॥ गीत ॥

जंगां जीपणां अगंजी होसी समावां कणेठी जेहा,
नवां कोटां रुखाळा चाढसी पखां नीर।
पोता चैनसिंह वाळा दीपता सलारा पुंज,
बिना दीक चहीले चालसी महावीर ॥ १ ॥
नौज थावे नासतीक सिरा रो ठिकांणो नामी,
उग्र ताला तीनों भाई आसती अंकूर।

रिधु छत्रीवाट पणो सासती भुजाटां रा
जिकांने जोधांणनाथ बधासी
विरदां उजाला एक एक सूं सवाई बाज
राजे देवीसिंघ भानो सजन
पावसी बधारा पटा थावसी आनन्द पात
मरूनाथ जिकांरो बधासी घण
धरा नवी लाटसी ये फता रा बजासी धूंर
भाग बडो खाटसी बाप दादा
वडा भाग—साला होसी छावड़ा फतेस वा
मीढ दूजा डावाड़ा न पूगे प्रश

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृ

॥ गीत ॥

सोवे उन्नती सिघाली कूंपा बडाली बदंत
बधै राजवाली सोभा देश
भली आ दिवाली घणी खुशीरे सभावां
तात वाली कीरती तें उलाली
भासती लक्ष्मी थारे खजाने अखूट भ्र
नन्द चैन छाजै रिधि सिद्धि
सासती भवानी थारे भावरै प्रसंग स
आसती पणां री वातां दिपावै
दु वक्या हरणी मात वधाई ओलाद दे

तारणी तरणी देवी बधारियो वंस तोरो,
करणी कृपा सूं लाल तेवड़ा कूंपेस ॥३॥
देव भानू सजन्नो ऐ बंस रा रुखालु दिपै,
बधन्ता सपूती सारू प्रमाणो विसेस ।
राज रीतां तणा बारू उजाळू खांपरा रिधू,
सुधारू बुढापो थारा चिरंजी हमेस ॥ ४ ॥
पति जोधांण रो चासी अनेकां खिताव पासी,
मुदै चैन हरा नै बधासी घणा मात ।
ईढगांरा बंधवां सजनां घणो मोद आसी,
बाप दादा सवाई जमासी आछी बात ॥५॥

वि० सं० १९९० की कार्तिक कृष्णा १५ का लिखा हुआ खास रुक्का आने पर यह ठाकुर जोधपुर गया। वहां उस अवसर पर लाट साहब महोदय लार्ड विलिंगडन का जोधपुर में आगमन हुआ। यह ठाकुर भी लाट साहब के स्वागत में सम्मिलित हुआ।

खास रुक्के की प्रतिलिपि—

"राव बहादुर ठाकरां फतैसिंहजी सुं म्हांरो जुहार वांचजो तथा लाट साहब बहादुर रो अठै आवणों हुसी सु आछी जलूस सुं ता० ९ नवम्बर सन् हाल ने सताव हाजिर होजो संवत् १९९० रा काती सुदि १५

Umod singh"

ता० १–८–३४ को नीचे लिखी हुई पोहकरण ठाकुर चैनसिंह की चिट्ठी आने पर यह ठाकुर जोधपुर गया और वहां ता. ११-८-३४ को A. G. G. ओगलवी साहब राजपूताना ने इनको राव बहादुर उपाधि की सनद व तगमा इनायत किया।

(अंग्रेजी पत्र चैनसिंहका)

No. 1321

JODHPUR.
August 1 st. 34,

My dear Thakur Sahib,

The Hon'ble the Agent to the Governor General Rajputana desires to invest you with the Badge and Sana of "Rao Bahadur" during his forthcoming visit of Jodhpur from 6th August 1934.

I shall obliged if you will kindly come to Jodhpur to receive the decoration.

Yours Sincerely,
Chain Singh

To,
Rao Bahadur.
Thakur Fateh Singhji of Asop.

भाषानुवाद—

जोधपुर
अगस्त १--३४

मेरे प्यारे ठाकुर साहब,

"दी ऑनरेबल दी एजेण्ट टू दी गवरनर जनरल इन राजपूताना" आपको राव बहादुर का तगमा और सनद ता० ६ से १४ अगस्त १६३४ तक यहां आवेंगे, तब देना चाहते हैं।

कृपा कर इसे लेने के लिये जोधपुर पधारें इससे मैं आपका बड़ा अनुगृहीत होऊँगा।

आपका कृपाभिलाषी—
चैनसिंह

To,
राव बहादुर
ठाकुर फतैसिंघजी आसोप
आसोप

वि० सं० १९९० में इस ठाकुर के पेट में एपेंडिसाइटिस (शूल) का दर्द हुआ जिस पर कई प्रकार के उपचार कराने पर भी जब पीड़ा शान्त न हुई तब डाक्टरों की राय से जोधपुर गवर्नमेण्ट के प्रिंसिपल मेडिकल ऑफिसर ने अपने सहकारियों के साथ आकर ता० २४ । २ । ३४ को इसके पेट का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन करीब ९ बजे रात को हुआ उस समय का दृश्य बड़ा ही भयानक व कारुणिक था। सब लोग उस परम प्रभु से इसकी कुशलता के लिये सजल-नयनों से प्रार्थना कर रहे थे। वह ऑपरेशन इतना भयानक होने पर भी इस ठाकुर ने बगैर किसी नशा सूंघे अपने पेट का ऑपरेशन कराया। इस अवसर पर श्री दरबार साहब इसकी बीमारी की खबर मिलने पर २ बार तबीयत का हाल जानने के लिये अपने कनिष्ठ भ्राता महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब के साथ आसोप पधारे। और श्री महारानी साहिबा ने १०१) रुपये पुण्यार्थ अपने भ्राता कँवर भोमसिंह के साथ आसोप भेजे।

धन्य है ऐसे मालिक और धणियाणी को कि जो अपने सामन्तों को ऐसे संकट काल में ढाढस बंधाते हैं और ऐसे सरदार भी धन्य हैं कि जिन्होंने अपनी योग्यता और स्वामि-भक्ति से अपने स्वामी को अपने ऊपर रिझा रखा है। हरएक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने स्वामी को अपने ऊपर प्रसन्न बनाये रक्खे।

इस ठाकुर की इस रुग्णावस्था में कई बड़े बड़े सरदार दूर दूर से खुशी पूछने के लिये आसोप आये। जिनमें से पाठकों की जानकारी के लिये कुछ नाम नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

१ श्री दरबार साहब — २ महाराज अजीतसिंहजी
३ महाराज किसनसिंहजी — ४ पोहकरण ठाकुर चैनसिंहजी
५ आउवा ठाकुर नाहरसिंहजी — ६ रोहिट ,, दलपतसिंहजी
७ चाणोद ,, मुकनसिंहजी — ८ चंडावल ,, गिरधारीसिंहजी

९ कंटालिया ठा०	अर्जुनसिंहजी	१० शंखवास ठाकुर	माधोसिंहजी
११ खजड़ला ,,	भैरूंसिंहजी	१२ बांसी ,,	हरिसिंहजी
१३ झालामंड ,,	विजयसिंहजी	१४ नाणा ,,	बभूतसिंहजी
१५ लोटोती ,,	हुकमसिंहजी	१६ चांदेलाव ,,	उगमसिंहजी
१७ रामपुरा ,,	हुकमसिंहजी	१८ नोखे ,,	फतेसिंहजी
१९ गजसिंघपुरा ठा.	तेजसिंहजी	२० वासणी ,,	गुलाबसिंहजी
२१ भंवराणी ठा.	कल्याणसिंहजी	२२ पीलवा ,,	इन्द्रसिंहजी
२३ केरिया ,,	सुमेरसिंहजी	२४ जसोल ,,	माधोसिंहजी
२५ देवली ,,	समंदरसिंहजी	२६ हरसोली ,,	मोतीसिंहजी
२७ खींवसर ,,	केसरीसिंहजी	२८ श्यामगढ ,,	किशनसिंहजी

कँवर—

१ भवानीसिंहजी पोहकरण २ कीरतसिंहजी बगरू
३ सुलतानसिंहजी पदमपुरा ४ हरनाथसिंहजी दासपां
५ आईदानसिंहजी पाल ६ शेरसिंहजी बलून्दा
७ भोमसिंहजी उम्मेदनगर ८ मोहनसिंहजी उम्मेदनगर
९ बजरंगसिंहजी पीलवा १० किशोरसिंहजी पालासणी
११ गुलाबसिंहजी गहणोली (जयपुर)
१२ भैरूंसिंहजी हरसोली १३ हरिसिंहजी हरीआडांणा
१४ बखतावरसिंहजी पुलिस सुपरिंटेण्डेन्ट
१५ जोधा जगन्नाथजी मरजीदान श्री दरबार

डाक्टर लोग—

१ मि० हर्वर्ड पी० एम० वो० २ मेजर गौडवीन
३ रा. ब. डाक्टर ओंकारसिंहजी ४ डाक्टर निरंजननाथजी
५ डाक्टर देवीसिंहजी ६ ,, ओमदत्तजी

वि० सं० १९९२ की कार्तिक वदि १४ के अनुसार ता० २६ १०-३५ को इसने अपने प्रथम पुत्र के जन्म दिवस और अपने

आरोग्य लाभ करने के उपलक्ष्य में फाटक की गायों की चराई, जिस से ठिकाने की काफी आमदनी थी, छोड़ दी।

इसी वर्ष की कार्तिक वदि १४ को इसने डिंगल कविता में भजन संग्रह के साथ एक निजनिर्मित पुस्तक 'फतैविनोद' छपवाई। इसके पढ़ने से इस ठाकुर की विद्वत्ता, ईश्वर-भक्ति और नीति-निपुणता का पूर्ण परिचय मिलता है। यह ठाकुर डिंगल भाषा का बड़ा प्रेमी है, इसीसे यह पुस्तक भी डिंगल भाषा में रचकर प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक का हर एक भाग मनन व पढ़ने के योग्य है। इसीका दूसरा संस्करण छप गया है। इस द्वितीय संस्करण को ठाकुर ने प्रथम की कविता में और भी कविता और भजनों की रचना करके बढ़ा दिया है। इस पुस्तक की प्रशंसा कई विद्या-प्रेमियों ने मुक्त कंठ से की है। जिनमें से कुछ प्रशंसा पत्र नीचे दिये जाते हैं।

प्रशंसा-पत्रों की प्रतिलिपिः—

बारहठ बैजदान का पत्र

॥ श्रीकरनीजी सदा सहाय ॥

सिध श्री सर्व ओपमा विराजमान अनेक ओपमा राव वहादुर ठाकुर साहव राज श्री श्री १०८ श्री फतैसिंहजी साहव वहादुर

कृपावन कुल भूषण की सेवा में-तावेदार बारहठ वैजदान को मुजरो मालूम अरज होसी।

श्रीमान् की इनायत की हुई किताब 'फतै-विनोद' कल मुझे मिली व मैंने पढ़ी जो श्री जगदम्बा व सर्वज्ञ ईश्वर की स्तुति व नीति के दोहे व कविता अमूल्य रत्न छपवाया है। पढ़ने से तवीयत यही चाहती है कि पढ़ता ही जाऊँ और पाठ करता रहूँ। मेरे पास कान-सिंहजी, सुपरिंटेण्डेंट पुलिस व बलदेवरामजी ने कल दफतर में जबरन लेनी चाही, मगर नहीं दे सका। और जिन २ साहबान ने देखी हरेक किताब लेने की लालसा करते रहे। चारण बोर्डिंग के मैनेजर सुमेर-दानजी व विद्यार्थियों ने भी इसकी उम्मेद मिलने की प्रार्थना जाहिर की है।

मैं खयाल करता हूँ कि हरेक मामूली समझ का भी यह किताब देखते ही लेने की कोशिश करेगा। मगर कविता जानने वाले तो लिये बगैर हरगिज नहीं रहेंगे। कृपा कर खास जरूरी सज्जनों के लिये १० किताब भेजावें। ५ चारण बोर्डिङ्ग, ५ दूसरे हितैषी महाशय। या खावन्द फेर वाला वाला भेजावें तो भी मैनेजर सुमेरदानजी वो चारण छात्रों के लिये तो जरूर भिजवावें। व श्री हनुमन्त बोर्डिङ्ग हाउस वो मेम्बरान कमेटी। इस अमूल्य रत्न की जितनी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी है। या यूं कहा जाय तो वाजब ही कि अकथनीय है। मगर मेरी बुद्धि मुआफिक श्रीमान् के नजर यह दो सोरठे वो दो दोहे अर्ज किये जाते हैं।

॥ सोरठा ॥

जग में कवी जिताह, कृपा तो अंजस करे।

फतै-विनोद फताह ! आछी कविता आप री ॥ १ ॥

फतैविनोद फताह ! कूंपावत आछी करी ।
जग में ग्रंथ जिताह, आछा सूं आछा इधक ॥ २ ॥

बारहठ वैजदान वकील चीफकोर्ट कृत

॥ दोहा ॥

करणी जस सांभल़ कियो, बाल़क दीधो बोध ।
ईस भक्ति उपदेश युत, वरणी फतैविनोद ॥ १ ॥
भयो संसकृत भरथरी, पिंगल़ जसो प्रमांण ।
अब डिंगल़ कविता अखण, जाहर फतो सुजांण ॥२॥

शुभचिंतक नांवदार बारहठ
वैजदान वकील
चीफकोर्ट

३--२--३५

॥ श्रीरामजी ॥

अजमेर-रास हाऊस
ता० २२--३--१६३५

मनवार लिखावसी,

राव बहादुर भाभा ठाकुरां राज श्री फतैहसिंहजी साहब की सेवा में जुहार मालुम होवे ।

मैं यहां पर ईश्वर की कृपा से कुशल हूँ, आपकी कुशलता सर्वदा ईश्वर से चाहता हूँ । कृपा पत्र आपका तारीख २१--२--३५ का व आपकी रचित " फतैविनोद " पुस्तक डाक द्वारा हस्तगत हुई । यही पुस्तक गणपतलालजी के द्वारा जोधपुर में प्राप्त हुई । इतने दिवस डाक द्वारा पुस्तक मेरे जोधपुर व अजमेर होने के कारण देर में प्राप्त हुई । "फतैविनोद" में आपकी रचित " प्रभु पचीसी, करणी करुणाकर, प्रबोध पचीसी तथा भजन संग्रह " को पढ़ कर नयन नलिन एवं हृदय सरोज विकसित हुए ।

यह पुस्तक छोटी है परन्तु इसके सद्गुण अति ही उपदेश जनक हैं। मुझे इससे बहुत आनन्द प्राप्त होता है कि हमारे में ऐसी कविता रचने वाले बुद्धिमान् सरदार हैं। "प्रबोध पचीसी" तो इस अमूल्य पुस्तक में अत्यन्त ही उपदेश जनक है। जो कोई मनुष्य इन उपदेशों को ग्रहण करेंगे आशा है वे मनुष्यवृत्ति में एक आदर्श रूप को प्रकट करेंगे। बालक उस उपदेश को पढ़ कर अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता को अपने हृदय में अवश्य धारण करेंगे। इस अमूल्य पुस्तक के भेजने से आनन्द प्राप्त हुआ इसलिये मेरा सहर्ष धन्यवाद ग्रहण करावें। फोटो जोधपुर पधारना होगा जब हाजिर करूँगा।

आपकी कुशलता का पत्र दिरावें। यहां योग्य कार्य से याद फरमावें। फकत ॥

आपका स्नेही
नाथूसिंह

॥ श्रीरामजी ॥ खरवा

१०-६-३७ (जि० अजमेर)

श्रीमान् आदरणीय राव बहादुर ठाकुर साहब राज श्री फतह-सिंहजी साहब की सेवा में सादर सप्रेम मुजरा मालूम होवें।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। अपरंच बारठजी भूरदानजी खारी वाला अठे आया हा जद "फतैविनोद" नामक उच्चाशय पूर्ण आपकी सुन्दर व सरल कृति (जो कि पूजनीया मातृ भाषा राजस्थानी में ही रची गई है) देखबा को सौभाग्य प्राप्त हुवो। राजस्थान की वर्तमान राजपूत जाति के लिये ओ गर्व को विषय है कि ई समय ई जाति की दुरवस्था होतां हुवां भी ई जाति में आप जिसा चुण्या हुआ नर-रत्न विद्यमान हैं और आपकी सभ्यता, सिद्धान्त, भाषा, साहित्य, इतिहास तथा निजत्व नैं निबाहता हुवा समय की प्रगति के साथ कदम बढ़ा रह्या है, आ प्रसन्नता और गौरव की ही बात है।

आपकी बणाई हुई पुस्तक श्रीमान् रावजी साहब खरवा के मुलाहिजै बारठजी कराई सो ई पुस्तिका नें पढ़ कर हार्दिक प्रसन्नता हुई और फरमायो कि ई पुस्तक की तो ९-१० कापी आपणैं पास होवो आवश्यक है सो जाण पिछाण का साहित्य प्रेमियां के भेंट की जा सकै। आ प्रति तो बाभा भूरदानजी की है और ई पुस्तक के दूसरी जगां प्रेस में मिलवा को और कीमत को बेरो नहीं है, इण कारण सुं आपने सविनय निवेदन कियो जावे है कि यदि उचित समझावें तो कृपा फरमा कर ई पुस्तिका की १० प्रति श्रीमान् खरवा रावजी साहब के पतै खरवै भेज दिरावा को हुकम बकसा दिरावसी कष्ट के लिये क्षमा करावसी। योग्य सेवा सदा फरमाता रहसी।

आपको सदा शुभाभिलाषी—
सुरजनसिंह

Thakur RAM SINGH, M A; — BIKANER,
Director of Education, — *Rajputana.*
Bikaner State — १-४-३६.

श्रीमान् ठाकुर साहब राज श्री फतैसिंहजी साहब,

आपकी उपदेश प्रद पुस्तक "फतैविनोद" और "प्राणी मात्र के मृत्यु और जीवन के प्रश्न" लादूराम हरिजन द्वारा मिले। तदर्थ अनेक धन्यवाद। 'फतैविनोद' को देख कर मेरे ८-१० मित्रों को भी बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने इच्छा प्रकट की कि वे भी पुस्तक को अपने पास रखना चाहते हैं। इसलिये यदि इसकी कुछ प्रतियां बची हों तो १० भेजने की कृपा करें। मुझको यह कहने बड़ा हर्ष होता है कि मारवाड़ में ही नहीं सम्भवतः सारे राजस्थान में आप ही एक ऐसे सरदार हैं जिन्होंने ऐसा आस्तिक, ऐसा नीति पूर्ण, ऐसा सुन्दर उपदेश अपने कुँवरों को दिया है। और लोक हितार्थ उसको प्रकाशित भी करवा दिया है। ऐसे पिता पाकर आपके पुत्र क्यों न कृतार्थ हों, क्यों न सपूत बन जायं! उनका भविष्य अवश्य उज्ज्वल होगा। हम आप से ऐसे उपदेश-रत्नों की और भी आशा करते हैं।

आशा है आप सपरिवार सानन्द विराजते होंगे। योग्य सेवा लिखावें। कृपा बनाये रखें।

भवदीय
रामसिंह

चारणावास निवासी बारठ चण्डीदान कृत—

॥ दोहा ॥

आखे धिन धिन आपने, कविजन चारों ही कोद।
पणधारी आसोप पत, बरण्यो फतैविनोद ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

आज कलिकाल बीच क्षत्रिय समाज ऐसे,
माह मन मोजी गाथा मन में मढे नहीं।
हारु हिये होवत हमेश ही निहार हम,
चारु पन चैन चित्त भीतर चढे नहीं ॥
गौरव सो प्रीत अरु धर्म विपरीत गति,
गौरव गुमान ग्यांन स्वान्त में गढे नहीं।
प्यार कर फागन पुगन तो पढे हैं पर,
कमँध फता ज्यूं काव्य मुख तें कढे नहीं ॥१॥

बणसूर सुमेरदान पारलाऊ निवासी कृत—

॥ दोहा ॥

चैन नन्द कुल चांनणा. पारस समझ पयोद।
है गुण भरियो सेमहर. मुरधर आंणे मोद ॥ १ ॥

भाळ भाळ सुद गुण भरया, शिक्षा भक्ती सोद ।
साहित मग फतमाल शुभ, बरणी फतैविनोद ॥ २ ॥
जननी धिन दीनो जनम, शुभ पुळ बेळा सोद ।
चैन नन्द फतमल चवां, बरणी फतैविनोद ॥ ३ ॥
दुनियां में केई देखिया, (ज्यांनैं) बोलण रो नह बोद ।
फतै रहो थारो फता, बरणी फतैविनोद ॥ ४ ॥
कूंपावत थारो कवी, मन में आणें मोद ।
साहित सागर सोधनैं, बरणी फतैविनोद ॥ ५ ॥

गांव ऊंड (सिरोही) निवासी आढा पीरदान कृत—

॥ दोहा ॥

आज काल रा आरजां, वणियां रहो सुबोद ।
ऊंची शि आदरो, बांचो फतैविनोद ॥ १ ॥
काव्य ग्रंथ केतांन के, मुड़िया मते मतेह ।
कूंपा साहित सूं करी, फतैविनोद फतैह ॥ २ ॥
ऐ कूंपा आसोप रा, मांनसरोवर मांन ।
पात मराळां पोखणां, अधिक रखाणां आंन ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

है शुभ गुणरी हाट, खाटण जस दाटण खळां ।
खाग त्याग खत्रवाट, फावै भुज थारे फता ॥ १ ॥
कळिया स्वारथ कीच, रजवट छोडे रांगड़ा ।
बीदग नाता बीच, फरक नहीं लायो फता ॥ २ ॥

मोरटूंका निवासी बारठ लक्ष्मीदान कृत---

॥ सोरठा ॥

जव्वर काव्य जिताह, प्रति अगलो सह पारियो ।
फतैविनोद फताह, भूसण सिर किय भारती ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

जो कहदे कूंपो जवां, हुवै कदापि न हांण ।
सूरज रा ऊगांण सम, फता तणां फुरमांण ॥ १ ॥

इसी वर्ष की मार्गशीर्ष वदि २ तदनुसार ता० २२--११--३५ को इसने अपने प्रथम और द्वितीय पुत्र कुँवर देवीसिंह और भवानीसिंह को जोधपुर सर प्रताप हाई स्कूल में क्रमशः कक्षा ४ और ६ में भरती करवाया। उस अवसर पर इस ठाकुर ने हिन्दू-धर्मानुसार विद्यालय प्रवेश का जैसा उत्सव किया जाता है वैसा ही किया। सर प्रताप स्कूल के समस्त विद्यार्थियों और अध्यापकों को मिठाई विनीएँ की गई और रु० ५१) बतौर गुरु भेण्ट के स्कूल में दिये गये। फिर बंगले पर के समस्त राजपूत और चारण बोर्डिङ्ग हाऊस के लड़कों को गोठ दी गई। उस अवसर पर कवियों ने जो कविता की वह इस प्रकार है।

सिऊ निवासी सांदू विशनदान कृत---

॥ दोहा ॥

फता कँवर फूलो फलो, सुख सूं विसवा वीस ।
विद्या गुण मगती वधो, आ देवी आसीस ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

अमर कुल नाम रो स्याम-ध्रम आपरो,
आई सुभ घड़ी सुत पढण आतां ।
घरो-घर पुरी में छोरू बड भाग री,
विद्या अनुराग री करै बातां ॥ १ ॥
अम्रत पुल जनम रो चन्द्रमा आवियो,
सानन्दा अक्षकी लगन साझी ।
उन्नत विद्यालयां आय आसोप रा,
मुरधरा सिरायत सुवन मांझी ॥ २ ॥
मिगसरी द्वादसी कृष्ण पख मोहणी,
विलोक्या बाणवे बरस बीरां ।
सहर रा सुभागम कँवरां सराहे,
सनेहां छातरां गोठ सीरा ॥ ३ ॥
पिछांणी लेही गुण गुणांरा पारखी,
जोगता भरी जुग जोड़ जांणी ।
पुरां कुल चांदणां कूंपांणी पधारिया,
विद्यारथी बिंजना कही बांणी ॥ ४ ॥
स्वागतां करी परताप स्कूल सब,
आदर अध्यापकां लिया आगा ।
बांटतां जोधपुर देवरी वधाई,
लाडका लाडवां प्रेम लागा ॥ ५ ॥
पढण पौसाल परवेस सुभ पधारिया,

जगत प्रिय दोय देसोत जोया ।
सुतन फतमाल रा सहर भर सराहे,
मधुर मुख बालकां मनां मोया ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

स्याम धरम साधे सदा, देवी रा दृढ दूत ।
हित ज्यों ही सायक हुआ, रहहि साथ रजपूत ॥१॥

वि० सं० १९९३ में वायसराय महोदय लार्ड विलिंगडन के आगमन पर श्री दरबार साहबों का खास रुक्का और चीफमिनिस्टर साहब की नीचे लिखी चिट्ठी आने पर यह ठाकुर जोधपुर गया और वहां वायसराय महोदय के स्वागत में शरीक हुआ ।

खास रुक्के की प्रतिलिपिः—

"श्रीनाथजी सत्य छै

The Palace Jodhpur.
Rajputana,

राव बहादुर ठाकरां फतैसिंहजी सूं म्हांरो जुहार बांचजो तथा लाट साहब रो अठे आवणो होसी सु आली जलूस सुं ता० ११ मार्च सन् हाल में सताब हाजिर होजो संवत् १९९२ रा फागण सुदि २
Umedsingh.

(अंग्रेजी पत्र चीफ मिनिष्टर का)

6478

JODHPUR.
6th. March 1936

Dear Thakur Sahib,

I am desired by His Highness the Maharaja Sahib Bahadur to invite you to be present in the Reception

Canopy on the occasion of the arrival of Her Excellency at the Jodhpur Aerodrome on Tuesday the 17th. March 1936.

A statement of instructions regarding the reception of His Excellency in enclosed herewith for your guidance.

Yours Sincerly
D. M. Field.

To,

Rao Bahadur Thakur Fateh Singhji of Asop.

वि० सं० १९९४ में "वाल्टर कृत राज पुत्र हितकारिणी सभा" का कानून तरमीम हुआ, जिसमें यह ठाकुर भी ता० २०-९-३७ को मेम्बर मुकर्रर किया गया।

वर्तमान ठाकुर को कविता करने के समान मकान बनवाने का भी शौक खूब ही है। नाम चिरस्थायी रहने के लिये दो ही साधन हैं। मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है, शरीर का नाश हो जाने पर भी कविता और मकान चिर काल पर्यन्त विद्यमान रहते हैं। नाम को चिर काल पर्यन्त स्थायी रखने वाले ये दो ही पदार्थ हैं। कहा जाता है। " गीतड़ा कै भींतड़ा " इस ठाकुर ने तमाम पट्टे के गांवों में व खास आसोप में कई मकानात बनवाये। जैसा कि नीचे लिखे हुए लेख से पाठकों को विदित होगा।

फतहनिवास—यह महल अत्यन्त ही सुन्दर है। नये जमाने के ढंग पर निर्माण किया गया है। ठाकुर अधिकतर इसीमें निवास करता है। इसका निर्माण संवत १९८५ में हुआ।

वि० सं० १९८५ में इस ठाकुर ने तालाव नौसर का पट्टा बंधवाया।

वि० सं० १९८७ में इसने मऊ नामी जमीन में, जो आसोप से करीव ५ मील के अन्तर पर है, अपने ज्येष्ठ पुत्र देवीसिंह के नाम से देवीसागर नाम का एक कूआ खुदवाया। वहां इर्द गिर्द के

गांवों में कोई पानी पीने का सुभीता नहीं था। इस कूए के खुदवाने से वहां के गांवो में पानी का पूर्ण सुभीता हो गया। जिससे वहां के लोग इसको अन्तःकरण से आशीश देते हैं।

इसी साल में इसने जोधपुर पावटा लाइन में शंखवास ठाकुर माधोसिंह से एक बंगला रु० ३७५०८) में मय फर्नीचर के खरीद किया।

इसी साल में इसने आसोप गढ़ के सिरे दरवाजे के स्थान में फतैपोल के नाम से बड़ा विशाल दरवाजा नये ढंग पर बनवाया। यह दरवाजा बड़े ही अच्छे और खूब सूरत ढंग से बना है। ठिकानों में ऐसे दरवाजे कम देखने को मिलते हैं। इस दरवाजे के विषय में किसी कवि ने इस प्रकार कहा है---

शिऊ निवासी सांदू विशनदास कृत----

॥ दोहा ॥

अमर नाम आसोप में, रहे फता री रेख।
हरस मोद आनन्द हुवै, दरवाजा छिब देख ॥ १ ॥
उन्नत गढ आसोप में, पोळां मँगळ प्रकास।
संतति सम्पति सूं सुखी, वसो सुवस गढ बास ॥२॥

॥ गीत ॥

वेळा आनन्दी विजेता फना भराई विशाल नीवां,
सदा फतैपोळ रहो भवानी सहाय।
महाबाहु कूंपा छात मांडिया मंडाण मोटा,
दुवा दिये दोराटां देखियां लागे दाय ॥१॥

आसोप बंगला जोधपुर

फते पोल
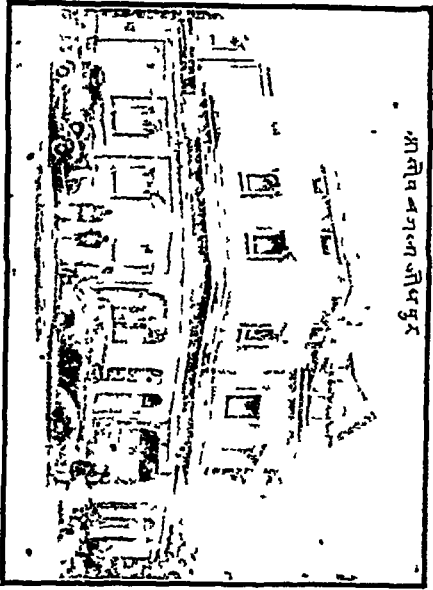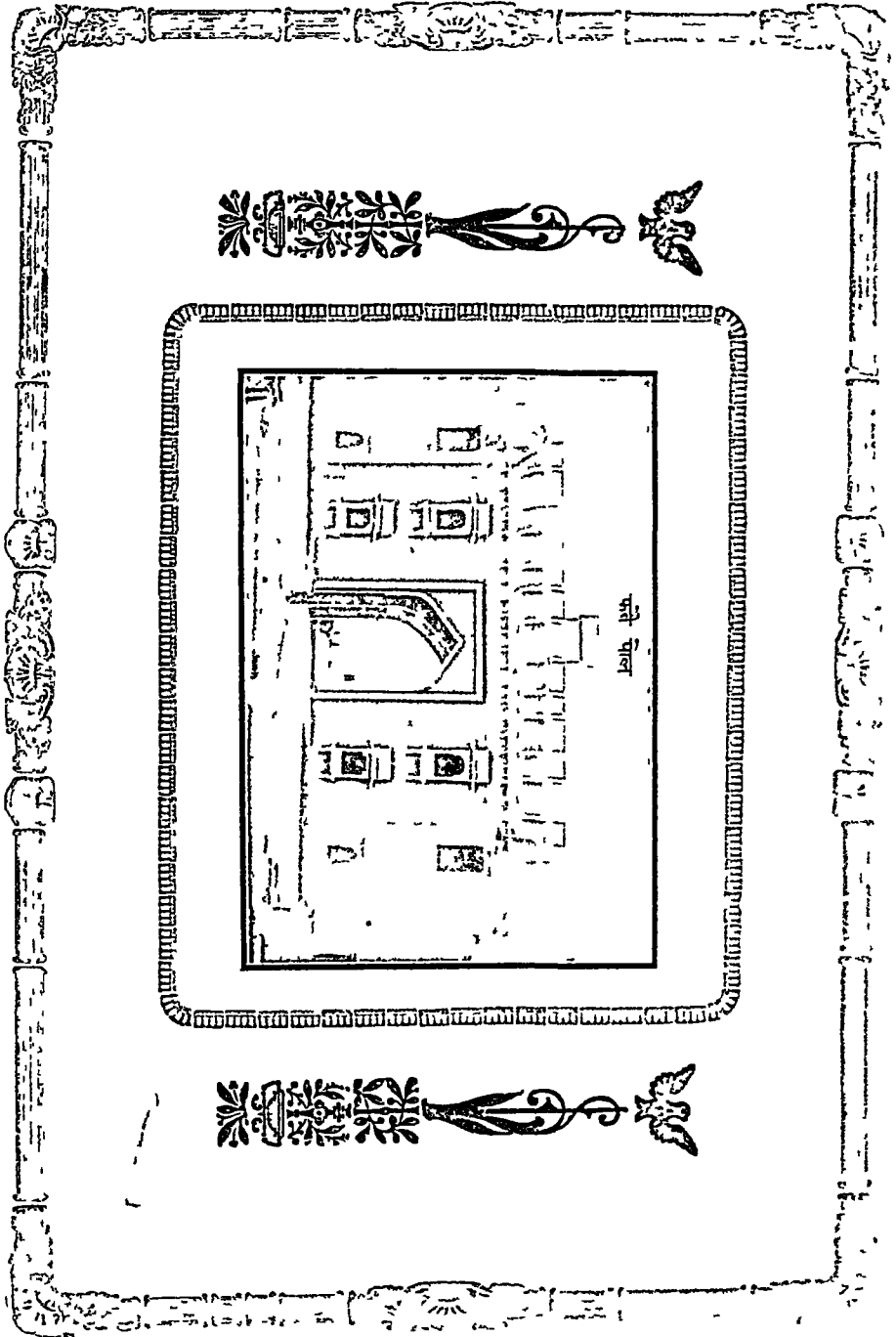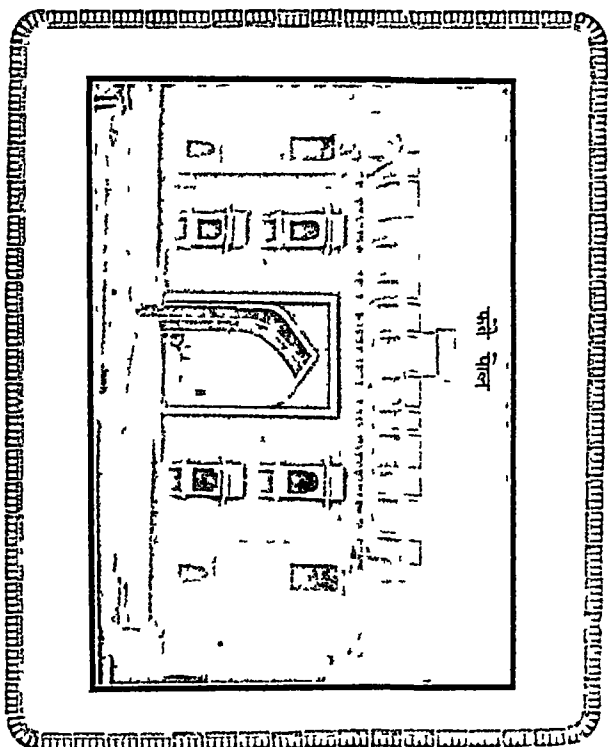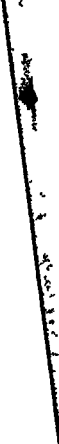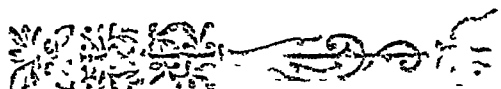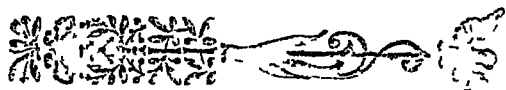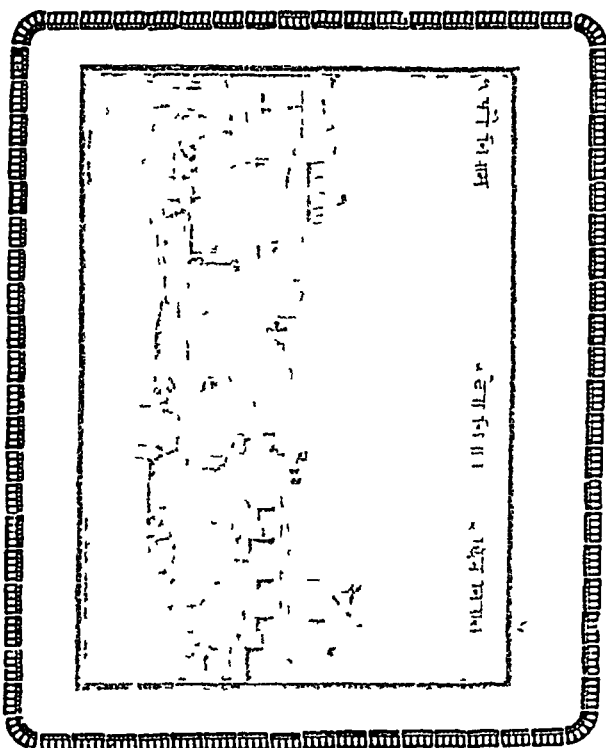
थारो नाम मरजादां बडेरां ज्यूं ही रहे थारी,
भारी थंभ कबाणां संभाया आछा भार।
खासाया सफीलां गोखां अकासां चूँमता खुलै,
दीखे राव कूंपारा भरोका राज द्वार ॥२॥
सुजांण सराया राज रंगारी उमंगां शोभा,
आछा कमठांणां टांणा आया अखे ओप।
सावन्तां सवायां थाट दिखाया देशरां सारां,
उन्नति उजाळी पोळां दिपाया आसोप ॥३॥
हिम्मतां अथाह काज कमठा सिभाळा हीया,
हिरंभी रुखाळा जायो सदा सुभां होत।
सिरायतां राजस्थान सचूपां अलंगां सोया,
दरवाजा मोया मनां अगंजी देसोत ॥४॥

इसी साल में इसने आसोप गढ में कचहरी का निर्माण भी नये समय के अनुकूल करवाया।

वि० सं० १९८९ में इसने अपने प्रथम पुत्र देवीसिंह के नाम से "देवीनिवास" नामक कमरा कोट के पश्चिमी हिस्से में अश्वशाला के ऊपर बनवाया।

वि० सं० १९९० में पट्टे के गांव कंकड़ाय में कोटड़ी तैयार करवाई। यह बहुत ही रमणीय स्थान पर निर्मित हुई है। इसके आगे तालाब की मनोहर छटा देखते ही बन आती है।

वि० सं० १९९२ में इसने अपने पट्टे के गांव ढुंढा में, जो कि आसोप से करीब ६० मील के अन्तर पर पाली (मारवाड़) के पास है, कोट तैयार करवाया।

इसी साल में इसने कागल नामक पट्टे के गांव में कोटड़ी तैयार कराई। और खास आसोप में गढ के अन्दर देवीनिवास के ऊपर एक छोटासा कमरा चातुर्मास में रहने के वास्ते "छवी-निवास" के नाम से बनवाया।

वि० सं० १९९४ में इसने देवीनिवास के पास ही पूर्व की तरफ गढ़ में बगीचे के अन्दर एक मकान अनोखे प्रकार का बनवाया।

आज कल पाटवी पुत्र और छुट-भाइयों में परस्पर प्रेम कम देखने में आता है जिसका कारण यह प्रतीत होता है कि पाटवी पुत्र छुटभाइयों को जीविका कम देना चाहता है जिससे उनका निर्वाह होना कठिन। और छुट-भाई अधिक चाहते हैं।

यद्यपि ठाकुर फतहसिंह के पुत्रों में परस्पर बरताव देखते उस प्रकार का व्यवहार नहीं रहेगा, तथापि भविष्य को कौन जान सकता है? इस विचार से ठाकुर ने अपने द्वितीय और तृतीय दोनों पुत्रों के सुविधा पूर्वक निवास और निर्वाह का प्रबन्ध कर दिया है। निवास के लिये आसोप नगर से पूर्व दिशा की ओर दो भवन निर्माण करवाए गए हैं। और उसका नाम "भ्राताभवन" रखा गया है। इसके निर्माण में २२०००) बाईस सहस्र रुपये व्यय हुआ।

दूसरा इनके सुख पूर्वक निर्वाह होने का प्रबन्ध भी पूर्णतया कर दिया गया है। जैसे-आसोप की सीमा में पक्की ५००पांचसौ बीघा जमीन, जो बेरागर के नाम से प्रसिद्ध है, और एक गांव, जो कुकड़दा नाम से प्रसिद्ध है। दोनों भाइयों को शामिल दिये गए हैं। उक्त गांव आसोप से वायव्य कोण में दो कोस के अन्तर पर है।

इसके अलावा जर जेवर व अन्य सामग्री वस्त्र, शस्त्र, वर्तन आदि भी अलग रख दिये गए हैं। इस प्रकार प्रबन्ध हो जाने से छुटभाइयों में और पट्टाधिकारी में परस्पर प्रेम का तंतु बना रहना

पुलिस स्टाफ ठिकाने आसोप

कुर्सी पर बैठे हुये - कवर देवीसिंहजी - ठाकुर भैरू सिंहजी - खेनड़ला - ठाकुर फतेह सिंह जी - आसोप - कवर भवानी सिंहजी
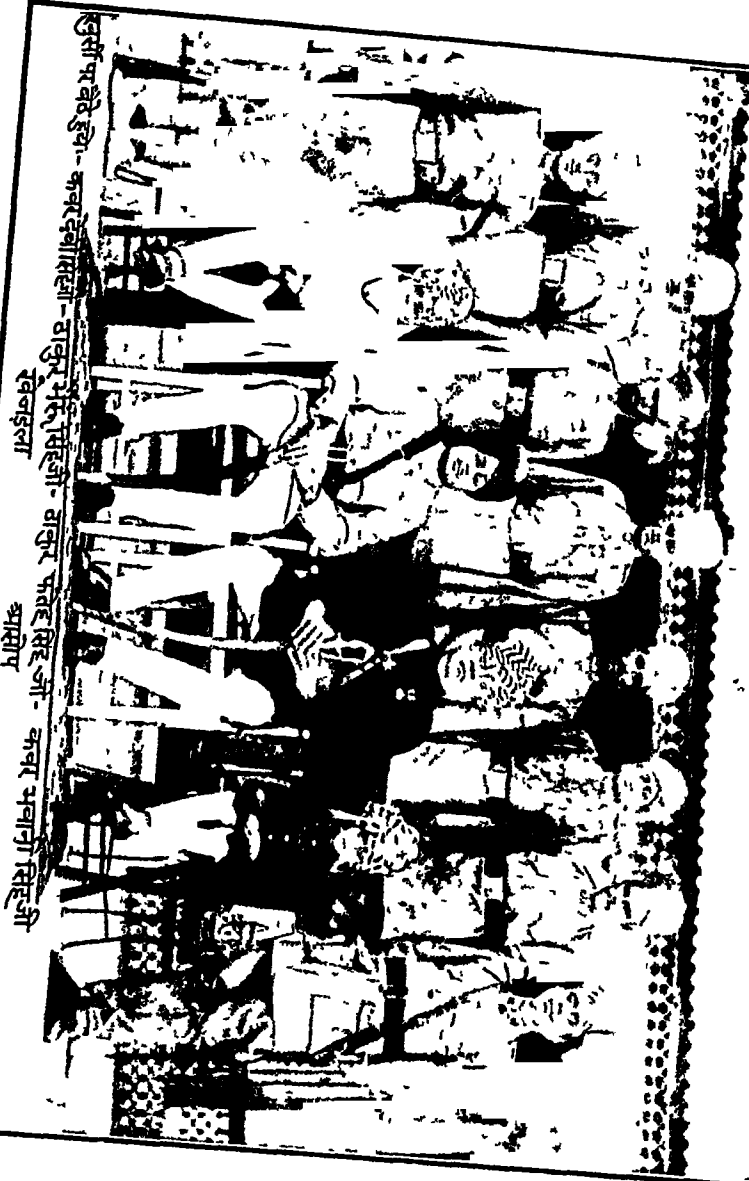
सर्वथा सम्भव है। किसी प्रकार से मनोमालिन्य होने का सम्भव नहीं।

ऐसे दूरदर्शी बुद्धिमान् व्यवहार-कुशल ठाकुर कम ही देखने में आते हैं। बल्कि जिधर देखें उधर पाटवी और छुटभाइयों में विरोध ही दृष्टि गोचर होता है। वास्तव में जिस पिता के अंश से पाटवी पुत्र का जन्म हुआ है उसी पिता के अंश से छुट भाई पैदा हुए हैं, क्या उनका पितृ सम्पदा पर अधिकार नहीं है? परन्तु अदूरदर्शी लोग इस बात का विचार नहीं करते। और इसीसे ठिकाने का स्वरूप बिगड़ जाता है।

यद्यपि जागीरदारों के सिवाय अन्य लोगों (ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र आदि) में समस्त पुत्रों का बंट समान होता है, परन्तु जागीरदारों में पट्टाधिकारी पितृ-सम्पदा का अधिकारी और अन्य पुत्र निर्वाह के अधिकारी गिने जाते हैं। क्योंकि अन्य लोगों के समान बण्ट होने से ठिकाने का स्वरूप नहीं रह सकता, इसलिये पाटवी का हक पूरा रख कर छुट--भाइयों के लिए निर्वाह योग्य प्रबन्ध किया जाता है। जो लोग पाटवी और छुट-भाइयों का प्रबन्ध नहीं करते उन की सन्तान परस्पर मुकदमा-बाजी करके भ्रष्ठ हो जाती है। ठाकुर फतैसिंह इस बात को भली भांति जानते हैं और प्रत्यक्ष देखते हैं इसलिए इस दूरदर्शी ठाकुर ने अपने हाथ से समस्त प्रबन्ध कर दिया है।

इस समय दुर्भिक्ष है इसलिये ठाकुर ने अपनी दुर्भिक्ष पीड़ित प्रजा का पालन करने के लिए भवन निर्माण का कार्य करवाया है, जिससे गरीबों को मजदूरी मिल जाने से उनका पेट पल जाय और वे अन्नदाता स्वामी को अन्तःकरण से आशीर्वाद देवें।

॥ दोहा ॥

सजन भवानीसिंघ रै, पिता फते कर प्रीत।
कमठांणा आरम्भ किया, राज घरांणां रीत ॥ १ ॥

मकानात के विषय की कुछ कविता पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दी जाती है।

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृत–

॥ सोरठा ॥

रवि चन्द लग रीजोह, देजो सुख देसांण पत।
कूंपा नित कीजोह, आं महलां राजस अमर ॥१॥
वगत हरा कुल भांण, अंजस वंधव ईढरा।
कीरत ने कमठांण, ए वातां रहसी अमर ॥ २ ॥
सुख रसरीह सलाह, कोड़ जुगां कीजो कमन्ध।
मारू यां महलांह, कीजो राजस कूंपहर ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

महल निहारी केई सजन सुखारी होत,
गोखन भिरोक थँभ ओपत अटारी है।
वोत लग वारी तामें चलत समीर भारी,
देख जग सारी वार वार वलिहारी है॥
तामें अत त्यारी देख होत सुखकारी सर्व,
महल अनूप याको रूप अत भारी है।

कमँध फतारी आज इसी बंगलारी ओप,
कहै नर नारी यों कैलाश छिबधारी है ॥१॥

यह ठाकुर परोपकारी और जाति-प्रेमी भी पूर्ण है। इसने लोकोपकारी कार्यों में पूर्ण आर्थिक सहायता दी है। जैसा कि नीचे लिखी हुई रकम से विदित होता है।

१ राजपूत बोर्डिङ्ग में रु० १५००) तो एक मुस्त दिये और १००) सौ रुपया वार्षिक सहायता देते हैं।

२ कोटा भूकम्प फण्ड में भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ रु० ५००)
३ पटना भूकम्प फण्ड में रु० १००)
४ जोधपुर फाइनेंस मिनिष्टर मिस्टर यंग की यादगार में रु० १५)
५ जोधपुर कन्या पाठशाला में रु० २१)
६ जागीरदार हितकर सभा में रु० १५)
७ बादशाह सलामत जार्ज पंचम की सिलवर जुबीली में रु० २५०)
८ कोढियों की सहायता के लिये रु० १५)

इस ठाकुर का यश वर्णन कवियों ने जो किया है वह नीचे दिया जाता है।

मोगड़ा निवासी कवि अजीतदान कृत-

॥ दोहा ॥

बज जस डंका चहुँ वलां, लज संका लोभांण।
आसाणें बंका अडर, रंग फता महरांण ॥ १ ॥

तारण पातां चैन तण, डारण शत्रु विडार।
सारण कारज सज्जनां, अधपत फतो उदार ॥ २ ॥

बाम्मणी के रावल देवीदान कृत

॥ कवित्त ॥

क्रीत की कवांन तांन हाथ फतमाल तेरे,
वली के समान जान्यो सहरो सपूती को ।
चैनसिंह नन्द आज काटत कुरन्द कवियां,
आदू तो घरानों ओपै उपमा अछूती को ।
कूँपावत चित्त वित्त देन को हमेस बधै,
शत्रुन को दिखावे तुर्त तोर मजबूती को ।
दिल को दयाल प्रतिपाल कवि लोकन को,
धन्य तूं आसोपधीस कोट रजपूतीको ॥ १ ॥

पांचेटिया निवासी आढा जबारदान कृत

॥ गीत ॥

एला आमती वदाय दीधी मासती वारमें आतां,
हातां भोज वीक ज्यों सराय दीधी हाम ।
नार दीधी पातां वातां सपूताचार रे तावे,
मार दीधी जातरी उन्नती कूँपा श्याम ॥ १ ॥
भुजां खत्रवाट री रखाय दीधी वात भूरे,
धजा स्वर्न रंगरी वढाय दीधी धोप ।
मंदा मोता परांरे कराय दीधी वीर शोभा,
आछा अदां फतैसिंह, लगाय दीधी ओप ॥२॥
लागा चाले लेण शोभा द्रवां दे लखाय दीधी,

राजां नामी पणां री रखाय दीधी रीत।
चैन नन्द चैनरी दिखाय दीधी छत्र छाया,
जाडी जोड़ ऊपरां रखाय दीधी जीत ॥३॥
गुणी आछा जणां सूं द्रढाय दीधी प्रीत गाढी,
चोजां दान देणरी बढाय दीधी चित्त।
देर द्रबां पातां पंगी रूपगां मँडाय दीधी,
कूंपे गिरां ऊजळी चढाय दीधी क्रीत ॥४॥

बासणी निवासी कविया करणीदान कृत—

॥ दोहा ॥

मारू सपूतां मुकट मिण, इण कलु मांय अनोप।
त्रासा भव दुख तोड़णा, अनदाता आसोप ॥ १ ॥
सिध रिधियां हाजिर सदा, सगती भगती साज।
चाव घणां सूं चित चढे, राव कूंपा रो राज ॥ २ ॥
सोनेरी कळसां सिखर, आई फतै जस ओप।
आछो दीपै ऊजळो, ऊँचो गढ आसोप ॥ ३ ॥
थिर थिर गोचर थापिया, परम धरम रा पंथ।
बंश बेल़ भगती बधी, सगती रा सामन्त ॥ ४ ॥
वृद्धि बंश बैभव बध्या, अनन्त निधी गुण ओप।
राव बहादुर दे रिधी, सिधवन्ता आसोप ॥ ५ ॥

बासणी निवासी कविया बदरीदान कृत

॥ दोहा ॥

मांण पांण वट मरदमी, चाले कुळवट चाल।
अनमी घर आसोप रै, फावै तूं फतमाल ॥ १ ॥

कवि करणीदान कृत—

॥ दोहा ॥

नौज हुवै नासत नरां, है इल आसत हाल ।
मांन वधावे मांगणां, मुगटां मिण फतमाल ॥ १ ॥
स्याम-धरम राखण सद्दढ, चित उज्जल सुध चाल ।
वरदायक कुलवट्टड़ी, मत भूले फतमाल ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

मांझी सुद मतराह, तो में गुण कूंपातिलक ।
जो देवां जितराह, फावै अद तोनें फता ॥ १ ॥

रसाल निवासी कवि सांदू बलवन्तदान कृत—

॥ सोरठा ॥

बुध वल विरद विशाल, भाग बिलँद पोरस भुजां ।
फबियो जस फतमाल, आज सरब जग ऊपरै ॥ १ ॥

कविराज गोपालसिंह (बून्दी) कृत—

॥ कवित्त ॥

केते काम तेरे देखे ऐन सुभ नीतन के,
केते काम तेरे धरा सुजस फैलावने ।
केते काम तेरे वीर सुभट सजावन के,
केते काम तेरे धर्म क्षत्रन सुभावने ।
केते काम तेरे वढिवे को मन राखवो है,

केते काम तेरे नित्त मंगल़ छवावने ।
भूप फतैसिंह धीर तखत आसोप साथ,
तेरे हाथ खाग त्याग जग में बढावने ॥ १ ॥
प्रथम विसेस सावधानी सब काजन में.
विद्या को विवेक दूजो गुन पहिचान में ।
तीजे केई देशन के नरेशन तैं मित्रताई,
चौथे सूर धीरताई पूरी निज प्रान में ।
एते गुन पाये तोमें आज फतमाल वीर,
चलके सुपंथ चाल फैली थांन थांन में ।
राजन की कीत जात ठौर ठौर देसन में,
सुजस तिहारो जात दसों ही दिसान में ॥२॥

धुलो (जयपुर) निवासी राव बजरंगसिंह कृत—

॥ कवित्त ॥

दीन प्रतपालन के बिरद विशाल हाल,
कुल़ उजवाल़ स्वाल सत्त को सुनायो मैं ।
सुघर सुजांन सुरतरु के समान जांन,
बिबध बिधान सुन मान हेत धायो मैं ॥
भने बजरँग हिन्दवान में प्रमान सब,
यातें दृढ ठान फतमाल गुन गायो मैं ।
याही मन कामा सुभ द्रष्ट की सुदामां धामां,
नामा सुन कृष्ण ज्यूं सुदामां वन आयो मैं ॥१॥

॥ दोहा ॥

पाट तणों मालिक प्रगट, भल उमेद भूपाल।
थाट तणो थारी भुजां, यह मोवे फतमाल ॥ १ ॥

आंगदोस निवासी बारठ लिखमीदान कृत—

॥ दोहा ॥

कन्यां पढावण कारणे, धिनो फता छत्रधार।
आप दिया आसोप हूँ, रुपया एक हजार ॥ १ ॥

वि० सं० १९९४ में जब इसने अपने दोनों पुत्रों को मेयो कॉलेज अजमेर में भर्ती कराया तो सर प्रताप स्कूल को गुरु दक्षिणा स्वरूप रु० ५००) अपने पुत्रों के उक्त स्कूल से विदा होते समय प्रदान किये। फिर तारीख ५ जौलाई सन् १९३९ को इन दोनों पुत्रों को मेयो कॉलेज अजमेर में, जिनमें से प्रथम पुत्र देवीसिंह को तो चौथी और द्वितीय पुत्र भवानीसिंह को, सातवीं कक्षा में भर्ती कराया यह दोनों कँवर बड़े होनहार और सुयोग्य हैं जिन्होंने इतनी अल्प अवस्था में अपने अध्यापकों को अपनी सुशीलता से अपने ऊपर रिझा लिया। जैसा कि सर प्रताप स्कूल के प्रधानाध्यापक की स्पीच से, जो नीचे दी जाती है, विदित होता है।

श्रीमान् सभापतिजी एवं उपस्थित महानुभाव !

मारवाड़ के जिस विश्व-विख्यात और यशस्वी महान् पुरुष के नाम द्वारा इस सर प्रताप हाई स्कूल जोधपुर की स्थापना हुई है, उनका नाम अत्यन्त आदर की वस्तु है। आपके ही आदर्श एवं अनुकरणीय प्रयत्नों से यह स्कूल प्रारम्भ से आज तक मारवाड़ के सब राजपूत सरदारों का अत्यन्त प्रिय और कृपापात्र रहा है। इस स्कूल

के विकाश का प्रत्येक प्रयत्न आपकी सदिच्छाओं, सद्भावनाओं और मुक्त हस्त से की हुई आर्थिक सहायता पर अवलम्बित रहा है। स्वर्गीय सर प्रतापसिंहजी के नाम द्वारा लगाया हुआ यह बीज आज आप लोगों की ही सतत कृपा से इस विशाल वृक्ष के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है।

इसके अतिरिक्त इस स्कूल को सर्वदा सन्मानित राजपूत सरदारों के राजकुमारों को शिक्षा देने का गौरव प्राप्त है। राजकुमारों की शिक्षा दीक्षा इस स्कूल के अधिकारियों की चिन्ता का हमेशा प्रथम प्रश्न रही है।

वर्तमान आसोप कुमार देवीसिंहजी तथा भवानीसिंहजी का प्रवेश इस स्कूल में तीन वर्ष पूर्व हुआ था। आप अत्यन्त नम्र, सदाचारी एवं मृदुभाषी हैं। निरभिमान और स्वभाव के आप इतने मिलनसार हैं कि अपने आचरण से कभी भी यह प्रकट नहीं होने दिया कि आप एक अत्यन्त प्रतिष्ठित जागीरदार के वंशज हैं। गरीब से गरीब छात्र के साथ आपका समान व्यवहार रहता था और अध्यापकों को आपने अपनी आज्ञा-कारिता से वशीभूत कर लिया था। वस्तुतः आप में वे सब सद्गुण हैं जो आपके भविष्य जीवन की सफलता के द्योतक हैं। इनके विकास में इस स्कूल का जहां तक हाथ रहा है वह आप महानुभावों की ही शुभेच्छाओं का फल है।

आज आप इस योग्य हो गए हैं कि अपनी शिक्षा की समाप्ति के लिये मेयो-कालेज, अजमेर पधारें। इनको मेयो-कालेज भेजते हुए आज हमें सच्ची प्रसन्नता और अभिमान है। और ऐसे सुयोग्य पुत्र के लिए आपके पूज्य पिताजी, जिनकी अमूल्य शिक्षाओं एवं अनुकरणीय आदर्श को सामने रख कर ही इतने योग्य हुए हैं, बधाई के पात्र हैं।

यद्यपि कुमार देवीसिंहजी व भवानीसिंहजी अब अजमेर जा रहे हैं परन्तु उनकी स्मृति सदैव स्कूल में बनी रहेगी और उनकी उन्नति हमेशा इस स्कूल की चिन्ता का विषय रहेगी। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनका मेयो-कॉलेज में विद्यार्थी जीवन पूर्णतया सफल एवं निरापद हो।

हैड मास्टर
सर प्रताप हाई स्कूल,
जोधपुर।

ता० १४-५-१९३८

उक्त दोनों कँवरों ने सर प्रताप स्कूल से विदा होते समय जो स्पीचें दीं वे भी पाठकों के विनोदार्थ नीचे दी जाती हैं।

॥ श्री ॥

कँवर देवीसिंह की स्पीच

श्रीमान् प्रेसीडेन्ट साहब व सर्व सज्जनों!

मैं आज अपने पूज्य अध्यापकों से साष्टांग प्रमाण करता हुआ सादर निवेदन करता हूँ कि मैं आपका बहुत आभारी हूँ। आपने मुझे बड़े प्रेम के साथ शिक्षा प्रदान की है। आप लोगों के प्रेम व त्याग के विषय में कहना मेरी शक्ति के बाहर है। जिनके संग में प्रत्येक बालक फूला न समाता है बड़े प्रेम से विद्याध्ययन करता है और साहसी खेल खेलता है। मेरा अहोभाग्य है कि मेरे परम पूज्य दाताजी साहब ने कृपा करके मुझे ऐसी पवित्र पाठशाला में भरती कराया, जहां ये मेरे तीन वर्ष केवल क्षण के समान ही व्यतीत हुए।

मेरे प्रिय सहपाठियों! मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं, कि आप मेरे साथ बड़े प्रेम से रह कर चौथी, पांचवीं व छठी कक्षा में नित्य प्रति भ्रातृ स्नेह प्रकट करते रहे, समय समय पर परस्पर

पुस्तकादि का लेना देना अपने स्नेह को प्रकट करता रहा। मुझे यह कहते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि इस तीन वर्ष के समय में किसी भी मेरे सहपाठी ने कभी भी मेरे समीप किसी प्रकार का राग व द्वेष उत्पन्न न होने दिया। यही तो इस पाठशाला का ध्येय है। प्रिय सहपाठियों! मैं मेरा हार्दिक प्रेम आप सब के सामने प्रकट करता हूँ।

सज्जनों! सर प्रताप हाई स्कूल उस वीर Lt. General His Highness Maharaja Sir Pratap Singhji Sahib G. C.B., G. C. S. I., G. C. V O. L. L. D, का एक जीवित स्मारक है। जिस सर प्रताप ने अपने जीवन भर केवल मारवाड़ में ही नहीं, वरन विदेशों में भी शान्ति व प्रेम स्थापन करने में सफलता प्राप्त की उसके चरित्र का वर्णन कहां तक किया जाय। मारवाड़ के कई सरदारों ने यहीं शिक्षा प्राप्त की है। पाठशालाओं में से यह भी एक उत्तम पाठशाला है जहां अच्छी शिक्षा प्राप्त हो सकती है। इसी कारण मैं अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह मेरा इस पाठशाला से प्रेम नित्य प्रति बढ़ाता रहे।

परन्तु यह कहते हुए मुझे बड़ा खेद हो रहा है कि मैं आज इस मेरी प्यारी पाठशाला से विदा हो रहा हूँ। मेरे पूज्य अध्यापक! मेरे प्रिय सहपाठियों! क्या मैं आज आप से अलग हो रहा हूँ? यह कहते हुए मेरा हृदय कांप रहा है, मैं कुछ भी विशेष आप लोगों के सन्मुख नहीं कह सकता।

प्रिय सहपाठियों! मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझ से फिर अवश्य मिलें और अपने स्कूल को एक आदर्श स्कूल बनाने का प्रयत्न करें।

पूज्य अध्यापकों! मैं आपको फिर से नमस्कार करता हुआ

प्रार्थना करता हूँ कि जैसी दया व प्रेम आपने मेरे पर रखा है वैसा सदैव बना रहे।

कँवर भवानीसिंह की स्पीच

श्रीमान् प्रेसीडेन्ट साहब व सर्व सज्जनो !

मेरा साष्टांग प्रणाम सब प्राइमरी व हाईस्कूल के मास्टरों को विदित हो। अब मैं मेरे परम पूज्य दाताजी साहब की आज्ञानुसार मेरे दादा भाई के साथ अजमेर 'मेयो कालेज' में जा रहा हूं। जब मैं यहां भरती हुवा था उस समय यह स्कूल मुझे बड़ी डरावनी सी मालूम होती थी। लेकिन आपका प्रेम व दया के कारण इसे छोड़ने को मन नहीं चाहता।

मेरे सभी छोटे बड़े सहपाठियों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हुआ कहता हूँ कि जिस प्रेम के साथ अपन यहां पढ़ा और खेला करते थे, वह मुझे हमेशा याद रहेगा। अन्त में मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस स्कूल को हमेशा उन्नति दें।

॥ श्री ॥

दीवान बहादुर ठाकुर माधोसिंहजी साहब होम मिनिस्टर गवर्नमेन्ट ऑफ जोधपुर की स्पीच

महाशयों !

मैं आप सब लोगों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने कि मुझे आज यह प्रेसीडेन्ट का आसन दिया।

आसोप कँवर साहबांन श्री देवीसिंहजी वो भवानीसिंहजी, जिनकी विदाई के उपलक्ष्य में यह जलसा किया गया है, बड़े होनहार हैं। वे अब उच्च शिक्षा हासिल करने के वास्ते अजमेर जा रहे हैं। उम्मीद करता हूं कि ये वहां भी अच्छी उन्नति हासिल

ता।है

ास्त्रों से
ाज्ञानुसार
हूं। जब
ानी सी
ों इस

देता
वला
। से

स्टर

ह आज

सिंहजी,
है, बड़े
ोर जा

कंवर भानीसिंहजी कंवर देवीसिंहजी कंवर सजनसिंहजी
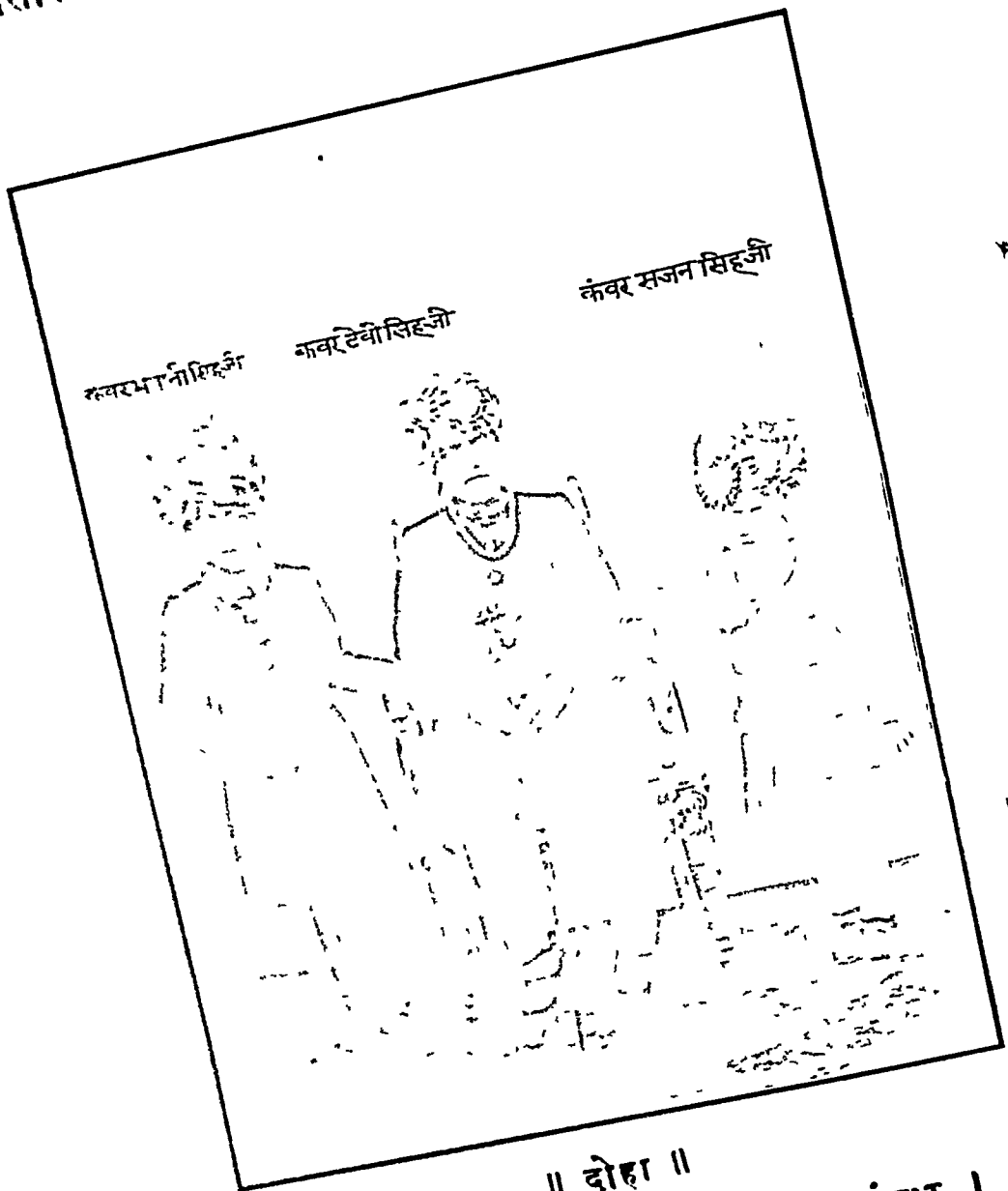
॥ दोहा ॥

देवु घररो दीवलो । भानु सुख भंडार ।
सजन सपुती सेहरो । आतमरा आधार ॥ १ ॥

करेंगे और अपने योग्य पिता के एक योग्य पुत्र कहलाये जावेंगे और आसोप की जैसी कीर्ति है उसको चरितार्थ करेंगे।

ईश्वर से इनकी उन्नति की प्रार्थना करता हुआ और आप साहबांन को धन्यवाद देता हुआ अब मैं अपना आसन ग्रहण करता हूं।

इनकी होनहारता और सुयोग्यता के विषय में कवियों ने जो वर्णन किया है वह प्रदर्शित किया जाता है।

सिवह निवासी सांदू विमनदान कृत—

॥ दोहा ॥

कुशल क्षेम करणी करो, आदर बधावो अेम।
नेम धरम में नित निपुण, पिता भक्ति दृढ प्रेम ॥ १ ॥
देव दृष्टि सुभ देखिया, सुद बरताव समेत।
बाल्हा भाव बिजेतरा, हेरू भायां हेत ॥ २ ॥
बडकां जस भगती बधी, आदर मन अनुराग।
बंस देव बड भागरा, (थांरा) आछा पुत्र अथाग ॥ ३ ॥
सब गुण नम्र सुसीलता, उर में पढण उमंग।
करे मेवकालेज रा, सोभा देवीसिंघ ॥ ४ ॥
स्याम धरम पण धार सिर, वहणो बडकां बाट।
सुभट सस्त्र घोड़ां सदा, थर यो देवू थाट ॥ ५ ॥

॥ कवित्त मनहर ॥

आनन्द आसोप राजक्वार कूंपावत राजे,
रूप रतिवान देख हेतु हिये हरसे।

इष्ट अधिकाई विद्या चातुरी बधाई चाई,
वीर धीरताई सूं सदा ही नूर बरसे ॥
अस्त्र सस्त्र ग्यान बलवान बुधिवान जानूं,
सुभड़ सपूतीवान शोभा सक्ती सरसे ।
पिता भक्ति भ्रात नेह पूरन बडाऊ प्रीत,
देखां गुन सोही देवीसिंह तोमें दरसे ॥१॥

भवानीसिंह वो सज्जनसिंह के विषय में कविता—

॥ दोहा ॥

चालो ज्यों कुल़ चालियो, झालो पख रुख जोय ।
वाल्हो देवू भाइयां (थे) हालो हुकमी होय ॥१॥
कुल़ मालिक आदर करो, परजा प्रेम प्रसंग ।
मात पिता गुण मानणा, सजन भवानीसिंग ॥ २ ॥
स्याम धरम सगती इसट, ढावो आछो ढंग ।
वहतां मूंघी वरतणी, साख भवानीसिंग ॥ ३ ॥
पुरजन प्यारा पोखणा, दत गुनिजन को छेह ।
दुरजन पर करड़ी द्रसट, सज्जन घणो सनेह ॥ ४ ॥

इसी वर्ष में इनके प्रथम और द्वितीय पुत्र मेयो-कालेज अजमेर की क्रमशः सातवीं और चौथी कक्षा में उत्तीर्ण हुए जिससे आनन्दित होकर आसोप निवासियों ने एक बड़ा जलसा किया और कुंवर साहिबों का उत्साह बढ़ाया। इस जलसे में चाणोद, चांदेलाव, खेजड़ला, साथीण, गजसिंहपुरा, वासणी, गैरासणी, नाड़सर और ओस्तरां के सरदार और चलूंदा, मूंदियाड़, गजसिंहपुरा और वासणी के कुंवर उपस्थित थे।

तदनन्तर २२ मई की शाम को गनगौर ग्राउंड आसोप में स्पोर्टस हुए जिन में विजेताओं को श्रीमान् ठाकुर साहब आसोप ने निज कर-कमलों से पारितोषिक वितीर्ण किया।

ता० २३ मई को प्रातःकाल ८ बजे महाजनों के तालाव चांचोलाई पर पब्लिक की तरफ से एक प्रीति-भोज दिया गया जिसमें लगभग ढाइसौ मनुष्यों की उपस्थिति थी।

प्रजा में से कुछ महानुभावों ने भाषण दिये जिनमें उन्होंने ठाकुर साहब और कंवर साहबों के प्रति प्रेम, सद्‌भावना एवं स्वामिभक्ति प्रकट की। ठाकुर साहब ने भी प्रत्युत्तर में एक भाषण दिया जिसमें आपने अपनी प्रजा के प्रेम, और सद्‌भावना की सराहना की और आपने कहा कि "जहां तक मेरा खयाल और जानकारी है, यह ठिकानों में पहला ही अवसर होगा कि किसी ठाकुर की रियायत ने ऐसी खुशी में प्रेम पूर्वक सार्वजनिक रूप स कोई भोज दिया हो और वह भी इस जमाने में, जब कि लोग आपसी प्रेम और सद्‌व्यवहारों के गुणों को भूल रहे हों। इसीसे इस प्रेम-भोज की महत्ता केवल मेरे बालकों के परीक्षोत्तीर्ण होने की खुशी में दिये जाने में ही सीमित नहीं होती, किन्तु इसका महत्त्व इससे अत्यन्त बढ़ कर है, जो हमारे आपसी अच्छे सम्बन्धों को प्रकट करती है। आपका ऐसा अनुराग मुझ पर होने से मुझे बहुत खुशी और गर्व है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमारे आपस के इस प्रेम को हमेशा बनाये रखे" तदनन्तर कुंवर देवीसिंह ने उपस्थित सज्जनों को न्यवाद देते हुए भाषण में कहा कि "आज आप लोगों से मिल र और यह जान कर कि आप सब लोग मेरी भलाई चाहते हैं, ौर मेरी सफलता पर खुशियां मनाते हैं। मैं आपके इस सद्‌व्यवहार अत्यन्त मुग्ध हूं और आशा करता हूं कि आप लोग मेरी पढ़ाई र जीवन की भलाई में इसी प्रकार हमेशा दिलचस्पी लेने रहेंगे

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी सदिच्छाओं से मैं हमेशा पढ़ाई-में उन्नति करता रहूंगा।

इसके पश्चात् कुंवर भवानीसिंह खजड़ला ठाकुर साहब और मास्टर महेन्द्रनाथ कपूर कुंवर साहबों के प्राइवेट ट्यूटर इत्यादि महानुभावों के भी भाषण हुए।

लिख आए हैं कि वर्तमान वर्ष में महादुर्भिक्ष है इस ठाकुर ने अपनी प्रजा का पालन करने के लिए 'भ्रातृ-भवन' नामक भवन का निर्माण करवाया। जिससे गरीब मजदूरों को मजदूरी मिल जाने से उनको वतन छोड़ना नहीं पड़ा। इसके सिवाय दूसरे भी ऐसे बहुत से कार्य किये हैं। जैसे इस समय प्रजा पर अनुग्रह करके इस ठाकुर ने प्रजा की पालना की है वैसे पूर्व काल में भी इसने और इसके पिता स्वर्गवासी ठाकुर चैनसिंह ने सहस्रों मनुष्यों को, जो भूख से व्याकुल हो रहे थे, विपत्ति के समय अपनी प्रजा को सहायता प्रदान करके प्रजा का पालन किया था। उसका दिग्दर्शन कराया जाता है।

स्वर्गवासी ठाकुर चैनसिंह ने वि० सं० १९४८ में दुर्भिक्ष-पीड़ित प्रजा पर अनुकम्पा करके रु० २४१७) और वि० सं० १९५६ के महा-दुर्भिक्ष में रु. २००५) तथा वि. सं० १९७२ के दुर्भिक्ष में रु० ९४३०) कुल तेरह हजार आठ सौ बावन १३८५२) रुपये मुआफ किए।

और वर्तमान ठाकुर ने वि० सं० १९८२ में दुर्भिक्ष होने के कारण १९८३ में सात हजार चार सौ बीस ७४२०) रुपये, और इस साल में सात सहस्र चारसौ अठहत्तर ७४७८) कुल चौदह हजार आठसौ अठानवे १४८९८) रुपये मुआफ किए।

और वर्तमान वर्ष में उससे बढ़ कर यह परोपकारी कार्य किया गया कि गरीब अनाश्रय लोगों को धान्य देकर परवरिश की और स्थान

ड़कर बाहिर जाने वालों को मार्ग खर्च व निर्वाह के लिए रोक द्रव्य कर सहायता की गई। धन्य हैं ऐसे परोपकारी प्रजा-पालक ठाकुर, जो महाविपत्ति के समय अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन करते हैं।

ाता-भवन विषयक कविता ईंदोकली निवासी बारहट देवकरण कृत-

कवित्त

स्रेष्ट भ्राता--भौन तकसीमवार देख छटा,
काव्य कला रचन बिचार बढ्यो मन को।
यदि भीस्म आदि हिन्द हिस्से इसी तौर कर,
कबजा कराय देते बस काबिजन को।
भारतीय बीरों का अकथ न होता हाल,
पांव गहते न अन्य त्याग निज पन को।
बढ़ता न द्वेस किसी वेस में बिसाल रूप,
पांडवादि वेस प्राप्त होते ना पतन को ॥१॥

प्रजा जन पोखन को आरंभ रच्यो है भौन,
लहेंगे सपष्ट भेद मारवारी लेख में।
पारटी मजूर हू की बचाई अकाल पीड़ा,
कान मेरे फता धन्य सुना स्थानानेक में।
पटे में रु पुर में रु पूञ्ज ताळ पंचन को,
दरियाफत करी मैंने काव्य के रचन में।
भ्राता--भौन बारबार तेरी बलिहारी हमें,
प्रजा की असीस भरी पत्थर प्रत्येक में ॥२॥

मई सन् १६३५ में वादशाह सम्राट् पंचमजार्ज के शासन करते हुए २५ वर्ष सानंद व्यतीत होने की खुशी में रजत-जयन्ती Silver Jubilee मनाई गई, उस महोत्सव के निमित्त समस्त देशों में चन्दा किया गया उस में इन ठाकुर ने ठिकाने की तरफ से रु० २५०) दिए। और अपने पटे से भी पर्याप्त द्रव्य एकत्र करके चंदे में भेजा गया। रजत-जयन्ती का जलसा जोधपुर में तारीख ६ मई को श्री महाराजा साहिब बहादुर की अध्यक्षता में हुआ, जहां गण्य-मान्य सरदारों, और स्टेट ऑफीसरों को गवर्नमेंट की तरफ से रजत-जयन्ती पदक वितीर्ण किए गए। उस अवसर पर इन ठाकुर को भी श्री दरबार साहिबों ने अपने कर कमलों से प्रस्तुत पदक से विभूषित किया। जिसकी सनद पाठकों के अवलोकनार्थ इसके साथ दी जाती है।

तारीख २६ जनवरी सन् १६४० तदनुसार माघ वदि ५ वि० सं० १६६६ को इनके प्रथम पुत्र देवीसिंहजी का संबंध (सगाई) रियासत दांता भवानगढ़ के अधिपति हिज़ हाईनेस महाराजा साहिब श्री भवानीसिंहजी साहिब बहादुर K. C. S. I. की चतुर्थ कुमारी श्री कृष्णकुमारी से, और द्वितीय पुत्र भवानीसिंहजी और तृतीय पुत्र सज्जनसिंहजी की सगाई क्रमशः मारवाड़ देशान्तर्गत जाखण ठिकाने के ठाकुर धनेसिंहजी की भगिनी, हरनाथसिंहजी की पुत्री श्री जतनकंवर से और ठाकुर धनेसिंहजी की चचाजात भगिनी गुमानसिंहजी की पुत्री श्री सिरेकंवरी से सानंद सम्पन्न हुआ। जाखण की दोनों कुमारियें श्री दरबार साहिब दांता के मामा की बेटियां होने से बहिनें हैं। जिससे इनके टीके का दस्तूर भी रियासत दांता की तरफ से ही आसोप आया। सगाई का दस्तूर लेकर दांता से महाराजा साहिब के चचेरे भाई महाराज श्री पृथ्वीसिंहजी, जो रियासत में दीवान का कार्य करते हैं अन्य स्टेट ऑफीसरों व सरदारों के साथ ता० २ जनवरी को आसोप आए।

VICEREGAL LODGE, SIMLA

By Command

of

HIS MAJESTY THE KING-EMPEROR

the accompanying Medal is forwarded

to

Thakur Fateh Singh

to be worn in commemoration of

Their Majesties' Silver Jubilee

6th May, 1935

आसोप में इनको 'भ्राता-भवन' (दोनों छोटे कुमारों के मकान) में ठहराया गया। इस अवसर पर समग्र आसोप नगर वन्दनवारों और शिक्षाप्रद श्लोकों से सजाया गया। ठाकुर साहब ने दिल खोल कर इनाम व खैरात वितीर्ण की और बड़ी खुशी मनाई गई। इस अवसर पर निम्न लिखित गण्य मान्य सरदार आसोप पधारे।

१. दीवान बहादुर ठाकुर माधोसिंहजी शंखवास होममिनिस्टर गवर्नमेंट ऑफ जोधपुर।
२. राव बहादुर ठाकुर जयसिंहजी उम्मेदनगर।
३. ठाकुर मुकनसिंहजी चाणोद।
४. ठाकुर आईदानसिंहजी पाल।
५. ठाकुर शेरसिंहजी बलूंदा।
६. ठाकुर कीरतसिंहजी बगरू (जयपुर)
७. रावत हीरसिंहजी बांमी (मेवाड़)
८. ठाकुर भैरूंसिंहजी खेजड़ला।
९. ,, कालूसिंहजी साथीण।
१०. ,, देवीसिंहजी मूंदियाड़।
११. ,, हुकमसिंहजी रामपुरा।
१२. ,, तेजसिंहजी गजसिंघपुरा।
१३. ,, हणवंतसिंहजी बासणी हरिसिंहजी।
१४. कँवर चिमनसिंहजी चाणोद।
१५. ,, उम्मेदसिंहजी चांदेलाव D S P नागोर।
१६. ,, अभयसिंहजी कंटालिया।
१७. ,, भवानीसिंहजी बलूंदा।
१८. ,, दौलतसिंहजी बलूंदा।
१९. ,, गुमानसिंहजी रावटी।
२०. ठाकुर जसवंतसिंहजी धणला।
२१. ,, किशनसिंहजी श्यामगढ़।

२१. ठाकुर पृथ्वीसिंहजी श्यामगढ़ ।
२३. कँवर रामसिंहजी गजसिंघपुरा ।
२४. ,, ...सिरियारी
२५. ,, कानसिंहजी वासणी ।
२६. ,, हिंदूसिंहजी वासणी ।
२७. ठाकुर भींवसिंहजी गारामणी ।
२८. ,, उमरावसिंहजी नाडसर ।
२९. ,, हिन्दूसिंहजी ,,
३०. ,, हिम्मतसिंहजी ओस्तरां ।
३१. ,, किशोरसिंहजी साणा ।
३२. ,, बहादुरसिंहजी छापले ।
३३. कँवर सुलतानसिंहजी पालड़ी राणावतां ।

तारीख २६ को दांता के मिहमान आला-भवन से जलूस के साथ रवाना होकर आसोप गढ़ में आए, जहां गढ़ के दूसरे चौक में उपरि लिखित सरदारों ने उनका स्वागत किया, तदन्तर तीनों कँवर साहबान के वहां बुलाये जाने पर प्रथम कँवर देवीसिंहजी

(१)—रियासत दांता के अधिपति अग्निवंशी परमार हैं। यह रियासत गुजरात की उत्तरी सरहद पर और राजपूताना के दक्षिण में स्थित है। रियासत की कुल लम्बाई उत्तर दक्षिण २२ मील और चौड़ाई पूर्व पश्चिम २० मील है। इसको 'नैनी मारवाड़' भी कहते हैं। यहां के अधिपति महाराना कहलाए जाते हैं। इनको गवर्नमेंट से ९ तोपों की सलामी है। वर्तमान महाराना साहब श्रीभवानीसिंहजी साहब बहादुर K. C. S. I. हैं। ये नरेन्द्र मंडल के मेम्बर भी हैं। शहर दांता B. B. & C. I. रेलवे के आबू रोड स्टेशन से २४ मील के अन्तर पर है। यहां का नजदीकी रेलवे स्टेशन मारवाड़ से जाने वालों के लिये आबू रोड और अहमदाबाद से जाने वालों के लिये महेसाना होते हुए तरंगा हिल है। इन स्टेशनों से दांते तक मोटर सर्विस चलती है। दांता से १२ मील के फासले पर भवानगढ़ एक दूसरा शहर है, जहां श्री माताजी अंबाजी का एक विशाल भव्य दर्शनीय मंदिर है, जहां दूर दूर के लोग हर साल दर्शनों के वास्ते आते हैं।
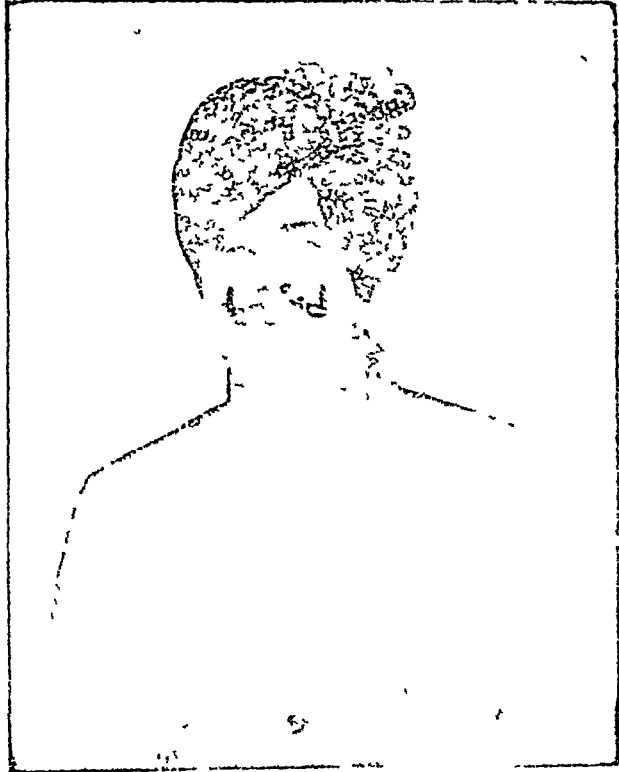
हिज हाइनेस दी महाराजा ऑफ दांता ।
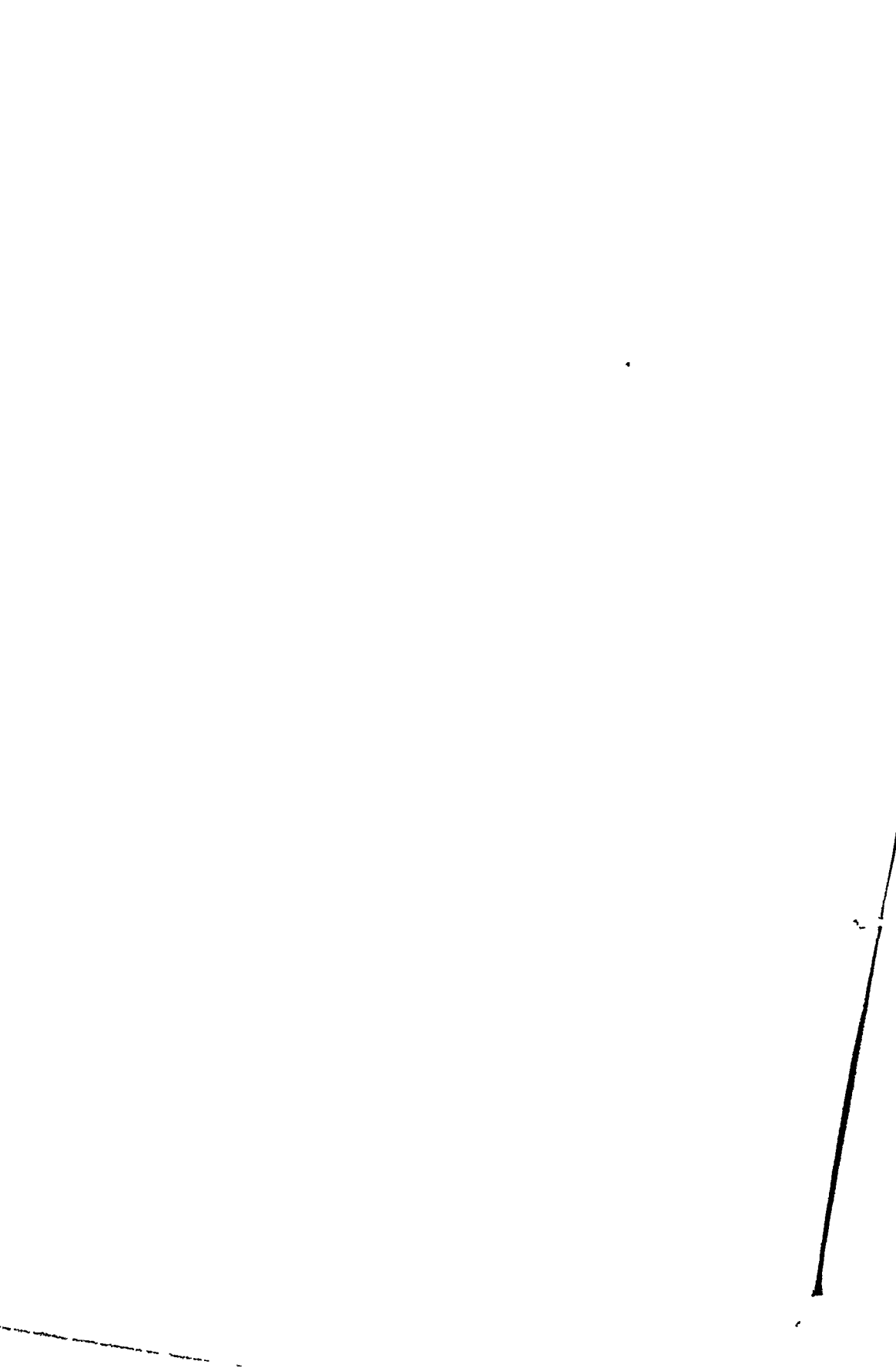
के टीके का दस्तूर महाराज श्री पृथ्वीसिंहजी के हाथ से और द्वितीय कँवर भवानीसिंहजी और तृतीय कँवर सज्जनसिंहजी के टीके का दस्तूर क्रमशः हरनाथसिंहजी और गुमानसिंहजी के हाथ से हुआ।

तीन दिन ठहर कर दांता के मिहमान ता० ३०-१-४० को मोटरों से वापिस दांता को रवाना हो गए। मार्ग में एक दिन वे जोधपुर आसोप के बंगले में ठहरे, जहां वे आते हुए भी ठहरे थे। वहां पर भी ठिकाने से उनकी सरवरा का इन्तजाम किया गया।

इस उत्सव में खास बात जो देखी गई और जो पूर्ण प्रशंसा के योग्य थी, वह यह कि ठाकुर साहब आसोप ने अपने कँवरों की सगाई में एक पैसा भी रोकड़ के रूप में नहीं लिया, जैसा कि आज कल के राजपूतों व सरदारों व रईसों में खास कर ऐसे अवसर पर लिया जाता है। और जिससे कई अनर्थ भी होते दिखाई देते हैं। यहां तक कि कई लोग तो इस प्रथा के डर से लड़की का जन्म होते ही उसे मार डालते हैं। इस प्रशंसनीय कार्य के लिए उपस्थित सरदारों ने व जनता ने ठाकुर साहब को अपनी हार्दिक बधाइयां दीं। निःसन्देह ऐसे निर्लोभी और दूरदर्शी सरदार धन्य हैं, जो विष मिश्रित भोजन के समान सत्यानाशी प्रथा को तिलांजली देकर अपनी जाति के और जनता के सामने एक आदर्श उपस्थित करते हैं।

इस अवसर पर कवियों ने जो कविता की वह नीचे दी जाती हैः-

ईदोकली निवासी बारहट देवकरण कृत टीका विषयकः

दोहा

उभय दूंण पख ऊजळा, दिल में नहीं दगाह।
कुळ राठौड़ पँवार कुळ, सो प्राचीन सगाह॥ १॥

कवित्त

प्रसिद्ध पवित्र महा वंस राष्ट्रवर हूको.

राष्ट्रीय आफतों में रक्षक रहायो है ।
हज़ारन संख्या वीर वीराङ्गना देस हित,
बलिदान होके निज गरब बढ़ायो है ।
नाहि वंस कूंपा कान्ह वीर माहेम जैसे,
दीरघायु देवीसिंह योग दरसायो है ।
धन्य माता पिता देस दांता कुमारी धन्य,
ऐसो घर पायो देवी ऐसो बर पायो है ॥१॥

सिऊ निवासी सांदू बिशनदान कृत

गीत

सुभ सजिया कारज मनोरथ सारा. ऊंचा सगा समंधां ओप ।
आछा फता संभायां ऊभो, ऊपरला बिरदां आसोप ॥ १ ॥
जण जण कीत करे जग जांणे, सुण सुण सैंण सजन सरसाव ।
दिन दिन बात सिरे दरसांणे, आसांणे धिन धिन अमराव ॥२॥
अनुभवी कमधज वंस उजागर, बुध रा सागर कवि जसवंत ।
आठूं मिसल प्रभाकर ओटा, सुरधर जस मोटा सांवंत ॥ ३ ॥
चित सत चाव सिखर जस चढ़ियो, शक्तीवंतां सुघड़ सुभाव ।
ऊँचा भाव सरावे अवा. रँग चढ़ता कूंपा महाराव ॥ ४ ॥
जागो सुजस फता जग जांण, उरमें नहीं ठागो उद्देस ।
आयां धन पूरब रहे आगो, लालच नहीं लागो लवलेस ॥५॥
दिपत सुयोग सम्बन्धी दांता, प्रथवी भारत पति परमार ।
परदुख हरण विक्रम रा पोता. सरणाई बिरदां साधार ॥ ६ ॥

परमारथी प्रजा प्रिय भूपत, स्वारथ सुख त्यागी संसार ।
आरत दुख हरणां कहे यांनें, देस तणां धूना सिरदार ॥७॥

राजस रीत रखण महाराणां, धार उजीण तणां आधार ।
आबू त्याग अंब आराधै, बुरी समझ कलजुग री बार ॥८॥

तापस धर्म राज ऋषि त्यागी, अनुरागी शक्ती आधार ।
माने धरम भरत विक्रम रो, द्रढ जगदेव जिसा दातार ॥९॥

विद्यावांन भोज रा बंसज, बधती शक्ति इष्ट त्रिरदाल ।
प्रबल सलाम घुरे नव तोपां, भारत मुकटां मिण भोपाल ॥१०॥

मब भारत मांने इक सारा, बारां समत विक्रम वहै वार ।
परदुख हरण धिनो परमारां, राख्यो धरम आप आधार ॥११॥

हिज़ हाइनेस महाराणां हेतु, श्रीमन नाम भवानीसिंघ ।
के. सी एस. आई. पद कायम, पति दांते परमार प्रसंग ॥१२॥

छबि संमत उगणीसो छिन्नूं, बरते मंगल विक्रम री वार ।
माह बद पांचम सोम महूरत, सुभ टीका झिलिया सुख सार ।१३।

दियै आसोप छबी दरसायां, महा मगल थाया पुर मांय ।
आनंद उछाव समय सुभ आया, छाया रंग पताकां छांय ॥१४॥

पिया अमल समंध द्रढ पूरण, मिलिया हिया सगां मन मेल ।
दिया दसतूर घोड़ा दांतारे.नजर किया सुवरण नारेल ॥१५॥

देवीसिंघ कँवर वर देवी, आदर घणै मन उमंग उछाव ।
राज कँवरी कृष्णा दांतारी. सुभ सगपण सँधियो नद साव ।१६।

रावळोत जाखण पति राजे, सगपण कियो भवानीसिंघ ।
मजन नमँध गुमान सुतासूं, सँधिया तीनों कँवर प्रसंग ॥ १७ ॥
रूपाळा राजस रतिवाळा, सुरताळा सोभा सरसांण ।
कुळ दीपक कँवर किरणांळा, मोह्यो विरदाळा महारांण ॥१८॥
हित दरियाव सजन हरपाणां, मँडिया मन सिगरथ महारांण ।
रंग वूठो राजस कुळ रीतां, वर कँवरयां जोगा बाखांण ॥१६॥
महा क्रीत कमधज कुळ मांडण, जुड़ियो सगां समंधी जोड़ ।
पख दीपत परमार प्रतापी, रण वंका कूंपा राठौड़ ॥ २० ॥
लागा सुजस विरद धिन लेवण, बेवण वँस बाटां महा बीर ।
दोनूं कुळ मरजादां देखे, सगती पूजक सगा सधीर ॥ २१ ॥
दोनूं सगा वंस दीपावे, फतै भवानीसिंघ चौफेर ।
लागा रतन विणज जस लेवण, मिळ हीमालय मिळ गिर मेर॥२२॥
दिपे आसोप दिपै पुर दांतो, राव वहादुर अरु महारांण ।
विरदां रा भारा कवि वांध्या, बिसनां रा गीतां बाखांण ॥२३॥
विबुधां ग्रंथ सुजस वाखांण्या, काळीदास करण कर क्रीत ।
राठोड़ां धिन धिन परमारां, संसकिरत डिंगळ साहीत ॥२४॥
दीर्घायुस करजे जगदम्बा, सगती सुख सातूं सरसांण ।
दे आसीस सुण्यो ज्यां दीठा, मंगळ सुख मीठा मुसकांण ॥२५॥

भदोरा निवासी सांदू सादूलदान कृतः—

दोहा

माघ वदी मन मोहणीः आ पांचम सुभ आज ।

प्रथम कुँवर देवीसिंहजी आसोप ।

हरस सगां आ होवणी; किया मात सिध काज ॥ १ ॥
मिणधारी फतमाल रे; कँवर तीन बड क्रीत ।
भई सगायां सुभ घड़ी; रिधू पुरातन रीत ॥ २ ॥
सरब जँवाई बंधु सब; आछी ममय अनोप ।
मिणधारी फतमाल रे; आया सुभ आसोप ॥ ३ ॥
पत कूंपा पंवार पत; व्हाला सगा बिसेस ।
इत फत्तो भानेस उत; दोनुँ हि बंस दिनेस ॥ ४ ॥
पंवांरा जस जग प्रगट; राजै इत राठौड़ ।
सगाचार बधियो सरस; ठावा ठावी ठौड़ ॥ ५ ॥

गीत

गाढा हेत सूं फतेस ओ विसेस महम्माय गाई,
आईनाथ क्रपाहूंता दिपावे उछाह ।
देव भानो सजनो सपूत पुत्र भला दीना,
लाल तीनां सगायां खुसीरा लेवां लाह ॥ १ ॥
पँवारां बंस रा माझी हमेसा देस रा प्यारा,
दांता पती धिनो थारा बिरदां दिपाव ।
जोग राज दुलारा दुलार्‍यां काज भला जोया,
भलां पति पँवांरां समधां ऊँचा भाव ॥ २ ॥
छत्रधारी महाराणां प्रभत्ता प्रथम्मी छाई,
उन्नति बढाई तें चढाई बंस आब ।
हिज हाईनेस भानां बीरता हमेसा थाई,

के. सी. एस. आई. ऊँचा ओपता खिताब ॥ ३ ॥
छकां मोद सगायां व्यायां रे पूरा प्रेम छाया,
पँवारां राठोड़ां रे द्रढाया गाढा प्यार ।
सगाचार आचार सनेहां घणां सरसाया,
प्रथीनाथ फते चाया व्यायां नें अपार ॥ ४ ॥
कीरती गाहक फतो अनेकां कविंद कैवै,
सेवा हरा तनैं देवै ईढरा स्याबास ।
कान्ह दूजा धिनो सारा काम रा सुधारू कृपा.
जोवां जठी आछा इन्तजाम रा उजास ॥ ५ ॥
होवे साचा होकचा हंगामा ठौड ठौड़ होवै,
धुरे बेंड तोपखाना नौबतां धुराव ।
सहनायां सुसादां बाजा आवाजां सोहणी सोवै,
सोहणी अमोल वेला चैन रा सुजाव ॥ ६ ॥
लाल तीनूं चिरंजी बुढापे फतो लाभ लेसी.
चैन हरां कवि कैसी सबूतां चढाव ।
हंगामा सगायां व्यावां मंगला प्रकास हैसी.
दंसणा कवाली देसी खुसी रा दिखाव ॥ ७ ॥

सिन्ढ-निवासी सांदू कृपाराम कृतः—

दोहा

कीरत चारूं कोण में. फैल रही फतमाल ।
सुभ-चिन्तक कवियां सदा. वधो चौगुणो भाल ॥१॥

द्वितीय कुँवर भवानीसिंहजी आसोप ।

कवित्त

दीनन के दास बीर दुष्ट कों दलनहार,
विक्रम दधीची ज्योंही नाम जग कीनो तैं।
सत्र में सुजान अरु बलप्रद क्षत्री गुन,
रघुकुल रीत भुजां भार धार लीनो तैं॥
भान प्रकास भयां तिमिर भगि जात दूर,
त्योंही छत्र छाया छाय छिति दुख छीनो तैं।
कलिकाल क्रूर ये कठोर घन घोर जामें,
भारी भू फतैसिंघ सुजस भर दीनो तैं॥१॥
सफल हुवो है श्रम आज ही हमारे ऐहो,
कुँवर संबंध देख हियो हरषावे है।
गात हैं गवैये गांन बांन उच्च तांन हू से.
बार बार ताल पर फते को रिझावे हैं॥
इन्द्र के समांन सभा सोहत सधीरी सब.
देखि देखि देव व्योम पुष्प बरसावे हैं।
बाज रहे बैंड बाजे मानों घन गाज रहे.
साज रहे केते काव्य कैयक सुनावे हैं॥२॥

मथाणिया निवासी बारहठ प्रभुदान कृत—

सोरठा

सुध मन सूं साजेह, सेवा श्री करनी सदा।
रूप भड़ां राजेह. रजपूती फतमाल रै॥१॥

दे धिन मारो देस; धिन मुरधर दाखै धणी ।
वर कीरत ऋहुँ वेस; फाबै रजपूती फता ॥२॥
केता नाम करेह; वेस ज्योंही रँग बदल नैं ।
भलपण अंग भरेह; ऋहूं वेस धिन धिन फता ॥३॥
हल गोजां मन इंद; हुवे रंग नित होकबा ।
कीरत धजा कमंध; फरकै धिन चहुँ दिस फता ॥४॥
होय भगे वेहाल; जका समँद पर जावती ।
फेरा ले फतमाल, कीरत अपणाई कमँध ॥ ५ ॥

दोहा

सन उगणी छिन्नूं सँमत; माघ पंच बद मास ।
उच्छव रंग आसोप में; पुत्रां सँबँध प्रकास ॥ १ ॥

गीत

ओप आगांण उछाह्रां राज वंम री जीमणी ओल.
मोहै घणां भड़ां थाट खुसी रो सरूप ।
गहादेव नेत्र लाल सगायां उच्छव मांड.
भारी इन्द्र छवी ज्यूं हगांम कृपा भूप ॥ १ ॥
दांत पति कनक्ां नारेल 'देव' हाथ देवे,
तोणां निधी अंक पातसाह रो ताजीम ।
मपृतां ताजीम नंद चैन रा उजास बस,
माजी राज हाथां जोगापणै पहली सीम ॥ २ ॥
लघु पुत्र दहूं पाट जैसांण रे भ्रात लघु,
जाखण सुथांन करै सँवधां सुजोड़ ।
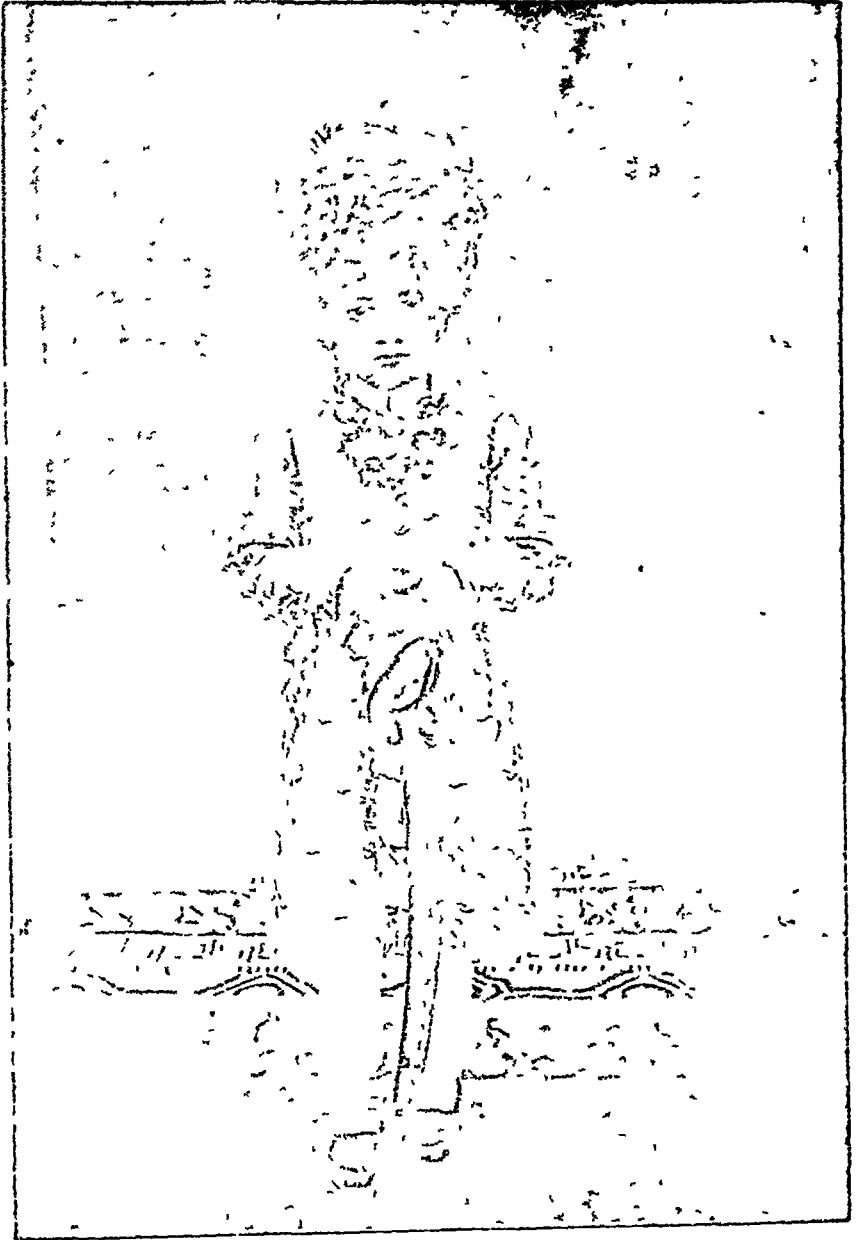
तृतीय कुँवर सजनसिंहजी आसोप।

दी प्रसंगी संगी हेत रा समंद इला,
रूप खांपां दोनूं छाजै अगंजी राठौड़ ॥ ३ ॥
गरै चौगुणो भाग मात देसणोक वाली,
देव भांन सजन निरोग सारा देह ।
हे प्रभुदान मांन ज्यांन में अखंड कीत,
थावो सातूं सुखां फता चैन वाली थेह ॥ ४ ॥

भदोरा निवासी सांदू हेमदान कृत—

दोहा

सुरसत गणपत सांपरत; आपहु बुद्धी आय ।
त्रहूं सगायां जस तऊं; सुभ अक्षर समपाय ॥१॥
सुपह फतारा त्रहुं सुतन; हरष सगायां होत ।
भ्रात जवांई मित्र भल; दिये सरब देसोत ॥२॥
हरक सगायां होकबा; भला करे बँस भांण ।
मुरधर भड़ भेला मुदै; आय हुआ आसांण ॥ ३ ॥
सँमँध करण दांते सुपह; भड़ भेज्या बँस भांण ।
पीथल हित भ्राता प्रगट; दिये मित्र दीवांण ॥१॥
हरक हूंत दिल हुलसियो; करण सगो कूंपांण ।
दांता सूं दसतूर ले; आया गढ आसांण ॥ २ ॥
दुहिता नृप दांता तणी; कँवर देव कूंपांण ।
हुवण सँबँध दहुँधां हरक; वरणै सकव वपांण ॥३॥
करी सगायां कोड सूं मामा तनया मांन ।

कूंपा रा द्वे लघु कँवर; भलो सजन अरु भांन ॥ ४ ॥
मकवि चम्मां संपेखियां; पारस कूंप पँवार ।
आमांणो दांतो अडर; धिन वेह छत्र धार ॥ ५ ॥

गीत

माचो दिन आज उच्छव सरसायो,
भल आणँद छायो बँस भांण ।
चैना नंद तणो चित चाह्यो,
आयो सुभ टीको आसांण ॥ १ ॥
दांते पति भेज्या निज दिल सूं,
चित सूं नृप करतो अति चाव ।
हित सू रीझ अबे निज हातां,
अजसे अति सारा उमराव ॥ २ ॥
कँवरां बहूं मगायां कारण,
धारण चित्त बडम आधार ।
भांन भ्रात भेज्यौ वडभागी,
सगो करण कूंपो सिरदार ॥ ३ ॥
रिधि रँग राग होकवा राजे,
मझे सुरंगो इसो समाज ।
भइ किरतो हरियँद दोहुँ भ्राजे,
अति छाजे छत्र धर सह आज ॥४॥
भाई गनायत हुय सह भेला,
खत्रवट भुजां भैर गुण खांण ।

चंगा सुभट जँवांई चावां,
आछो दिन ऊगो आसांण ॥ ५ ॥

जालिवाड़ा-निवासी बारहठ अर्जुनदान कृतः—

सोरठा

इल पर माता आय, उगत दिरावो ईसरी ।
थिर घर उच्छव थाय, मुरधर कूंपां महपती ॥१॥
लगन महूरत लेख, प्रिय बीड़ी दसतूर पर ।
आया भ्रात अनेक, आसांणे घर आपरै ॥ २ ॥
पारस तीनू पूत, बड देवो तालाबिलँद ।
कीरत बधती कूंत, भड़ भानूं सज्जन भला ॥३॥
आया सगा आसांण, कँवरां टीका कारणे ।
भूप पँवांरां भांण, भल जस लेवण भानसी ॥ ४ ॥
प्रथमी तणां पँवांर, आद घरांणो आपरो ।
जस लेवण जोधार, धिन भेज्या दांते धणी ॥५॥

दोहा

राजावत कुल राज में, जसवँत सुत घण जांण ।
बगरू किरतो बीरबर, भल ओपै बँस भांण ॥ १ ॥
तूं भड़ है तखतेस रो, मांझी सगतां मोड़ ।
बालो हरियँद बानसी, करो राज जुग कोड़ ॥ २ ॥
घणी बुद्ध थोड़ो घमँड, चित सुध आछी चाल ।
है भैरव कुल आभरण, निरखत हुवां निहाल ॥ ३ ॥

मेड़तियां पत मुकनसी, आयो घणे उमग ।
दिल उज्जल चाणोद पत, रंग मुकनसी रंग ॥ ४ ॥
आछो जादम ओोसियां, भाटी कुल रो भांण ।
वडभागी जैसिंघ जबर, आयो घर आसांण ॥ ५ ॥
होम मिनिस्टर हेत सूं, साचोरा सँखवाय ।
आय माधो आसोप में, छित में आनँद छाय ॥६॥
दम देसां जाहर दुनी, कीत वधारण कूंत ।
पारस चांदो पेखियो, मेरो सुभट सपूत ॥ ७ ॥
केहर हर कलबच्छ सो, थिर जाहर सुभ थांन ।
आमांणे घण उमँग सूं, आयो आईदांन ॥ ८ ॥
कँवर अभो कंटालिये, साचे दिल सुदतार ।
की वखांण थारा करां, है जस खाटण हार ॥ ६ ॥
धिन धिन है माधीण धिन, धिन धिन कालूधीस ।
धिनो वधावण मोह धिन, आखां धिन धिन ईस ॥१०॥
मोती सुत मन ऊजलो, सिरे सपूती वेस ।
रामपुरो जाहर रसा, है आछो हुकमेस ॥ ११ ॥
नीखो भड़ है तजमी. है सुध मन हणवंत ।
भल इकरंगो भीमसी. कूंपां कीत करंत ॥ १२ ॥
भड़ सगायां सुभ घड़ी. आनन्द हद आसांण ।
भारी हरप भवाद पत. करे कोड किलियांण ॥ १३ ॥
आछो दिन आसोप में, वधते हरक विसेस ।
महामोद मुँदियाड़ पत. दिल उज्जल देवेस ॥ १४ ॥

कँवर पधारे कोड सूं; चित उज्जल चाणोद ।
आया सुभ आसोप में; मन में थाया मोद ॥ १५ ॥

छप्पय

गहरां गुणां गुमान राज कँवरां छिब राजे,
चित सुध चांदेळाव कँवर कीरत बड छाजे ।
भलो भवानीसिंह दिये दौलत बरदाई,
सेर सुतन बड सेर गुणी कीरत सत गाई ।
सुभ घड़ी सगायां त्रहुँ सुतन धिनो फता छत्रधारनैं,
आविया कँवर आसोप अै खास खुसी रे कारने ॥१॥
मेड़तियां कुळ मोड़ किसन कीरत बड छाजे,
प्यारो पृथ्वीसिंह स्यांमगढ स्यांम सुराजे ।
धणले जसवन्त धिनो बडां सूं प्यार बंधाया,
आनन्द हित अणपार आप आसांणे आया ।
सगायां कँवर त्रहुँ दिवस सुभ छित पर आनँद छाविया,
मन मोद सहित फतमालरे सगा बंधु सब आविया ॥२॥

सोरठा

इतरा बंधव आय; मिळिया थांसूं मेसहर ।
थेट्र घर बिध थाय; चंगा मुरधर चांनणा ॥ १ ॥

कंवर साहब देवीसिंहजी की योग्यता के विषय में ईन्दोकली निवासी बारहठ देवकरण कृतः—

कवित्त

मेरे प्रिय स्वामी सरदार मारवार हूके,
पुत्रन पढ़ाते अति लाडन लडाते ना।
लेके उच्च शिक्षा देवीसिंह के समान होते,
महपाठी प्यारे बन जनता सताते ना।
करते नहीं हस्ताक्षेप उदकी इनामी पर,
गादी संस्थापकों का गौरव गमाते ना।
श्री उमेद न्याय पाथ बान के प्रहार हूतें,
जेद्रथ के सीस रूप जुड़ीशल जाते ना॥ १॥

गीत (वेलियो)

कवि 'देवे' भविष्य वाणि में कहियो,
सुभट फता रो पूत सपूत।
ईहगां कह्या निवड़ता आया,
पारख किया जिसा रजपूत॥ १॥
देवे वर्ष त्रयोदस में हिज,
क्लास सातवीं पास करी।
सारो भेद सिकार सिखायो,
ओझक धड़का खाय अरी॥ २॥
बोल चाल अरु ऊठ बेठ में,
कमँध फता धिन पास कियो।

पूरण पारख आप परायो,
हरके दीठां घणों हियो ॥ ३ ॥
हुवो बोध काफी इतिहासिक,
प्रेम प्रजा में जांण पड़ी ।
सबक याद राखे दिन सारो,
घट सूं दूर न करै घड़ी ॥ ४ ॥
दिल रो भाव पिछांणे देवो,
पिता स्नेह राखे वेपार ।
चैना हरो आपरा चरितां,
दाता खुस राखे दातार ॥ ५ ॥
भारी स्नेह रहेलो भायां,
आ पारख म्हे करी उरी ।
करै कपूत जिसी नहँ करसी,
छुट भायांरे गऴ छुरी ॥ ६ ॥
लक्षण पांच विद्यारथ लीधा,
घोड़े चढ भालां कर घाव ।
प्यारी लागे मेख पड़ाई,
डंडादिक खेले कई डाव ॥ ७ ॥
देख फता ब्रद आगूं कहदी,
उणरी हुई दिलजमी आज ।
'देवो' कहै राखजे 'देवा',
(म्हारा) ललितमुकट गीतरी लाज ॥ ८ ॥

मेख पड़ाई के विषय में,

गान आसावरी

वीर खेल मन भायो कवि रे, वीर खेल मन भायो ॥ टेर ॥
मान सहित कवि को फतमल ने, बेंच उपर बेठायो ।
महाप्रिय ज्येष्ट पुत्र फतमल को, अब खेलांगन आयो ॥१॥वीर
परिब्रह्म राम राम जयचंड भो, कूंपो चंड कहायो ।
कूंप महेस मेस जानी मैं, देवू नाम दिवायो ॥२॥वीर
दीठो पीठ पमँग देवा नैं, ऐसो द्रष्टी आयो ।
रांण प्रताप धर्म रो रक्षक,(ज्यों) चेटक पीठ चढायो ॥३॥वीर
जिन्द हनन पावू ने जाणों, काळवी संज फरमायो ।
वीरम देव समाध विराजे, ऐसो भाव उमाह्यो ॥४॥वीर
रूपहरी जंजीर राइडिंग, बगतर स्वांग बणायो ।
कमर रही घोड़ा नैं कूंपा, पाखर नहीं पहरायो ॥५॥बीर
निज अस झंप भरावे नामी, कमर टटी कूदायो ।
अवखो किलो आगरा वालो, कविने याद करायो ॥६॥वीर
मेख पड़ाई देख मनोहर, देव इसो दरसायो ।
मरहट्टा सिर बरछा मारे, जांण दला रो जायो ॥७॥बीर
मेख पड़ाई देख मनोहर, एक और थल आयो ।
मेनक बरछो मेर विलंद रो,(ज्यों)कान्हे नास करायो ॥८॥बीर
चारण भक्त पिता सम रहजो, धरती नाम धरायो ।
वीर भम पर हां बलिहारी, देवकर्ण पद गायो ॥९॥बीर खेल

कुँ० सा० जगतसिंहजी, झालामण्ड
(मारवाड)

इन ठाकुर के तीन कुमार और ६ कुमारियां हैं। पुत्रियों में से चार पुत्रियों के पाणिग्रहण का विवरण तो पहले लिखा जा चुका है। पांचवीं पुत्री स्वरूपकुमारी का संबंध ठाकुर ने वि० सं० १९८६ की वैशाख बदि ५ तदनुसार ता० १८ अप्रेल सन् १९३० को मारवाड़ देशान्तर्गत राणावतों के ठिकाने झालामंड के ठाकुर विजयसिंह जी के प्रथम पुत्र जगत्सिंह जी से किया[1] है।

वर्तमान समय में जो विश्व-व्यापी युद्ध योरोपीय देशों में जारी है उसके लिए सर्वत्र 'वार-फंड' कायम किया जाकर चंदा इकट्ठा हो रहा है। इसी सिलसिले में नीचे लिखे हुए महानुभावों का एक डेपुटेशन वर्तमान ठाकुर साहब के पास ता० २० जनवरी सन् १९४० को जोधपुर में आसोप के बंगले पर आया और चंदे का सवाल करने पर इन ठाकुर साहब ने बड़ी खुशी के साथ रु० १५००) वार-फंड में बतोर चंदे के दिए और ज़बानी जाहिर किया कि इसके अलावे मैं मेरे मालिक श्री दरबार साहिबों की मारफत गवर्नमेंट की तन मन से सेवा करने को तैयार हूं।

---

(१) ठिकाना झालामंड के अधिपति उदयपुर (मेवाड़) राज-घराने के भाइयों में से हैं। झालामंड जोधपुर से दक्षिण करीब ६ मील के अंतर पर है। यहां का सबसे समीपी रेलवे स्टेशन खास जोधपुर ही है। यह ठिकाना जोधपुर के संबंधियों में से है। जोधपुर दरबार महाराज तखतसिंहजी ने यहां के ठाकुर गंभीरसिंहजी की भगिनी का पाणिग्रहण किया था। इन ठाकुर के पुरखा को महाराजा साहब अभयसिंहजी अहमदावाद की लड़ाई से वापिस आते हुए अपने साथ लाए थे। अहमदावाद की लड़ाई में उक्त ठाकुर ने बड़ी वीरता दिखाई थी जिससे प्रसन्न होकर महाराजा ने जोधपुर आते ही यह ठिकाना इनायत किया। वर्तमान ठाकुर विजयसिंहजी बड़े योग्य व्यक्ति हैं। वर्तमान समय में यह सरदार इन्सपेक्टिंग के पद पर नियत हैं। श्रीदरबार की इन पर पूर्ण कृपा है। इनके प्रथम पुत्र जगत्सिंह जी इस समय देश विख्यात मयोकालेज अजमेर की चौथी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यह बड़े होनहार बालक हैं।

डेपुटेशन के महानुभावः—

१. श्रीमती कारमन फील्ड (धर्मपत्नी D. m. Field चीफ मिनिस्टर गवर्नमेंट जोधपुर) प्रेजिडेंट वारफंड जोधपुर.

२. ठाकुर साहब हरिसिंहजी ठिकाना कुचामण, मेम्बर.

३. साह गोरधनलाल जी कुचामण निवासी, मेम्बर.

तारीख ६ फरवरी १६४० को ऊपर लिखी हुई रकम रु० १५००) जमा करने पर जो धन्यवाद पत्र प्रेजीडेंट वारफंड श्रीमती कारमन फील्ड का आया उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता हैः—

JODHPUR.
7 th February. 1940.

Dear Thakur Sahib,

I acknowledge with my greatful thanks the receipt of your cheque for Rs. 1500/-, representing your generous donation to His Execellency the Viceroy's War purposes Fund As you probably have heard a ⅓ of this Fund will be devoted to our local Famine relief. I think it is most kind of you and patriotic to have given this money, and you may rest assured that later on a full list of the principal donars will be published for the in formation of the general public, and a vote of thanks from the committie for your cooperation.

With renewed thanks.
Yours Sincerely,
Sd/ Carmen FIELD

ता० १५-७-४० को जोधपुर गवर्नमेंट गजट में श्री. महारानी साहिबा जोधपुर की तरफ से एक अपील प्रकाशित होने पर कि लड़ाई में, जो कि वर्तमान समय में योरोपीय देशों में जारी है, घायल हुए बहादुरों को सहूलियत से इलाज के लिए स्वदेश लाने (ह्राटंग एम्बूलेंस का इन्तजाम करने) को हर एक व्यक्ति

का कर्तव्य है कि वह इस शुभ कार्य में सहायता करै, इन ठाकुर ने रु०) बतौर चंदे के दिए।

यह ठिकाना फर्स्ट क्लास जुडिशल के अख्तियारात इस्तेमाल करता है। ठिकाने में जुडिशल वो पुलिस का काम बाक़ायदा रियासत के कायदों के मुताबिक होता है।

ठाकुर की परोपकारिता, प्रजावत्सलता और प्रबन्ध-कारिता को देखते कहना पड़ता है कि यदि कोई ठाकुर इस ठाकुर के आचरण का अनुसरण करेगा वह जगत् में कीर्ति का पात्र और सदा सुखी रहेगा। बलिहारी है इस ठाकुर की कि इसने अपने हाथ से पट्टाधिकारी और छुट-भाइयों के कलह को निर्मूल कर दिया।

इस ठाकुर की बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, नीतिनिपुणता व प्रजावत्सलता इसके चरित्रों से स्वयं व्यक्त है। इसने अपना नाम चिरस्थायी रहने के लिए बहुत सी इमारतें बनाई हैं। दूसरा साधन यह किया है कि "फतैविनोद" नामक पुस्तक की रचना करके, जिसके पढ़ने में अन्य लोगों को बड़ा लाभ है, नाम को चिरस्थायी कर दिया है।

इन ठाकुर की योग्यता के विषय में कुछ कविता जो फिर उपलब्ध हुई है वह नीचे दी जाती है--

पांचेटिया निवासी शंकरदान कृत

-:दोहा:-

जता-कुछत्री दीठ जग; अधम मता आचार।
मारू रजवट सुध मता; रंग फता रिझवार ॥ १ ॥

पांचेटिया निवासी आढा जवारदान कृत:-

सोरठा:--

कागद लिख कुसलात; पूछे तूँहिज पातवां।
है कूंपा तो हात; सकव्यां ईजत चैन सुत ॥ १ ॥

थार फता गह थांह: वरदायक विखमी वखत ।
छत्रधारी छत्र छांह: चैन सुतन रख चारणां ॥ २ ॥
पिन लज्या पाजीह: की समझे माठा कुदत ।
रहवे थूं गाजीह: सुणियो जस चैना सुतन ॥ ३ ॥
सुख संपत साजीह: फता रहे चहुँ दिस फतै ।
रघुवर रहे राजीह: मकव्यां पर रहै चैन सुत ॥ ४ ॥
म्हैं करतव म्हारोह: कविता रो पालन कियो ।
थूं फतमल न्यारोह: धणियप रो राख्यो धरम ॥ ५ ॥

--:दोहा:--

धज-चंद इण धणियापरो: तिणरो हुवो न तोल ।
प्रथीनाथ कृपा पती:(म्हनें)मोल लियो विन मोल ॥ ६ ॥
वधो सुजस आयुस वधो: पुत्र वधो परिवार ।
प्रथीनाथ कृपा पती: (थांरो) वधतो दिन इण वार ॥ ७ ॥
प्रीछन पण पालोह. तें वरत्या कृपा तिलक ।
ओ सुभ दिन आलोह. वणियो राखो वीस हथ ॥ ८ ॥
थेट हो थारीह. सुभ निजरां मोपर सदा ।
कोरन कृपारीह. कहां साची अंजस करे ॥ ९ ॥
सत्रवां हिय विच साल. दुसहां सिर झाटां दिये ।
सिणधारी फतमाल. ओ कृपो आसोप में ॥ १० ॥
त्रगां उंवलण ग्याल, के असहां कीधा कदत ।
सिणधारी फतमाल. ओ कृपो आसोप में ॥ ११ ॥
नित उज्जल सुध चाल. अगली राखी आज दिन ।
सि[illegible]धारी फतमाल. ओ कृपो आसोप में ॥ १२ ॥

नर इण कीधा न्याल, केतां हि दारिद काटिया ।
मिणधारी फतमाल, अजरायल आसोप में ॥ १३ ॥
ढँग आछो कुळ ढाळ, ओ थाहर आसोप री ।
सीह घणां घर साल, सैण घणां रो चैन सुत ॥ १४ ॥
भले भलै उग्र भाळ, गाहक पाटोधर गुणां ।
माभी कुळ फतमाल, उग्रभागी आसोप में ॥ १५ ॥
मांझी सुद मतराह, तो में गुण कूंपां तिलक ।
जो देवां जितराह, फाबै गुण तो में फता ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

कूंपा हाथां भोज क्रन, सत्रवां हिय बित्र साल ।
आदू घरवट आपरी, मत भूले फतमाल ॥ १७ ॥

पंडित युगनीराम जी जोधपुर निवासी कृतः—

--:दोहाः--

मधुर बचन कोमळ हृदय; सदा चाल गंभीर ।
अति उदार निसकपट छळ; फतैसिंह रण धीर ॥ १ ॥
न्याय करत नित नीति युत; प्रतिपाळत कुळ रीत ।
दीन सहायक काछ द्रढ; फतैसिंह रण जीत ॥ २ ॥

भदोरा निवासी सांदू हेमदान कृत

:--गीतः--

इळा लेवणो सुजसां आथ दूथियां समापे आचां,
सूर चंद येते वाचां कीरती सहीप ।
धराधीश ज्यों ही धिनो आपरा हाथ सूं ध्रवे,
मांगणां अमोल चीजां ब्रवे तूं महीप ॥ १

सेवा हग कूंपां इंद सराहे मुनिंद सारा.
फंबे यों कमंध थारा दान रा प्रमाण ।
दाखे यों मुरिंद रीझां देण रो माहेस दूजो,
भाखे यों कविंद फता ताहरा बाखांण ॥ २ ॥
गावणो जुगादू रीत गिरे यों जोड़ रा सारां.
ईडगारां भड़ां आगे प्रभता अपार ।
जोर फली दधां पार जाहरां जाहांन जाणे,
अनेकां वखांणे थारा आद रा आचार ॥ ३ ॥
रणवां काटणो रोर आहंसी आसोप राजे,
वार गण ग्राजे कूंपो वधंते सुवेस ।
सराहे जोधांण स्यांम सेवा ज्यों सवाड़ा साजे.
दाता ज्यों अग्राजे फतो वंस रो दिनेश ॥ ४ ॥

झिलोड़ी निवासी सांदू सुमेरदान कृत

—गीत—

सवल भुजां अरज कवि सांभलो.
भड़ां सिर वीर खत्रवाट भारी ।
चारणां निभाऊ तूँही नर चैनरा,
ग्रेंव कुण मींढ भड़ ईढ थारी ॥१॥
गुणानां निभाऊ रुखाला मांसणां,
वीतियां विखम फतमाल वारू ।
कविन्दां कृपा कर रोग दुख काटणा,
मजादां वधाणां गव मारू ॥२ ॥

अमूंजी छींक नहीं कवी रै आसरो,
सिवा हर सुरज आ अरज साची ।
गोर कर दिलां धिन पैंड नित गाढरा,
ईहगां बेल़ धणियाप आछी ॥ ३ ॥
अटकतां जाज अथग जल़ ऊंडरे,
तार कर कूप किरतार तूंहीं ।
ताकवां पाल़ फतमाल तूंहीं तठे.
जठे हर बेल़ गजराज ज्यूं ही ॥४॥
रैणवां मेट दुख रहै जस राज रो,
सिरो सिरताज रो बीर स्वामी ।
उभे कर जोड़नैं सदा जस आपरो,
नरां नव कोट रा रूप नामी ॥ ५ ॥
धजावंध आदसूं गुणां चित धारणां,
लाज रा रुखाल़ा सुजस लीजे ।
नाथ आसोप रा निसंक नर नाहरां,
कोड़ जुग थाहरां राज कीजे ॥ ६ ॥

सँचाल़ निवासी खिड़िया चारण मुकनदान कृत

--:गीत:--

नचीतो भूप जोधांण भुजा डंड थारा निडर,
सदर धर ऊपरा मरद सूरा ।
उजागर आपरा बिरद कुल़ आभरण,
बरण खट सरण तव चरण भूरा ॥ १ ॥

आहड़ा जीत कुण जोड़ आवे अगट,
घरट गुण जोड़ थट सुजस गाणां ।
अगंजी हेक नवकोट आसोप इळ,
प्रबळ दळ मसल खळ अचळ पाणां ॥ २ ॥
थांवबे अधोगत कीत सिवनाथ हर,
महीपत मेहर कर भार मसके ।
पात प्रतिपाळ उजवाळ मम झूंपड़ा,
कूंपड़ा देख असमांण कसके ॥ ३ ॥
कमँध फतमाल कर निहाल भ्रम कारणां,
वारणां चैन सुत बन्द बांमी ।
ऊबरूं आपरा वचन दोय आखरां,
नरां पत ठाकरां सरण नामी ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

केते राजपूती को पयान पान देखें सुस्त,
केते हर्ष हेसित हजारन की हरगी ।
केते परनारिन के यारन प्रपंचन में,
वेंके रोग लागे राह हकीमन के घरकी ।
भनत मुकंद केते अमित अमीनन तें,
रोवें रोज हा हा मौज मटनी विखरगी ।
चैन सुत फत्ता रन रत्ता तूं दुहत्ता सेर,
नेगी मुध दत्ता खुनी मत्ता पाय परगी ॥ १ ॥
कर गुख कुसम काळ जाहर जितावत है,
डाक डफ देखें गान मोतिन की माळा हो ।

चित्रत बिचित्र चित्र काव्य पढ पंडितादि,
बिदित वदान्यता में उग्र शशि भाला हो।
भनत मुकंद दक्ष स्थंभन मरुस्थल के,
योधपुर राज रम्य रक्षक बिशाला हो।
चैन नृप लाला आप पात प्रत्तिपाला आप,
सूम उर साला आप ऐसे फतमाला हो ॥ २ ॥

ईंद्रोकली निवासी बारहठ देवकर्ण कृतः—

॥ गीत ॥

सकव करे बाखांण सरबेत कथ नह सकै,
महीपति गुणां रो पुंज मारू।
द्रोपदी चीर जिम बधे दिल देण दत,
बरण चारण तणो सदा वारू ॥ १ ॥
हेतवां सहायक सदा सिवनाथ हर,
अकल रो समंद बरताव आछो।
दूसरो परिक्षत प्रजा रे हित दखां,
सबद रो जुधिष्ठर जेम साचो ॥ २ ॥
करां सिवनाथ दत दियो बहु कविंदां,
हजारां ऊँठ दिया चैन हातां।
फेर उण रीत ही समापै द्रब फतो,
बीच धर रहै औ अमर वातां ॥ ३ ॥
बडेरां ज्युँही जस लियो बेहूं ब्याह में,
अधपती निभायो धरम आदी।

रवि ससी जितै फतसीह कायम रहो,
गिरीधर जिते रहो अमर गादी ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

दान फतेह दियोह. सूम जिका कथ सांभळै ।
हुय चळ विचळ हियोह. क्रपणां फाटै काळजो ॥१ ॥
बखत कळगी वीगड़ी. देखो वजह वजेह ।
गीत वडेरां राठवड़. ऊभो लियां अजेह ॥ २ ॥

—छन्द दुमला—

कलिराज महा विकराल कहा,
भुव पालन चाल भुलावत है,
सुत चैन हु को सुदतार फतो.
निज रीत अनादि निभावत है।
महिरागनन लोप चली महिमा,
गुनवान सबै गुन गावत हैं,
कुलवान फतो न्रप राज करो
रवनी जब लौं दरसावत है ॥ १ ॥

॥ मनहर छन्द ॥

सुजस तिहारो कवि गात देस देसन के,
सुदन सिरताज भूप सागर सपूती को ।
दरस नाय रहे तेरो ममता करे यो दूजो,
कीधां बली भोज न्रप कीधां सुत कुन्ती को ।

पावत नह पार कवि गावत दिन रात गुन,
कूपां पति फतैसिंघ कोट करतूती को।
बंस अवतंस बीर चैन सुत वाह वाह,
राखे कुल राह रीत रूप रजपूती को ॥ १ ॥

अमृतलाल जी माथुर रचित

— कवित्त —

बाचैं बड़ भाग जोग जागहू को पावे फल,
लोकाधिप लाग अनुराग में रचीसी है।
आनन्द मगन हरि नेह के नसे में लीन,
मोद भरी भूरि जामें भारती नचीसी है॥
श्रीयुत फतेजू ! भली भव्य कृति कीनी यह,
'अमृत' अनूठी मेरे जीय में जचीसी है।
सुमति सची सी भक्ति चित्र व्है खचीसी भली,
भक्ति में मची सी प्रभु प्रेम की पचीसी है॥

भदोरा निवासी सांदू हेमदान कृत

॥ सोरठा ॥

गहरी धुन गाईह, महमाई फतसी मुदे।
सुण सद सुरराईह, आई अहुँ गण आपिया ॥ १ ॥

:—गीत:—

अंबा रचायो सुरंगो आछो आसांणे आनंद आई,
साच मनां गाई कूंपे मेहाई फतेस।
त्रपुरा रिझाई पुत्र तेवड़ा पाविया तासुं,
बंसरा उजासु धाई इष्ट रा बसेस ॥ १ ॥

आवड़ा गणां सा लाल तवड़ा आसोप आया,
मेहर करे महंमाया समाप्या सप्रेम ।
सिरे कोड सज्जनां सवाया हिये सरसाया,
उगंता आदीत जेठ दरसाया एम ॥ २ ॥
भागी उग्र चैन हरा चैन ज्यों होवसी भला,
दान रा उफल्ला देसी वंस रा दिनेस ।
त्रिलाला कंठीर हल्ला करेला आहंसी भूरा,
धेसगारां भड़ां टल्ला देवसी प्रवेस ॥ ३ ॥
अगंजी आसोप धीस तणां ये सपूत ओपे,
मत्रां सीम कोपे जैड़ा सराहे संसार ।
करं द्रष्टी क्रपा जो पे आधंतरां लगासी कतां,
जोड़ भड़ां जेता लोपे सिरे रा जोधार ॥ ४ ॥
हल्ला काज फता वाला ग्रहूं ही अनोखा होसी,
खागां पांण वेमी ठावी धरा रा खटेत ।
कीरती अकूती लेसी ईढरां सवाई क्रपां,
पिता पुत्र रहसी चहुं चिरंजी पटेत ॥ ५ ॥

कंवर साब रा जन्मरो

भदोरा निवासी सांदू मादूलदान कृतः

--:गीत:--

करे अनेकां होकवा सेणां आपरा ऊपजे कोड,
रंकां रिधी देणां सारी जात में सराह ।
त्यान्वां जस लेणां सूं कंवर रो भारी लाभ लीनो,

छत्र धारी फते कीनो नंद रो उछाह ॥ १ ॥
द्रव छोलां उझल्लै सुगल्लै कई कवी दाखे,
भूरा बाघ तणां भाखे देस में बखांण ।
दूथियां अनेकां तणी ऊण ती मिटाय दीनी,
कीत खाट लीनी सारी सपूती कूंपांण ॥ २ ॥
देख रीझ अनंमी री अचंभे ईंढरा दूजा,
बखांणे मीढ़रा थारा दानरा प्रबंध ।
कान हरे चैन नंद लालरो हरक कीधो,
कन भोज वाळो लीनो जस तें कमंध ॥ ३ ॥
ईसरी कृपा सूं आछी कविंदां बधाई पाई,
सदाही चिरंजी हरा चैन रा हमेस ।
हेत री आसीस माची हरी री कृपा सु व्हैज्यो,
तीव्र भागी अमर रैज्यो पुत्र नै फत्तेस ॥ ४ ॥

विवाह सम्बधी कविता

पांचेटिया निवासी आढा जवारदान कृत

--दोहा--

दूजा मुरधर देस में; ले जस आटे लोंण ।
लटवारा कीरत लटण; कूंपा समवड़ कोंण ॥ १ ॥

--गीत--

सझे अमट सामान भंडार भरिया सुपह,
दिया भड़ कृपण डर जाय बांमा ।

पुत्री परणावतां किया आसोप पत,
नवां खंडां कीत रा सुद्रढ नांमा ॥ १ ॥
इला मरवान अखियात राखण अडग.
कमंध फतमाल उग्र काम कीधो ॥
रूपगां रोझगर तणी वंद व्याग रच ।
लखां मुख हूंत सोभाग लीधो ॥ २ ॥
प्रवल इण वार में वाह कूपां पता ।
दियण दत खजानो खोल दीधो ॥
व्याव रच धियां रो भले तालाविलंद ।
कोड़ जुग लगां जस अमर कीधो ॥ ३ ॥
इला मरव होला किया व्रद ऊजला ।
गण विध कविंद नित सुजस आखै ।
स्वयंवर रचे त्रप चैन वाले सुतन ।
लियां जस हमाऊ वांह लाखै ॥ ४ ॥

भटांग निवासी सांदू मादलदान कृत

॥ दोहा ॥

कंवर जांन सज कोड सू. सह भड़ लीना साथ ।
मोला वत्तीसां सिरे, नमो वानसी नाथ ॥ १ ॥
मगनावत कुल रा सुरज, मिण धर जस रो मोड़ ।
अभंग वानसी ऊपरे. करो राज जुग कोड़ ॥ २ ॥

—गीत—

मजे जांन रा होकवा सोले वतीसू साथ ले सारा ।
ईडगारां सिरे आछो रचायो उछाह ॥

इला सेस धसकायो पमंगां पौड़ सूं अखां ।
आयो यों आसोप में सरायो वाह वाह ॥ १ ॥
मेसहरे बधायो आनन्द थयो सही मारू ।
सारू प्रभा उमंगायो तखतो सहीप ॥
रीत आद धारू रांणा प्रताप प्रवांण राजे ।
मुदी खांप इसो छाजे बानसी महीप ॥ २ ॥
कंवर रा विबाह मांय कविंदां निहाल कीदा ।
ईहगांने राव दीधा रोकड़ा अपार ।
दान छोलां बरखे हरखे हियो बीदगांरो ।
धींट सुभ थरके आ मौज मनां धार ॥ ३ ॥
प्रथीनाथ सगतहरा क्रीत तो प्रखंडां पूगी ।
हमे मेर धजा ऊगी फरूके हमेस ॥
गणपती सुरांनाथ राज रो सराह गावे ।
देव पारहू न पावे बंस रा दिनेस ॥ ४ ॥
बीजा नरां हिया बीच कलु रो प्रभाव बैठो ।
भवे लोभ नहीं मेटो दोहुं बस भांन ॥
त्याग री प्रसंसा थारी हुई है अपार तखा ।
ज्यागरी सोभाग जाणें फता री जहांन ॥ ५ ॥

खेजड़ला ठाकुर के विवाह संबन्धी कविता
शिऊ निवासी सांदू बिशनदान कृतः—
—ःगीतः—

सोभा दिपाया गणेस महा बसंत पंचमी सावा,
बधाया उछाह सीस रिद्धियां विकास ।

मह्रा अंग मवागां समापे माता महंमाया,
आलोप पुरी में छाया मंगला उजास ॥ १ ॥
जादवां उजाला कृष्ण पधारे जान में जानी,
आवे अन्तरिक्ष गामी अमरां अजेव ।
बांधी पुत्र तणी राज रीतां वाले वंध वामी,
देखवा विवाह नामी आया देवी देव ॥ २ ॥
रह्या चन्द्रमोली राज घरांणे सदा रा वारू,
हेत रा वधारू कृपा वाला माथे हाथ ।
सदा राज गढ़ां सोभा अमरां रखावा सारू,
नमो काज सुधारू पधारया वैजनाथ ॥ ३ ॥
अगे तेज पुंज री उजासी दिपे दिव्य अंगां,
प्रेम री प्रकासी मुखां दीपती प्रचंड ।
मोहनी भवानी थारे जीवणी भुजा रे साथे,
मोहती विमाण माता रुखाली चामंड ॥ ४
अखूट समान अन्न पूरण भंडार आई,
वधाई मोतियां रंभा करती विनोद ।
सुर्मी नागणेचा रंग रली में करती सेला,
माया तोराखाना सूं उभेला देती मोद ॥५
पूरी आसतीक नोपां चिन्ह राज रीतां पाले,
गढां चैन वाले सोह्या गुणां रा गंठाव ।
भरा साली सामंतां वडां रा जूना पंथ भाले,
विरदां उजाले राज कोसां रा वंटाव ॥ ६ ॥

घुरे घण घोरां बैंड प्रतप्पै निसांण घायां,
ठाकुरां सेवरां छाया कादंबरी ठोस।
उदीची प्रतीची मानों घटा ज्यों हुलास आया,
जुड़ाया कांकड़ां जान मांढ रा जलूस ॥७॥
चलंती आयुधां जांन घटा ज्यूं बीज ने चाती,
रचाती हुलासां देती बधायां सुरंग।
आछी दावड़ंती रंग रेलती आसोप आती,
उरजनोतां कूंपावतां बधाती उमंग ॥ ८ ॥
भुसंडां सझाव स्यांम घड़ूसां बधाती सोभा,
ताता तुरी रीछियां दौड़ाती रंगां तार।
ऊभा केई दिनां सूं जोवतां बाटां जिका आती,
धिनो इन्द्र बना सूं बहाती रूपाधार ॥ ९ ॥
कोटरी कराळी तोपां चौखळे ब्यावनैं कहती,
घुरंता बधायां देती गावती गम्भीर।
जोवो फतै पोळां गैस गिलासां प्रकास जोती,
सोहतां खुरंगी मनां मोहती सधीर ॥१०॥
बधारचा मोतियां थाळां सांमेळे तोरणां बन्दे,
सचेळां सुरगां सगा सुहाणां सधीर ।
महा मोह मेळा मंडे मारवां माड़ेचां मांही,
रचाया विवाह बेला बृद्धि रिद्धि बीर ॥११॥
माया नागणचां महा मोह री बंधांणी सामै,
हेत थी संधाया हतलेवा वाळा हाथ ।

जनमी सतियां इणी जात में जहांन जांणें.
सदा पतिव्रतावां रहंती पती साथ ॥ १२ ॥
फिरवा लागिया चौक चंवरी कंवरी फेरां,
वरवा लागिया वनां उमंगां उछाव ।
करवा लागिया दान गोधनां अपार कूंपा.
घुरेवा लागिया रंग तोपां रा घुराव ॥ १३ ॥
पूरणां प्रकास भाटी रूप में सझाव पूरा,
जोड़ में अनूप कूंपा तेज असी जांण ।
दोनुं एक ठोड़ राज रामी रे ऊपरा दिपै,
भया जांन मांढा मांनो मेला चन्द भांण ॥१४॥
चांदणां चिरंजी भूमी लोक रा चितां में चाया,
सदा भांण वंसी छाया समधां सुहात ।
निधी नवां खुलै द्वारां वसाया अतोल नांणे,
रिधी राज रसोड़े जिमावे दिना रात ॥ १५ ॥
सिद्धियां सामान जांन मांढ़ में बांटती सदा,
हुवा मानो कोठार कुमेर वाले हात ।
भोजनां मिठायां सवां धूपटा हगामा होवें,
जोवें जठे इन्नजामां वखांणे सुजात ॥ १६ ॥
सग आठं जांम आमा पीवणां सुरंगां सोहे,
मांढ़ मित्रनाथ हरा मांढ रा मंडांण ।
वनो खजड़ला पती पावियो सौभाग्यवती,
सलो रतोवांन आछो जादू वंस भांण ॥१७॥

हुवो दीर्घ आयु दुल्हा दुल्ही रे आनन्द रैवो,
देवो राज संतती भैंसाद कृष्ण देव ।
आसोप सरीसा राज गढां में सासरा आछा,
साचा मनां फतेसिंघ कीधी जांन सेव ॥ १८ ॥
घोड़ां रथां जाखोड़ां रोकड़ां दासी दास घरां,
आभूसणां सोना चांदी आनन्दी उदोत ।
मोतियां जड़ाव गहणां मोहणां मना नैं मोहै,
दायजा सोहणां घणां कीमती देसोत ॥१६॥
नवों निधीवांन नम्रताई रे सभावां नमै,
पूरी समय माथे बांधे राज रा प्रवांण ।
खूंदालमा बिरद्दां सम्बन्धां चार बारी खुलै ।
खजाना ऊधमे ब्यावां फतै रा बाखांण ॥ २० ॥

बड़ा ठाकुर साहब श्री चैनसिंह जी की कविता

मथाणिया निवासी बारठ जैतदान कृत

—गीत—

पिंडां प्रचंडां बिराजे आजे रातखी आतखी प्रभा,
साभै थंडां घोड़ां भड़ां असंखी समाज ।
राज अंसो रीत बंकी म्रजादा अखडां राजे,
मारू राव छाजै बाहु डडां तो मिजाज ॥ १ ॥
बिचार रा मोट मना साहसी कंठीर भूरा,
थाट रंकां आधार रा ओट धरा थंभ ।

आचार मार ग जोट विरदां वधार ओपै.
मपूताचार रा कोट महा भार संभ ॥ २ ॥
लाज रा लंगरी जेठी जोधांण राज रा जंगां.
प्रभा दधां पाज रा उमंगां वधे पार ।
मार कारखाना ढंगां काज रा सुधारू सदा,
अंगां मादी मिजाज रा वंकता अपार ॥ ३ ॥
प्रतणे क्रंपांण पती महा पांण थाट पाटां,
मला उम्रवाटां त्यां निराटां जोम साझ ।
अगंजीत तूझ हंता अंजसे मिसलां आठां.
लसे नो भुजांटां सीस खत्रीवटां लाज ॥ ४ ॥
थिर दम्रं दिसां कीत सुनीत ताहरी थाई,
आदु रीत म्रजादां वधाई वंस ओप ।
चागी वंश छाई सोभा वडकां सवाई वाजी,
आधंनगं चैनसीह चढाई आसोप ॥ ५ ॥

मदारा निवासी सांदु गिरधरदान कृत

—गीत—

स्यांम भ्रम धारियां परम आनन्द सदा,
रहे जोधांण रो नाथ राजी ।
तेज पुंज चैन लघु वेस सोहे तुंहीज,
बाप दादा तणो हथां वाजी ॥ १ ॥
सीस रे धणी सूं बोलतां सलामो,
खेंचाया अगाड़ी वाज खासा ।

सोर सहनाइयां और चहुं सुसादां,
त्रमालां ठौर बज अग्र तासा ॥ २ ॥
संपेखे बिलंद चित अंजस मड़ साथरा,
कढैवा काथरा अगट कलिया ।
तवै जग जाहरां सवाई तातरा,
भुजां सिवनाथ रा बिरद भलिया ॥ ३ ॥
धिनो धिन कहे जग बेख मोटे धड़ै,
थांभसी हथां गयणांग थोगो ।
जोधपुर धणी सुभ निजर कर जांणियो,
जीवणी मिसल भुज भार जोगो ॥ ४ ॥
लियंतां मोहल्ला अतर झोला लपट,
दुबारा दपट झड़ लाग दारू ।
हुतां रंग राग आयो भलां हवेली,
मोतियां बधायो राव मारू ॥ ५ ॥

आंगदोस निवासी बारठ लक्ष्मीदान कृत

—गीत—

चुगलां कर फैल कला मत चेलव,
जिके गमावण काज जमी ।
बिध बिध बिघन रग बरसायो,
क्रोध बधायो बिगर कमी ॥ १ ॥
अवढी बात ढबत नहीं अवरां,
मांटी पण में न कूं मणां ।
कूंपा घरे भुयण इण कांठे,
तैं राखी सिवनाथ तणां ॥ २ ॥

आद विरद कहे जग उप्रवट,
जग वातां समझण घण जांण।
कुल रा भांण मदन तें करतां,
ओ रहियो कूंपां आथांण ॥ ३ ॥
पंखे वखत घणां भड़ पुलिया,
दुझल मरी नह गरज दुआ।
मुरधर उतन रह्यो हर मालम,
हर गजड़ सुभ निजर दुआ ॥ ४ ॥
मुरधर मिसल आठ रा मांझी,
आद घरांणे थाप उथाप।
मादल राज करें गिरियारी,
पोह चैना थारो परताप ॥ ५ ॥

—दोहा—

वाली मलसावावड़ी, धणियप चैने धार।
जमी अने घर झूंपड़ा, (म्हारे) जद हा कठे जुहार ॥ १ ॥
करी मदत सुभ निजर हर, धणियप चैने धार।
आवत नह पाछी उतन, जावत कठे जवार ॥ २ ॥

भदोरा निवासी मादु रामलाल कृत

—गीत—

ओप सिधालो सदीव खाग त्याग में चौगुणो इला,
प्रथुराज मोगुणों थूं प्रजादा प्रमांण।
सुभटां सिरा रा मांझी जोधांण रो स्यांम ध्रमी,
नेगां किरावरां रो विनादु ऊंची तांण ॥ १ ॥

ार दूणी ऊमरा सवाई बाजी थंभ चैनो,
बरदाई सेवा नन्द थाट पाट बेस।
तको खाग झाट पांण मनाई कायरां सूमां,
रीतां खत्रवाट भुजां संभाई राजेस ॥ २ ॥
वीदगां बांटणों दान बखतेस हरा बापो,
खंडां नवां क्रीत आज खाटणो खेसोत।
करां यूं भीम ज्यों गदा केवांण झाटणों कूंपा,
दोखियां दाटणों दीपै बिलाळो देसोत ॥ ३ ॥
खळां हिये दाह मारू देहंतो चैन सा खत्री,
सवाई सेवसा आभ डाहंतो साहेस।
थाट रो अगंजी ओपै जोधांण पाट रो थंभ,
मिसलां आठ रो मुदी दूसरो माहेस ॥ ४ ॥

मथाणिया निवासी जैतदान कृत

--कवित्त--

मोतीसिंह रामपुर ठाकुर बणायो मुख्य,
टाकर टलाय बड बाकर बह्यो करें।
बासणी गुलाब थप्पैं मेट के बिषाद भूर,
कंटालिये क्रीत त्यौंहो उर्जन कह्यो करें।
थप्पै तैं उथप्पै कुण थिरपत आसोप थप्पैं,
गुण सिरियारी सारदूल जो गह्यो करें।
है न कछु चिन्ता ऐन रैन दिन आनंद हैं,
चैन के प्रताप सदा चैन तैं रह्यो करें ॥ १ ॥

वरन हू तें बानी संख्या अंक तें बखानियत,
जानियत छंद के प्रबंध लघु गुर तैं ।
बाग तें अठार भार पंच बिसतार बिस्व,
उन्नत भो राग ताल उग्र जरभर तैं ।
पद्दं जेत जोध नग्र धीम अग्रकारी कृपा,
बीरता बिदित होत बुध बुधवर तैं ।
हर उतवंग गिर संग त्यौं प्रवाह गंग,
कीरत उमंग बधी चैनसिंघ करतें ॥ १ ॥

अलवर निवासी पंडित उमादत्त कृत

---कवित्त----

मन हरिचंद वारां सत्य पै युधिष्ठिर को,
सुपह सिंबर वारां असरन सरन पै ।
हुकम पै हीर रेख हट पै हमीर वारां,
वारां बीर बिक्रम को पर दुख दलन पैं ।
आंख उमादत्त चित्त चिंतामनि टर वारां,
मेर वारां साहस पे मेर वारां मन पैं ।
मोज वारां मघवा मनोज वारां मूरत पैं,
कल्पतरु वारां कृपा चैन के करन पैं ॥१॥

॥ इति ॥

—:परिशिष्टः—

(१) ठिकाना कंटालिया (परगना सोभत)

यह ठिकाना महेशदासोत कूंपावतों के अधिकार में है। वंशावली इस प्रकार है:—

१ कूंपो	२ महेशदास	३ सादूलसिंह
४ जसवन्तसिंह	५ किशनसिंह	६ सांवलदास
७ भावसिंह	८ रावतसिंह	९ संग्रामसिंह
१० कुशालसिंह	११ शम्भुसिंह	१२ गोरधनसिंह
१३ अर्जुनसिंह		

सिरोही के राव सुरतान के हाथ सीसोदिया जगमाल मारा गया, जिसे बादशाह सिरोही का आधा राज्य दिलाना चाहते थे। वि० सं० १६४१ में राव सुरतान को दण्ड देने के लिये बादशाह ने मोटा राजा उदयसिंह को भेजा, इन्होंने जाकर सिरोही को घेर लिया। सुरतान सज कर मुकाबला में आया, महा घोर युद्ध हुआ। उस युद्ध में कूंपा के पौत्र महेशदास के पुत्र सादूलसिंह नं० ३ ने सुरतान के युद्ध में महापराक्रम कर दिखाया और ऐसी तलवार बजाई कि देवड़ों के छक्के छूट गये। इसी लड़ाई में सादूलसिंह शत्रुओं के हाथ मारा गया। उस विषय की निम्न लिखित कविता उपलब्ध हुई है।

॥ दोहा ॥

सीरोही सुरताण सूं, हांण करे घमसांण।
सादूलो सुभटां सिरे, कट झड़ियो कूंपांण ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

उलटे दल़ आंण मुरधरावाल़ा, मछराल़ा सादूल़े मांण।
डाबी जोर सिरोही धरती, सांमो जद सँभियो सुरतांण।१।

सोले समत वरस चालीसे, काती सुद एकादस कांण।
कमँध देवड़ां जुद्ध करारो, घड़ी पांच घुरिया घमसांण
तिण वेल़ा कूंपे अस तकड़ा, झोके खाग बजाई झाट।
तंडल घणा देवड़ां तोड़े, डारण तिण कीधा द्रहवाट
जुध मदूला मादूलो गंजे, भंजे अरियां तणा अकाट।
थाट उथाट विहाड़े थंडां, भुज डंडां लागो ब्रहमाट
मगे लियो मेम सुत माथो, पोय लियो झट मोको पाय
आय अपच्छर आगे ऊभी, पंथ सुरग लीनो सुख पाय

यह ठिकाना महाराजा जसवन्तसिंहजी ने भावसिंह र
दासोत को वि० सं० १७०२ में इनायत किया था। इस ठिक
रेख १४३००) रुपये और १२ गांव हैं। कुरब हाथ का है।

गांवों के नाम—

१ गंडाणिया परगना सोजत रेख ७५००)
२ थल परगना सोजत वीरान
३ कोटड़ो ,, ,,
४ सीमसो ,, ,,
५ मगरासो ,, ,,
६ गोजरी ,, ,,
७ धारसंगी परगना सोजत रेख १३००)
८ नीवली हेटलां ,, ,, ७००)
९ ओपारी ,, ,, ४०००)
१० ग[illegible] ,, रेख नीवली हेटलां शामिल
११ [illegible] ,, रेख ८००)
१२ [illegible] प० सोजत वीरान

(२) ठिकाना चण्डावल (परगना सोजत)

यह ठिकाना ईसरदासोत कूंपावतों के अधिकार में है।

ावली इस प्रकार है—

कूंपो　　२ ईसरदास　　३ चांदसिंह
गोरधनसिंह　　५ विजयसिंह　　६ फतैसिंह
पृथ्वीसिंह　　८ शेरसिंह　　६ हरीसिंह
बिसनसिंह　　११ सांवतसिंह　　१२ लछमनसिंह
प्रतापसिंह　　१४ शक्तिदान　　१५ उम्मेदसिंह
गिरधारीसिंह मौजूद　　१७ कंवर भोपालसिंह
१८ भंवर गोबिन्दसिंह १८ भंवर भवानीसिंह १८ भंवर कानसिंह

यह ठिकाना महाराज सूरसिंहजी ने राठौड़ चांदसिंह नं० ३ ईसरदासोत को वि० सं० १६५२ में इनायत किया था।

वि० सं० १७१४ में उज्जैन के पास फतियाबाद के मुकाम पर शाहजादा औरंगजेब और मुराद बादशाहत के लोभ से सेना लिए आ खड़े हुए। बादशाह की तरफ से मुसलमान सेना का सेनापति कासिमखां था, तोपखाना उसीके अधिकार में था और हिन्दू सेना के सेनापति महाराजा जसवन्तसिंहजी थे। कासिमखां बादशाह से बदल कर औरंगजेब के पक्ष में हो गया। उस समय महाराजा जसवन्तसिंहजी ने औरंगजेब के साथ महाघोर युद्ध किया और औरंगजेब और मुराद के नाकों दम हो गया। उस लड़ाई में ठाकुर नं. ४ गोरधनदास चांदसिंहोत ने घोड़ा उठाकर महा घोर युद्ध किया और कई शत्रुओं को मार गिराया और अपनी सेना की रक्षा की। इस लड़ाई में खुद गोरधनदास मारा गया। इस विषय का किसी कवि ने यह गीत कहा थाः—

॥ गीत ॥

आयो जुध जम मुराद ऊपड़े, फोजां घण वाराह उफरिया ।
गढपतियां गिरवर गोवरधन, आडो दियां सह ऊवरिया ॥१॥
मुगल धारां तूंमल मंगल, घड़ां दरड़ पड़तां चौधार ।
वडा पहाड़ गोवरधन वांसे, सारा ऊवरिया सिरदार ॥२॥
फाल नाल रुधरां खलकंतां, जाझा कण वरसंतां जाल ।
ओलै कमधज तणे उवरिया, गढपतवाल वाल गोपाल ॥३॥
अवड़ो भार सहे सिर ऊपर, वेहू खग झाटां वोछाड़ ।
व्रज जिम राख दिली दल वांसे, पड़ियो चांदा तणो पहाड़ ॥४॥

॥ गीत ॥ २

दहुवे पतसाह तणां दल देखे, खत्री न भाजे मेछ वलै ।
गाजी साह कहे गोवरधन, मेल लोह जिम लोय मिलै ॥१॥
असपत दहूँ कड़किया ऊभा, खल दल हिन्दू तुरक वहे ।
राय कहे चांदावत रावत, वांव घाव तिम घाव वहे ॥२॥
मोहर नल्हाड़ मजोड़ मांझियां, अला मवाड़ चंद भाराथ ।
हाथ उपाड़ पछाड़ हाथियां, हय उपाड़ मंपेखे हाथ ॥३॥
दगण गजां फोजां रिण दोहण, वाघ मेख भख विलकुलियो ।
भर्णा ग्रयण अणियां गोवरधन, मुँह माखतो समो मिलियो ।४।
जुध अरि मार मंग जोवियो, कमधज करता हुकम किये ।
अछरां तणा पहरियां आवो, हींडलती वरमाल हिये ॥५॥

इस ठिकाने की रेख २००००) रुपया, गांव ८ हैं ।

१ चण्डावल	परगना	सोजत	रेख	६२५०)
२ खारची	"	"	"	१२५०)
३ चवड़ियां	"	"	"	२०००)
४ छीतरियो	"	"	"	२५००)
५ पांचनड़ो वडो	"	"	"	{ १७५०)
६ पांचनड़ो खुर्द	"	"	"	
७ गुड़ो बछराज रो	"	"	"	१२५०)
८ राणावास	"	"	"	५०००)
			योग	२००००)

कुरब हाथ का।

चांदेलाव

यह ठिकाना मांडणोत कूंपावतों के अधिकार में है। वंशावली इस प्रकार है--

१ कूंपो	२ मांडण	३ पूरणमल
४ बिहारीदास	५ श्यामसिंह	६ हिम्मतसिंह
७ छत्रसिंह	८ मोहनदास	९ धीरतसिंह
१० देवीसिंह	११ कल्याणसिंह	१२ इन्द्रसिंह
१३ जवारसिंह	१४ उगमसिंह	१५ कँवर उम्मेदसिंह
१६ भँवर		

महाराजा विजयसिंहजी के मरहटों के साथ वि० सं० १८४७ में मेड़ते के मुकाम पर महाघोर संग्राम हुआ वहां हिम्मतसिंह के पौत्र, छत्रसिंह के पुत्र मोहनदास नं. ८ ने शत्रु दल का संहार करते हुए स्वर्ग का मार्ग लिया। इस विषय की यह कविता उपलब्ध हुई है:-

॥ गीत ॥

कृपा जानकी नाहरी वदां वाह री वाह री कृपा,
दुबाह साधना सोर वाह री दराज ।
जुधां वीच गाई रिमां गहरी दिसट जोड़े,
नरांनाह मृहणोत साहरी नाराज ॥ १ ॥
वणाई लुहारां भली लाहोरां एमदावाद,
परट्ठे कवन्दां भली जुहारां प्रमाण ।
कान कुंदे मोहरी नवाद लगी हेमकली,
हिम्मतेस हरा झली वादंगरां हाण ॥ २ ॥
पमंगां धावतां पृठ अपूठी मयन्दां पाड़े,
दुसारे गयन्दां दूठ जंगां वार दोड़ ।
उडंतां विहंगां गोळी लगावे समत्थां आज,
रंग हथां ईरदाग निखंगी राठोड़ ॥ ३ ॥
कान में निहाल वेधे वाळ वन्ध फूल कोडी,
निराताळ गाळ खलां कालची न दूक ।
गहन्ना उछाल नींबू वेधे ताळ वागे समे,
विरदाळ कळाचाळ आराधी बन्दूक ॥ ४ ॥
मधणी जोधांण वादे छत्रधारी विजैसाह,
नो तणी मंपेख धणी खत्रवाट तीख ।
पाड़वा अनेक शत्रु वज्रवाण वणी पांण,
छत्रमाल तणां मन्त्र डाकणी सारीख ॥५॥
रामचांण जेहा रीन भारथां न जावे रीती,

धनजे परीती मूठ भुजे धारवाड़ ।
बैरियां करेबा भूख अचीती माराथवाड़,
मूहणां बन्दूक सूं नचीती मारवाड़ ॥ ६ ॥

यह ठिकाना महाराजा विजयसिंहजी ने राठोड़ छत्रसिंह को वि० सं० १८०८ में इनायत किया। इस ठिकाने की रेख ८२८०) रुपये और गांव २ हैं।

१ चांदेलाव परगना बीलाड़ा रेख रु० ३२८०)

२ रूपाथल परगना नागौर रेख रु० ५०००)

८२८०)

इस ठिकाने को कुरब बांहपसाव का है।

---

(४) ठिकाना गजसिंहपुरा (परगना जोधपुर)

१ कूंपो	२ मांडण	३ खींवकर्ण
४ किसनदास	५ मुकनदास	६ जैतसिंह
७ रामसिंह	८ छत्रसिंह	९ जगरामसिंह
१० भारतसिंह	११ बाघसिंह	१२ माधोसिंह
१३ अचलसिंह	१४ मूलसिंह	१५ तेजसिंह
१६ रामसिंह		

वि० सं० १८४९ में भँवर भीमसिंहजी ने जोधपुर के किले में घुसकर अपना अधिकार कर लिया था। फिर सरदारों के समझाने से किला छोड़ दिया और महाराजा विजयसिंहजी किले में दाखिल हुए। भीमसिंहजी के लिये यह हुक्म हुआ कि तुमको फलोदी दी गई है तुम फलोदी चले जाओ। भीमसिंहजी फलोदी को रवाना हुए उनके

पीछे फौज भेजी गई। गांव झंवर के मुकाम पर भीमसिंहजी के और शाही सेना के युद्ध हुआ। इस लड़ाई में ठाकुर जगरामसिंह बड़ी बहादुरी से लड़ कर काम आया। यह भीमसिंहजी के पक्ष में था। इस विषय का यह गीत उपलब्ध हुआ है।

॥ गीत ॥

कीधो सेखने हरोल जंग धिराज उचंडे कोल,
धृजिया कायरां वागो खांडे रीठ ढींग।
महाराज कँवार रो जावतो न छांडे मारू,
सारो किलो ज्यूं मंडे आडो जगसिंग ॥१॥

फिल झाळ आतसां अरावां चोफेर फिरे,
धुंवांधोर अकाल वेररो नन्दां अीह।
हेम जोधमेर रो उवारे अरी डोर आगे,
हुवो आमेर रो कोट छत्रसिंह रो अबीह ॥२॥

नगं माग धायो झीक उडायो भ्रूजटी नचै,
अीहथां उडायो बूर लोहां सूर साथ।
शाहजादे बचायो भीमेण ने सुरङ्ग रोळै,
नरां ज्यूं दुरंगां थयो कूँपानाथ ॥ ३ ॥

देवांण चार जाम भेलियो प्रचण्ड दळां,
श्याम ने मेलियो थान प्रधानां संहत।
मुरजाळ खग गाढ हाथां डावे सेख भड़ां,
खाग भार वहन्तां झले फवे खेत ॥ ४ ॥

मान लोक में घणी डावरां करे मांण माया,
गजिन्द्रा वचाया महा समरां वीच।

परी जाडो घूमरो बींटियो राव कूँपो,
चमरां ढुलन्तां गयो अमरां बगीच ॥ ५ ॥

यह ठिकाना महाराजा विजयसिंहजी ने राठोड़ जगरामसिंह छत्रसिंहोत को वि० सं० १८१७ में इनायत किया। इस ठिकाने की रेख रु० ७५००) और गांव १ है। और हाथ का कुरब है।

१ गजसिंह पुरा परगना जोधपुर रेख रु० ७५००)

---

(५) ठिकाना धणलो (परगना सोजत)

यह ठिकाना तिलोकदासोत कूंपावतों के अधिकार में है। इसकी वंशावली इस प्रकार है।

१ कूंपो	२ तिलोकदास	३ भीमसिंह
४ दयालसिंह	५ माधोसिंह	६ फतैसिंह
७ खींवकरण	८ कुम्भकरण	६ शेरसिंह
१० उदयसिंह	११ बिड़दसिंह	१२ वाघसिंह
१३ बहादुरसिंह	१४ खुमाणसिंह	

महाराजा सूरसिंहजी का डेरा अजमेर में था उस समय उनके प्रधानामात्य भाटी गोविन्ददास ने कृष्णगढ राज्य के संस्थापक महाराजा कृष्णसिंहजी के भतीज भगवानदास के पुत्र गोपालदास को मार डाला। उसका बदला लेने के लिये महाराजा कृष्णसिंहजी ने वि० सं० १६७२ की ज्येष्ट सुदि अष्टमी को गोविन्ददास का प्राण हरण किया। तब महाराजा सूरसिंहजी ने अपने प्रधानामात्य को मारने वाले कृष्णसिंहजी के पीछे अपने पुत्र गजसिंहजी को भेजा। दोनों में महा घोर संग्राम हुआ। इस लड़ाई में कूंपावत नं० ३ भीमसिंह तिलोकदासोत अपने स्वामी के सामने बड़ी बहादुरी से लड़ कर

शत्रुओं का संहार करता हुआ स्वर्ग को सिधारा। उस विषय का यह दोहा और गीत हैं।

॥ दोहा ॥

स्यांम धरम भट सूररो, भीमाजल भाराथ ।
तंडल कर अरियां तणां, पहुँतो सुरगां पाथ ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

अजमेर डेर अर आंण, गोविन्द भाटी चूक गह्यो ।
पाये हुकम सूर नरपत रो, लड़ कूँपे वड वैर लियो ॥१॥
पतसाहां सेना विच पोंचे, हणियो सजन हरामां ।
सुरधर रे राजा मोकलियो, लीनो वैर लगामां ॥ २ ॥
सूरसिंह सेना विच सचर, कपटां गोविन्द चूक कियो ।
मांन हुकम महपत रो मारू, व्हारू चढ़े तिलोक वियो ॥३॥
आण पहुँच पिसणां दल ऊपर, कटक वाढ निज ग्वाग कियो ।
स्यांम कांम शत्रु घट भांजे, रण भूमी भीमेण रह्यो ॥४॥

महाराजा सूरसिंहजी ने राठौड़ नं. २ भीमसिंह को वि. सं. १६५४ की आश्विन वदि ३ तृतीया को घणले का पट्टा इनायत किया। ठिकाना घणला परगना सोजत, रेख ५०००) रुपया। गांव ५

गांवों के नाम—

१ घणलो परगना सोजत रेख ५०००)
२ दुरगारो गढो परगना सोजत रेख शामिल
३ भोजराज रो गढो परगना सोजत रेख शामिल
४ गुमानपुरो " " " "
५ मानसिंह रो गढो " " " "
हुकम वांहपसाव।

(६) ठिकाना सिरियारी (परगना सोजत)

यह ठिकाना महासिंहोत कूंपावतों के अधिकार में है। बंशावली इस प्रकार है—

१ कूंपो	२ महासिंह	३ आशकरण
४ अमरसिंह	५ केशरीसिंह	६ रूपसिंह
७ फतैसिंह	८ हठीसिंह	९ सूरजमल
१० संग्रामसिंह	११ जोधसिंह	१२ दोलतसिंह
१३ मालमसिंह	१४ रतनसिंह	१५ शिवनाथसिंह
१६ मुकनसिंह		

वि० सं० १८४७ में मारवाड़ पर मरहटों ने आक्रमण किया। मेड़ता नगर युद्धांगण नियत हुआ। महाराजा विजयसिंहजी की सेना में कूंपावत महेशदास और ऊदावत केसरीसिंह आदि वीर अग्रणी थे। मरहटों की सेना में माधोजी सेंधिया और उसका सहायक फरांसीसी डिभोई था। यह युद्ध अत्यन्त ही विकट हुआ। इस युद्ध में फरांसीसी डिभोई महेशदास की तलवार का भक्ष्य हो जाता परन्तु उसे तोप के चर्ख ने अपनी शरण में लेकर बचा लिया। इसी युद्ध में गांव सिरियारी का स्वामी कूंपावत कुशलसिंह शत्रु सेना में प्रविष्ट होकर कई शत्रुओं को धराशायी करके स्वयं स्वर्ग को सिधारा। इस वीर पुरुष की प्रशंसा महाराजा विजयसिंहजी ने अपने श्रीमुख से की थी जो इस निम्न लिखित गीत से प्रकट है। कुर्सीनामा में कुशलसिंह का नाम नहीं है, परन्तु गीत के दूसरे पद्य में 'संग्राम सुत' लिखा है। और वंश वृक्ष में संग्रामसिंह कूंपा से १० वां पुरुष है, उसका पुत्र कुसलसिंह होने पर भी छुट-भाई होने से उसका नाम वंश वृक्ष में नहीं है। वंश वृक्ष में केवल पट्टाधिकारियों के नाम लिखे गए हैं। ॥ गीत

कहै एम संसार बाजार बैठा कथा,
देसपती श्रीमुखां एम दाखी।

नवन तांबावती मात कहता तिका,
रीत इण वार कुसलेस राखी ॥ १ ॥
वाह जी वाह संग्राम सुत वीरवर,
आद वीराध ऐंण घरि उजाला ।
निमांमी वार में छात कूंपां निडर,
पांण खग झाल करी प्रतपाळा ॥ २ ॥
घणा नर अंजस घर जोम करता घणा,
खुशी हुय तिकांहीज रेत खोसी ।
भाव मवले मह धूधड़े भुजाल,
हुवो जस जुगां लग भले होसी ॥ ३ ॥
संताले (१८४७) समत अढार दिखणियां समो,
याद इण इलानें घणी आसी ।
कमँध कुसलेस प्रतपाळ कीधी तिका,
जुगां लग वात आ वुही जासी ॥ ४ ॥

यह ठिकाना महाराज श्री अजीतसिंहजी ने राठोड़ हठीसिंह फतैसिंहोत को वि० सं० १७६५ में आश्विन वदि ३ को इनायत किया।

ठिकाना सिरियारी, परगना सोजत, गांव ५, रेख ४६००) की।

गांवों के नाम—

१ सिरियारी परगना सोजत रेख ३७००)
२ कमगागे ग्वेडो परगना सोजत रेख २००)
३ फुलाद ,, ,, ,, ४००)
४ दीगोर ,, ,, ,, ३००)
५ पनरां रो गुडो ,, ,, ,, नहीं

(७) ठिकाना वासणी (परगना नागोर)

यह ठिकाना मांडणोत कूंपावतों के अधिकार में है।

वंशावलि इस प्रकार है:—

१ कूंपो	२ मांडण	३ खींवकर्ण
४ किसनदास	५ मुकनदास	६ जैतसिंह
७ रामसिंह	८ सरदारसिंह	९ जोधसिंह
१० आणन्दसिंह	११ हरिसिंह	१२ कर्णसिंह
१३ मालमसिंह	१४ रूपसिंह	१५ गुलाबसिंह
१६		

यह ठिकाना महाराजा मानसिंहजी ने वि० सं० १८९३ में राठोड़ हरिसिंह को इनायत किया था। महाराजा मानसिंहजी को कनफटे नाथों का भाव होने से उनका दखल राज्य में इतना बढ़ गया था कि राज्य की जो आमदनी होती वह सब उन्हीं के निमित्त खर्च हो जाती। गवर्नमेन्ट की खिरनी भी देना दुष्कर हो पड़ा था जिससे अंग्रेज सरकार महाराज से नाराज थी। दूसरा महाराजा ने जागीरदारों के गांव जब्त कर लिये थे जिससे बहुत से जागीरदार महाराजा से विरुद्ध होकर एसिस्टेन्ट गवर्नर जनरल के पास शिकायती होकर गये थे। उस कठिन समय में कूंपावत हरिसिंह ने महाराजा के चरणों में उपस्थित रह कर महाराजा की तन मन से सेवा की थी उस विषय का यह गीत है।

॥ गीत ॥

कीध वड चाकरी मान कमधज्ज री, कूंपा राव गुणांरो कोट।
संकट भुगत कीध बड सेवा, महाराजा हन्दी मन मोट ॥१॥

स्यांम ध्रमो राखे महा सूरो, कमन्धां पतरी सेवा कीध।
नरपत सुभट कामड़ा निरखे, दाद मांन महाराजा दीध ॥२॥
रहियो सदा मांन राजा रे, मांडण हरो चाकरी मांय।
सदा धणी नै ईस समझियो, कमध कमी राखी नह काय ॥३॥
बुध रो समन्द जुद्धरो बहादर, स्यांम धरम मांही बड सूर।
सुवन गुमांन बिखा में साथे, हरियंद रहियो सदा हजूर ॥४॥

ठिकाना चामणी, परगना नागोर रेख २०००) भरै नहीं। गांव १ हाथ का कुरब

---

(८) ठिकाना नाडसर (परगना जोधपुर)

यह ठिकाना मांडणोत कूंपावतों के अधिकार में है। वंशावली इस प्रकार है:—

१ कूंपो	२ मांडण	३ खींवकर्ण
४ राजसिंह	५ नाहरसिंह	६ सूरजमल
७ कीरतसिंह	८ बहादुरसिंह	९ बाघसिंह
१० उम्मेदसिंह	११ कर्णसिंह	१२ इन्द्रसिंह
१३ जवानसिंह	१४ रघुनाथसिंह	१५ बिसनसिंह
१६ अमरावसिंह		

वि० सं० १८०२ में बीकानेर के महाराजा जोरावरसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। उनके पुत्र नहीं था इसलिए अनोपसिंहजी के पौत्र, आनन्दसिंहजी के पुत्र अमरसिंहजी को, जो ज्येष्ठ पुत्र होने से गद्दी के हकदार थे, गद्दी से वंचित रख कर उनके छोटे भाई गजसिंहजी को जोरावरसिंहजी का उत्तराधिकारी बना दिया। इसी अवसर

पर जोधपुर महाराजा अभयसिंहजी ने भण्डारी रतनसिंह को सेना देकर बीकानेर पर भेजा। महाराजा की सेना बीकानेर पहुंची उस समय अमरसिंहजी, जो गद्दी से बंचित रखे गए थे, जोधपुर की सेना में आ शामिल हुए। फिर जोधपुर की सेना से बीकानेर वालों के महाघोर युद्ध हुआ उस युद्ध में रघुनाथसिंह बड़ी बहादुरी से लड़ा और हरावल में रह कर शत्रुओं का संहार करता हुआ स्वर्ग को सिधारा। उस विषय का यह गीत है।

॥ गीत ॥

संमत अढार सौ तीनरे बरसे, बीकांणे अमरेस विहाय।
अनुज भ्रातानें पाट आणिया, सुध चित रामै कीध सहाय॥१॥
जाय कटक बीकपुर जाझा, घेरे जुध कीधो घमसांण।
भ्रात भ्रात सुभट बड भिड़िया, अड़िया जोध सूरमा आंण॥२॥
गोळा गूंजर गूँज गराबां, हुय हूकळ खावे रहकल्ल।
ठल्ला मल्ल विखम ठहरावे, हूवो रामा सुतन हरवल्ल॥३॥
खागां झाट बजातो कमधज, अरियां वीच बाजे आराथ।
पिसणां काट आप रिण पोढे, रँग कूंपा तोनें रुगनाथ॥४॥

यह ठिकाना नाडसर आधा गांव ठाकुर अमरावसिंह के अधिकार में है और दूसरा बंट, जिसमें आधा नाडसर है, इसी ठाकुर के बन्धु के अधिकार में है।

---

(६) ठिकाना बूसी (परगना गोडवाड़)

यह ठिकाना उदयसिंहोत कूंपावतों के अधिकार में है। वंशावलि इस प्रकार है:—

१ झंपो	२ उदयसिंह	३ वैरीशाल
४ मोहकमसिंह	५ पन्नाणदास	६ मुकनसिंह
७ जवानसिंह	८ शिवनाथसिंह	९ प्रतापसिंह
१० छत्रसिंह	११ बख्तावरसिंह	१२ दुर्जनसिंह
१३ जमनासिंह		

यह ठिकाना महाराजा विजयसिंहजी ने वि० सं० १८३१ की ज्येष्ठ वदि ७ सप्तमी को राठोड़ छत्रसिंह को इनायत किया था। वि० सं० १७१५ में उज्जैन के पास फतिहाबाद में शाहजादा औरङ्गजेब और मुराद के साथ बादशाही सेना का, जिसमें मुसलमानी सेना का अध्यक्ष कासिमखां और राजपूत सेना के अध्यक्ष महाराजा जसवन्तसिंहजी (प्रथम) थे, महाघमासान युद्ध हुआ। उस युद्ध में उदयसिंह का वंशज कल्याणसिंह बड़ी बहादुरी से लड़ा और अपने घोड़े को आगे बढ़ा कर तलवारों की रीठ के अन्दर घुसा और वीरता का काम करके स्वर्ग को सिधारा। इस विषय का यह गीत है।

॥ गीत ॥

औरङ्ग दळ चालियो दिलीरे ऊपर,
पिता ने कैद कर राज पाबा।
बोलियो जसा सूं दिली रो बादशा,
अबे मो लाज तो भुजां आवा ॥ १ ॥
कटठ दळ कमन्धां दिली ने खंचिया,
उजीणी सेर रे निकट आतां।
मेळ भट पलट उलट दळ अरामे,
हरामी कटक सूं निकळ हातां ॥ २ ॥

भजै जे कमन्ध जो तजै रणभौम ने,
लजै कुल़ राठवड़ झुण्ड लोकां ।
लड़ै ने तुरक सूं भान्त किण जीतलै,
थड़ै बड कटक जो लाख थोकां ॥ ३ ॥
ऊससे कलै तिण बेर अस ओरियां,
तुरीयां बजै घमसांण तूंपै ।
बाहतां खगां नर ढाहतां वीरवर,
कियो जग नाम सुरगांस कूंपै ॥ ४ ॥

इस ठिकान की रेख १२०००) गांव तीन ।

बूसी	परगना	गोडवाड़	रेख	१००००)
प्रतापगढ	,,	,,	,,	१०००) वीरांन
गूढा गिरधरदास का	,,	,,	,,	१०००) वीरांन
कुरब बांह पसाव				१२०००)

(१०) ठिकाना चेलावास (परगना सोजत)

यह ठिकाना उदयसिंहोत कूंपावतों का है। वंशावलि इस प्रकार है।

१ कूंपो	२ उदयसिंह	३ नारायणदास
४ लक्ष्मीचन्द	५ मेघराज	६ किसनसिंह
७ भीमसिंह	८ रतनसिंह	९ जूंझारसिंह
१० मुकनसिंह	११ गुमानसिंह	१२ सगतसिंह
१३ मोहकमसिंह	१४ केसरीसिंह	

यह ठिकाना वि० सं० १७५६ की भाद्रपद सुदि १३ त्रयोदशी को महाराजा अजीतसिंहजी ने ठाकुर किसनसिंह को इनायत किया।

वि० सं० १६२४ में बादशाह अकबर ने चित्तोड़ गढ़ पर आक्रमण किया। महाराणा प्रतापसिंह बड़ा वीर पुरुष था। वह शत्रु का आगमन सुनकर भयभीत होवे ऐसा उसकी माता ने उसे जन्म ही नहीं दिया था। प्रतापसिंह लड़ने के लिये तैयार हो गया। दोनों दलों में घनघोर संग्राम हुआ। उस समय चेलावास ठाकुर उदयसिंह महाराणा प्रतापसिंह की सेवा में उपस्थित था। महाराणा के सामने यह वीर पुरुष अपने सुभटों के साथ बड़ी वीरता से लड़ा। कई यवन इसके हाथ से मारे गये। अन्त में स्वामी की सेवा करता हुआ यह वीर पुरुष स्वर्ग को सिधारा। यद्यपि यह जोधपुर राज्य का सेवक था तथापि केवल धर्म पक्ष को धारण करके महाराणा प्रताप की सेना में शामिल हुआ था। इस विषय की यह प्राचीन कविता उपलब्ध है।

॥ दोहा ॥

महाराणा पातल मदत, राखे धरम रुखाल़।
विढ पड़ियो अर बाढने, कूंप उदै किरनाल़ ॥ १ ॥

॥ गीत ॥

अकबर ले फौज चित्तोड़े आवियो, हलचल धरम हुवो हिन्दवांण।
कमन्ध फौज ले मदत करारी, आप वेल़ कीधो अवसांण ॥१॥
उदैसिंघ ले फौज अपारां, मोटी मदत दीध मेवाड़।
तुरकां तणां घणां घट तोड़े, पतसाहां दल़ दीध पछाड़ ॥२॥
महाराणा पातल मेवाड़े, राखण धरम हिन्दवां राज।
अकबर सूं न जिके दिन अड़ियो, कूंप सुतन कीधो वड काज ॥३॥

भिड़ तुरकांण अरी दल भांजे, हिन्दू धरम काजरे हेत।
अमर नाम राखे अखवीहर, खत्री विढ पड़ियो रिण खेत ॥४॥

इस ठिकाने की रेख ४५००) गांव २

१ चेलावास परगना सोजत ३५००)
२ गोपावास ,, ,, १०००)

क़ुरब ताज़ीम

---

(११) ठिकाना मलसाबावड़ी (परगना सोजत)

यह ठिकाना उदयसिंहोत कूंपावतों के अधिकार में हैं। वंशावलि इस प्रकार है:—

१ कूंपो	२ उदयसिंह	३ नारायणदास
४ लक्ष्मीचन्द	५ रतनसिंह	६ जूंझारसिंह
७ इन्द्रसिंह	८ सरूपसिंह	९ हरीसिंह
१० बभूतसिंह	११	

आबू पहाड़ की पर्वतश्रेणि के भील मीना मेर आदि सोजत के परगने में लूट खसोट करते थे। इनका इस पर्गने में बड़ा ही उपद्रव था। महाराजा जोधपुर ने उस उपद्रव को शान्त करने के लिये ठाकुर इन्द्रसिंह नं. ७ को कहा कि सोजत के परगने में बला पहाड़ के निवासी लुटेरों का महान् उपद्रव है। उनसे परगना तंग हो गया है। उसका प्रबन्ध जल्दी होना चाहिये। इन्द्रसिंह ने महाराजा की आज्ञा शिरोधार्य करके बीड़ा उठाया और भील मीना मेर आदि को दण्ड देकर उपद्रव शान्त किया। इस विषय का यह गीत है।

॥ गीत ॥

आड़्यो नखतेत पखां उजवाळा, ईन्दा भड़ काळा अरडींग ।
कंपावत धारा कळ चाळा, धूजै मगरा वाळा धींग ॥ १ ॥
हूंफा सुतन जमायो जबतो, सत्रवां ऊपर एहो सधीर ।
वसुधा मरद वळा ने वांदे, वळो तोनैं वांदै नरवीर ॥ २ ॥
वायो रतनहरा अतळी वळ, तो वाळो तायो तुरतांण ।
मानें न कांडै वैह संकता, परवत रहै जोड़ियां पांण ॥ ३ ॥
पाखर कांठै वाघ पटाळा, डाकर सुण मेवास डरै ।
आंभै आखर थारे ईन्दा, भाखर वांका डंड भरै ॥ ४ ॥

इन ठिकांन की रेख ५०००) गांव २

मलमाधावडी परगना सोजत रेख ५०००)
गुड़ो मेड़्तरण रो ” ” ” ”

(१२) ठिकाना गारासणी (परगना जोधपुर)

ई ठिकाना जोधसिंहोत कूंपावतों के अधिकार में है। वंशावली इस प्रकार है।

१) राव कूंपो (२) मांडण (३) खींवकरण (४) किसनसिंह (५) मुकनदास (६) जैतसिंह (७) रामसिंह (८) सरदारसिंह (९) जोधसिंह (१०) आनंदसिंह (११) अभैकरण (१२) जसवंतसिंह (१३) शिवनाथसिंह (१४) समरथसिंह (१५) भीमसिंह (वर्तमान)

१--जोधसिंह नं० ९-यह गांव रजलाणी के ठाकुर सरदारसिंह का द्वितीय पुत्र था। इसने राजाधिराज बगतसिंहजी को सेवा से प्रसन्न करके गांव रायधणु उपार्जित किया था। कतिपय दिनों के पश्चात् किसी बात से यह गांव रायधणु छोड़ कर आसोप के ठाकुर कनीराम के पास चला गया और उसके साथ रह कर महाराजा अभयसिंहजी की सेवा करने लगा।

महाराजा अभयसिंहजी सेरविलन्दखां को दण्डित करने के लिए अहमदाबाद गए उनके साथ आसोप ठाकुर कनीराम और यह भी था। इसने उस युद्ध में अच्छी सेवा की जिससे महाराजा ने प्रसन्न होकर गांव गारासणी, खेड़ा भुबरक्या और कुंभारा इनायत किया। उनमें से गारासणी और खेड़ा भुबरक्या उसी जोधसिंह के वंशजों के अधिकार में हैं।

२--आनन्दसिंह नं० १ का पुत्र। पिता के देहान्त के समय यह गर्भस्थित था। ऐसी दशा में बखेड़ा हुआ ही करता है, परन्तु ठाकुर कनीराम ने तय किया कि जब तक गर्भस्थित बालक का जन्म न हो तब तक शांति रखी जावे। दो महीनों के बाद आनंदसिंह प्रकट हुआ, तब पूज्य वृद्ध पिता ठाकुर कनीराम ने उसको जोधसिंह का उत्तराधिकारी करके श्री दरबार से अर्ज कर तीनों गांवों का पट्टा इसके नाम लिखवा दिया। और एक सुयोग्य बुद्धिमान् पुरुष चतुर मुहता को कामदार नियत किया। उसने ठाकुर की

बाल्यावस्था और अनेक विपत्तियों में ठिकाने की रक्षा करते हुए राज्य संपादित किया।

जब आनन्दसिंह ने युवावस्था में पदार्पण किया तब जैसा भाटियों के यहां इसका प्रथम विवाह हुआ। उसके उदर से ३ पुत्र हुए। १ ईश्वरीसिंह २ हृदयनारायण ३ और हरिसिंह। तदनन्तर भटियानी का स्वर्गवास होने पर दूसरा विवाह सांचोर प्रांत के सांगला ठिकाने के चौहानों के यहां किया।

सौतीली माता प्रथम की सन्तान से अप्रसन्न रहती ही है और ठाकुर तरुण स्त्री के पंजे में आ जाया करते हैं, इससे पिता पुत्र के परस्पर वैमनस्य हो गया। ज्येष्ठ पुत्र ईश्वरीसिंह अप्रसन्न होकर उदैपुर महाराणा के पास चला गया। महाराणा ने निर्वाह के लिए रोजाना कर दिया। इसकी ठकुरानी शक्तावतजी के उदर से अभयकरण का जन्म हुआ। इसकी शिशु अवस्था में ही वि० सं० १८४० में इसके पिता का स्वर्गवास हो गया, जिससे यह ननिहाल में रहा। और सयाना होने से अपनी जन्म भूमि का स्मरण कर यह अपने पितामह कनीराम के पास चला आया।

इसके छोटे भाई हृदयनारायण और हरिसिंह जोधपुर में रहने लगे। हृदयनारायण को महाराजा की सेवा करने से गांव ग्वालु मिला। समयानुसार वह गांव तो जब्त हो गया, परन्तु वहां उसके वंशजों के अधिकार में जूनी जागीर है। हृदयनारायण के वंशज अर्जुनसिंह और माधोसिंह आदि ठिकाना गारासणी के छुट भाई हैं। और हृदयनारायण के वंशज मदनसिंह, सुलतानसिंह आदि को जो गारासणी में जागीर मिली थी उस पर उन्हीं के वंशजों का अधिकार है।

तीसरा पुत्र हरिसिंह बड़ा प्रतापी हुआ। इसने वासनी नामक ठिकाना अलग ही उपार्जित किया। इसके वंशज हणूंतसिंह आदि वासनी में निवास करते हैं।

आनन्दसिंह की दूसरी पत्नी चौहानजी के एक पुत्र भानसिंह

और एक कन्या हुई। भानसिंह के वंशज कल्याणसिंह वो उदय-सिंह आदि ठिकाना गारासणी के छुट भाई हैं और अपनी विभक्त भूमि से निर्वाह करते हैं। आनन्दसिंह महाराजा विजयसिंहजी की सेवा करता हुआ वि० सं० १८४२ में स्वर्ग को सिधारा।

३-अभयकरण नं० २ के पुत्र ईश्वरीसिंह का पुत्र। यह पितामह के स्वर्गगामी होने पर २ वर्ष की अवस्था में पट्टाधिकारी हुआ। इसी से मुहता चतुर और रईस आसोप ठाकुर महेशदास की निगरानी में ठिकाने का कार्य करते रहे। महेशदास मेड़ते के युद्ध में स्वर्गवास कर गया तब ठिकाने में गृहकलह के द्वारा अशान्ति ने पदार्पण किया। वि० सं० १८५४ तक ठिकाने पर कभी भानसिंह और कभी हरिसिंह ने कब्जा कर लिया। इस उपद्रव के समय उक्त कार्य-कर्त्ताओं ने ठाकुर अभयकरण का कब्जा बहाल रखा। होश सम्भालने पर ठाकुर ने महाराजा भीमसिंहजी और मानसिंहजी की सेवा तन मन से की।

वि० सं० १८७७ में आसोप ठाकुर केसरीसिंह महाराजा की दृष्टि में बल आया देखकर बीकानेर चला गया, तब यह भी उसके साथ हो लिया। बागी सरदार के साथ जाने से जागीर जब्त हो गई। ठाकुर केसरीसिंह का बीकानेर में ही स्वर्गवास हो जाने से आसोप ठिकाने में हलचल मची। परन्तु मांजी साहिबा ने ठाकुर बखतावरसिंह को उत्तराधिकारी मान लिया। इस विषय में जो प्रपंच कर्त्ता थे उनमें से कितने ही असफल हुए और किसीने फायदा भी उठाया। इसी सिलसिले में आयसजी महाराज की शिफारिस से वि० सं० १८८३ में अभयकरण के नाम पट्टा बहाल हुआ। और एक गांव कुमारा सदा के लिए जब्त रहा। वि० सं० १८८५ में इस का स्वर्गवास हुआ। इसके ३ पुत्र हुए १ जसवन्तसिंह, २ जुहारसिंह, और ३ बिड़दसिंह।

४-जसवन्तसिंह-ज्येष्ठ पुत्र होने से पट्टाधिकारी हुआ। इसने महाराजा तख्तसिंहजी की सेवा तन मन से की। वि० सं० १९१९

में यह स्वर्ग को सिधारा। इसके २ पुत्र हुए, शिवनाथसिंह और समरथसिंह।

५-शिवनाथसिंह-पिता का स्वर्गवास होने पर गद्दी बैठा। यह कड़ा बहुत था, किसी की परवाह नहीं रखता था जिससे मुत्सद्दी लोग इससे नाराज थे। इसी कारण से इससे हुक्मनामे की रकम बहुत अधिक ली गई। वेनलवी की सनद जो सदा से मिलती रही थी, नहीं मिली। और ताजीम भी जो थी, दफ्तर दस्तरी में नहीं सजाई गई। इस ठाकुर का स्वर्गवास वि० सं० १६२६ में हुआ।

६-समरथसिंह-शिवनाथसिंह निःसन्तान स्वर्गवासी हो जाने से उसका छोटा भाई समरथसिंह गोद लिया गया। और वही शिवनाथसिंह का उत्तराधिकारी हुआ। यह बाल्यावस्था से ही आसोप में रहता था। ठाकुर चैनसिंह के नाबालगी के समय में इसने आसोप ठिकाने का प्रबन्ध किया। उसी अर्से में महाराजा जसवन्तसिंहजी का आसोप में आगमन हुआ। समरथसिंह के प्रबंध से महाराजा प्रसन्न हुए और समरथसिंह को इकेवड़ी ताजीम और बांहपसाव का कुरब दिया।

७-शिवदानसिंह--समरथसिंह का निःसंतान स्वर्गवास होने पर अभयकरण के पुत्र बिड़दसिंह का पुत्र शिवदानसिंह गोद आया। इसने आसोप ठिकाने की वकालत का काम करते हुए अपने पट्टे का भी प्रबन्ध उत्तम किया। वि० सं० १६६१ में इसका निःसन्तान स्वर्गवास हुआ।

८-वर्तमान ठाकुर भीमसिंह बिड़दसिंह के द्वितीय पुत्र रावतसिंह का पुत्र है। जो वि० सं० १६६१ में शिवदानसिंह के गोद लिया गया। इसके नाबालगी के समय में आसोप ठाकुर चैनसिंह निगरानी करते रहे। बालिग होने पर इसने अपने ठिकाने का काम अपने हाथ में ले लिया है। ठाकुर बुद्धिमान और विद्यारसिक है।

यह ठिकाना महाराजा अभयसिंहजी ने ठाकुर जोधसिंह को इनायत किया। इस ठिकाने की रेख २५००) और गांव २ हैं।

१ गारासणी रेख १५००)

२ झुबरक्यो रेख १०००)

वर्तमान समय में योरोपीय देशों में जो घोर युद्ध हो रहा है उस में ब्रिटिश सरकार को जोधपुर रियासत ने हर प्रकार की सहायता दी। और फिर अपने उमरावों और सरदारों से भी युद्ध सहायतार्थ उनको श्री दरबार साहिबों की तरफ से खास रुक्कों द्वारा जोधपुर बुलाकर कहने पर तमाम सरदारों ने शामिल होकर यह तय किया कि १५००००) रु० की कीमत का एक फाइटर खरीदा जाकर युद्ध में सहायतार्थ दिया जावे। इस के निमित्त इस ठाकुर ने १५००) रु० जो पहिले दिये थे उन के अलावा ११७०) रु० और बतौर चन्दे के दिए।

इस विषय का मारवाड़ के सब सरदारों का शिहू निवासी सांदू

विशनदान कृत

--गीत--

मक्तीवंत सांवत राव सरदारां,
जोधारां जस री जग जोत।
करणां मुकत राज उपकारां,
दातारां वीरां देसोत ॥ १ ॥
पड़ियां भीड़ नहीं पालटणां,
भिड़िया जठी सँभाया भार।
लड़िया जठे विजय रँग लागा,
जुड़िया जुध वांका जोधार ॥ २ ॥
स्यांम धरम व्रत धारी सूरा,
पख पूरा कुलवंत परमांण।
निरभय मन चढतां मुख नूरां,
वलि भूरां सिंघां वाखांण ॥ ३ ॥

आयां भार दिया कंध आगे,
पहुंचाया पौरस कर पार ।
धिन कमधज गाया जुध धीरा,
अबखी रा बीरां आधार ॥ ४ ॥
तिरणो जग महाराजा साथे,
भविष्यत तणों संभाणो भार ।
रखणो त्याग चंचल माया रो,
सत सरणों सगती रो सार ॥ ५ ॥
नीतिवांन न्याय पथ नेता,
जग जसवन्त बिजेता जांन ।
राजसथांन रुखाळा रहणां,
महाबीर मरजादा मांन ॥ ६ ॥
समर बिजेत सांवत रिपु सरचे,
परिचय वळ दरियावां पार ।
खस जुध खेत सीस पिंड खरचे,
अरचे जय चण्डी आधार ॥ ७ ॥
लाख एक चाळीस सहस लिख,
हिरदय हेत बताया हात ।
मुरधरियां सामिल मिल महिमा,
व्हेही अमर विमाणां बात ॥ ८ ॥
राजा याद किया उमरावां,
थाया भाई भड़ां घण थाट ।

निधिवंतां उम्मेद निहारे.
मांवंतां देखे सम्राट ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

जोधांणे आया जग जाहर, जादा थँड राठौड़ उजास ।
दृढ विसवास चावँड जय देही, ऊभा वीर फतेरी आस ॥१॥

॥ श्री ॥

कूम्पावत-राष्ट्रोड़-प्रशस्तिः ।

आसीन्नृपालो मरुमण्डलस्य महाबलिष्ठो रणमल्लनामा ।
चितौड़दुर्गाधिपकुम्भकर्णमधिष्ठिपद्यो निजराज्यपट्टे ॥१॥
सुतोऽभवत्तस्य महानुभावो वीराग्रणीरक्षयराजनामा ।
यो योधसिंहं ह्यनुजं चकार पट्टाधिकारे नियतं करेण ॥ २ ॥
तदात्मजोऽभून्महराजनामा यो माननीयो वरवीरशूरैः ।
कूम्पाभिधोऽभूत्तनुजस्तदीयो यो मालदेवं मरुपं सिषेवे ॥३॥
सेनाधिपत्यं मरुपालकस्य सम्प्राप्य यो शत्रुगणं विजित्य ।
स्वस्वामिराज्यं विततं चकार जैतासहायो विचरन् धरण्याम् ॥४॥
प्रान्तान् द्विपञ्चाशतमेष वीरो विजित्य भर्तुश्चरणे समेत्य ।
चक्रे नतिं तत्समये नृपालस्तस्मै ददौ विक्रमपत्तनं द्राक् ॥५॥
शून्याभ्रषट्चन्द्र(१६००)मिते तु वर्षे समागतो म्लेच्छपशेरशाहः।
संयुध्य तेनैष महाबलीयान् सहस्रशो म्लेच्छजनाञ्जघान ॥६॥
दृष्ट्वास्य वीर्यं यवनो जगाद हा हा वृथाऽहं समुपागतोऽत्र ।
कथं विजेष्येऽमुमनन्तवीर्यं कूम्पाभिधं जैत्रसहायकं नु ॥ ७ ॥
तदात्मजो माण्डणनामधेयो दिल्लीपतिं यः सहसा सिषेवे ।
स सेवयाऽस्मै परितुष्ट आशु ददौ महन्मन्सबमुच्चचित्तः ॥८॥
आसोपसंज्ञं नगरं विशालं दत्त्वाऽवदन्म्लेच्छपतिर्वदान्यः ।
मरोः पतिं त्वं ह्युदयाख्यसिंहं सेवस्व यस्ते भविताऽविताऽद्य ॥९॥

सुतोऽस्य जातः खलु खींवकर्ण एषोऽपि दिल्लीपतिसेवकोऽभूत् ।
तं सेवमानः किल सूरसिंहं ग्रामं स लेभे पुनरीड़वाख्यम् ॥१०॥
तदात्मजोऽभूद्ववदातकीर्तिः कृष्णस्य भक्तः खलु कृष्णदासः ।
दिल्लीपयुद्धेऽरिगणं निहत्य स्वर्गं जगामायमनल्पवीर्यः ॥११॥
सहोदरस्तस्य तु राजसिंहो दिल्लीपतेः सेवक आस वीरः ।
जसवन्तसिंहं मरुपं सिषेवे दिल्लीशवाक्यात्तमु शिक्षयन् सन् ॥१२॥
ग्रन्थाभिषङ्गान्नृपतिं मुमूर्षुं दृष्ट्वा स्वयं मोचयितुं सुभृत्यः ।
मृत्युप्रदं वारि सुमन्त्रवादिप्रमन्त्रितं चाशु पपौ मृतश्च ॥ १३ ॥
तदात्मजो नाहरखाननामा यो योगिवर्याप्तवरश्चिरायुः ।
प्रीत्या सिषेवे मरुभूमिपालं कृतार्थतामत्र हि मन्यमानः ॥ १४ ॥
नाहरखानभ्राता पितृव्यजोऽभून्मुकुन्ददासाख्यः ।
वड्लग्रामाधीशः पुत्रोऽयं कृष्णदासस्य ॥ १५ ॥
मुकुन्ददासस्य च जैत्रसिंहः सुतोऽभवद्योऽजितसिंहभूपम् ।
संसेवमानश्चरितैः स्वकीयैरतोषयत्स्वामिनमुच्चकर्मा ॥ १६ ॥
तदङ्गजोऽजायत रामसिंहः सहायको यो ह्यजितस्य राज्ञः ।
दुर्गप्रवेशे खलु कीर्तिसिंहं न्यवारयद्रोधकरं नृपस्य ॥ १७ ॥
सुतोऽभवत्तस्य महान् कनीरामाख्योऽभयं यो नृपतिं सिषेवे ।
तदाज्ञया दौलतसिंहमाराज्जघान तेनास्य नृपस्तुतोष ॥ १८ ॥
दौलतसिंहस्तनयस्तस्याभूद्रामसिंहं यः ।
संत्यानिममसवनाले विद्रोही वस्तासिंहस्य ॥ १९ ॥
महेशदासस्तनयोऽस्य जातो योऽसेवतालं विजयाख्यभूपम् ।
संदत्तकदङ्गयुधि प्रसह्य पराक्रमं चाप्यकरोदतुल्यम् ॥ २० ॥

यत्खड्गपातात्तुपकस्य तुण्डं द्विधाऽभवत्तादृशमप्रमेयम् ।
कृत्वा बलं शत्रुगणं निहत्य स्वर्गं जगामोद्यतहेतिहस्तः ॥२१॥
श्रीरत्नसिंहोऽभवदस्य सूनुर्विलोक्य भूपालकवक्रदृष्टिम् ।
जगाम बीकानगरं ततश्च भीमेन चाकारित आजगाम ॥२२॥
तदात्मजः केसरिसिंहनामा धाम्नां निधिः सर्वगुणरुपेतः ।
धीमान् धराधीशकृपानिधानं मानं स्वकं यो धरते नितान्तम् ॥२३
श्रीमानसिंहं नृपतिं सिषेवे स्वधर्ममाधाय विशुद्धचेताः ।
गीङ्गोलियुद्धेऽपि च योधपूरोधे वै तथान्यत्र च सर्वदाऽसौ ॥२४
पुत्रोऽस्य बख्तावरसिंहनामा पितास्य बाल्ये दिवमारुरोह ।
श्रीमानसिंहं नृपमेष सेवमानः कृतार्थं जननं चकार ॥ २५ ॥
तदात्मजोऽभूच्छिवनाथसिंहः श्रीतख्तभूपस्य कृपानिधानम् ।
विद्रोहिकालाजनसंगतोऽपि तत्याज भक्तिं न नृपस्य वीरः ॥२६
तदात्मजो दत्तकचैनसिंहः स्वधर्मधारी जनतोपकारी ।
जस्वन्तसिंहं नृपतिं प्रसन्नं चकार भक्त्याऽपि च सेवया च ॥२७
कार्ये नियुक्तः किल राजकीये चकार कार्यं सुधियोपपन्नः ।
सम्राडपि प्रेक्ष्य सुयोग्यतां च प्रादात्पदं रावबहादुराख्यम् ॥२८
तदात्मजोस्त्यद्य फतैहसिंहः सिंहोपमः क्षत्रियकृत्यमार्गे ।
असौ नृपालं सरदारसिंहं सुमेरुसिंहं च मुदा सिषेवे ॥ २९ ॥
स्वस्वामिभक्तिं प्रवहन्नजस्रमुम्मेदसिंहं स मरोर्नृपालम् ।
संसेवते चापि नियुक्त एष करोति कार्यं खलु राजकीयम् ॥३०
कायादमुष्य प्रचुरैश्चरित्रैर्भूपाल एनं मनुते विशिष्टम् ।
सम्राट् च संवीक्ष्य महत्तमत्वं प्रादात्पदं रावबहादुराख्यम् ॥३१॥

यथास्य पित्रा विकटे हि काले त्यक्त्वा ऋणं चापि वितीर्य दानम्।
प्रजाविता तद्वदसौ प्रपाति दुर्भिक्षकाले जनतां स्वकीयाम् ॥३२
अस्यास्य पुत्रत्रितयं सुकल्पमध्येति यत्प्रेमत आङ्ग्लभाषाम् ।
आरोपनाथो विदधे हि तस्य प्रबन्धमत्यन्तमुदारमुच्चम् ॥३३॥
देवीसिंहस्तदनुजो भवानीसिंहनामकः ।
नरीयः सज्जनहरिर्जीव्यासुः सुचिरं त्विमे ॥ ३४ ॥
वंशोऽस्यानि विवर्धतां सुनितरां तेजः प्रदीप्तिं प्रयात्
नित्यं चापि च वैभवो विपुलतां यायाज्जनः स्यात्सुखी ॥
आनन्दं प्रतिपद्यतां तव सुहृद्वर्गस्तथा बान्धवा
मैत्रीं यान्तु परस्परं परिजनः प्रीतिं मिथः संक्रियात् ॥३५॥
आरोपारामकर्णेन प्रयुक्ताः परमाशिषः ।
सफलाः स्युः सप्तनवग्रहेन्दु (१९९७) मितहायने ॥ ३६ ॥

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति
सलिए	इसलिए	४—२
खड़	खेड़	४—३
क	के	६—५
ह	हैं	६—७
क	के	७—२
कहत ह	कहते हैं	७—४
हुइ	हुई	७—१०
म	में	११—६
योद्धेय	यौद्धेय	११—१७
विषय	इस विषय	१७—१७
ना गेर	नागोर	२२—१५
वीर	वीरता	२७—१७
जैल	जैत	२८—१
से	उसे	३१—२४
नणै	तणी	३२—८
के में	के मर्म में	३९—२६
मोड़	जोड़	४५—७
आर	और	५०—१५
१३	१६	५६—१३
प्राति	प्रीति-	६१—१३
मुरझायो अम्त	मुरझायो	६६—१०
आप	ओप	६७—११
न मानँ	मनांनँ	६७—१६
पिंड	पिंड में	६९—१८
अष्टम	सप्तम	७०—६
राजासह	राजसिंह	७०—८
बार	बारे	७५—१
महारजा	महाराजा	७७—१२

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति
पारियो	पहरियो	२९८—३
हीया	होया	३०३—९
उसका	उनका	३०४—१६
सलाह	सैलांह	३०६—१२
यह मोवे	पोहमी पै	३१२—३
हेरु	हिरदे	३१७—१२
यहतां	यहनां	३१८—१४
छेह	वेह	३१८—१५
की सगाई	का सम्बन्ध	३२२—१८
०	खंगारसिंहजी	३२४—३
सगर थां	सगाइयां	३२९—१
फरमायो	करायो	३४०—१०
धरती	धणी	३४०—२०
थ्यारोह	थारोह	३४४—८
भुजा	भुज	३४७—१९
तवड़ा	तेवड़ा	३५२—१
सरद हीला	सर वहीला	३५४—११
बांह	छांह	३५४—१४
मेला	मेला	३५८—१०
टेर	मेर	३६४—१४

परिशिष्ट अध्याय

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ पंक्ति
फलोधी	सिवाना	७-२०-२१
यौ	यः	१—७
भिसेव्य	चिसेव्यै	१—१४
भसवताकं	मसेवताकं	२—२०
गुण	गुणै	३—५
माम	मामं	३—६
काया	कार्या	३—२१
देवीासह	देवीसिंह	४—५